BPSC 71th

# इतिहास

## (Prelims)

आस्था IAS

M-1A, Jyoti Bhawan, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-09

Live Discussion Available on Aastha IAS Academy App | Aastha IAS | Aastha Ias R Kumar, R Kumar Aastha Ias | BPSC Aastha IAS | Aastha IAS

Download Aastha IAS Academy & Aastha BPSC App

For Live with Recorded Class & Test Discussion Available On Aastha BPSC App

# BPSC प्रारम्भिक परीक्षा

**सफलता की संक्षिप्त रणनीतिः-**

प्रिय विद्यार्थियों आपने BPSC द्वारा आयोजित सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी का निर्णय लिया है। यह एक सुखद एवं साहसिक निर्णय है। अब आप इसकी तैयारी एवं सफलता के लिए उत्साह, एवं समर्पण के साथ पढ़ाई प्रारम्भ करें। आप जानते है कि सफलता के लिए ज्ञान आवश्यक है और ज्ञान के लिए **10 स्रोतों को एक-एक बार पढ़ने की जगह एक स्रोत को 10 बार पढ़ना** होता है।

BPSC परीक्षा की चुनौती यही पर है। आखिर यह **एक अध्ययन सामग्री** कहाँ से ले आएँ जहाँ से कुल 150 प्रश्नों में से सफलता के लिए आवश्यक अधिकांश प्रश्न आ जाए।

आस्था IAS की ओर से आपके लिए यह Booklet परीक्षा की आवश्यकता के अनुसार तैयार किया गया है। इस Booklet के साथ आस्था IAS के ऑफलाइन क्लास में पढ़ाने वाले सभी शिक्षक भी अपना क्लास नोट्स तैयार कराते हैं। प्रिंटेड नोट्स के साथ क्लास नोट्स का भी उपयोग करें। पढ़ने के साथ प्रश्नों का अभ्यास भी करते रहें। यह रणनीति मुख्य परीक्षा के लिए भी उपयोगी है।

आपकी सफलता में यह Booklet जरूर सहायक होगा, ऐसा विश्वास है।

**धन्यवाद**

**आर. कुमार**

# विषय सूची

## प्राचीन भारत काल खण्ड

### प्राचीन भारत


ऐतिहासिक स्रोत ..... 7

प्रागैतिहासिक काल ..... 11

हड़प्पा सभ्यता ..... 13

वैदिक युग ..... 15

जैन धर्म ..... 18

बौद्ध धर्म ..... 19

अन्य धर्म ..... 21

महाजनपद ..... 23

प्राचीन भारत पर विदेशी आक्रमण ..... 23

मौर्य साम्राज्य ..... 24

ब्राह्मण साम्राज्य ..... 26

भारत में यवन राज्य ..... 27

कुषाण ..... 28

मौर्योत्तर युग: शिल्प, व्यापार और नगर ..... 29

गुप्त साम्राज्य ..... 29

पुष्यभूति वंश ..... 32

संगम युग ..... 32

पल्लव वंश ..... 33

वातापी के चालुक्य ..... 33

राष्ट्रकूट राजवंश ..... 34

कल्याणी के चालुक्य राजवंश ..... 34

राजपूतों की उत्पत्ति ..... 34

कश्मीर का राजवंश ..... 35

चोल ..... 36

मुस्लिम आक्रमण ..... 37


### मध्यकालीन भारत


दिल्ली सल्तनत ..... 38

सूफी आन्दोलन ..... 46

भक्ति आंदोलन (सुधारवादी आंदोलन) ..... 47

बहमनी साम्राज्य....49
विजयनगर साम्राज्य....50
मुगल साम्राज्य....53
मराठा साम्राज्य....63
उत्तरकालीन मुगल सम्राट....65

## आधुनिक भारत

यूरोपीय वाणिज्य कंपनियों का भारत आगमन....70
बंगाल पर अंग्रेजों का आधिपत्य....73
अंग्रेजों के मैसूर से सम्बन्ध....73
सिक्ख धर्म और राज्य....74
ब्रिटिश प्रभुसत्ता की स्थापना (1848-1856 ई.)....75
बंगाल के प्रशासन की दोहरी व्यवस्था....76
वॉरेन हेस्टिग्स और कॉर्नवालिस (1772-1793 ई.)....76
ब्रिटिश शासन को सुदृढ़ बनाने का काम (1818-1857 ई.)....78
बंगाल के गवर्नर एवं भारत के गवर्नर जनरल एवं वायसराय....79
आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास....83
शैक्षणिक आयोग एवं सिफारिशें....84
1857 की महान क्रांन्ति....85
अंग्रेजी शासन के विरुद्ध हुए प्रमुख विद्रोह एवं आंदोलन....86
धन निष्कासन का सिद्धांत....87
लोगों की आर्थिक दशा....87
सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन....88
ब्रिटिशकालीन समाचार पत्र....91
राष्ट्रीय संस्थाएं....92
स्वतंत्रता आन्दोलन....99
ब्रिटिश काल में भारत में गठित समितियाँ एवं आयोग....117
भारत के महत्वपूर्ण गवर्नर-जनरल एवं वायसराय तथा उनसे संबंधित महत्वपूर्ण घटनाएँ....117
आधुनिक भारत के कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों के उपनाम....119
काँग्रेस का अधिवेशन : कब और कहाँ....120

# प्राचीन भारत काल खण्ड

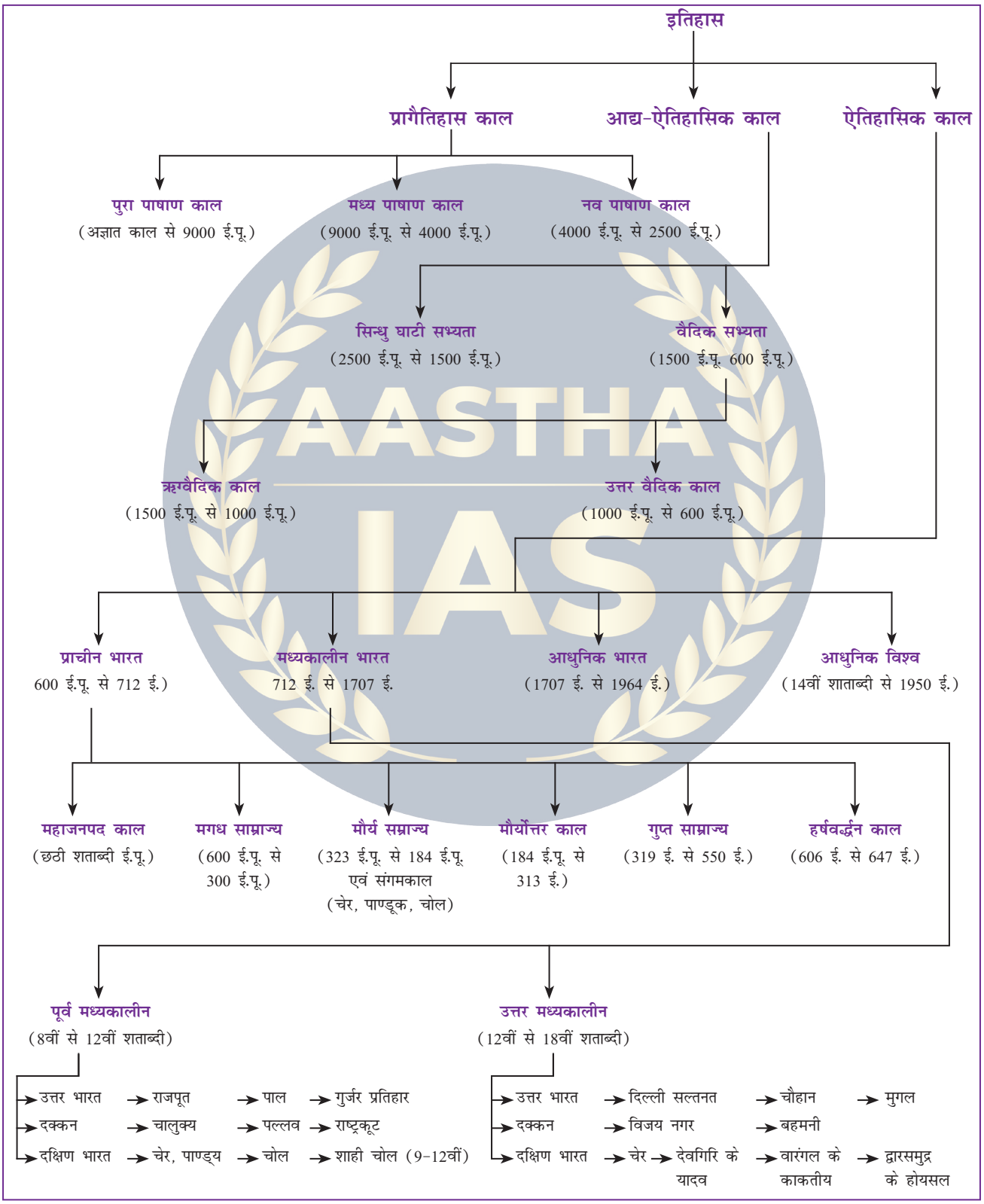

## आधुनिक भारत

### यूरोपीय कंपनियों का आगमन
- पुर्तगाली (1498)
- डच (1602)
- अंग्रेज (1608)
- फ्रेंच (1664)

### मुगल साम्राज्य का विघटन एवं उत्तराधिकारी राज्य
- बंगाल
- अवध
- हैदराबाद
- कर्नाटक

### अंग्रेजों की भारत विजय
- कर्नाटक युद्ध (1744-63 ई.)
- बंगाल (प्लासी व बक्सर की विजय 1757, 1764 ई.) मैसूर (1799 ई.)
- मराठा-संघ की समाप्ति (1817-18 ई.)
- पंजाब का अधिग्रहण (1849 ई.)

### दासता का बंधन
- अंग्रेजों द्वारा विभिन्न सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक नीतियों द्वारा भारत का शोषण
- प्रतिक्रिया (1857 ई. का मुक्ति संग्राम)

### राष्ट्रवादी जागरण
- सामाजिक-धार्मिक सुधार
- राजनीतिक संस्थाओं की स्थापना
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (स्थापना: 1885 ई.)

### स्वतंत्रता संग्राम की गतिशीलता
- कांग्रेस: नरम दल से गरम दल की ओर क्रांतिकारी आंदोलन
- गाँधी जी के आंदोलन

### स्वातंत्र्योत्तर भारत
- तात्कालिक समस्याओं का सामना
- आर्थिक प्रगति की ओर
- विदेश नीति, गुटनिरपेक्षता

## आधुनिक विश्व

### 14वीं से 16वीं सदी
**पुनर्जागरण**
(आधुनिक विश्व इतिहास का प्रस्थान-बिंदु)

**धर्म-सुधार आंदोलन**
(ईसाई धर्म के मध्यकालीन स्वरूप की समाप्ति)

**भौगोलिक खोज अभियान**
(नवीन देशों व जलमार्गों की खोज)

### 1750 ई. - 1900 ई.
**औद्योगिक क्रांति**
(इंग्लैण्ड से प्रारंभ, अन्य देशों में प्रसार)

**अमेरिकी क्रांति (1776-83 ई.)**
(ईसाई धर्म के मध्यकालीन स्वरूप की समाप्ति)

**फ्रांसीसी क्रांति (1789 ई.)**
(मानवाधिकार की घोषणा)

**राष्ट्रवाद का उभार**
जर्मनी व इटली का एकीकरण (1870 ई.)

### 1900 ई. - 1950 ई.
**प्रथम विश्व युद्ध (1914-18 ई.)**
- पेरिस की संधियाँ (1914-18 ई.)
- राष्ट्र-संघ (स्थापना, 1920

**रूसी क्रांति (1917 ई.)**
- विश्व में प्रथम साम्यवादी राज्य की स्थापना

**दो विश्व-युद्धों के मध्य यूरोप**
- वाइमर गणतंत्र एवं नाज़ीवाद का उदय (जर्मनी)
- फासीवाद (इटली)
- स्पेन का गृहयुद्ध

**द्वितीय विश्व युद्ध (1939-45 ई.)**
- संपूर्ण युद्ध
- इतिहास का सर्वाधिक भयावह युद्ध
- शांति स्थापना का नवीन प्रयास

# प्राचीन भारत

## ऐतिहासिक स्रोत

- किसी व्यक्ति, समाज अथवा देश से सम्बंधित महत्वपूर्ण, विशिष्ट व सार्वजनिक क्षेत्र की घटनाओं, तथ्यों आदि का कालक्रमिक विवरण (Chronological Description) इतिहास कहलाता है। इतिहास किसी समाज विशेष की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक एवं आर्थिक स्थिति तथा इन स्थितियों में समय के साथ-साथ होने वाले परिवर्तनों को भी प्रस्तुत करता है।

### पुरातात्विक स्रोत

- किसी देश अथवा स्थान का इतिहास जानने के लिए तथा उसके उचित विश्लेषण में पुरातात्विक साक्ष्यों व स्रोतों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। पुरातात्विक साक्ष्यों के अन्तर्गत अभिलेख, सिक्के, स्मारक, भवन, मूर्तियाँ, बर्तन आदि शामिल किए जाते हैं। अधिकांश पुरातात्विक साक्ष्य प्राचीन टीलों (Mounds) की खुदाई से प्राप्त किए जाते हैं।
- टीला धरती की सतह के उस उभरे हुए भाग को कहते हैं, जिसके नीचे पुरानी बस्तियों के अवशेष विद्यमान होते हैं। ये कई प्रकार के हो सकते हैं, जैसे- एकल-सांस्कृतिक, मुख्य सांस्कृतिक और बहुसांस्कृतिक।

> प्राचीन टीलों अथवा स्मारकों का उत्खनन कर वहाँ से प्राप्त वस्तुओं व कलाकृतियों के आधार पर क्रमिक ऐतिहासिक विश्लेषण करना, पुरातत्व विज्ञान (आर्कियोलॉजी) कहलाता है।

- पश्चिमोत्तर भारत में हुए उत्खननों से ऐसे नगरों का पता चलता है, जिनकी स्थापना लगभग 2500 ईसा पूर्व हुई थी।
- उत्खननों से हमें गंगा की घाटी में विकसित भौतिक संस्कृति के विषय में भी जानकारी मिली है कि उस समय के लोग किस प्रकार की बस्तियों में रहते थे, उनकी सामाजिक संरचना कैसी थी, वे किस प्रकार के मृद्भांड उपयोग करते थे, किस प्रकार के घरों में रहते थे, भोजन में किन अनाजों का उपभोग करते थे और किस प्रकार के औजारों तथा हथियारों का प्रयोग करते थे।
- दक्षिण भारत के कुछ लोग मृत व्यक्ति के शव के साथ औजार, हथियार, मिट्टी के बर्तन आदि वस्तुएँ कब्र में दफनाते थे तथा इसके ऊपर एक घेरे में बड़े-बड़े पत्थर खड़े कर दिए जाते थे। ऐसे स्मारकों को महापाषाण (मेगालिथ) कहते हैं।
- किसी प्राचीन वस्तु में विद्यमान $C^{14}$ में आयी कमी को माप कर उसके समय का निर्धारण किया जा सकता है।

> रेडियो कार्बन डेटिंग एक ऐसी विधि है जिसके द्वारा यह पता लगाया जाता है कि कोई वस्तु किस काल से सम्बंधित है। रेडियो कार्बन या कार्बन-14 ($C^{14}$) कार्बन का रेडियोधर्मी (रेडियोएक्टिव) समस्थानिक (आइसोटोप) है, जो सभी सजीव वस्तुओं में विद्यमान होता है।

- रेडियो कार्बन डेटिंग विधि से पता चला है कि राजस्थान और कश्मीर में कृषि का प्रचलन लगभग 7000-6000 ईसा पूर्व में भी था।
- पौधों के अवशेषों का परीक्षण कर विशेषत: परागों (Pollen) के विश्लेषण द्वारा जलवायु और वनस्पति का इतिहास जाना जाता है।
- पशुओं की हड्डियों का परीक्षण कर उनकी आयु की पहचान की जाती है तथा उनके पालतू होने एवं अनेक प्रकार के कार्य में लाए जाने का पता लगाया जाता है।

### सिक्के

- सिक्कों के अध्ययन को मुद्राशास्त्र (न्यूमिस्मेटिक्स) कहते हैं। मुद्राओं की बनावट एवं उनमें प्रयुक्त धातुओं की मात्रा के आधार पर ऐतिहासिक घटनाओं पर प्रकाश पड़ता है। प्राचीन काल में अधिकांश मुहरें धातुओं की बनायी जाती थीं। जिन सिक्कों व मुद्राओं पर कोई लेख नहीं होता था, केवल आकृतियाँ विद्यमान होती थीं। उन्हें पंचमार्क या आहत् सिक्के कहा जाता था।
- भारत में पुरातात्विक खुदाई से बड़ी संख्या में ताँबे, चाँदी, सोने और सीसे के सिक्कों के साँचे मिले हैं। इनमें से अधिकांश साँचे कुषाण काल के अर्थात् ईसा की आरंभिक तीन शताब्दियों से सम्बंधित हैं।
- भारत में मिले आरंभिक सिक्कों पर प्रतीक चिह्न मिलते हैं, परन्तु बाद के सिक्कों पर राजाओं और देवताओं के नाम तथा तिथियाँ अंकित मिलती हैं।
- सिक्कों पर लेख एवं तिथियाँ उत्कीर्ण करने की परम्परा सर्वप्रथम यूनानी शासकों ने प्रारम्भ की।
- सिक्कों का प्रयोग दान-दक्षिणा, खरीद-बिक्री और वेतन मजदूरी आदि के भुगतान में होता था, इसलिए सिक्कों का आर्थिक इतिहास के अध्ययन में भी महत्वपूर्ण योगदान है।
- भारत में सर्वाधिक सिक्के मौर्योत्तर काल के मिले हैं, जो विशेषत: सीसे, पोटीन, तांबे, काँसे, चाँदी और सोने से निर्मित हैं।
- गुप्त शासकों ने सबसे अधिक सोने के सिक्के जारी किए। जबकि सर्वाधिक शुद्ध सोने के सिक्के कुषाण शासकों ने प्रचलित किए। सातवाहन शासकों ने सबसे अधिक शीशे के सिक्के जारी किए थे।

### अभिलेख

- अभिलेख सिक्कों से अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। इसके अध्ययन को पुरालेखशास्त्र (एपिग्राफी) कहते हैं।
- भारत के संदर्भ में सर्वाधिक प्राचीन अभिलेख मध्य एशिया के बोगाजकोई से प्राप्त हुआ है। इस अभिलेख में इन्द्र, वरुण, मित्र एवं नासत्य नामक वैदिक देवताओं के नाम मिलते हैं।

- अभिलेख एवं दूसरे पुराने दस्तावेजों की प्राचीन तिथि के अध्ययन को पुरालिपिशास्त्र (पेलिअॅग्राफी) कहते हैं। अभिलेख मुहरों, प्रस्तरस्तम्भों, स्तूपों, चट्टानों और ताम्रपत्रों पर मिलते हैं तथा इसके अतिरिक्त मंदिर की दीवारों, ईंटों व मूर्तियों पर भी मिलते हैं।
- आरंभिक अभिलेख प्राकृत भाषा में हैं तथा ये ईसा पूर्व तीसरी सदी के हैं। अभिलेखों में संस्कृत भाषा ईसा की दूसरी सदी से मिलने लगी तथा चौथी-पाँचवीं सदी में इसका सर्वत्र व्यापक प्रयोग होने लगा।

**अभिलेखों में प्रयुक्त लिपियों**

- ब्राह्मी लिपि : अशोक के अधिकतर शिलालेख ब्राह्मी लिपि में है। यह लिपि बाएँ से दाएँ लिखी जाती थी।
- खरोष्ठी लिपि : अशोक के कुछ शिलालेख खरोष्ठी लिपि में है, जो दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी।
- यूनानी एवं आरमेइक लिपि : पाकिस्तान और अफगानिस्तान में अशोक के शिलालेखों में इन लिपियों का प्रयोग हुआ है।

- मौर्य सम्राट अशोक के अनेक अभिलेख देश के विभिन्न भागों से मिले हैं, जिनसे उसके साम्राज्य की सीमा, धम्म और शासन नीति पर प्रकाश पड़ता है।
- उदयगिरि से प्राप्त हाथीगुम्फा अभिलेख से कलिंग नरेश खारवेल की उपलब्धियों के संदर्भ में जानकारी प्राप्त होती है।
- शक क्षत्रप रूद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख से शक शासक रुद्रदामन, अशोक व चन्द्रगुप्त मौर्य के संदर्भ में जानकारी प्राप्त होती है।

**प्रमुख अभिलेख व शासक**

| | अभिलेख | शासक |
|---|---|---|
| 1. | हाथीगुम्फा अभिलेख | कलिंग नरेश खारवेल |
| 2. | एहोल अभिलेख | पुलकेशिन-II |
| 3. | नासिक अभिलेख | गौतमी बलश्री |
| 4. | जूनागढ़ अभिलेख | रुद्रदामन |
| 5. | प्रयाग स्तम्भ अभिलेख | समुद्रगुप्त |
| 6. | मन्दसौर अभिलेख | मालवा नरेश यशोवर्मन |
| 7. | ग्वालियर अभिलेख | प्रतिहार नरेश भोज |
| 8. | देवपाड़ा अभिलेख | बंगाल शासक विजयसेन |
| 9. | भितरी व जूनागढ़ अभिलेख | स्कंदगुप्त |

**नोट:** भारत का सर्वप्रथम उल्लेख हाथी गुम्फा अभिलेख में मिलता है।

- वशिष्ठीपुत्र पुलुमावी के नासिक गुहा अभिलेख के माध्यम से उनकी धार्मिक सहिष्णुता और उनकी संस्कृति के संदर्भ में जानकारी प्राप्त होती है।
- समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तंभ अभिलेख से समुद्रगुप्त की विजय व विजित राजाओं के साथ उसकी नीतियों के संदर्भ में जानकारी प्राप्त होती है।
- मौर्य, मौर्योत्तर और गुप्त काल के अधिकांश अभिलेख कार्पस इनसक्रिप्शओनम इंडिकारम् नामक ग्रंथमाला में संकलित कर प्रकाशित किए गए हैं।
- सबसे पुराने अभिलेख हड़प्पा संस्कृति की मुहरों पर मिलते हैं। ये लगभग 2500 ई. पू. के हैं।
- हड़प्पा संस्कृति के अभिलेख अभी तक पढ़े नहीं जा सके हैं। ये भावचित्रात्मक लिपि में लिखे गए हैं, जिसमें विचारों और वस्तुओं को चित्रों के रूप में व्यक्त किया जाता था।
- सबसे पुराने अभिलेख जो पढ़े जा चुके हैं, वे ईसा पूर्व तीसरी सदी के अशोक के शिलालेख हैं। इन अभिलेखों को पढ़ने में सर्वप्रथम सन् 1837 में जेम्स प्रिन्सेप को सफलता मिली, जो उस समय बंगाल में ईस्ट इंडिया कंपनी की सेवा में ऊँचे पद पर कार्यरत थे।

**पुरातात्विक स्तम्भ अभिलेख व उनके स्थान**

| | स्तम्भ लेख | स्थल | सम्बद्ध व्यक्ति | समय | अभिलेख की विषय-वस्तु |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | मेहरौली स्तम्भ लेख | मेहरौली (दिल्ली) | चन्द्रगुप्त-II | गुप्तकालीन | यह स्तम्भ लेख मूलतः व्यास नदी के समीप विष्णुपद पहाड़ी पर स्थित था, जो वर्तमान में कुतुबमीनार के पास है तथा यह तत्कालीन धातु विज्ञान का उत्कृष्ट उदाहरण है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के दिग्विजय अभियानों एवं उसके द्वारा सिंधु के सात युद्धों के बाद बाल्टिकों पर विजय प्राप्त करने का विवरण है। |
| 2. | प्रयाग प्रशस्ति (स्तंम्भ लेख) | प्रयाग (इलाहाबाद) | समुद्रगुप्त | गुप्तकालीन | इस प्रशस्ति में समुद्रगुप्त की विजयों का यशोगान किया गया है। इसकी रचना हरिषेण ने काव्य शैली में की है। |
| 3. | बौद्ध स्तम्भ लेख | भरहुत | राजा वासुदेव | शुंग काल | इस अभिलेख से शुंग वंश की जानकारी का प्रारंभिक स्रोत। |
| 4. | मथुरा स्तम्भ लेख | मथुरा (उत्तर प्रदेश) | चन्द्रगुप्त-II | गुप्तकालीन | यह प्रथम गुप्त अभिलेख है, जिसमें गुप्त संवत् का प्रथम वर्ष वर्णित है। इस स्तम्भ लेख द्वारा वैष्णव धर्मी गुप्त सम्राट की धार्मिक सहिष्णुता पर प्रकाश पड़ता है तथा माहेश्वर समुदाय के उदिताचार्य का वर्णन मिलता है। |
| 5. | गरुड़ स्तम्भ लेख (हेलिओडोरस स्तम्भ) | बेसनगर (विदिशा) | भागभद्र | शुंग काल | इसमें नैतिक शिक्षा के अन्तर्गत आत्मसंयम, त्याग व सतर्कता जैसे नैतिक कार्य स्वर्ग का पक्ष प्रस्तुत किया गया है। |
| 6. | एरण स्तम्भ लेख | एरण (मध्य प्रदेश) | समुद्रगुप्त | गुप्तकालीन | यह स्तम्भ लेख समुद्रगुप्त के व्यक्तिगत मामलों की जानकारी देता है। यह विदर्भी शैली में है। |
| 7. | एरण स्तम्भ लेख | एरण (मध्य प्रदेश) | बुद्धगुप्त | गुप्तकालीन | यह स्तम्भ लेख चतुर्भुजी भगवान विष्णु का सर्वप्रथम अभिलेखीय प्रमाण तथा भगवान विष्णु की महिमा में महाराजा मातृ विष्णु एवं धन्य विष्णु द्वारा ध्वज स्तम्भ के निर्माण का वर्णन प्रस्तुत करता है। इसमें सप्ताह के दिनों के नामों का प्रारम्भिक प्रयोग किया गया है। |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 8. | भीतरी स्तम्भ लेख | भीतरी (गाजीपुर) | स्कन्दगुप्त | गुप्तकालीन | इस स्तम्भ लेख में हूणों के आक्रमण का वर्णन एवं स्कन्दगुप्त द्वारा विष्णु मूर्ति की स्थापना का उल्लेख है। |
| 9. | बिहार स्तम्भ लेख | बिहारशरीफ (पटना) | स्कन्दगुप्त | गुप्तकालीन | इसमें स्कन्दगुप्त द्वारा अश्वमेध यज्ञ करने तथा एक स्तूप के निर्माण करने का उल्लेख है। |
| 10. | भिलसड़ स्तम्भ लेख | भिलसड़ (एटा) | कुमार गुप्त-I | गुप्तकालीन | कुमार गुप्त प्रथम के प्रथम लेख में गुप्त सम्राटों की वंशावली का विवरण है। इस स्तम्भ लेख में कार्तिकेय मंदिर का उल्लेख मिलता है। |
| 11. | एरण स्तम्भ लेख | एरण (मध्य प्रदेश) | भानुगुप्त | गुप्तकालीन | इसमें महान पराक्रमी गोपराज के रणभूमि में वीरगति प्राप्त होने एवं उसकी पत्नी के चिता पर सती होने का प्रथम उल्लेख है। |
| 12. | तालगुंडा स्तम्भ लेख | शिमोगा (मैसूर) | शांति वर्मन/मयूर शर्मन | गुप्तकालीन | यह स्तम्भ लेख दक्षिण में कदम्बों के इतिहास के अध्ययन का महत्वपूर्ण स्रोत है इसमें कदम्ब शासक मयूरशर्मन के पल्लवों से संघर्ष का उल्लेख है। |

## साहित्यिक स्रोत

- यद्यपि प्राचीन भारतीयों को लिपि का ज्ञान 2500 ईसा पूर्व में भी था, परन्तु हमारी प्राचीनतम् उपलब्ध पाण्डुलिपियाँ ईसा की चौथी सदी के पहले की नहीं हैं तथा ये मध्य एशिया से प्राप्त हुई हैं।
- भारत में पाण्डुलिपियाँ, भोजपत्रों और ताड़पत्रों पर लिखी मिलती हैं, परन्तु मध्य एशिया में जहाँ भारत से प्राकृत भाषा फैल गई थी, ये पाण्डुलिपियाँ मेषचर्म एवं काष्ठफलकों पर लिखी गई हैं।
- सम्पूर्ण भारत में संस्कृत की पुरानी पाण्डुलिपियाँ मिली हैं, परन्तु इनमें से अधिकतर दक्षिण भारत, कश्मीर और नेपाल से प्राप्त हुई हैं।
- हिंदुओं के धार्मिक साहित्य में वेद, रामायण, महाभारत, पुराण आदि सम्मिलित हैं।
- ऋग्वेद को 1500-1000 ईसा पूर्व के लगभग का मान सकते हैं, लेकिन अथर्ववेद, यजुर्वेद, ब्राह्मणग्रंथ, अरण्यकों और उपनिषदों को 1000-500 ईसा पूर्व के लगभग का माना जाता है।
- ऋग्वेद में मुख्यतः देवताओं की स्तुतियाँ हैं, परन्तु बाद के साहित्य में स्तुतियों के साथ-साथ कर्मकाण्ड, जादू-टोना और पौराणिक आख्यान हैं। उपनिषदों में हमें दार्शनिक चिंतन मिलते हैं।
- वैदिक मूलग्रंथ का अर्थ समझ में आए इसलिए वेदांगों अर्थात् वेद के अंगभूत शास्त्रों की रचना की गयी थी।

**वेद, उपवेद व उनकी विशेषता**

| | वेद | उपवेद | विवरण |
|---|---|---|---|
| 1. | ऋग्वेद | आयुर्वेद | चिकित्सा शास्त्र से सम्बंधित |
| 2. | यजुर्वेद | धनुर्वेद | युद्ध कला से सम्बंधित |
| 3. | सामवेद | गंधर्ववेद | कला एवं संगीत से सम्बंधित |
| 4. | अथर्ववेद | शिल्पवेद | भवन निर्माण कला से सम्बंधित |

**वेदांग**

- वेदों का अर्थ समझने व सूक्तों के सही उच्चारण के लिए वेदांग की रचना की गई।

**6 वेदांग**

| | | |
|---|---|---|
| 1. | शिक्षा | वैदिक शब्दों के शुद्ध उच्चारण हेतु इसका निर्माण हुआ। |
| 2. | कल्प | वैदिक कर्मकाण्डों को सम्पन्न कराने हेतु विधि व नियम। |
| 3. | व्याकरण | इसमें नामों एवं धातुओं की रचना एवं उपसर्ग, प्रत्यय के प्रयोग हेतु नियम। |
| 4. | निरुक्त | शब्दों की व्युत्पत्ति हेतु नियम। यह भाषा-शास्त्र का प्रथम ग्रंथ माना जाता है। यास्क ने निरुक्त की रचना की। |
| 5. | छंद | वैदिक साहित्य में गायत्री त्रिष्टुप, जगती, वृहती का प्रयोग किया जाता है। |
| 6. | ज्योतिष | इसमें ज्योतिष शास्त्र के विकास को दिखाया गया है। इसके प्रसिद्ध आचार्य लगध मुनि थे। |

- सूत्रलेखन का सबसे विख्यात उदाहरण पाणिनि का व्याकरण ग्रंथ अष्टाध्यायी, है जो 400 ईसा पूर्व के आस-पास लिखा गया था।
- पाणिनी ने अपने समय के समाज, अर्थव्यवस्था और संस्कृति पर गहन प्रकाश डाला।
- महाभारत, जिसे व्यास की कृति माना जाता है, संभवतः दसवीं सदी ईसा पूर्व से चौथी सदी ई. तक की स्थिति का आभास देता है। पहले इसमें केवल 8800 श्लोक थे तथा इसका नाम जय संहिता था, जिसका अर्थ है, विजय सम्बंधी संग्रह ग्रंथ कालान्तर में इसके श्लोकों की संख्या बढ़कर 24,000 हो गई तथा यह भारत के नाम से प्रसिद्ध हुआ। क्योंकि इसमें प्राचीनतम् वैदिक जन्म भरत के वंशजों की कथा है।
- वर्तमान में इस महाकाव्य में एक लाख से अधिक श्लोक हो गए हैं और तदानुसार यह शतसाहस्री संहिता या महाभारत कहलाने लगा। इससे तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति का ज्ञान होता है।
- वाल्मीकि रामायण में मूलतः 6,000 श्लोक थे, जो बढ़कर 12,000 श्लोक हो गए और वर्तमान में इसमें 24000 श्लोक हो गए। इसकी रचना संभवतः ईसा पूर्व पाँचवीं सदी में प्रारम्भ हुई। इसकी रचना महाभारत के बाद हुई प्रतीत होती है।
- राजाओं के द्वारा कराए जाने वाले अनुष्ठान और तीन उच्च वर्णों के धनाढ्य पुरुषों द्वारा किए जाने वाले अनुष्ठान व सार्वजनिक यज्ञों के विधि-विधान श्रौतसूत्रों में दिए गए हैं।
- जातकर्म (जन्मानुष्ठान), नामकरण, उपनयन, विवाह, श्राद्ध आदि घरेलू या पारिवारिक अनुष्ठानों का विधि-विधान गृह्यसूत्रों में पाया जाता है। श्रौतसूत्र और गृह्यसूत्र दोनों 600-300 ई.पू. के आस-पास के हैं।
- शुल्वसूत्र में यज्ञवेदी के निर्माण के लिए विविध प्रकार के मापों का विधान है। ज्यामिति और गणित का अध्ययन वहीं से आरंभ होता है।
- प्राचीनतम् बौद्ध ग्रंथ पालि भाषा में लिखे गए थे। यह भाषा मगध अर्थात् दक्षिण बिहार में बोली जाती थी।
- इन ग्रंथों में हमें केवल बुद्ध के जीवन के बारे में ही नहीं, बल्कि उनके समय के मगध, उत्तरी बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के कई शासकों के बारे में भी जानकारी मिलती है।

- ऐसा विश्वास था कि गौतम के रूप में जन्म लेने से पहले बुद्ध 550 से अधिक पूर्व जन्मों से (पशु के रूप में भी) गुजरे थे, जिनका वर्णन जातक कथाओं में है। प्रत्येक जातक कथा बुद्ध के पूर्व जन्मों पर आधारित काल्पनिक लोक कथा है।
- जैन ग्रंथों की रचना प्राकृत भाषा में हुई थी। ईसा की छठीं सदी में गुजरात के वल्लभी नगर में इन्हें अन्तिम रूप से संकलित किया। गया था।
- धर्मसूत्र, स्मृतियां और टीकाएँ इन तीनों को मिलाकर धर्मशास्व कहा जाता है। धर्मसूत्रों का संकलन 500-200 ई. पू. में हुआ था।
- कौटिल्य का अर्थशास्त्र अत्यन्त महत्वपूर्ण विधिग्रंथ है। यह 15 अधिकरणों या खंडों में विभक्त है। इसमें प्राचीन भारतीय राजतंत्र व अर्थव्यवस्था के अध्ययन के लिए महत्वपूर्ण सामग्री मिलती है।
- कालिदास ने काव्य और नाटक लिखे, जिनमें अभिज्ञानशाकुंतलम् सबसे प्रसिद्ध है।
- कुछ प्राचीनतम तमिल ग्रंथ भी हैं, जो संगम साहित्य में संकलित हैं। राजाओं द्वारा संरक्षित विद्या केन्द्रों में एकत्र होकर कवियों और भाटों ने तीन-चार सदियों में इस साहित्य का सृजन किया था। ऐसी साहित्यिक सभा को संगम कहते थे, इसलिए इस समय लिखे गये सम्पूर्ण साहित्य संगम साहित्य के नाम से प्रसिद्ध हो गया।
- संगम ग्रंथ वैदिक ग्रंथों से, विशेषकर ऋग्वेद से भिन्न प्रकार के हैं। ये धार्मिक ग्रंथ नहीं हैं। इसके अन्तर्गत कई कवियों ने मुक्तकों व प्रबंध काव्यों की रचना की हैं, जिनमें बहुत से नायकों (वीरपुरुषों) और नायिकाओं का गुणगान है।

संगम साहित्य के प्रमुख ग्रन्थ है: तोलकाप्पियम, शिलप्पादिकारम एवं मणिमेखल।

- संगम ग्रंथों में बहुत-से नगरों का उल्लेख मिलता है। इनमें उल्लिखित कावेरीपट्टनम् का समृद्धिपूर्ण अस्तित्व पुरातात्विक साक्ष्य से प्रमाणित हुआ है।
- ईसा की आरंभिक सदियों में प्रायद्वीपीय तमिलनाडु के लोगों के सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जीवन के अध्ययन के लिए संगम साहित्य हमारा एकमात्र प्रमुख स्रोत है।

## विदेशी विवरण

- यूनानी लेखकों ने 326 ईसा पूर्व में भारत पर आक्रमण करने वाले सिकन्दर महान के समकालीन के रूप में सैन्ड्रोकोटस के नाम का उल्लेख किया है।
- यूनानी विवरणों में सैन्ड्रोकोटस और चन्द्रगुप्त मौर्य जिनके राज्यारोहण की तिथि 322 ईसा पूर्व निर्धारित की गई है, एक ही व्यक्ति थे। यह पहचान प्राचीन भारत के तिथिक्रम के लिए सुदृढ़ आधारशिला बन गई।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में दूत बनकर आए मेगस्थनीज की इंडिका उन उद्धरणों के रूप में सुरक्षित है, जो अनेक प्रख्यात लेखकों की रचनाओं में आए हैं।

हेरोडोटस (Herodotus) को इतिहास का पिता कहा जाता है। इन्होंने हिस्टोरिका नामक पुस्तक की रचना की थी।

- यूनानी भाषा में लिखी गई पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी और टॉलमी की ज्योग्राफी नामक पुस्तकों में प्राचीन भूगोल और वाणिज्य के अध्ययन के लिए पर्याप्त महत्वपूर्ण सामग्री मिलती है।
- पेरिप्लस ऑफ द एरिथ्रियन सी 80 ई. से 115 ई. के मध्य किसी अज्ञात लेखक ने लिखी, जिसने लाल सागर, फारस की खाड़ी और हिंद महासागर में होने वाले रोमन व्यापार का वृत्तांत दिया है।
- टॉलमी की ज्योग्राफी 150 ई. के आस-पास की मानी जाती है। प्लिनी की नेचुरल हिस्टोरिका ईसा की पहली सदी की है। यह लैटिन भाषा में है तथा यह हमें भारत और इटली के बीच होने वाले व्यापार की जानकारी देती है।
- चीनी पर्यटकों में प्रमुख हैं- फाह्यान और ह्वेनसांग। ये दोनों बौद्ध थे और बौद्ध तीर्थों का दर्शन करने एवं बौद्ध धर्म का अध्ययन करने भारत आए थे।
- **फाह्यान:** यह गुप्त शासक चन्द्रगुप्त-II के शासन काल में भारत आया। उसने फो-क्यू-की की रचना की, जिससे गुप्त काल में भारत के सामाजिक, आर्थिक व धार्मिक परिस्थितियों पर प्रकाश पड़ता है।
- **कास्मॉस इंडिकाप्लेस्टस:** यह यूरोपीय यात्री था, जो 535 ई. में भारत आया तथा क्रिश्चियन टोपोग्राफी नामक ग्रंथ की रचना की। जिसमें भारत-श्रीलंका के व्यापारिक संबंधों का वर्णन है।
- **ह्वेनसांग ( युवान च्वांग ):** यह हर्षवर्द्धन के समय 629 ई. में भारत आया और सी-यू-की की रचना की। ह्वेनसांग के मित्र ह्वी-ली ने ह्वेनसांग की जीवनी लिखी थी। इसने हर्षकालीन राजनीति के साथ-साथ धर्म, रीति-रिवाज एवं समाज में आये परिवर्तनों का वर्णन किया है।
- **इत्सिंग:** यह 7वीं शताब्दी में भारत आया तथा नालंदा व विक्रमशिला विश्वविद्यालयों का वर्णन किया।
- **सुलेमान:** वह 9वीं शताब्दी में भारत आया तथा पाल व प्रतिहार शासकों के विषय में वर्णन किया।
- **अल्-मसूदी:** यह 941 ई. से 943 ई. तक भारत में रहा। उसने राष्ट्रकूट शासकों के विषय में लिखा।
- **अल-बरुनी:** अलबरूनी (महमूद गजनवी का समकालीन) ने तहकीक-ए-हिन्द (किताब-उल-हिन्द) की रचना की, जिसमें भारत के निवासियों की तत्कालीन दशा का वर्णन किया गया है।

**चीनी लेखकों का वर्णन**

| | लेखक | समय | रचनाएँ | यात्री विवरण |
|---|---|---|---|---|
| 1. | फाह्यान (बौद्ध भिक्षु) | 399-414 ई. | भारत दशा का विवरण | यह प्रथम चीनी या था, जिसने चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य के समय भारत की यात्रा की थी। इसने 15 वर्षों तक बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन किया। इस पर राजनीतिक स्थिति का कोई प्रभाव नहीं पड़ा, क्योंकि अपने वृत्तांत में वह किसी भी भारतीय सम्राट के नाम का उल्लेख नहीं करता। इसने गुप्तकाल में वस्तु विनिमय का माध्यम कौड़ियाँ तथा चन्द्रगुप्त मौर्य के राजप्रासाद (राजमहल) को देवनिर्मित बताया है। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 2. | शुंग-युन | 512-13 ई. | | इसने बिहार व बंगाल की तत्कालीन राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक स्थितियों का उल्लेख किया है। |
| 3. | ह्वेनसांग | 629-645 ई. | सि-यू-की (पाश्चात्य संसार के लेख) | ह्वेनसांग सम्राट हर्षवर्द्धन के समय भारत आया। इसने 15 वर्ष भारत में भ्रमण किया इसने नालंदा विश्वविद्यालय में 6 वर्ष तक अध्ययन किया तथा कुछ समय हर्ष के दरबार में रहा। इसने हर्ष को शिलादित्य की उपाधि से विभूषित किया। उसने दक्षिण भारत को छोड़कर लगभग सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया। यह यात्रियों का राजकुमार शाक्य मुनि नीति का पण्डित के नाम से जाना जाता है। |
| 4. | ह्वी-ली | 7वीं शताब्दी ई. | हेनसांग की जीवनी | यह ह्वेनसांग का मित्र था। इसने ह्वेनसांग की जीवनी लिखी थी। |
| 5. | इत्सिंग | 673-675 ई. | प्रसिद्ध बौद्ध भिक्षुओं की आत्मकथाएँ | चीनी बौद्ध यात्री जो नालंदा विश्वविद्यालय में अध्ययनरत रहा तथा इसके बारे में कहा जाता है कि वह त्रिपिटकों की 400 प्रतियाँ अपने साथ ले गया। इसके वृतांत से भारतीय समाज की धार्मिक एवं आर्थिक दशाओं पर प्रकाश पड़ता है एवं नालंदा व विक्रमशिला जैसे शिक्षण केन्द्रों की शिक्षा प्रणाली व व्यवस्था का ज्ञान होता है। |
| 6. | मात्वेन लिन | 7वीं शताब्दी | | इसने हर्षवर्द्धन के पूर्वी भारत पर आक्रमण अभियान का वर्णन किया है। |
| 7. | चाऊ जू कुआ | 1225-1254 ई. | चू-फान-ची | इससे 13वीं शताब्दी के चीनी-अरबी व्यापार का विवरण प्राप्त होता है। |

## प्रागैतिहासिक काल

- जिस काल के इतिहास का लिखित विवरण नहीं मिलता है, उसे 'प्रागैतिहासिक काल', जिस काल का लिखित विवरण मिलता है किन्तु उसे पढ़ा नहीं जा सकता उसे 'आद्य-ऐतिहासिक' काल एवं जिस काल का लिखित साक्ष्य मिलता है उसे 'ऐतिहासिक काल' कहा जाता है।
- मनुष्य की कहानी आज से लगभग दस लाख वर्ष पूर्व शुरू हुई थी, किन्तु होमोसेपियंस (ज्ञानी मानव) का प्रवेश इस धरती पर करीब 40 हजार वर्ष पूर्व हुआ।
- पुरापाषाण कालीन मानव आखेटक (शिकारी) एवं खाद्य-संग्राहक थे। उनके औजार पत्थरों के कोर एवं फ्लैक प्रणाली द्वारा बनाये गये थे, जो सोहन नदी घाटी, सिंगरौली घाटी एवं बेलन नदी घाटी से मिले हैं। इसी समय अग्नि एवं मृतक-संस्कार की परिपाटी प्रचलित हुई। भीमबेटका में मिली पर्वत गुफायें इसी काल से सम्बन्धित हैं।

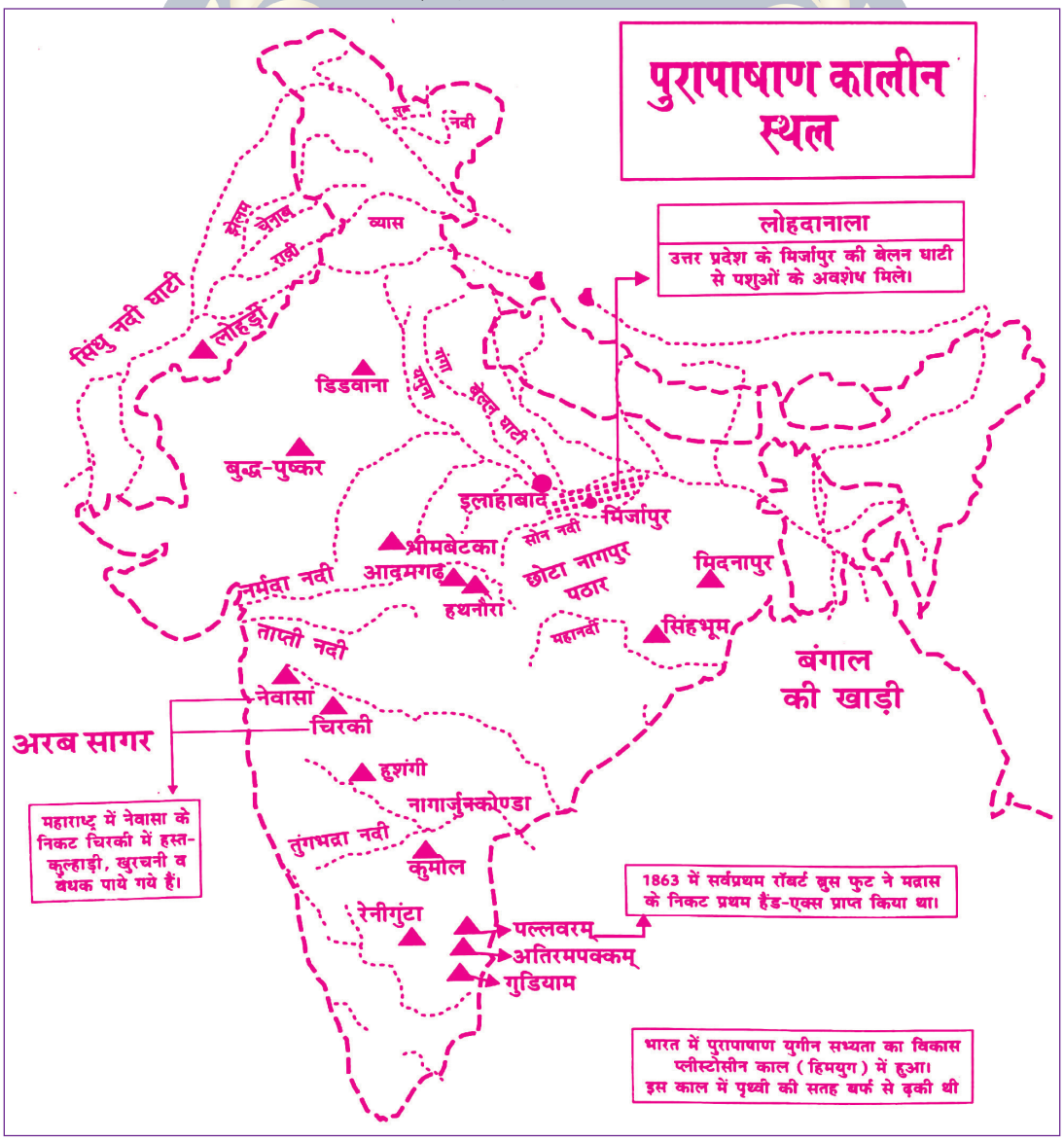

- मध्य पाषाण काल मनुष्य के विकास का वह अध्याय है, जो पुरापाषाण काल और नव पाषाण काल के मध्य में आता है। इसे प्रस्तर का काल भी कहते हैं।
- इस काल के प्रमुख औजार प्वाइंट, खुरचन, चन्द्राकार, त्रिभुजाकार जैसे कई सूक्ष्म पाषाण उपकरण थे। इन सूक्ष्म पाषाण उपकरणों को माइक्रोलिथ कहा जाता है।
- नव पाषाण काल की शुरुआत उस समय से मानी जाती है, जब मानव ने कृषि कार्य करना, पशुओं का पालन करना, पत्थर के औजारों का घर्षण और उन पर पॉलिश करना तथा मृदभाण्ड बनाना प्रारंभ कर दिया था तथा एक स्थान पर टिककर जीवन बिताने के आधार पर ग्राम समुदाय की शुरुआत हुई थी।
- नवपाषाण काल में मानव खाद्य पदार्थों का उत्पादक बन गया। कोल्डीहवा से चावल एवं मेहरगढ़ (बोलन नदी के किनारे) नामक स्थान पर कृषि कर्म आरम्भ हुआ। इसी समय स्थायी निवास, पहिया, कुम्भकारी आदि का प्रमाण मिलता है। इसी काल में मानव द्वारा सर्वप्रथम 'ताँबा' धातु की खोज की गई।
- भारत की आदिम जातियों को छः भागों में विभक्त किया जा सकता है- नीग्रेटो, नार्डिक, प्रोटो-अस्ट्रेलायड, पश्चिमी ब्रेची सेफल, मंगोलायड एवं भूमध्यसागरीय (द्रविड़)।
- मृदभांड का प्राचीनतम साक्ष्य चोपानीमांडो से मिला है।
- चिरांद (बिहार) से हड्डियों के औजार एवं बुर्जहोम से मानव के साथ कुत्ता दफनाने का अवशेष मिला है।

## हड़प्पा सभ्यता

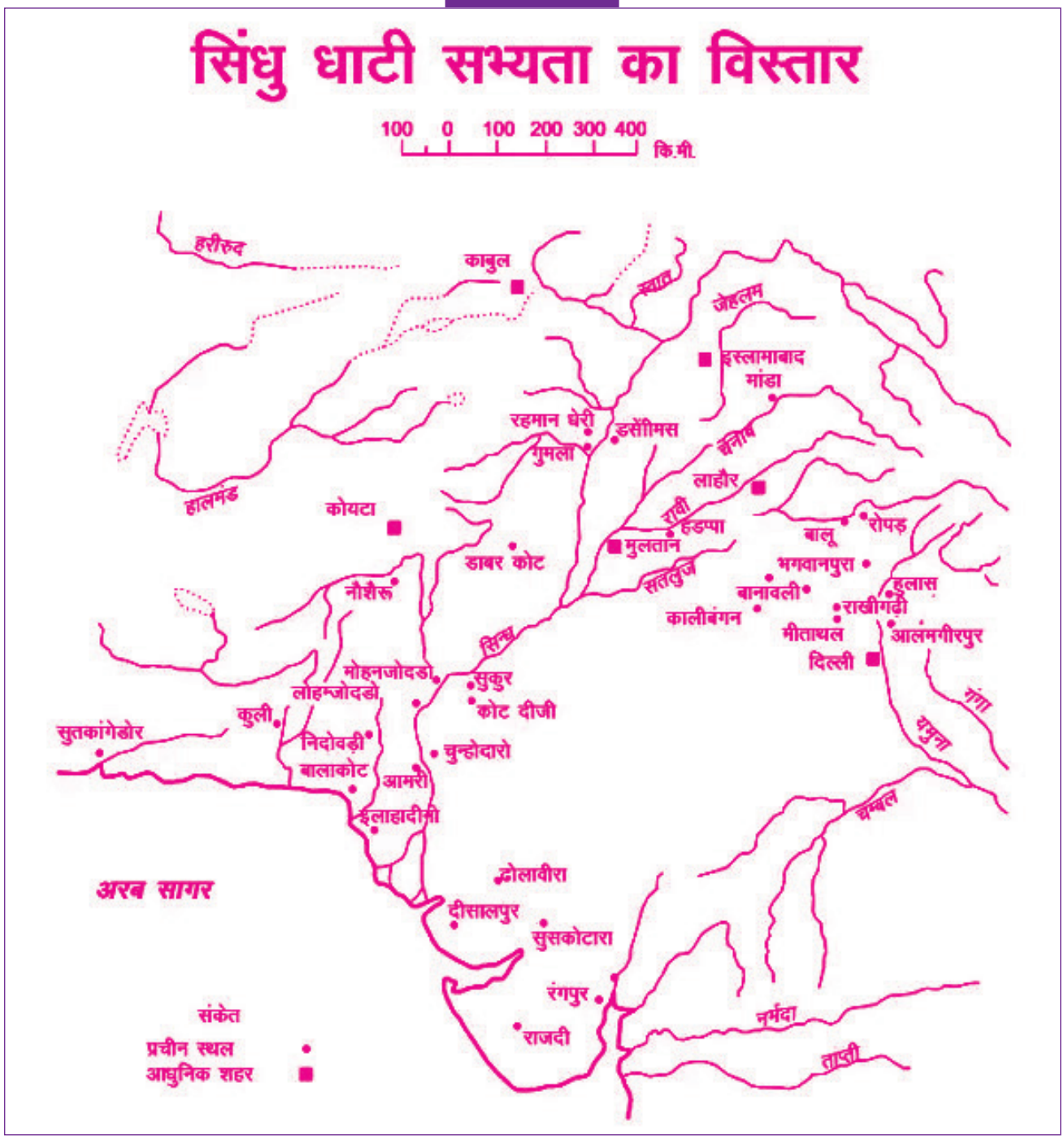


- सिंधु सभ्यता आद्य ऐतिहासिक काल से सम्बद्ध है, कारण इसकी चित्रात्मक लिपि अभी तक नहीं पढ़ी जा सकी है। इस सभ्यता का प्रथम अवशेष हड़प्पा से मिला है, जिसकी खोज का श्रेय दयाराम साहनी को जाता है।
- इस सभ्यता की मुख्य प्रजातियाँ अल्पाइन, मंगोलियन, भूमध्यसागरीय (सर्वाधिक) और प्रोटोआस्ट्रेलायड थे।
- इस सभ्यता का पश्चिमी पुरास्थल सुत्कागेनडोर (बलूचिस्तान), पूर्वी पुरास्थल आलमगीर पुर (उत्तर प्रदेश), उत्तरी पुरास्थल मांदा (जम्मू-कश्मीर, अखनूर जिला) एवं दक्षिणी पुरास्थल दैमाबाद (महाराष्ट्र-अहमदनगर जिला) है।
- हड़प्पा सभ्यता का विस्तार त्रिभुजाकार था एवं उसका क्षेत्रफल 12,99,600 वर्ग किमी था।
- हड़प्पा सभ्यता एक 'नगरीय सभ्यता' थी। किन्तु इस काल के मात्र 6 नगर परिपक्व अवस्था में मिलते हैं, ये हैं– हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ो, लोथल, कालीबंगा एवं बनवाली।
- पिग्गट ने हड़पा एवं मोहनजोदड़ो को एक विस्तृत साम्राज्य की जुड़वा राजधानी कहा है।
- व्हीलर ने हड़प्पा सभ्यता को सुमेरियन सभ्यता का उपनिवेश कहा है।
- सर जॉन मार्शल 'सिंधु सभ्यता' शब्द का प्रयोग करने वाले पहले पुरातत्वविद् थे।

- हड़प्पा से एक स्नानागार, एक श्रमिक आवास, शंख का बना बैल, पीतल का बना इक्का, ईंटों के वृत्ताकार चबूतरे एवं समाधि आर-37 (कब्रिस्तान) मिला है।
- मोहनजोदड़ो से एक अन्नागार, एक विशाल स्नानागार, सभाभवन, पुरोहित आवास, कुम्भकारों के भट्ठों के अवशेष, सूती कपड़ा, हाथी का कपाल खण्ड, सीपी की बनी हुई पटरी एवं कांसे की नृत्यरत नारी की मूर्ति के अवशेष मिले हैं।
- राणा घुण्डई के निम्न स्तरीय धरातल की खुदाई में 'घोड़े के दाँत' के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- चन्हुदड़ो से गुड़ियों के निर्माण हेतु कारखाने एवं लिपिस्टिक के अवशेष मिले हैं।
- लोथल से बंदरगाह (24×36 मीटर विस्तृत एवं 3.3 मीटर गहरी), फारस की मुहरें, युगल शवाधान, घोड़ों की लघु मृणमूर्तियाँ एवं अग्निवेदिका के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- कालीबंगा में प्राक् सैंधव संस्कृति की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि एक जुते हुए खेत का साक्ष्य है। यहीं से यज्ञ, हवन कुंड के अवशेष भी प्राप्त हुए हैं।
- रेडियो कार्बन $C^{14}$ जैसी नवीन विश्लेषण पद्धति के द्वारा हड़प्पा सभ्यता की सर्वमान्य तिथि 2350 ई.पू. से 1750 ई.पू. मानी गयी है।
- धौलावीरा तीन खण्डों में विभाजित है। यहाँ से स्टेडियम एवं जलाशय के अवशेष मिले हैं।
- हड़प्पा सभ्यता का नगर नियोजन आयताकार आकृति में किया गया था।
- यह नगर दो भागों में विभाजित था। उन लोगों ने नगरों एवं घरों के विन्यास के लिए ग्रीड पद्धति अपनाई।
- इनके घरों की खिड़कियाँ एवं दरवाजे मेन सड़क की ओर नहीं खुलते थे, किन्तु लोथल इनका अपवाद था।
- लोथल एवं रंगपुर से चावल एवं बाजरे के उत्पादन का साक्ष्य मिला है।
- बनवाली में मिट्टी का बना हुआ एक हल का खिलौना मिला है।
- सम्भवतः हड़प्पा सभ्यता के लोग ही सर्वप्रथम कपास उगाना प्रारम्भ किये।
- हड़प्पा सभ्यता की मुख्य फसलें जौ एवं गेहूँ थीं।
- लोथल एवं रंगपुर से घोड़े की मृणमूर्तियाँ एवं सुरकोतड़ा से अस्थिपंजर मिला है।
- मेसोपोटामिया के मुँहरों पर वर्णित 'मेलुहा' शब्द सिंधु क्षेत्र का प्राचीन भाग है। दिलमुन एवं माकन व्यापारिक केन्द्र मेलुहा एवं मेसोपोटामिया के बीच स्थित थे।
- हड़प्पा सभ्यता में व्यापक मात्रा में मृणमूर्तियाँ मिलती हैं, जिससे यह अनुमान लगाया जाता है कि हड़प्पा सभ्यता का समाज मातृसत्तात्मक था।
- इस सभ्यता में प्रकृति पूजा, शिव पूजा एवं कुबड़ वाला साँढ़ का विशेष प्रचलन था।
- हड़प्पावासी ऊनी एवं सूती वस्त्र दोनों का प्रयोग करते थे।
- मनोरंजन के लिए हड़प्पावासी शिकार करना, मछली पकड़ना, पशु-पक्षियों को आपस में लड़ाना एवं पासा खेलना आदि साधनों का प्रयोग करते थे।
- हड़प्पा सभ्यता में पूर्ण समाधिकरण, आंशिक समाधिकरण एवं दाहसंस्कार तीनों का प्रचलन था।
- हड़प्पा सभ्यता की अधिकांश मोहरें सेलखड़ी की बनी होती थीं।
- हड़प्पा सभ्यता के पतन का सबसे प्रभावी कारण बाढ़ को माना जाता है।
- गार्डन चाइल्ड एवं ह्वीलर के अनुसार हड़प्पा सभ्यता का विनाश विदेश (आर्य) आक्रमण से हुआ।
- हड़प्पा सभ्यता से हाथी एवं प्रत्यक्षतः घोड़े का अवशेष नहीं प्राप्त हुआ है।
- हड़प्पा सभ्यता में चाक निर्मित मृदभाण्ड बनाये जाते थे जो गुलाबी रंग के होते थे और इन पर काले रंग से ज्यामितीय डिजाइन बनाये जाते थे।

**धार्मिक प्रतीक चिन्ह**

| | प्रतीक चिन्ह | महत्व |
|---|---|---|
| 1. | तावीज | भूत-प्रेत से बचने के लिए |
| 2. | बैल | शिव का वाहन |
| 3. | स्वास्तिक | सूर्य उपासना का प्रतीक |
| 4. | योगी शिव | योगीश्वर |
| 5. | बकरा | बलि हेतु |
| 6. | श्रृंग | शिव का रुप |
| 7. | नाग | पूजा हेतु |
| 8. | भैंसा | देवता की शत्रुओं पर विजय का प्रतीक |
| 9. | युगल शवाधान | पति के साथ पत्नी का सती होना |

**विभिन्न क्षेत्रों से आयात किये गये कच्चे माल**

| कच्चा माल | क्षेत्र |
|---|---|
| टिन | अफगानिस्तान, ईरान |
| ताँबा | खेतड़ी (राजस्थान), बलूचिस्तान |
| चाँदी | ईरान, अफगानिस्तान |
| सोना | अफगानिस्तान, फारस, द. भारत |
| लाजवर्द | बदख्शा, मेसोपोटामिया |
| सेलखड़ी | बलूचिस्तान, राजस्थान |
| नीलरत्न | बदख्शां |
| सीसा | ईरान, अफगानिस्तान, राजस्थान |
| शिलाजीत | हिमालय क्षेत्र |

**सिन्धु सभ्यता के प्रमुख स्थल तथा खोजकर्ता**

| स्थल | अवस्थिति | खोजकर्ता | वर्ष | नदी |
|---|---|---|---|---|
| हड़प्पा | मोंटगोमरी (पाकिस्तान) | दयाराम साहनी, | 1921 | रावी |
| मोहनजोदड़ो | लरकाना (पाकिस्तान) | राखलदासा बनर्जी | 1922 | सिन्धु |
| रोपड़ | पंजाब | यज्ञदत्त शर्मा | 1953 | सतलज |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| लोथल | अहमदाबाद (गुजरात) | रंगनाथ राव | 1954 | भोगवा नदी |
| कालीबंगा | गंगानगर (राजस्थान) | बी.बी. लाल | 1961 | घग्घर |
| चन्हुदड़ो | सिंध प्रांत (पाकिस्तान) | एन.जी. मजूमदार | 1934 | ... |
| सुत्कागेन्डोर | द.बलूचिस्तान (पाक.) | ऑरेल स्टाइन | 1927 | दाशक |
| कोटदीजी | खैरपुर (सिंध, पाक.) | फजल अहमद खाँ | 1955 | सिन्धु |
| आलमगीरपुर | मेरठ (यू.पी.) | यज्ञदत्त शर्मा | 1958 | हिंडन |
| सुरकोतड़ा | कच्छ जिला (गुजरात) | जगपति जोशी | 1967 | ... |
| रंगपुर | काठियावाड़ (गुजरात) | रंगनाथ राव | 1953-54 | मादर |
| बालाकोट | पाकिस्तान | डेल्स | 1979 | अरबसागर |
| बनावली | हिसार (हरियाणा) | आर.एस. विष्ठ | 1973-74 | रंगोई |
| धौलावीरा | गुजरात | आर.एस. विष्ठ | 1967, 1990 | .... |
| दैमाबाद | महाराष्ट्र | | | प्रवरा |

**सिंधु सभ्यता के प्रमुख नगर**

| नगर | नदी | नगर | नदी |
|---|---|---|---|
| ❖ मोहनजोदड़ो | सिंधु नदी | ❖ बालाकोट | विंदार नदी |
| ❖ हड़प्पा | रावी नदी | ❖ सोत्काकोह | शादिकौर |
| ❖ रोपड़ | सतलज नदी | ❖ आलमगीरपुर | हिण्डन नदी |
| ❖ माँदा | चिनाब नदी | ❖ रंगपुर | मादर नदी |
| ❖ कालीबंगा | घग्गर नदी | ❖ कोटदीजी | सिंधु नदी |
| ❖ लोथल | भोगवा नदी | ❖ बनवाली | सरस्वती नदी |
| ❖ सुत्कांगेडोर | दाश्क नदी | ❖ चन्हूदड़ों | सिंधु नदी |

**सिंधु सभ्यता के पतन में इतिहासकारों का मत**

| | इतिहासकार | मत |
|---|---|---|
| 1. | गार्डन चाइल्ड व व्हीलर | सैन्धव सभ्यता विदेशी आक्रमण व आर्यों के आक्रमण से नष्ट हुई। |
| 2. | जॉन मार्शल | इस सभ्यता के विनाश के लिए भूकम्प उत्तरदायी था। प्रशासनिक शिथिलता के कारण इस सभ्यता का विनाश हुआ। |
| 3. | अर्नेस्ट मैके, जॉन मार्शल | सिंधु सभ्यता बाढ़ के कारण नष्ट हुई। |
| 4. | फेयर सर्विस | संसाधन में कमी, वनों का कटाव एवं पारिस्थितिक असंतुलन पतन का कारण था। |
| 5. | ऑरल स्टाइन | जलवायु परिवर्तन के कारण यह सभ्यता नष्ट हो गई। |
| 6. | मार्टीमर व्हीलर | हड़प्पा सभ्यता का आकस्मिक अंत हुआ था। हड़प्पा सभ्यता का आधार विदेशी था। |
| 7. | लैम्ब्रिक | जनसंख्या वृद्धि |
| 8. | एम.आर. साहनी, | यह सभ्यता भू-तात्विक परिवर्तन के कारण नष्ट हुई। |
| 9. | राइक्स व डेल्स डी. डी. कौशाम्बी | मोहनजोदड़ो के लोगों की आग लगाकर सामूहिक हत्या कर दी गई। |

## वैदिक युग

- वैदिक काल का विभाजन–ऋग्वैदिक काल (1500–1000 ई.पू.) एवं उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई.पू.) दो भागों में किया जाता है। इसके संस्थापक 'आर्य' थे।
- कस्सी अभिलेख से विदित होता है कि ईरानी आर्यों की एक शाखा भारत आई थी।
- 'आर्य' शब्द एक भाषायी समूह का व्यंजक है न कि जाति का।

**आर्यों के मूल निवास स्थल के बारे में विद्वानों के विभिन्न मत**

| | विद्वान | निवास स्थल |
|---|---|---|
| 1. | बाल गंगाधर तिलक | आर्कटिक प्रदेश (उत्तरी ध्रुव) |
| 2. | स्वामी दयानन्द सरस्वती | तिब्बत |
| 3. | डॉ. सम्पूर्णानन्द | आल्प्स पर्वत के पूर्व में यूरेशिया के निकट |
| 4. | डॉ. अविनाश चन्द्र | सप्तसैन्धव क्षेत्र |
| 5. | पं. गंगानाथ झा | ब्रह्मर्षि देश |
| 6. | डी. एस. त्रिवेदी | देविका (मुल्तान) |
| 7. | मेयर, कीथ, ओल्डर्न बर्ग | पामीर का पठार |
| 8. | विलियम जोन्स | यूरोप |
| 9. | पी. गाइल्स | हंगरी (यूरोप), डेन्यूब नदी घाटी |
| 10. | मैक्समूलर | मध्य एशिया (बैक्ट्रिया) |
| 11. | बैण्डेनिस्टन | दक्षिणी रूस |
| 12. | नेहरिंग एवं गार्डन चाइल्ड्स | दक्षिणी रूस |
| 13. | पेन्का व हर्ट | जर्मनी के मैदानी भाग |
| 14. | एल. डी. कल्ला | कश्मीर व हिमालय क्षेत्र |
| 15. | रोड्स | बैक्ट्रिया |

**वैदिक कालीन नदियाँ**

| प्राचीन नाम | आधुनिक नाम | प्राचीन नाम | आधुनिक नाम |
|---|---|---|---|
| क्रुम | कुर्रम | कुंभा | काबुल |
| वितस्ता | झेलम | आस्किनी | चिनाब |
| परुषणी | रावी | सुवस्तु | स्वात् |
| गोमती | गोमल | दृसद्वती | घग्घर |
| सदानीरा | गंडक | विपाशा | व्यास |
| शतुद्रि | सतलज | | |

- भारत में आर्य सर्वप्रथम सप्तसैन्धव प्रदेश (पंजाब एवं अफगानिस्तान) में बसे।
- आर्यों द्वारा विकसित सभ्यता एक ग्रामीण सभ्यता थी और उनकी भाषा संस्कृत थी।
- ऋग्वेद में करीब 25 नदियों का उल्लेख है जिसमें सिन्धु नदी का सर्वाधिक बार उल्लेख हुआ है एवं गंगा का एक बार और यमुना का तीन बार जिक्र आया है।
- ऋग्वेद में सर्वाधिक पवित्र नदी के रूप में 'सरस्वती' का वर्णन हुआ है।
- ऋग्वेद में आर्यों के पाँच कबीलों का उल्लेख मिलता है–पुरु, यदु, तुर्वस, अणु एवं द्रह्यू। ये पंचजन कहे जाते थे।
- ऋग्वेद के 7वें मंडल में 'दसराज्ञ युद्ध' का उल्लेख मिलता है। यह युद्ध परुष्णी (रावी) नदी के तट पर भरत वंश के राजा

सुदास, जिसके पुरोहित वशिष्ठ थे, एवं अन्य दस जनों (पंचजन एवं अकिन, पक्थ, भलानस, विषाणी और शिव) के बीच लड़ा गया, जिसमें सुदास विजयी हुआ।

| ऋग्वेद के प्रमुख मण्डल व उनके रचयिता | |
|---|---|
| **मण्डल** | **रचयिता** |
| द्वितीय | गृत्समद भार्गव |
| तृतीय | विश्वामित्र (गायत्री मंत्र का उल्लेख) |
| चौथा | वामदेव (कृषि सम्बंधी प्रक्रिया) |
| पाँचवाँ | अत्रि |
| छठा | भारद्वाज |
| सातवाँ | वशिष्ठ |
| आठवाँ | कण्व ऋषि व अंगिरस |
| नौवाँ | पवमान अंगिरा ( सोम का वर्णन) |
| दसवाँ | क्षुद्रसूक्तीय महासूक्तीय |

- ऋग्वैदिक काल में प्रशासन 'कबीलाई व्यवस्था' पर आधारित था।
- कबीला का प्रधान 'राजा' होता था, जो युद्ध में कबीला का नेतृत्व करता था। युद्ध के लिए 'गविष्ट' (गायों की खोज) शब्द का प्रयोग किया जाता था।
- आर्यों की प्रशासनिक ईकाई आरोही क्रम से इस प्रकार बँटी थी–कुल–ग्राम–विश–जन/कबीला।
- ऋग्वैदिक कालीन प्रशासन का स्वरूप राजतंत्रात्मक था, किन्तु राजा को दैवीय एवं वंशानुगत प्रतिनिधित्व नहीं प्राप्त था।

| राजा की सहायता के लिए कुछ अधिकारी होते थे | |
|---|---|
| **अधिकारी** | **कार्य** |
| पुरोहित | राजा का मुख्य परामर्शदाता |
| सेनानी | सेना का नेतृत्व करता था |
| कुलपति | परिवार का मुखिया |
| विशपति | विश का प्रधान |
| ब्रजपति | चारागाह का अधिकारी तथा कुलप को संगठित कर युद्ध मैदान में ले जाता था। |
| ग्रामणी | ग्राम का प्रधान तथा युद्ध में ग्राम का नेतृत्व करता था। |
| स्पर्श | गुप्तचर |
| दूत | यह विभिन्न राजनीतिक इकाइयों को एक दूसरे के विषय में सूचित करता था। |
| पुरुष | दुर्ग का अधिकारी होता था। |
| उग्र | अपराधियों को पकड़ता था। |

- अथर्ववेद में सभा और समिति को प्रजापति की दो पुत्रियाँ कहा गया है। ये संस्थाएँ राजा की निरंकुशता पर प्रभावशाली नियंत्रण रखती थीं। राजा 'सभा एवं समिति' नामक संस्था की सलाह से शासन चलाता था। सभा एक ग्राम संस्था थी और समिति एक केन्द्रीय संस्था थी। समिति एक राज नैतिक संस्था के रूप में कार्य करती थी। राजा समिति की बैठकों में भाग लेता था तथा समिति में ही राज्य की समस्याओं पर वाद-विवाद भी होता था।
- विदथ आर्यों की सर्वाधिक प्राचीन संस्था थी। इसे जनसभा कहा जाता था।

| | वेद | ब्राह्मण | सूक्त | उपनिषद् | अरण्यक | अध्येता | उपवेद ( प्रर्वतक ) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | ऋग्वेद | कौषितिकी, ऐतरेय | 1028 मंत्र | कौषितिकी, ऐतरेय | ऐतरेय, कौतिकी | होतृ | आयुर्वेद (प्रजापति) |
| 2. | यजुर्वेद | तैत्तरीय, शतपथ | – | तैत्तरीय, कठी, श्वेताश्वर, ईश, वृहदाण्यक, मैत्रायणी | तैत्तरीयए वृहदारण्यक, शतपथ | अध्वर्यु | धनुर्वेद (विश्वामित्र) |
| 3. | सामवेद | पंचविश (इसे ताण्ड्य ब्राह्मण भी कहते हैं) | 1810 मंत्र | केन, छान्दोग्य | जैमनीय, छांदोग्य | उद्गाता | गंधर्व वेद (नारद) |
| 4. | अथर्ववेद | गोपथ | 6000 मंत्र | माण्डुक्य, प्रश्न, मुंडक | – | ब्रह्म | शिल्पवेद (विश्वकर्मा) |

- ऋग्वेद में जन शब्द-275 बार, विश-170 बार, सभा-8 बार, समिति-9 बार एवं शूद्र एक बार आया है।
- आर्यों का समाज पितृप्रधान था। समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार या कुल थी। जिसका मुखिया 'पिता' होता था, जिसे कुलप कहा जाता था।
- स्त्रियों की स्थिति सम्माननीय थी। वे अपने पति के साथ यज्ञ कार्यों में भाग लेती थीं। पर्दा प्रथा एवं बाल-विवाह का प्रचलन नहीं था। विधवा विवाह, अन्तर्जातीय विवाह एवं पुनर्विवाह की संभावना का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है। समाज में नियोग प्रथा का प्रचलन था। स्त्रियों का भी उपनयन संस्कार होता था।
- स्त्रियाँ भी शिक्षा ग्रहण करती थीं। ऋग्वेद में लोपा, मुद्रा, घोषा, सिकता, अपाला एवं विश्वारा जैसी विदुषी स्त्रियों का जिक्र मिलता है।
- आर्यों के मनोरंजन का मुख्य साधन संगीत, रथदौड़, घुड़दौड़ एवं द्युतक्रीड़ा था।
- आर्यों की मुख्य जीविका पशुपालन एवं कृषि थी।
- आर्यों द्वारा नमक, मछली एवं कपास का प्रयोग किये जाने का उल्लेख नहीं मिलता है।
- आर्यों का प्रिय पशु घोड़ा एवं प्रिय पेय सोम रस था।
- सम्भवत: ऋग्वेद में अयस शब्द का प्रयोग ताँबे एवं कांसे के लिए होता था।
- आर्यों द्वारा खोजी गयी धातु लोहा थी, जिसे श्याम अयस कहा जाता था।
- व्यापार वस्त्र विनिमय प्रणाली से किया जाता था।
- व्यापार स्थल एवं जल मार्ग दोनों रास्तों से होता था।
- आर्यों के सर्वाधिक प्रिय देव इंद्र थे, जिनकी चर्चा ऋग्वेद के 250 सूक्तों में आयी है।
- ऋग्वैदिक धर्म की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता है, इसका व्यावहारिक एवं उपयोगितावादी स्वरूप।
- इस समय बहुदेववाद का प्रचलन था। ऋग्वेद में कुल देवताओं की संख्या 33 बताई गयी है।

## ऋग्वैदिक आर्यों ने देवताओं को तीन भागों में विभक्त किया–

1. आकाश के देवता– सूर्य, द्यौस, मित्र, पूषन, विष्णु, उषा, सविता आदि।
2. अंतरिक्ष के देवता– इन्द्र, मरूत, रूद्र, वायु आदि।
3. पृथ्वी के देवता– अग्नि, सोम, पृथ्वी, बृहस्पति तथा सरस्वती आदि।

| ऋग्वैदिक कालीन देवता | |
|---|---|
| **देवता** | **संबंध** |
| इन्द्र | युद्ध का नेता एवं वर्षा का देवता |
| अग्नि | देवता एवं मनुष्य के बीच मध्यस्थ |
| वरुण | पृथ्वी एवं सूर्य के निर्माता, समुद्र का देवता, विश्व के नियामक एवं शासक, ऋतु-परिवर्तन एवं दिन रात का कर्ता। |
| धौ | आकाश का देवता (सबसे प्राचीन एवं सर्वश्रेष्ठ) |
| सोम | वनस्पति देवता |
| उषा | प्रगति एवं उत्थान देवता |
| आश्विन | विपत्तियों को हरने वाले देवता |
| पूषण | पशुओं का देवता |
| मरुत | आँधी तूफान का देवता। |
| *ऋग्वेद में ऊषा, अदिति, सूर्या जैसी देवियों का भी उल्लेख है। | |

- इस समय मंदिर या मूर्तिपूजा का कोई प्रमाण नहीं मिलता है।
- मृतकों का अग्नि संस्कार सर्वाधिक लोकप्रिय था। फिर भी कभी-कभी मृतक को दफनाया भी जाता था।
- उत्तरवैदिक कालीन सभ्यता का मुख्य केन्द्र मध्यदेश था, जिसका प्रसार सरस्वती से लेकर गंगा के दोआब तक था।
- मगध में निवास करने वाले लोगों को अथर्ववेद में व्रात्य कहा गया है।
- उपासना भौतिक समृद्धि के लिए की जाती थी, भक्ति के लिए नहीं।

| दिशा | राज्य का नाम | दिशा | राज्य का नाम |
|---|---|---|---|
| पूर्व | सम्राट | पश्चिम | स्वराट |
| उत्तर | विराट | दक्षिण | भोज |
| मध्य | राजन | | |

- उत्तरवैदिक काल में पुरु एवं भरत कबीला मिलकर कुरु और तुर्वस एवं क्रिवि कबीला मिलकर पंचाल कहलाए।
- उत्तरवैदिक काल में आर्यों के विस्तार का मुख्य कारण लोहे का हथियार एवं अश्व चालित रथ का उपयोग था।
- सर्वप्रथम ऐतरेय ब्राह्मण में राजत्व के सिद्धान्त का प्रतिपादन हुआ है।
- 'राष्ट्र' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम उत्तरवैदिक काल में ही हुआ।
- उत्तरवैदिक काल में सभा एवं समिति तो विद्यमान रहे किन्तु विदथ का उल्लेख नहीं मिलता है। सभा एक स्थानीय अथवा ग्राम संस्था थी जबकि समिति एक केन्द्रीय संस्था थी।
- उत्तरवैदिक काल में लोगों की जीविका का मुख्य आधार कृषि हो गई।
- अथर्ववेद में एक जगह सभा को नरिष्ठा कहा गया है।

| शतपथ ब्राह्मण में 12 प्रकार के रत्नियों का विवरण दिया गया है– | | |
|---|---|---|
| 1. | सेनानी | सेनापति |
| 2. | सूत | राजा का सारथी |
| 3. | ग्रामणी | गाँव का मुखिया |
| 4. | भागदूध | कर संग्रहकर्ता |
| 5. | संग्रहीता | कोषाध्यक्ष |
| 6. | अक्षवाय | पासे के खेल में राजा को सहयोग देने वाला |
| 7. | क्षता | प्रतिहारी |
| 8. | गोविकर्ता | जंगल विभाग का प्रधान अधिकारी |
| 9. | पालागल | राजा का मित्र या विदूषक |
| 10. | महिषी | मुख्य रानी |
| 11. | पुरोहित | धार्मिक कृत्य करने वाला |
| 12. | युवराज | युवराज |

| षडदर्शन | | | |
|---|---|---|---|
| **दर्शन** | **प्रतिपादक** | **दर्शन** | **प्रतिपादक** |
| न्याय | गौतम (न्यायसूत्र) | वैशेषिक | कणाद या उलूक |
| योग | पतंजलि (योगसूत्र) | सांख्य | कपिल |
| पूर्व मीमांसा | जैमिनी | उत्तर मीमांसा | बादरायण |

- उत्तवैदिक काल में राजा के राज्याभिषेक के समय राजसूय यज्ञ का अनुष्ठान किया जाता था।
- उत्तरवैदिक कालीन मृदभाण्ड चित्रित धूसर मृदभाण्ड (PGW) हैं।
- उत्तरवैदिक काल में निष्क, शतमाण, पाद तथा कृष्णल एवं मान की भिन्न-भिन्न इकाइयाँ थीं। किन्तु इस काल में किसी खास भार, आकृति एवं मूल्य के सिक्कों के प्रचलन का कोई प्रमाण नहीं मिलता है।
- उत्तर वैदिक काल में जाति व्यवसाय के बजाय जन्म के आधार पर निर्धारित होने लगी।
- उत्तवैदिक काल में ही सर्वप्रथम गोत्र एवं तीन आश्रम व्यवस्था का उल्लेख हुआ है।
- जाबलोपनिषद में सबसे पहले चारों आश्रमों का एक साथ उल्लेख मिलता है।
  - ब्रह्मचर्य आश्रम
  - गृहस्थ आश्रम
  - वानप्रस्थ आश्रम
  - सन्यास आश्रम
- ऋग्वैदिक काल की तुलना में इस काल में स्त्रियों की स्थिति में गिरावट आयी। अब सभा और समिति में इनके प्रवेश का अधिकार नहीं रहा।
- मैत्रायणी संहिता में स्त्रियों की तुलना पासा और सुरा से की गयी है।
- वृहदारण्यक उपनिषद में याज्ञवल्क्य एवं गार्गी के बीच वाद-विवाद का उल्लेख है।
- उत्तरवैदिक काल में यज्ञीय कर्मकाण्डों में जटिलता एवं भव्यता आ गई।

- उत्तरवैदिक काल में इन्द्र के स्थान पर प्रजापति सर्वाधिक प्रिय देवता हो गए।
- उत्तर वैदिक काल में प्रजापति सृष्टि के रचयिता, विष्णु विशव के रक्षक एवं पूषण शूद्रों के देवता माने जाने लगे।
- पुनर्जन्म की अवधारणा पहली बार वृहदारयण्यक उपनिषद में आयी है।
- उत्तरवैदिक काल में ही षडदर्शन का बीजारोपण हुआ। इस षडदर्शन में सांख्य दर्शन भारत के सभी दर्शनों में सबसे प्राचीन है।

## जैन धर्म

- जैन धर्म के संस्थापक एवं प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव थे।
- जैन धर्म के तेइसवें एवं प्रथम ऐतिहासिक तीर्थंकर पार्श्वनाथ थे।
- पार्श्वनाथ काशी के इक्ष्वाकु वंशीय राजा अश्वसेन के पुत्र थे। 30 वर्ष की अवस्था में उन्होंने घर का त्याग कर सम्मेयपर्वत पर कठोर तपस्या कर 84वें दिन कैवल्य की प्राप्ति की। इसके अनुयायियों को निर्ग्रंथ कहा गया। केशि पार्श्वनाथ के प्रमुख समर्थकों में से था।
- महावीर जैन धर्म के 24वें एवं अन्तिम तीर्थंकर थे।
- जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक के रूप में महावीर स्वामी जाने जाते हैं।
- महावीर का जन्म 540 ई.पू. में वैशाली के निकट कुण्डग्राम में हुआ था। इनके पिता सिद्धार्थ ज्ञातृक गण के सरदार थे एवं माता त्रिशला लिच्छवी राजा चेटक की बहन थीं। उनके पत्नी का नाम यशोदा (कुण्डिन्य गोत्र), पुत्री का नाम अर्नोज्जा प्रियदर्शनी एवं दामाद का नाम जमाली (प्रथम अनुयायी) था।
- महावीर के बचपन का नाम वर्द्धमान था।
- महावीर ने 30 वर्ष की उम्र में माता-पिता की मृत्यु के पश्चात् अपने बड़े भाई नंदिवर्धन से अनुमति लेकर गृह त्याग किया। 12 वर्ष तपस्या के उपरान्त 42 वर्ष की आयु में जृम्भिक ग्राम के समीप ऋजुपालिका नदी के तट पर साल वृक्ष के नीचे कैवल्य (ज्ञान) प्राप्त हुआ था।

| 24वें तीर्थंकर महावीर | |
|---|---|
| जन्म | 540 ई.पू. |
| जन्मस्थल | वैशाली के कुण्डग्राम के निकट बिहार |
| पिता | सिद्धार्थ (वज्जि संघ के कुण्डग्राम के ज्ञातृक क्षत्रिय कुल के प्रधान) |
| माता | त्रिशला (लिच्छवी शासक चेटक की बहन) |
| बचपन का नाम | वर्द्धमान महावीर |
| पत्नी | यशोदा (कुण्डिय गोत्र के राजा समरवती की कन्या) |
| पुत्री | प्रियदर्शना (अणोज्जा) |
| दामाद | जमालि/जामालि (प्रथम विरोधी) (ज्ञान प्राप्ति के 14वें वर्ष) |
| शिष्य | मक्खलि पुत्र गोशाल (आजीवक संप्रदाय के संस्थापक) |
| प्रथम शिष्य | जमालि/जामालि (दामाद) |
| द्वितीय विरोधी | तीसगुप्त (ज्ञान प्राप्ति के 16वें वर्ष ) |
| गृह त्याग | 30 वर्ष की आयु में बड़े भाई नन्दिवर्द्धन की आज्ञा से। |
| ज्ञान प्राप्ति | 12 वर्ष की तपस्या के पश्चात्। |
| ज्ञान प्राप्त स्थल | जृम्भिक ग्राम में ऋजुपालिका नदी के तट पर। |
| साल वृक्ष | इसी वृक्ष के नीचे ज्ञान प्राप्ति |
| प्रमुख उपदेश | राजगृह में वितुलाचल पहाड़ी पर स्थित वाराकर नदी के तट पर। |
| प्रमुख उपाधि | केवलिन (कैवल्य-सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त व्यक्ति), जिन (विजेता), निर्ग्रन्थ ( बंधनरहित), अर्हत् (पूज्य)। |
| जीवन के अंत में निर्वाण | पावापुरी (राजगृह) बिहार में 72 वर्ष की आयु में 468 ई. में सस्तिपाल के यहाँ (मल्ल गणराज्य जीवन के अंत में निर्वाण के प्रधान का शासित क्षेत्र)। |

- कैवल्य प्राप्त हो जाने के बाद महावीर स्वामी को केवलिन, जिन (विजेता), अर्हत (योग्य) एवं निर्ग्रन्थ (बन्धन रहित) जैसी उपाधियाँ मिलीं।
- प्रथम जैन भिक्षुणी दधिवाहन की पुत्री चम्पा थी।
- महावीर ने अपने शिष्यों को गणधरों में विभाजित किया था।
- आर्य सुधर्मा अकेला ऐसा गणधर था जिसकी मृत्यु महावीर की मृत्यु के बाद हुई। वह जैन धर्म का प्रथम थेरा अथवा मुख्य उपदेशक कहलाता है। इसके बाद जम्बूस्वामी ने नेतृत्व अपने हाथ में ले लिया। जम्बूस्वामी अंतिम केवलिन थे।
- महावीर ने 72 वर्ष की उम्र में राजगीर के निकट पावापुरी (मल्लराजा सस्तिपाल के राजप्रसाद) में निर्वाण प्राप्त किया।
- महावीर ने पार्श्वनाथ के चार महाव्रतों (अहिंसा, सत्य, अस्तेय एवं अपरिग्रह) में एक पाँचवाँ महाव्रत जोड़ा, वह था–ब्रह्मचर्य।
- जैन धर्म में पूर्व जन्म के कर्मफल को समाप्त करने एवं इस जन्म के कर्मफल से बचने के लिए त्रिरत्नों के पालन की बात की गयी है।
- जैन धर्म के त्रिरत्न हैं– (1) सम्यक् दर्शन (2) सम्यक् ज्ञान और (3) सम्यक् आचरण।
- जैन धर्म आत्मा, पुनर्जन्म एवं कर्मवाद में विश्वास करता है एवं ईश्वर को नहीं मानता।
- जैन धर्म के दार्शनिक विचार सांख्य दर्शन से काफी प्रभावित हैं।
- जैन धर्म के सिद्धान्त को अनेकांतवाद, स्यादवाद, सप्तभंगी सिद्धान्त आदि नामों से भी जाना जाता है।
- जैनधर्मानुसार यह संसार 6 द्रव्यों जीव, पुद्गल (भौतिक तत्व), धर्म, अधर्म, आकाश एवं काल से निर्मित है।
- पहली जैन संगीति 322 ई.पू. में चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में पाटलिपुत्र में आयोजित की गई। इसके अध्यक्ष स्थूलभद्र हुए। इसमें मात्र 11 अंगों का संकलन हुआ, क्योंकि 12वां अंग किसी को याद नहीं था। इस संगीति में जैन धर्म दो सम्प्रदायों दिगम्बर एवं श्वेताम्बर में विभाजित हो गया।
- दूसरी जैन संगीति 512 ई. में वल्लभी (गुजरात) में देवाधिक्षमाश्रमण की अध्यक्षता में हुई थी। इसमें अन्तिम रूप से जैनधर्म ग्रंथों को संकलित एवं लिपिबद्ध किया गया।
- दिगम्बर सम्प्रदाय का संस्थापक भद्रबाहु था। भद्रबाहु ने कल्पसूत्र की रचना की, जिसमें विभिन्न जैन तीर्थंकरों का जीवन वर्णित है।
- जैन धर्म ने प्राकृत भाषा को अपनाया और इसके धार्मिक ग्रंथ अर्धमगधी में लिखे गये।

- जैनधर्म के मानने वाले कुछ राजा थे– उदयन, नंदराजा, चंद्रगुप्त मौर्य, सम्प्रति, कलिंग नरेश खारवेल, राष्ट्रकूट राजा अमोघवर्ष, गंग वंश, कदम्ब वंश एवं चालुक्य वंश के कुछ राजा।
- पटना के लोहानीपुर से जैन मूर्ति प्राप्त हुई है।
- कुषाण काल में मथुरा जैन कला का एक महत्वपूर्ण केन्द्र था।

| जैन तीर्थंकर एवं उनके प्रतीक | | | |
|---|---|---|---|
| ऋषभदेव | सांड | अजितनाथ | हाथी |
| सम्भवनाथ | घोड़ा | नेमिनाथ | शंख |
| मुनि सुव्रत | कच्छप | मल्लिनाथ | कलश |
| पार्श्वनाथ | सर्प | महावीर | सिंह |

- राजस्थान में आबू पहाड़ पर वस्तुपाल एवं तेजपाल ने संगमरमर का दिलवाड़ा का जैन मंदिर बनवाया।
- कर्नाटक के श्रवणवेलगोला में गंग-वंश के मंत्री चामुण्डा ने विशाल बाहुबलि की मूर्ति (गोमतेश्वर की मूर्ति) का निर्माण करवाया।
- खजुराहों में पार्श्वनाथ एवं आदिनाथ का मंदिर चंदेल शासकों ने बनवाया।
- उड़ीसा में हाथी गुम्फा मंदिर जैनधर्म से संबंधित है।
- जैनधर्म में पाँच प्रकार के ज्ञान थे– मति, श्रुति, अवधि, मन:पर्याय एवं कैवल्य।
- जैन धर्म के अनुसार सजीव और निर्जीव सभी में आत्मा का वास है।

| जैन धर्म | |
|---|---|
| जैन धर्म के चौबीसवें एवं अन्तिम तीर्थंकर महावीर का जन्म कब और कहाँ हुआ था | 540 ई.पू. में, बिहार के वैशाली के निकट कुण्डग्राम में |
| महावीर के बचपन का नाम | वर्द्धमान |
| जैन धर्म के चौबीसवें एवं अन्तिम तीर्थंकर तथा प्रवर्तक | महावीर |
| महावीर की पत्नी का नाम | यशोदा |
| जैन तीर्थंकरों की जीवनी कल्पसूत्र किसके द्वारा रचित है | भद्रबाहु |
| जैन धर्म के प्रमुख सिद्धान्तों की स्थापना किसने की | पार्श्वनाथ |
| जैन धर्मग्रन्थों की रचना किस भाषा में हुई | प्राकृत |
| जैन धर्म के तेइसवें तीर्थंकर | पार्श्वनाथ |
| महावीर स्वामी की मृत्यु कहाँ हुई | पावापुरी (बिहार) |
| कपडे नही पहनते है | दिगम्बर |
| जैन धर्म के संस्थापक | ऋषभदेव |
| पहली जैन सभा कब हुई | 322 ई.पू. |
| जैन धर्म में तीर्थंकर किसे कहा जाता है | जैन धर्म के संस्थापकों एवं प्रवर्त्तकों को |
| महावीर के पिता किस कुल के सरदार थे | ज्ञात्रक कुल |
| महावीर ने अपने शिष्यों को कितने गणधरों में विभाजित किया था | 11 |
| जैन धर्म कितने भागो में बंटा है | 2 |
| जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव का जन्म कहाँ हुआ था | अयोध्या के सूर्यवंश में |
| महावीर स्वामी का जन्म कब हुआ था | 540 ई.पू. |
| सफेद कपडे पहनते है | श्वेताम्बर |
| जैन धर्म में कुल कितने तीर्थंकर हुए | 24 |
| महावीर स्वामी की मृत्यु कब हुई | 468 ई.पू. |
| महावीर ने अपने उपदेश किस भाषा में दिए | प्राकृत |
| महावीर के माता एवं पिता का नाम | महावीर की माता का नाम त्रिशला एवं पिता का नाम सिद्धार्थ था। |
| पहली जैन सभा कहाँ पर हुई | पाटलिपुत्र |
| प्रथम तीर्थंकर का नाम | ऋषभदेव |

## बौद्ध धर्म

- बौद्ध धर्म के प्रवर्तक बुद्ध (शाक्य मुनि बचपन का नाम सिद्धार्थ) का जन्म 563 ई.पू. में शाक्य गणराज्य की राजधानी कपिलवस्तु के लुंबिनी नामक ग्राम में वैशाख पूर्णिमा के दिन हुआ था।
- इनके पिता शुद्धोधन शाक्य गण के मुखिया एवं माता महामाया कोलियवंशी थीं।
- महामाया की मृत्यु बुद्ध के जन्म के सातवें दिन हो गयी एवं उनका लालन-पालन उनकी मौसी (सौतेली माँ) प्रजापति गौतमी ने किया था।
- 16 वर्ष की अवस्था में सिद्धार्थ का विवाह शाक्य कुल की कन्या यशोधरा (अन्य नाम- बिम्बा, गोपा, मदकच्छना) से हुआ था, जिससे उनको राहुल नामक पुत्र प्राप्त हुआ।
- राजकुमार सिद्धार्थ ने कपिलवस्तु के भ्रमण के दौरान चार ऐसे दृश्य देखे जिससे उनको विरक्ति उत्पन्न हो गई। वे दृश्य क्रमश: इस प्रकार के थे– (1) बूढ़ा व्यक्ति (2) एक बीमार व्यक्ति (3) शव और (4) एक सन्यासी।
- 29 वर्ष की अवस्था में सिद्धार्थ ने सांसारिक दु:खों से व्यथित होकर चुपके से गृह-त्याग किया, जिसे बौद्ध धर्म में महाभिनिष्क्रमण कहा गया है।
- गृहत्याग के उपरान्त सिद्धार्थ ने सर्वप्रथम वैशाली के आलारकलाम से सांख्य दर्शन की शिक्षा प्राप्त की। अत: वे सिद्धार्थ के प्रथम गुरु हुए। इसके बाद उन्हें रुद्रकरामपुत्त से शिक्षा प्राप्त हुई।
- इन शिक्षाओं ने सिद्धार्थ को संतुष्ट नहीं किया। फलस्वरूप वे वैशाली, राजगृह होते हुए गया के समीप उरुवेला के सुरम्य वनस्थली में पहुँचे।
- उरुवेला में सिद्धार्थ (गोत्र-गौतम) को कौण्डिन्य, वप्पा, भादिया, महानामा एवं अस्सागी नामक पांच साधक मिले।
- बुद्ध ने अपना प्रथम उपदेश सारनाथ (ऋषिपत्तनम् या मृगदाव) में पाँच ब्राह्मण संन्यासियों को दिया। जिसे बौद्धधर्म में धर्मचक्रप्रवर्तन के नाम से जाना जाता है।
- बिना अन्न-जल ग्रहण किये हुए 6 वर्ष की कठिन तपस्या के बाद 35 वर्ष की आयु में वैशाख पूर्णिमा की रात निरंजना नदी के किनारे एक पीपल वृक्ष के नीचे सिद्धार्थ को ज्ञान प्राप्त हुआ। इसके बाद वे बुद्ध एवं तथागत कहलाये।
- बुद्ध के नजदीकी शिष्यों में 'आनन्द, उपालि, सारिपुत्र, मौदगल्यायन, देवदत्त आदि थे। जिनमें सर्वाधिक नजदीक आनन्द थे।

- इनके प्रमुख अनुयायी शासकों में बिम्बिसार, प्रसेनजित तथा उदयन थे।
- बुद्ध ने अपने उपदेश मगध, कौशल, वैशाली, कौशाम्बी एवं अन्य अनेक राज्यों में दिये।
- बुद्ध ने अपने जीवन के सर्वाधिक उपदेश कोशल देश की राजधानी श्रावस्ती में दिये।

| बौद्ध धर्म के वास्तविक संस्थापक : महात्मा बुद्ध | |
|---|---|
| जन्म | 563 ई.पू. |
| जन्मस्थल | लुम्बिनी वन (कपिलवस्तु- वर्तमान रुम्मिनदेई, नेपाल) |
| पिता | शुद्धोधन (शाक्यों के राज्य कपिलवस्तु के शासक) |
| माता | महामाया देवी (कोलिय गणराज्य) |
| बचपन का नाम | सिद्धार्थ (गोत्र- गौतम) |
| पालन पोषण | विमाता प्रजापति गौतमी |
| विवाह | 16 वर्ष की अवस्था में (यशोधरा-कोलिय गणराज्य की राजकुमारी) |
| पुत्र | राहुल |
| गृह त्याग की घटना | महाभिनिष्क्रमण |
| सारथी | चन्ना |
| घोड़ा | कंथक |
| ध्यान गुरु / प्रथम गुरु | अलार कालाम |
| ज्ञान प्राप्ति | 35 वर्ष की आयु में वैशाख पूर्णिमा के दिन बुद्ध कहलाए। |
| ज्ञान प्राप्ति स्थल | गया (बोधगया, बिहार) निरंजना नदी का तट (घटना सम्बोधि) |
| वट / पीपल वृक्ष | इसी वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति |
| प्रथम उपदेश (पाली भाषा) | स्थल- ऋषि पत्तन (सारनाथ) स्थान वाली-पाँच ब्राह्मण (पंचवर्गीय) घटना धर्मचक्र प्रवर्तन |
| शिष्य | आनंद व उपालि |
| धर्मप्रचार का स्थल | शाक्य, काशी, मगध, अंग, मल्ल, वज्जि, कोशल राज्य। |
| जीवन का अंत | 483 ई.पू., आयु 80 वर्ष, दिन-वैशाख पूर्णिमा, स्थल-कुशीनगर (उत्तर प्रदेश), कसिया गाँव-महापरिनिर्वाण (मृत्यु के बाद)। |

- 483 ई.पू. कुशीनगर में बुद्ध ने अपना शरीर त्याग किया। जिसे बौद्ध धर्म में महापरिनिर्वाण के नाम से जाना जाता है। मृत्यु से पहले बुद्ध का अन्तिम वर्षाकाल वैशाली था।
- बुद्ध ने बौद्ध धर्म का प्रचार पालि भाषा में किया।
- बुद्ध के पंचशील सिद्धांत का स्रोत छांदोग्य उपनिषद एवं अष्टांगिक मार्ग का स्रोत तैत्तरीय उपनिषद है।
- प्रतीत्य समुत्पाद बुद्ध के उपदेशों का सार एवं उनके सम्पूर्ण दर्शन का आधार स्तम्भ है।
- बुद्ध अनात्मवादी एवं अनीश्वरवादी थे पर पुनर्जन्म में विश्वास करते थे।
- कमल एवं साँढ़ बुद्ध के जन्म का, घोड़ा-गृहत्याग का, पीपल-ज्ञान का, पदचिन्ह निर्वाण का एवं स्तूप-मृत्यु का प्रतीक है।
- बुद्ध ने सांसारिक दु:खों के सम्बन्ध में चार आर्य सत्यों का उपदेश दिया है– (1) दु:ख (2) दु:ख समुदाय (3) दु:ख निरोध एवं (4) दु:ख निरोधगामिनी प्रतिपदा।
- इन सांसारिक दु:खों से मुक्ति हेतु बुद्ध ने अष्टांगिक मार्ग की बात कही, जो है– (1) सम्यक् दृष्टि (2) सम्यक् संकल्प, (3) सम्यक् वाणी (4) सम्यक् कर्मान्त, (5) सम्यक् आजीव (6) सम्यक् व्यायाम (7) सम्यक् स्मृति एवं (8) सम्यक् समाधि।

**बौद्ध धर्म के प्रसार के कारण**

महात्मा बुद्ध की मृत्यु के उपरान्त उनकी शिक्षाओं को संकलित कर तीन पिटकों में विभाजित किया गया।

**त्रिपिटक**

| | नाम | स्वरूप | विषय |
|---|---|---|---|
| 1. | सुत्तपिटक | पिटकों में बृहत्तम | बुद्ध के उपदेशों व संवादों का संकलन |
| 2. | विनयपिटक | पिटकों में लघुतम | बौद्ध संघ के आचार-विचार व नियम-निषेध का संकलन |
| 3. | अभिधम्मपिटक | पिटकों में माध्यम | बुद्ध के आध्यात्मिक व दार्शनिक विचारों का संकलन |

- बुद्ध के अनुसार इन अष्टांगिक मार्गों के पालन करने के उपरान्त मनुष्य की भव तृष्णा नष्ट हो जाती है और उसे निर्वाण (दीपक का बुझ जाना) प्राप्त हो जाता है; अर्थात् व्यक्ति जीवन-मरण के चक्र से मुक्त हो जाता है।

**बौद्ध समितियाँ**

| क्रम | वर्ष | स्थान | शासक | अध्यक्ष | कार्य |
|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम | 483 ई.पू. | राजगृह (सप्तपर्णिगुफा) | अजातशत्रु | महाकस्सप | सूत्त पिटक एवं विनय पिटक का संकलन |
| द्वितीय | 383 ई.पू. | वैशाली | कालाशोक | साबकमीर | बौद्ध धर्म-स्थविर एवं महासंघिक में बँटा |
| तृतीय | 251 ई.पू. | पाटलिपुत्र | अशोक | मोग्गलिपुत्त तिस्स | अभिधम्म पिटक का संकलन |
| चतुर्थ | प्रथम शताब्दी ई. | कश्मीर (कुण्डलवन) | कनिष्क | वसुमित्र, अश्वघोष (उपाध्यक्ष) | विभाषशास्त्र नामक टीका एवं बौद्ध धर्म-हीनयान और महायान में विभाजित |

- बुद्ध ने मध्यम मार्ग (मध्यमा-प्रतिपद) का उपदेश दिया है।
- महात्मा बुद्ध ने निर्वाण प्राप्ति को सरल बनाने हेतु दस शीलों पर विशेष बल दिया है– (1) अहिंसा (2) सत्य (3) अस्तेय (4) व्यभिचार से बचना (5) शराब के सेवन से बचना (6) समय से भोजन ग्रहण करना (7) कोमल शैय्या पर सोने से बचना (8) धन संचय से बचना (9) स्त्रियों से दूर रहना (10) नृत्यगान आदि से दूर रहना।
- बौद्ध धर्म के अनुयायी दो भागों में विभाजित हैं– भिक्षुक एवं उपासक।
- बौद्ध धर्म के त्रिरत्न हैं– बुद्ध, संघ एवं धम्म। बुद्ध द्वारा स्थापित संघ की सभा में प्रस्ताव पाठ को अनुसावन कहते थे। संघ में प्रवेश पाने को 'उपसम्पदा' कहा जाता था।

- बौद्ध संघ का संगठन गणतंत्र प्रणाली पर आधारित था। संघ में 15 वर्ष से कम, चोर, हत्यारे, ऋणी व्यक्तियों, राजा के सेवक, दास तथा रोगी का प्रवेश वर्जित था।
- बुद्ध ने आनन्द के अनुरोध पर संघ में पहली बार वैशाली में महिलाओं को प्रवेश दिया। संघ में प्रवेश पाने वाली पहली महिला प्रजापती गौतमी थी।
- महायान (सुधारवादी) सम्प्रदाय-तिब्बत, चीन, कोरिया, मंगोलिया एवं जापान में हैं। महायान, शून्यवाद (माध्यमिक) एवं विज्ञानवाद (योगाचार) में विभाजित हुआ। शून्यवाद के प्रवर्तक नागार्जुन हैं और विज्ञानवाद के मैत्रेयनाथ थे। आसंक तथा वसुबन्ध द्वारा इसका प्रचार किया गया।
- हीनयान (रूढ़िवादी) सम्प्रदाय श्रीलंका, बर्मा (म्यांमार), जावा आदि देशों में फैला हुआ है। हीनयान, वैभाषिक एवं सौत्रान्तिक में विभाजित हुआ। वैभाषिक मत मुख्यत: कश्मीर में प्रचलित है।
- वज्रयान (तंत्र-मंत्र प्रभावित) सम्प्रदाय बौद्ध धर्म के पतन का कारक है। इस सम्प्रदाय का सिद्धान्त मंजुश्रीमूलकल्प एवं गुहा समाज नामक ग्रंथ में मिलता है।
- वेलुवन एवं जेतवन बुद्ध के वर्षा काल का निवास स्थान था। वेलुवन का निर्माण बिम्बिसार ने तथा जेतवन का निर्माण जेतराजकुमार ने करवाया था।
- ह्वेनसांग भारत नालंदा विश्वविद्यालय में पढ़ने और बौद्ध ग्रंथ संग्रह करने के उद्देश्य से आया था। ह्वेनसांग के समय शीलभद्र नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति थे।
- बोध गया के स्तूप ग्रेनाईट या पत्थर के बने हैं।
- अमरावती स्तूप घंटाकृति में बना है। इसमें पाषाण के स्थान पर संगमरमर का प्रयोग हुआ है।
- नागार्जुन कोण्डा एवं जग्गरयमपेट्ट स्तूप इक्ष्वाकु शासकों ने बनवाया।
- धम्मेक स्तूप (सारनाथ) धरातल पर ईंट से निर्मित है।
- ह्वेनसांग के अनुसार गुप्त सम्राट नरसिंह गुप्त बालादित्य ने नालन्दा में 80 फुट ऊँची ताँबे की बुद्ध प्रतिमा को स्थापित करवाया।
- जावा के शैलेन्द्र शासक बालपुत्र देव ने मगध नरेश देवपाल की अनुमति से नालन्दा में जावा के भिक्षुओं के निवास के लिए एक विहार का निर्माण करवाया।
- फाह्यान ने नालन्दा में बुद्ध के शिष्य सारिपुत्र के अस्थियों पर निर्मित स्तूप का उल्लेख किया।

## अन्य धर्म

### वैष्णव (भागवत) धर्म

- इस धर्म के प्रवर्तक कृष्ण, वृष्णि कबीले के थे, जिनका निवास स्थान मथुरा था।
- सर्वप्रथम छान्दोग्य उपनिषद में देवकी पुत्र एवं अंगिरस के शिष्य के रूप में कृष्ण का उल्लेख आया है। कृष्ण के समर्थक इन्हें भागवत् (पूज्य) कहते थे।
- मत्स्य पुराण में विष्णु के दस अवतारों का जिक्र मिलता है। ये दस हैं– क्रमश: मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, राम, बलराम, बुद्ध एवं कल्कि (आने वाला)। इसमें बराह अवतार का प्रथम उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है।
- अवतारवाद का सर्वप्रथम स्पष्ट उल्लेख भगवद्गीता में मिलता है।
- वैष्णव धर्म में ईश्वर को प्राप्त करने का साधन ज्ञान, कर्म और भक्ति को माना गया है, जिसमें सर्वाधिक महत्व भक्ति को दिया गया है।
- तमिल प्रदेश में यह धर्म अलवार सन्तों के माध्यम से विकसित हुआ। इन सन्तों की संख्या करीब बारह थी। इन सब में तिरुमंगई सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं आण्डाल महिला संत थीं।
- पंचरात्र, व्यूहवाद एवं चतुर्व्यूह सिद्धान्त भागवत धर्म से संबद्ध थे।
- पाँच वृष्णि नाम थे– संकर्षण, वासुदेव कृष्ण, प्रद्युम्न, साम्ब एवं अनिरुद्ध।
- रामानुज-ब्रह्मसूत्र, रामदास-दासबोध एवं रामानन्द- आध्यात्म रामायण लिखे।
- नारायण का प्रथम उल्लेख शतपथ ब्राह्मण में मिलता है।

### शाक्त धर्म

- उपासना पद्धति में शाक्तों के दो वर्ग हैं– कौलमार्गी एवं समयाचारी।
- ऋग्वेद के दशम मंडल में एक पूरा सूक्त ही शक्ति की उपासना में विवृत है, जिसे तांत्रिक देवी सूक्त कहते हैं।
- चौसठ योगिनी का मंदिर (जबलपुर) से शाक्त धर्म के विकास और प्रगति को प्रमाणित करने का साक्ष्य उपलब्ध होता है।

### शैव धर्म

- ऋग्वेद में शिव के लिए रुद्र नामक देवता का उल्लेख है। अथर्ववेद में शिव को भव, शर्व, पशुपति, भूपति कहा गया है।
- लिंग पूजा का पहला स्पष्ट वर्णन मत्स्य पुराण में मिलता है, किन्तु शिव उपासना का पहला प्रमाण हड़प्पा सभ्यता से मिलता है। महाभारत के अनुशासन पर्व से भी लिंग पूजा का उल्लेख मिलता है।
- शिव की प्राचीनतम मूर्ति गुडीमल्लम लिंग रेनुगुंटा से मिली है।
- गुप्तकाल में सर्वप्रथम शिव एवं पार्वती की संयुक्त मूर्तियों के निर्मित होने का प्रमाण मिलता है। इस समय भूमरा एवं नचना कुठार में शिव-पार्वती मंदिर का निर्माण हुआ।
- ऐलोरा के प्रसिद्ध कैलाश मंदिर का निर्माण राष्ट्रकूट शासक कृष्ण प्रथम ने करवाया।
- तंजौर के राजराजेश्वर शैव मंदिर का निर्माण चोल शासक राजाराम प्रथम ने करवाया।
- वृहदीश्वर मंदिर का निर्माण राजेन्द्र चोल ने करवाया।
- कुषाण शासकों की मुद्राओं पर शिव एवं नन्दी का एक साथ अंकन प्राप्त होता है।
- दक्षिण भारत में शैव धर्म के प्रसार में मुख्य योगदान नयनार सन्तों का है। इनमें अप्पार, तिरुज्ञान, सम्बन्दर, सुन्दर मूर्ति एवं मणिक्कवाचगर आदि विशेष महत्वपूर्ण हैं।

- वामन पुराण में शैव सम्प्रदाय की संख्या चार बतायी गयी है। ये हैं शैव, पशुपत, कापालिक एवं कालामुख।
- इनमें पशुपत सम्प्रदाय सर्वाधिक प्राचीन है। इनके संस्थापक लकुलीश थे, जिन्हें भगवान शिव के 18 अवतारों में से एक माना जाता था। इस सम्प्रदाय के अनुयायियों को पंचार्थिक कहा गया। इस मत का प्रमुख सैद्धान्तिक ग्रंथ 'पशुपत सूत्र' है।
- कापालिक सम्प्रदाय के इष्टदेव भैरव थे। इस सम्प्रदाय का प्रमुख केन्द्र श्री शैल नामक स्थान था, जिसका प्रमाण भवभूति के 'मालतीमाधव' से मिलता है।
- कालामुख सम्प्रदाय के लोग अतिवादी विचारधारा के थे। शिव पुराण में इन्हें महाव्रतधर कहा गया है। इस सम्प्रदाय के लोग नर-कपाल में ही भोजन, जल तथा सुरापान करते हैं और साथ ही अपने शरीर पर चिता का भस्म लगाते हैं।
- लिंगायत (वीर शिव) सम्प्रदाय दक्षिण में प्रचलित था। इन्हें जंगम भी कहा जाता है। इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक अल्लभ प्रभु एवं उनके शिष्य बासव थे। ये लोग लिंगोपासक थे।
- कश्मीरी शैव सम्प्रदाय के संस्थापक वसुगुप्त थे।
- मत्स्येन्द्रनाथ ने नाथ सम्प्रदाय की स्थापना की जिसका व्यापक प्रसार गोरखनाथ के समय में हुआ।

| प्रमुख संप्रदाय | मत | आचार्य |
|---|---|---|
| वैष्णव | विशिष्टा द्वैत | रामानुज |
| ब्रह्मा | द्वैत | आनन्दतीर्थ |
| रुद्र | शुद्धाद्वैत | बल्लभाचार्य |
| सनक | द्वैताद्वैत | निम्बार्क |
| बरकरी | ... | नामदेव |

| प्रमुख भारतीय लेखक एवं उनकी पुस्तके | |
|---|---|
| पंचतंत्र | विष्णु शर्मा |
| प्रेमवाटिका | रसखान |
| मृच्छकटिकम् | शूद्रक |
| कामसूत्र | वात्स्यायन |
| दायभाग | जीमूतवाहन |
| नेचुरल हिस्ट्री | प्लिनी |
| दशकुमारचरितम् | दण्डी |
| अवंती सुन्दरी | दण्डी |
| बुद्धचरितम् | अश्वघोष |
| कादम्बरी | बाणभट्ट |
| अमरकोष | अमर सिहं |
| शाहनामा | फिरदौसी |
| साहित्यलहरी | सूरदास |
| सूरसागर | सूरदास |
| हुमायूँनामा | गुलबदन बेगम |
| नीति शतक | भर्तृहरि |
| श्रृंगारशतक | भर्तृहरि |
| वैरण्यशतक | भर्तृहरि |
| मुद्राराक्षस | विशाखदत्त |
| अष्टाध्यायी | पाणिनी |
| भगवत् गीता | वेदव्यास |
| महाभारत | वेदव्यास |
| मिताक्षरा | विज्ञानेश्वर |
| राजतरंगिणी | कल्हण |
| अर्थशास्त्र | चाणक्य |
| कुमारसंभवम् | कालिदास |
| रघुवंशम् | कालिदास |
| अभिज्ञान शाकुन्तलम् | कालिदास |
| गीतगोविन्द | जयदेव |
| मालतीमाधव | भवभूति |
| उत्तररामचरित | भवभूति |
| पद्मावत् | मलिक मो. जायसी |
| आईने अकबरी | अबुल फजल |
| अकबरनामा | अबुल फजल |
| बीजक | कबीरदास |
| रमैनी | कबीरदास |
| सबद | कबीरदास |
| किताबुल हिन्द | अलबरूनी |
| चित्रांगदा | रविन्द्र नाथ टैगौर |
| गीतांजली | रविन्द्र नाथ टैगौर |
| विसर्जन | रविन्द्र नाथ टैगौर |
| गार्डनर | रविन्द्र नाथ टैगौर |
| हंग्री स्टोन्स | रविन्द्र नाथ टैगौर |
| गोरा | रविन्द्र नाथ टैगौर |
| चाण्डालिका | रविन्द्र नाथ टैगौर |
| भारत-भारती | मैथलीशरण गुप्त |
| डेथ ऑफ ए सिटी | अमृता प्रीतम |
| कागज ते कैनवास् | अमृता प्रीतम |
| फोर्टी नाइन डेज् | अमृता प्रीतम |
| इन्दिरा गाँधी रिटर्नस | खुशवंत सिहं |
| दिल्ली | खुशवंत सिहं |
| द कम्पनी ऑफ वीमैन | खुशवंत सिहं |
| सखाराम बाइण्डर | विजय तेंदुलकर |
| इंडियन फिलॉस्पी | डॉ. एस. राधाकृष्णन |
| इंटरनल इंडिया | इंदिरा गाँधी |
| कामायानी | जयशंकर प्रसाद |
| आँसू | जयशंकर प्रसाद |
| लहर | जयशंकर प्रसाद |
| लाइफ डिवाइन | अरविन्द घोष |
| ऐशेज ऑन गीता | अरविन्द घोष |
| अनामिका | सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' |
| परिमल | सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' |
| यामा | महादेवी वर्मा |
| ए वाइस ऑफ फ्रिडम | नयन तारा सहगल |

| | |
|---|---|
| एरिया ऑफ डार्कनेस | वी. एस. नायपॉल |
| अग्निवीणा | काजी नजरुल इस्लाम |
| डिवाइन लाइफ | शिवानंद |
| गोदान | प्रेमचंद |
| गबन | प्रेमचंद |
| कर्मभूमि | प्रेमचंद |
| रंगभूमि | प्रेमचंद |
| कितनी नावों में कितनी बार | अज्ञेय |
| गोल्डेन थ्रेसहोल्ड | सरोजिनी नायडू |
| ब्रोकेन विंग्स | सरोजिनी नायडू |
| पल्लव | सुमित्रानन्दन पंत |
| चिदम्बरा | सुमित्रानन्दन पंत |
| कुरूक्षेत्र | रामधारी सिहं 'दिनकर' |
| उर्वशी | रामधारी सिहं 'दिनकर' |
| द डार्क रूम | आर. के. नारायण |
| मालगुड़ी डेज | आर. के. नारायण |
| गाइड | आर. के. नारायण |
| माइ डेज | आर. के. नारायण |
| नेचर क्योर | मोरारजी देसाई |
| चन्द्रकान्ता | देवकीनन्दन खत्री |
| देवदास | शरतचन्द्र चटोपाध्याय |
| चरित्रहीन | शरतचन्द्र चटोपाध्याय |

## महाजनपद

- महात्मा बुद्ध के जन्म के पूर्व भारतवर्ष 16 महाजनपदों में बँटा हुआ था। इसकी जानकारी हमें बौद्ध ग्रंथ 'अंगुत्तर निकाय' से मिलती है।
- बौद्ध ग्रंथ महावस्तु एवं जैन ग्रंथ भगवती सूत्र से भी अलग-अलग 16 महाजनपदों की जानकारी मिलती है।

| | महाजनपद | राजधानी | आधुनिक स्थान |
|---|---|---|---|
| 1. | अंग | चम्पा | भागलपुर, मुंगेर (बिहार) |
| 2. | मगध | गिरिव्रज(राजगृह) | पटना, गया (बिहार) |
| 3. | काशी | वाराणसी | उत्तर प्रदेश |
| 4. | कोसल | श्रावस्ती/अयोध्या | फैजाबाद (यू.पी.) |
| 5. | वज्जि | वैशाली | बिहार |
| 6. | मल्ल | कुशीनगर | देवरिया (यू.पी.) |
| 7. | वत्स | कौशाम्बी | इलाहाबाद (यू.पी.) प्रयागराज |
| 8. | चेदि | सोत्थिवती | बुंदेलखण्ड (यू.पी.) |
| 9. | कुरू | इन्द्रप्रस्थ | दिल्ली, मेरठ एवं हरियाणा |
| 10. | कम्बोज | हाटक | राजोरी एवं हजारा क्षेत्र (यू.पी.) |
| 11. | उत्तरी पाञ्चाल<br>दक्षिणी पाञ्चाल | अहिच्छत्र,<br>काम्पिल्य | बरेली, बदायूं, फरूखाबाद (यू. पी.) |
| 12. | मत्स्य | विराट नगर | जयपुर (राजस्थान) |
| 13. | शूरशेन | मथुरा | मथुरा (यू.पी.) |
| 14. | उत्तरी अवन्ति<br>दक्षिणी अवन्ति | उज्जयनि, महिष्मति | मालवा (यू.पी.) |
| 15. | अश्मक | पोतन (पाटन) | गोदावरी नदी क्षेत्र |
| 16. | गांधार | तक्षशिला | रावलपिंडी एवं पेशावर |

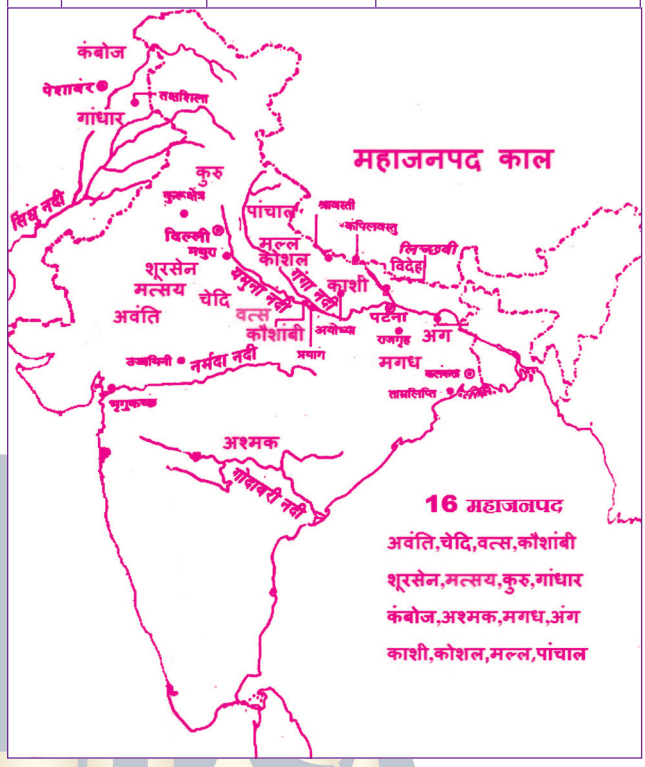


- अंग का शासक ब्रह्मदत्त, गांधार का शासक पुष्कर सरित एवं पांचाल का शासक उदयन था। उदयन भास के स्वप्नासवदत्तम् का नायक था। अनुमानतः उदयन का संबंध पांडव से था।

## प्राचीन भारत पर विदेशी आक्रमण

- भारत पर प्रथम विदेशी आक्रमण ईरान के हखामनी वंश के राजाओं ने किया।
- हखामनी वंश के शासक दारयवहु (522 ई.पू.) ने भारत पर प्रथम सफल आक्रमण किया जिसका प्रमाण बेहिस्तून, पर्सियोलिस एवं नक्शेरुस्तम अभिलेख से मिलता है।
- ईरानी संस्कृति से सम्पर्क के कारण ही भारत में खरोष्ठी लिपि का विकास हुआ।
- ईरानी आक्रमण के बाद सिकन्दर महान ने 326 ई.पू. में बल्ख को जीतने के बाद काबुल होते हुए हिन्दूकुश पर्वत पार कर भारत पर आक्रमण किया।
- सिकन्दर का जन्म 356 ई.पू. में हुआ, उसका पिता फिलिप, गुरु-अरस्तु, सेनापति-सेल्यूकस निकेटर एवं जल सेनापति-नियार्कस था।
- तक्षशिला शासक अम्भीक ने सिकन्दर के सामने घुटने टेक दिए एवं उसे पौरव राजा पोरस का प्रबल प्रतिरोध झेलना पड़ा। यह युद्ध झेलम नदी के किनारे हुआ, जिसे वितस्ता का युद्ध भी कहा जाता है। इसमें पोरस की हार हुई।
- सिकन्दर की सेना ने व्यास नदी से आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। इसके पश्चात् सिकन्दर ने अपना विश्व विजय अभियान रोक दिया और 325 ई.पू. में स्थल मार्ग द्वारा भारत से लौट गया। सिकन्दर भारत में करीब 19 माह तक रहा था।

- भारतीयों ने युनानी से क्षत्रप प्रणाली एवं मुद्रा प्रणाली की कला ग्रहण की।
- 323 ई.पू. में सूसा (फारस बेविलोन) में उसकी मृत्यु हो गयी।
- कुषाण शासक कनिष्क के काल में विकसित गांधार कला यूनानी प्रभाव का ही परिणाम है।
- पोरस के बाद सिकन्दर ने ग्लांगनिकाय तथा कठ जातियों को हराया था।
- सिकन्दर ने भारत में निकैयार नगर, विजय के उपलक्ष्य में एवं बुकाफेला नगर, अपने घोड़े की याद में बसाया।

**सिकंदर के बाद लेखकों का विवरण**

| | लेखक | समय | प्रमुख रचनाएँ |
|---|---|---|---|
| 1. | डाइमेकस | 298-273 ई.पू. | अप्राप्त |
| 2. | डायोनियस | 284-262 ई.पू. | अप्राप्त |
| 3. | मेगास्थनीज | 305-297 ई.पू. | इण्डिका |
| 4. | पॉलीवियस | 144-42 ई.पू. | अप्राप्त |
| 5. | पेट्रोक्लीज | 261-228 ई.पू. | पूर्वी देशों का भूगोल |
| 6. | पेरिप्लस (यूनानी) | 8-115 ई.पू. | पेरिप्लस ऑफ द इरिथ्रियन सी |
| 7. | प्लिनी | 77-78 ई.पू. (लैटिन भाषा) | नेचुरल हिस्ट्री |
| 8. | एरियन | दूसरी शताब्दी ई.पू. | सिकंदर का आक्रमण |
| 9. | टॉलेमी | दूसरी शताब्दी ई.पू. | ज्योग्राफी |
| 10. | स्ट्रेबो | दूसरी शताब्दी ई.पू. | ज्योग्राफी |
| 11. | एरियन | 100 ई.पू. | i) A Collection of Miscellaneous History ii) On the Peculiraties of Animals |

**सिकंदर से पूर्व यूनानी लेखकों का विवरण**

| | लेखक | समय | प्रमुख रचनाए |
|---|---|---|---|
| 1. | स्काईलेक्स | 6वीं शताब्दी ई.पू. | ----- |
| 2. | हिकेटिअस मिलेटस | 5-6 शताब्दी ई.पू. | भूगोल, (ज्योग्राफी) |
| 3. | हेरोडोटस | 484-431 ई.पू. | हिस्टोरिका |
| 4. | केसिअस | 416-398 ई.पू. 5वी सदी | इंडिका व पार्शिका |

## मौर्य साम्राज्य

- अपने गुरु चाणक्य की सहायता से अन्तिम नंद शासक घनानंद को 322 ई.पू. में पराजित कर 25 वर्ष की आयु में चन्द्रगुप्त मौर्य ने मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।
- मुद्राराक्षस ने चन्द्रगुप्त को वृषल (निम्न कुल) एवं नन्दराज का पुत्र कहा है।
- यूनानी लेखक चन्द्रगुप्त मौर्य को एंड्रोकोटस या सैंट्रोकोटस कहा है।
- प्लूटार्क के अनुसार उसके पास 6 लाख सेनाए थीं, जिसे जस्टिन ने डाकुओं का गिरोह कहा है।
- चन्द्रगुप्त मौर्य को 'चन्द्रगुप्त' संज्ञा का प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख से मिलता है।
- एप्पियस के अनुसार 305 ई.पू. में यूनानी शासक सेल्युकस को चन्द्रगुप्त मौर्य ने हराया।
- सेल्यूकस ने चन्द्रगुप्त मौर्य से अपनी पुत्री का विवाह किया एवं एरिया (हेरात), अराकोसिया (कंधार), जेड्रोसिया (काबुल) एवं पेरीपेमिसदाई (मकराना) का क्षेत्र दिया। बदले में चन्द्रगुप्त ने उपहार स्वरूप 500 हाथी दिया।
- तमिल ग्रंथ अहनामूर एवं मुरनानुरु से चन्द्रगुप्त के दक्षिण विजय का पता चलता है।
- मेगास्थनीज सेल्युकस निकेटर का राजदूत था जो चन्द्रगुप्त के दरबार में आया था। उसने इंडिका लिखी। स्ट्रेबो ने मेगास्थनीज के वृत्तांत को पूर्णतः अविश्वसनीय बताया है।
- कौटिल्य (अन्य नाम-विष्णुगुप्त, चाणक्य) ने अर्थशास्त्र नामक ग्रंथ लिखा, जिसका संबंध राजनीति से है। इसमें 15 अधिकरण एवं 130 प्रकरण हैं।
- चन्द्रगुप्त मौर्य ने जैन साधु भद्रबाहु से जैन धर्म की दीक्षा ली और श्रवणबेलगोला में स्थित चन्द्रगिरि पहाड़ी पर करीब 295 ई.पू. में सालेखन द्वारा शरीर त्याग किया।
- चन्द्रगुप्त मौर्य का पुत्र बिन्दुसार मौर्य साम्राज्य का अगला उत्तराधिकारी बना।
- जैन परंपराओं में बिन्दुसार की माता का नाम दुर्धरा मिलता है।
- बिन्दुसार को वायु पुराण में भद्रसार, जैन ग्रंथ में सिंहसेन, यूनानी लेख अमित्रोचेडस एवं संस्कृत ग्रंथ में अमित्रघात कहा गया है। अमित्रघात अर्थात् शत्रु विनाशक।
- दिव्यावदान में बिन्दुसार के समय में तक्षशिला में हुए दो विद्रोह का वर्णन है। जिसे दबाने के लिए पहले अशोक को और बाद में सुसीम को भेजा।
- स्ट्रैबो के अनुसार यूनानी शासक ऐण्टियोकस ने बिन्दुसार के दरबार में डाइमेकस नाम के राजदूत को भेजा। डाइमेकस को मेगास्थनीज का उत्तराधिकारी माना जाता है।
- एथीनिअस के अनुसार बिन्दुसार ने एण्टियोकस से मदिरा, सूखे अंजीर एवं एक दार्शनिक भेजने की प्रार्थना की थी।
- प्लिनी के अनुसार मिश्र राजा फिलाडेल्फस (टॉलमी-II) ने डायोनीसियस नाम के राजदूत को पाटिलपुत्र भेजा था।
- बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी था।
- बौद्ध विद्वान तारानाथ ने बिन्दुसार को 16 राज्यों का विजेता बताया है।
- अशोक ने बिन्दुसार के काल में खम तथा नेपाल को जीता।
- बिन्दुसार के पश्चात् उसका पुत्र अशोक मौर्य साम्राज्य की गद्दी पर 273 ई.पू. में बैठा, किन्तु उसका राज्याभिषेक 269 ई.पू. में हुआ।
- राजगद्दी पर बैठने के समय अशोक अवन्ती प्रांत का राज्यपाल था।
- अभिलेख में अशोक को देवनामपिय, देवनामपियदशि एवं राजा नाम से संबोधित किया गया है।
- पुराण में अशोक को अशोकवर्धन कहा गया है।
- राजतरंगिणी के अनुसार अशोक ने कश्मीर में वितस्ता नदी के किनारे श्रीनगर नामक नगर की स्थापना की।
- अशोक ने अपने अभिषेक के 8वें वर्ष लगभग 261 ई.पू. में कलिंग पर आक्रमण किया और कलिंग की राजधानी तोसली पर अधिकार कर लिया।

- तिब्बती जनश्रुति के अनुसार अशोक ने नेपाल में ललितपत्तन नामक नगर बसाया और उसकी पुत्री चारुमती ने देवपत्तन नामक नगर बसाया।
- राजतरंगिणी के अनुसार अशोक भगवान शिव की पूजा करता था।
- ह्वेनसांग के अनुसार अशोक को उपगुप्त नामक बौद्ध भिक्षु ने बौद्ध-धर्म में दीक्षित किया।
- बराबर पहाड़ियों में अशोक ने आजीवकों के रहने हेतु चार गुहाओं का निर्माण करवाया, जिनका नाम कर्ण, चोपार, सुदामा व विश्व झोपड़ी था।
- भाब्रू शिलालेख में बुद्ध, धम्म एवं संघ (त्रिरत्न) का वर्णन है।
- अशोक अपने राज्याभिषेक के दसवें वर्ष में धम्मयात्रा के अन्तर्गत बोधगया पहुँचा।
- अशोक ने राज्याभिषेक के 14वें वर्ष में कनकमुनि बौद्ध स्तूप की लम्बाई को दुगुना करवाया।
- दिव्यावदान के अनुसार अशोक की माँ का नाम सुभद्रांगी था।
- अशोक की पत्नियाँ- महादेवी, कारुवाकि (अभिलेख में वर्णित), असंघिमित्रा एवं तिष्यरक्षिता थीं।
- अशोक का पुत्र महेन्द्र तथा पुत्री संघमित्रा थी, जिसे धर्म के प्रचार के लिए श्रीलंका भेजा।
- अशोक प्रथम शासक है जिसने अभिलेखों के द्वारा अपनी प्रजा को संबोधित किया।

| शिलालेख | वर्णित विषय |
|---|---|
| प्रथम | अहिंसा पर बल, पशुबलि की निंदा एवं समारोह पर प्रतिबंध। |
| दूसरा | समाज कल्याण हेतु कार्य, मनुष्यों एवं पशुओं के लिए चिकित्सा की व्यवस्था एवं पड़ोसी राज्य चोल-पाण्ड्य-सत्यपुत्र एवं केरलपुत्र का वर्णन। |
| तीसरा | ब्राह्मणों तथा श्रमणों से उदारतापूर्ण व्यवहार। इसमें राजकीय अधिकारियों को यह आदेश दिया गया कि वे हर पाँचवें वर्ष दौरा पर जाएँ। |
| चौथा | मेरी घोष की जगह धम्मघोष की घोषणा की गयी है। पशु हत्या को बहुत हद तक रोके जाने का दावा है। |
| पाँचवाँ | शासन के 13वें वर्ष धम्म महामात्र नामक अधिकारी की नियुक्ति का चर्चा। |
| छठवाँ | आत्म-नियंत्रण की शिक्षा दी गयी है। |
| सातवाँ | सभी संप्रदायों के लिए सहिष्णुता। |
| आठवाँ | अशोक के धर्म (तीर्थ) यात्राओं का उल्लेख। |
| नवाँ | सच्ची भेंट एवं सच्चे शिष्टाचार का उल्लेख। |
| दशम् | इसमें ख्याति एवं गौरव की निंदा की गयी है तथा धम्म कीर्ति की श्रेष्ठता पर बल दिया गया है। |
| ग्यारहवाँ | धर्म के वरदान को सर्वोत्कृष्ट एवं धम्म की व्याख्या। |
| बारहवाँ | सभी प्रकार के विचारों का सम्मान, विभिन्न सम्प्रदायों के बीच टकराहट एवं महिला महामात्रों की नियुक्ति। |
| तेरहवाँ | कलिंग युद्ध का वर्णन एवं अशोक के हृदय परिवर्तन की बात एवं पड़ोसी राजाओं का वर्णन है। |
| चौदहवाँ | जनता को धार्मिक जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। इसमें कहा गया है कि लेखक की गलतियों के कारण इसमें कुछ अशुद्धियाँ हो सकती हैं। |

- 1750 ई. में सर्वप्रथम टी. फैन्थेलर ने दिल्ली में अशोक स्तम्भ लेख का पता लगाया।
- अशोक के अभिलेखों को सर्वप्रथम जेम्स प्रिंसेप ने 1837 ई. में पढ़ा।
- दो भाषाओं का शिलालेख (ग्रीक+अरमाइक) शार-ए-कुना (कन्धार) से प्राप्त हुआ।
- ये शिलालेख आठ अलग-अलग स्थानों से मिले हैं। ये हैं–शहबाजगढ़ी, मानसेहरा (दोनों खरोष्ठी), गिरनार, धौली, कालसी, जौगढ़, सोपारा एवं एर्रगुड़ी (सभी ब्राह्मी लिपि में)। अशोक का धम्म राहुलोवादसुत से लिया गया है।
- लघु शिलालेख के माध्यम से अशोक के व्यक्तिगत जीवन के इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है।
- अशोक के स्तम्भ लेखों (ब्राह्मी लिपि में) की संख्या 7 है जो 6 स्थानों से मिलता है–
  1. प्रयाग स्तम्भ लेख–यह पहले कौशाम्बी में स्थित था, जिसे अकबर ने इलाहाबाद के किले में स्थापित करवाया। इसे रानी अभिलेख भी कहा जाता है।
  2. दिल्ली टोपरा–यह स्तम्भ लेख टोपरा से दिल्ली फिरोजशाह तुगलक द्वारा लाया गया। इस पर अशोक के सातों अभिलेखों का उल्लेख है।
  3. दिल्ली मेरठ–यह स्तम्भ लेख मेरठ से दिल्ली फिरोजशाह तुगलक द्वारा लाया गया।
  4. रामपुरवा
  5. लौरिया अरेराज एवं
  6. लौरियानन्दगढ़– तीनों चम्पारण (बिहार) में हैं।
- लघु स्तम्भ लेखों से अशोक की राजकीय घोषणाओं का उल्लेख मिलता है।
- अशोक का सबसे छोटा स्तम्भ लेख रुम्मिनदेइ है, जिसकी खोज फीहरर ने की। इससे भू-राजस्व दर कम करने का प्रमाण मिला है।
- प्रथम पृथक शिलालेख– सभी प्रजा मेरी सन्तान हैं।
- अशोक के परवर्ती शासक दशरथ (उपाधि देवानांपिय), सम्प्रति (जैन), शालिशूक, वर्धमान, शतधन्नव एवं वृहद्रथ हैं।
- वृहद्रथ मौर्य वंश का अन्तिम शासक था जिसे उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने मार कर 185 ई.पू. में शुंग वंश की स्थापना की।

## मौर्य प्रशासन

- साम्राज्य में प्रधानमंत्री, पुरोहित एवं अन्य अधिकारियों की नियुक्ति के पूर्व इनके चरित्र को खूब जांचा परखा जाता था, जिसे 'उपधा परीक्षण' कहा जाता था।

| प्रमुख तीर्थ | | | |
|---|---|---|---|
| मंत्री | प्रधानमंत्री | प्रदेष्टि | कमिश्नर |
| पुरोहित | धर्म एवं दान-का प्रधान | पौर | नगर का कोतवाल |
| सेनापति | सैन्य विभाग का प्रधान | व्यावहारिक | प्रमुख न्यायाधीश |
| युवराज | राजपुत्र | नायक | नगर रक्षा का अध्यक्ष |
| दौवारिक | राजकीय द्वार रक्षक | कमान्तिक | उद्योगों एवं कारखानों का अध्यक्ष |
| अन्तर्वेदिक | अन्त:पुर का अध्यक्ष | मंत्रिपरिषद | अध्यक्ष |

| | | | |
|---|---|---|---|
| समाहर्ता | आय का संग्रहकर्ता | दण्डपाल | सेना का समान एकत्र करने वाला |
| सन्निधाता | राजकीय कोष का अध्यक्ष | दुर्गपाल | दुर्ग रक्षक |
| प्रशास्ता | कारागार का अध्यक्ष | अंतपाल | सीमावर्ती दुर्गों का रक्षक |

- राजा के सप्तांग सिद्धान्त– राजा, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दंड एवं मित्र की सर्वप्रथम व्याख्या कौटिल्य ने की।
- मौर्यकाल में सम्राट की सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद होती थी, जिसकी जानकारी डायोडोरस, स्ट्रेबो एवं एरियन के विवरणों से भी मिलती है।
- अर्थशास्त्र में शीर्षस्थ अधिकारी के रूप में तीर्थ का उल्लेख मिलता है, इन्हें महामात्र भी कहा जाता था, जिसकी संख्या 18 होती थी।
- अर्थशास्त्र में 28 अध्यक्षों का विवरण मिलता है, जो विभिन्न विभागों में अध्यक्ष के रूप में मंत्रियों के नीचे काम करते थे। यूनानी लेखकों ने इन्हें मजिस्ट्रेट कहा।
- अशोक के समय प्रांतों की संख्या पाँच थी।
- प्रांतों के प्रशासक को कुमार या आर्यपुत्र कहा जाता था।
- प्रांतों को आहार या विषय में बाँटा गया था, जो विषयपति के अधीन होते थे।
- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी, जिसका मुखिया 'ग्रामिक' कहलाता था।
- मेगास्थनीज के अनुसार नगर का प्रशासन 30 सदस्यों का एक मण्डल करता था। ये मण्डल 6 समितियों में विभाजित थे, प्रत्येक समिति में 5 सदस्य होते थे।
- अर्थशास्त्र में नवाध्यक्ष के उल्लेख से मौर्यों के पास नौ-सेना होने का प्रमाण मिलता है।
- युद्ध क्षेत्र में सेना का नेतृत्व करने वाला अधिकारी नायक होता था।
- सेना विभाग का सबसे प्रधान अधिकारी सेनापति होता था, जिसका वेतन 48,000 पण वार्षिक था एवं नायक का 12000 पण वार्षिक था।
- मौर्यकाल में दो प्रकार के न्यायालय थे– (1) धर्मस्थीय एवं (2) कण्टकशोधक।
- धर्मस्थीय न्यायालय के न्यायाधीश- व्यावहारिक, कण्टकशोधक के प्रदेष्टि एवं जनपदीय न्यायालय का न्यायाधीश राजुक कहलाता था।
- गुप्तचर विभाग 'महामात्यापसर्प' नामक अमात्य के अधीन कार्य करता था।
- अर्थशास्त्र में गुप्तचर को गूढ़ पुरुष कहा गया है, जो दो प्रकार से कार्य करते थे– (1) संस्था (एक ही स्थान पर रुक कर) एवं (2) संचार (विभिन्न स्थानों पर भ्रमण करके)।
- शांति व्यवस्था बनाये रखने के लिए अर्थशास्त्र में रक्षिन का उल्लेख किया गया है।
- अशोक ने धर्मप्रचार एवं उदंड क्रिया कलापों को नियंत्रित करने के लिए धर्ममहामात्र की नियुक्ति की।
- प्रतिवेदक राजा को हर तरह की सूचना देता था।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के गवर्नर (सौराष्ट्र प्रांत) पुष्यगुप्त ने उर्जयंत पर्वत पर एक सेतु का निर्माण करवा कर सुदर्शन झील का सिंचाई के लिए निर्माण करवाया।
- मौर्यकालीन मुद्रायें– सुवर्ण (सोना), कर्षापण, पण, धारण (चाँदी) एवं भाषक, काकणी (ताँबा)।
- मेगास्थनीज ने एग्रोनोमई नामक मार्ग निर्माण अधिकारी का उल्लेख किया है।
- मिश्र शासक टालमी ने भारत एवं मिश्र के व्यापार को बढ़ावा देने के लिए लाल सागर के तट पर बरनिस नाम के बन्दरगाह की स्थापना की।
- कौटिल्य ने शूद्रों को आर्य कहा और उन्हें दास बनाना प्रतिबन्धित था।
- मेगास्थनीज ने भारतीय समाज को सात भागों में विभाजित किया– (1) दार्शनिक (2) किसान (3) अहीर (पशुपालक) (4) कारीगर (शिल्पी) (5) सैनिक (6) निरीक्षक एवं (7) सभासद।
- स्वतंत्र गणिका एवं वेश्यावृत्ति वाली महिलाएँ रूपाजीवा कहलाती थीं।
- कौटिल्य ने नौ प्रकार के दासों का उल्लेख किया है।
- मौर्य युगीन लोक कला में दीदारगंज (पटना) से मिली चामरग्राहिणी यक्षी एवं वेसनगर से मिली यक्षी की मूर्ति सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।
- अशोक के सारनाथ स्तम्भ पर अंकित चार बैठे हुए सिंहों की आकृति को स्वतंत्र भारत में राजकीय चिन्ह के रूप में अपनाया गया है।
- ह्वेनसांग के अनुसार अशोक ने 84,000 स्तूपों का निर्माण कराया।
- फाह्यान ने मौर्य प्रसाद की भव्यता के कारण उसे देव निर्मित कहा।

## ब्राह्मण साम्राज्य

- इस साम्राज्य के अन्तर्गत प्रमुख वंश थे– शुंग, कण्व, आन्ध्र, सातवाहन एवं वाकाटक।
- बाणभट्ट ने शुंगवंश के संस्थापक पुष्यमित्र शुंग को अनार्य कहा है।
- गार्गी संहिता एवं मालविकाग्निमित्रम् से यवन-शुंग संघर्ष का विवरण मिलता है।
- पुष्यमित्र के पौत्र वसुमित्र ने सिंधु नदी के तट पर यवन सेनापति मिनाण्डर को हराया।
- मालविकाग्निमित्रम के अनुसार पतंजलि के नेतृत्व में पुष्यमित्र ने दो अश्वमेध यज्ञ करवाया।
- भरहुत स्तूप एवं साँची स्तूप की वेदिकाओं का निर्माण पुष्यमित्र शुंग ने करवाया।
- शुंग शासक भागभद्र के दरबार में यूनानी राजदूत हेलियोडोरस आया।

- अंतिम शुंगवंशी शासक देवभूति की हत्या उसके अमात्य कण्ववंशी वासुदेव ने कण्व वंश की स्थापना की। कण्व वंश का अन्तिम शासक सुशर्मा हुआ।
- पुराण सातवाहनों को आंध्रभृत्य तथा आंध्रजातीय कहते हैं। कृष्णा और गोदावरी नदी की घाटी के मध्य सिमुक नामक व्यक्ति ने सातवाहन वंश की नींव डाली। इसकी राजधानी पैठन या प्रतिष्ठान थी।
- शातकर्णी प्रथम इस वंश का वास्तविक राजा था। उसने दो अश्वमेध यज्ञ एवं एक राजसूय यज्ञ सम्पन्न कर सम्राट की उपाधि धारण की। इसके अतिरिक्त उसने दक्खिनपथपति एवं अप्रतिहतचक्र की उपाधि धारण की।
- मत्स्य पुराण के अनुसार हाल सातवाहन वंश का 17वां राजा था। उसने गथासप्तशती नामक ग्रंथ की रचना की। उसके काल में गुणाढ्य ने पैशाची भाषा वृहदकथा लिखा।
- गौतमी पुत्र शातकर्णी सातवाहन वंश का 23वाँ राजा था। उसने वेणकटक स्वामी की उपाधि धारण की और वेणकटक नामक नगर बसाया। उसने नासिक के बौद्ध संघ को अजकालकीय एवं कर्ले भिक्षु संघ को करजक क्षेत्र दान दिया।
- शून्यवाद के संस्थापक नागार्जुन गौतमीपुत्र शातकर्णी के समकालीन थे।
- वाशिष्ठी पुत्र पुलुमावी ने शक शासक रुद्रदामन की पुत्री से विवाह किया। उसने नवनगर की स्थापना किया एवं नवनगरस्वामी तथा दक्षिणापथेश्वर की उपाधि धारण किया।
- यज्ञ श्री इस वंश का अन्तिम प्रतापी राजा था।
- सातवाहनों ने सर्वाधिक सीसे के सिक्के एवं टीन, ताँबे और कांसे का सिक्का चलाया।
- सातवाहनों ने सर्वप्रथम ब्राह्मणों को भूमिदान एवं जागीर देने की प्रथा आरम्भ की।
- सातवाहनों की राजकीय भाषा प्राकृत एवं लिपि ब्राह्मी थी।
- गौतमीपुत्र शातकर्णी ने वर्ण संकर कुप्रथा को रोकने के लिए चार वर्णों की प्रथा को पुनः स्थापित किया।
- सातवाहनों ने कार्ले का चैत्य बनवाया।
- वाकाटक वंश का संस्थापक विन्ध्यशक्ति था। इसकी तुलना इन्द्र एवं विष्णु से की जाती थी।
- गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त-II ने प्रभावती (पुत्री) का विवाह वाकाटक नरेश रुद्रसेन-II से किया।
- वाकाटक शासक प्रवरसेन-II ने सेतुबन्ध (रावणवध) ग्रंथ की रचना की।
- कलिंग में चेदि वंश की स्थापना महामेघवाहन ने की और इसका प्रतापी राजा खारवेल था।
- खारवेल जैनधर्म का अनुयायी था। हाथी गुम्फा अभिलेख उससे संबंधित है।
- खारवेल ने दक्षिण भारत एवं पाटलिपुत्र पर सफल सैन्य अभियान किया।

| प्रांत | राजधानी | प्रांत | राजधानी |
|---|---|---|---|
| उत्तरापथ | तक्षशिला | अवन्ति राष्ट्र | उज्जयिनी |
| कलिंग | तोसली | दक्षिणापथ | सुवर्णगिरी |
| प्राशी | पाटलिपुत्र | | |

## भारत में यवन राज्य

- इस काल में सर्वप्रथम बैक्ट्रिया के शासक डेमिट्रियस ने 1841 ई.पू. में हिन्दूकुश पहाड़ी को पारकर सिंध और पंजाब पर अधिकार किया और साकल को राजधानी बनाया।
- हिन्द यूनानी शासकों में मिनांडर सर्वाधिक विख्यात शासक था।
- मिलिन्दपन्हों में मिनांडर (मिलिन्द) एवं बौद्ध भिक्षु नागसेन के मध्य सम्पन्न वाद-विवाद तथा उसे बौद्ध धर्म स्वीकार करने की कथा का विवरण है।
- पेरीप्लस के अनुसार मिनांडर के सिक्के भड़ौच के बाजार में खूब प्रचलित थे।
- यूनानी लोगों ने योग एवं तपस्या की विधि भारत से ग्रहण की।
- विभिन्न ग्रहों के नाम, नक्षत्रों को देखकर भविष्य बताने की कला, संवत् तथा सप्ताह का सात दिनों में विभाजन आदि यूनानियों ने ही भारत को सिखाया।
- सर्वप्रथम सोने के सिक्के तथा लेखयुक्त सिक्के भारत में इण्डोग्रीक शासकों ने ही जारी किया।
- लेखयुक्त तथा आकृतियुक्त सिक्के, यानी एक तरफ राजा की आकृति तो दूसरी ओर देवताओं के चित्र के सिक्के, का प्रयोग भारतीयों ने इण्डोग्रीक से ही सीखा।

## पार्थियन (पह्लव) एवं शक

- पह्लव का वास्तविक संस्थापक मिथ्रेडेट्स था एवं भारत में प्रथम पह्लव शासक माउस था।
- पह्लव में सर्वाधिक ख्यातिलब्ध शासक गोंदोफर्निस था। जिसके शासनकाल में प्रथम ईसाई धर्म प्रचारक सेंट थॉमस मूर आया, जिसकी म्यालपुर (कर्नाटक) में हत्या हो गयी।
- शक् या सिथियन मूल रूप से मध्य एशिया के निवासी थे। इसके विषय में प्रारम्भिक जानकारी दारा के नक्शी रुस्तम प्रस्तर लेख से मिलती है।
- शकों की पाँच शाखाएँ भारतीय महाद्वीप में थीं। ये हैं– अफगानिस्तान, पंजाब (तक्षशिला), मथुरा, पश्चिमी भारत (उज्जैन) एवं ऊपरी दक्कन (नासिक)।
- भारत के पश्चिमोत्तर प्रांत में बसने वाले शकों ने अपने को क्षत्रप कहा।
- क्षहरात वंश का योग्य शासक नहपान ने अपनी मुद्राओं पर राजा की उपाधि धारण की।
- सातवाहन शासक गौतमीपुत्र शातकर्णी ने नहपान को परास्त किया।

- उज्जैयिनी का प्रथम शक क्षत्रप शासक कर्दमकवंश का चष्टन था। इस वंश के प्रमुख शासक रुद्रदामन ने महाक्षत्रप की उपाधि धारण की।
- रुद्रदामन प्रथम ने काठियावाड़ की अर्धशुष्क सुदर्शन झील का जीर्णोद्धार करवाया।
- रुद्रदामन पहली बार विशुद्ध संस्कृत भाषा में जूनागढ़ अभिलेख उत्कीर्ण करवाया। इससे पहले के सभी अभिलेख प्राकृत भाषा में लिखा गया था।
- 58 ई.पू. में उज्जैन के एक स्थानीय राजा ने शकों को पराजित किया और विक्रमादित्य की उपाधि धारण की एवं विक्रम संवत चलाया।
- विक्रमादित्य भारत में एक लोकप्रिय उपाधि बन गयी, जिसकी संख्या भारतीय इतिहास में 14 तक पहुँच गयी। इसमें गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय सर्वाधिक विख्यात विक्रमादित्य था।
- चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने इस वंश के अन्तिम शासक रुद्रसिंह तृतीय की हत्या कर शकों के क्षेत्र को गुप्त साम्राज्य में मिला लिया। इस उपलक्ष्य में चाँदी का सिक्का चलाया।

## कुषाण

- कुषाण, चीन के यूची कबीले से सम्बन्धित थे। कालांतर में 'यूची' कबीला पाँच शाखाओं में बँट गया, जिसमें एक कुषाण प्रमुख था।
- कुषाण वंश का संस्थापक तथा प्रथम शासक कुजुल कडफिंसस था। उसने कश्मीर तथा सिन्धु नदी के पश्चिम का क्षेत्र जीता। इसने सिर्फ ताँबे के सिक्के जारी किये।
- विम कडफिसस ने तक्षशिला तथा पंजाब को जीता और अपने ताँबे और सोने के सिक्कों पर अनेक उपाधियाँ उत्कीर्ण करवाई।
- विम कडफिंसस के सिक्कों पर शिव, नन्दी तथा त्रिशूल की आकृतियाँ मिलती हैं, जिससे उसका शैव मतानुयायी होना सिद्ध होता है। विम ने 'माहेश्वर' की उपाधि धारण की थी।
- इस वंश का सर्वाधिक प्रतापी शासक कनिष्क था। जिसने अपने राज्याभिषेक के वर्ष 78 ई. में शक् संवत को प्रारम्भ किया।
- कनिष्क की प्रथम राजधानी पुरुषपुर (पेशावर) एवं दूसरी राजधानी मथुरा थी।
- कनिष्क ने पाटलिपुत्र (हो-आन्चू) पर आक्रमण कर अश्वघोष के रूप में प्रसिद्ध विद्वान, बुद्ध का भिक्षापात्र एवं एक अनोखा कुकुट प्राप्त किया।
- कनिष्क ने राजतरंगिणी के अनुसार कश्मीर पर विजय प्राप्त किया और कनिष्कपुर को बसाया।
- कनिष्क ने चीनी हन राजवंश के सेनापति पानन्चाओं को हराया और ताशकन्द, काशगर, खोतान अर्थात् सिल्क मार्ग पर अधि कार कर लिया।
- वसुमित्र, अश्वघोष, नागार्जुन, पार्श्व, चरक, महाचेत और संघरक्षक कनिष्क के दरबार की विभूति थे।
- नागार्जुन को भारत का आइन्सटीन कहा जाता है। इनकी पुस्तक माध्यमिक सूत्र है, जिसमें सापेक्षता का सिद्धान्त वर्णित है।
- चरक कनिष्क के राजवैद्य थे, जिसने चरक संहिता (आयुर्वेद ग्रंथ) लिखी।
- अश्वघोष कनिष्क के राजकवि थे। उनकी पुस्तक–बुद्धचरित (बौद्धों का रामायण), सौन्दरानन्द और सूत्रालंकार, हैं। जिसकी तुलना मिल्टन, कांट एवं वॉल्टेयर की रचनाओं से की जाती है।
- गंधार कला एवं मथुरा कला शैली का विकास कनिष्क के समय में ही हुआ।
- कनिष्क ने महायान सम्प्रदाय को समर्थन दिया। चीन में बौद्ध धर्म का प्रसार कुषाण काल में ही हुआ। कुषाणों ने देवपुत्र की उपाधि धारण की।
- कनिष्क कुल का अंतिम महान सम्राट वासुदेव (वैष्णव मतानुयायी) था।
- कनष्कि के पेशावर स्तूप की खुदाई में बुद्ध, इन्द्र, ब्रह्मा और कनिष्क की मूर्तियाँ मिली हैं।
- 46-47 ई. में हिप्पालस नामक यूनानी नाविक ने मानसूनी हवाओं की खोज की।
- अरिकामेडु की खुदाई से रोमन बस्ती की जानकारी मिलती है।
- भारत में मिले अधिकांश रोमन सिक्के आगस्टस एवं टाइबेरियस के समय के हैं।
- बंगाल मलमल एवं मगध वृक्षों के रेशों से बने कपड़ों के लिए प्रसिद्ध था।
- तक्षशिला विभिन्न दिशा से आने वाले समान के संग्रहस्थल के रूप में प्रसिद्ध था।

**मौर्योत्तर कालीन विदेशी आक्रमणकारी**

| | विदेशी आक्रांता | भारत आगमन | मूल निवास स्थान | सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक | राजधानी / विशेष तथ्य |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | हिन्द-यवन | 190 ई.पू. | बैक्ट्रिया, अफगानिस्तान | मिनांडर/मिलिंद शाकल | वर्तमान स्थालकोट |
| 2. | शक / सीथियन | 90 ई.पू. | सीरिया, ईरान | नहपान (पश्चिमी भारत) | महाराष्ट्र में प्राप्त अभिलेखों तथा सातवाहन अभिलेखों में उल्लेख |
| 3. | पार्थियाई पह्लव | पहली सदी ई.पू. के अंत | पार्थिया ईरान | गोंडोफर्नीज | बेग्राम अफगानिस्तान में विशाल संख्या में इसके सिक्के मिले हैं। |
| 4. | कुषाण/यू ची | 15 ई. | चीनी, तुर्किस्तान | कनिष्क | उज्जयिनी (वर्तमान उज्जैन) पुरुषपुर (वर्तमान पेशावर) |

**आक्रमणकारियों का क्रम:** हिंद-यवन शक पहलव कुषाण।

## मौर्योत्तर युग: शिल्प, व्यापार और नगर

### नियोजन

- शकों, कुषाणों व सातवाहनों का (200 ई.पू.-300 ई.) तथा प्रथम तमिल राज्यों का युग प्राचीन भारत के शिल्प व वाणिज्य के इतिहास में चरमोत्कर्ष का काल था।
- दीर्घनिकाय में लगभग चौबीस प्रकार के व्यवसायों का उल्लेख है। महावस्तु में राजगीर में होने वाले 36 प्रकार के व्यवसायों का उल्लेख मिलता है।
- मिलिन्दपको या मिलिन्दप्रश्न में 75 व्यवसायों का वर्णन तेलंगाना स्थित करीमनगर के एक गाँव में बढ़ई, लोहार, सुनार, कुम्हार आदि अलग-अलग टोलों में रहते थे। सोना, चाँदी, सीसा, टिन, ताँबा, पीतल, लोहा और रत्न के काम वाले आठ शिल्प थे।
- लोहा बनाने के तकनीकी ज्ञान में उत्तम प्रगति हुई। अनेक उत्खनन स्थलों पर कुषाण और सातवाहन कालीन स्तरों में लौहशिल्प की वस्तुएँ अधिकाधिक संख्या में प्राप्त हुई हैं। करीमनगर और नालगोंडा जिलों में हथियारों के अतिरिक्त तराजू की डंडी. मूठवाले फावड़े कुल्हाड़ियाँ, हँसिया, फाल, उस्तरा और करछुल आदि लोहे की वस्तुएँ मिली हैं।
- कपड़ा बनाने, रेशम बनने और अस्त्रों एवं विलास की वस्तुओं के निर्माण में भी प्रगति हुई है। मथुरा शाटक नामक विशेष प्रकार के वस्त्र के निर्माण का बड़ा केन्द्र हो गया था।
- तमिलनाडु में तिरूचिरापल्ली नगर के उपान्तवर्ती उरैयूर में ईंटों का बना रंगाई का हौज प्राप्त हुआ है तथा इसके अतिरिक्त अरिकमेडु में भी इस प्रकार के हौज मिले हैं। इन क्षेत्रों में करघे पर कपड़ा बुनने का व्यवसाय अधिक प्रचलित था।
- विलास की वस्तुओं का उत्पादन करने वाले शिल्पों में हाथीदांत का काम उल्लेखनीय है।
- सिक्कों की ढलाई महत्त्वपूर्ण शिल्प थी तथा यह सोने, चाँदी, तांबे, कांसे, सीसे (लेड) और पोटीन के विभिन्न प्रकार के सिक्के बनाने के लिए प्रसिद्ध थे।
- पकी मिट्टी (टेराकोटा) को सुन्दर मूर्तियों भी बनती थी, जो विशाल मात्रा में पाई गई हैं। ये लगभग सभी कुषाण और सातवाहन स्थलों में पाए गए हैं। मूर्तियाँ अधिकतर नगर निवासी उच्च वर्गों के लिए बनती थीं।
- शिल्पी आपस में संगठित होते थे तथा उनके संगठन का नाम श्रेणी था। इस काल के शिल्पियों की कम से कम चौबीस-पच्चीस श्रेणियाँ प्रचलित थीं।
- इस काल की सबसे बड़ी आर्थिक प्रक्रिया भारत और पूर्वी रोमन साम्राज्य के मध्य फलता-फूलता व्यापार था। आरम्भ में यह व्यापार अधिकतर स्थल मार्ग से होता था। परन्तु ईसा की पहली सदी से व्यापार मुख्यत: समुद्री मार्ग से होने लगा था।

ईसा की प्रथम सदी के आरम्भ के आस-पास मानसून के रहस्य का पता लग गया, जिसके कारण अब नाविक अरब सागर के पूर्वी तटों से उसके पश्चिमी तटों तक की यात्रा अत्यधिक कम समय में तय कर सकते थे।

## गुप्त साम्राज्य

गुप्त साम्राज्य का उदय तीसरी सदी के अन्त में प्रयाग के निकट कौशाम्बी में हुआ।

### श्री गुप्त (240-280 ई.)

- प्रभावती गुप्ता के पूना स्थित ताम्रपत्र अभिलेख में श्रीगुप्त का उल्लेख गुप्त वंश के आदिराज के रूप में किया गया है। लेखों में इसका गोत्र धारण बताया गया है। इसका शासन 280 ई. तक रहा।
- श्रीगुप्त ने महाराज की उपाधि धारण की थी। इत्सिंग के अनुसार, श्रीगुप्त ने मगध में एक मंदिर का निर्माण करवाया तथा मंदिर के लिए 24 गाँव दान में दिए थे।
- गुप्त वंश का संस्थापक श्री गुप्त था एवं उसका उत्तराधिकारी घटोत्कच हुआ।

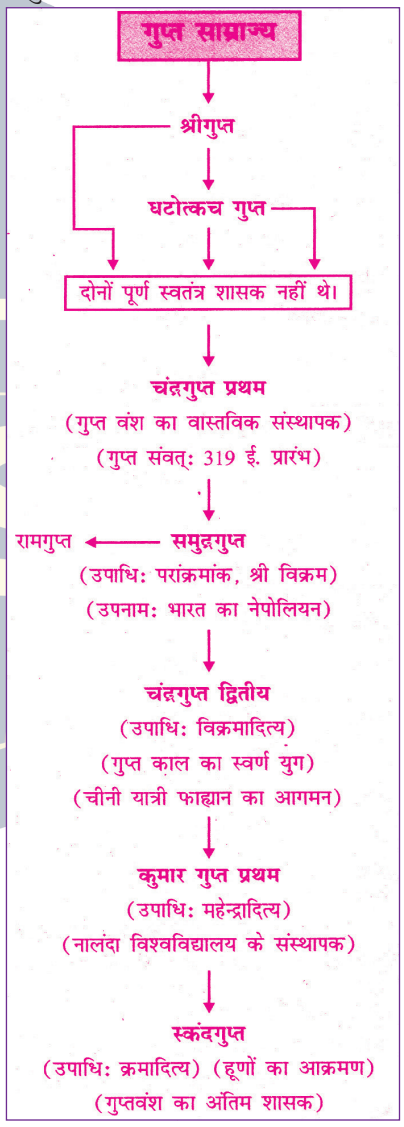


### घटोत्कच गुप्त (280-319 ई.)

- लगभग 280 ई. में श्रीगुप्त ने घटोत्कच को अपना उत्तराधिकारी बनाया। घटोत्कच ने महाराज की उपाधि धारण की थी।
- प्रभावती गुप्ता के पूना एवं रिद्धपुर ताम्रपत्र अभिलेखों में घटोत्कच को गुप्त वंश का प्रथम शासक बताया गया है।

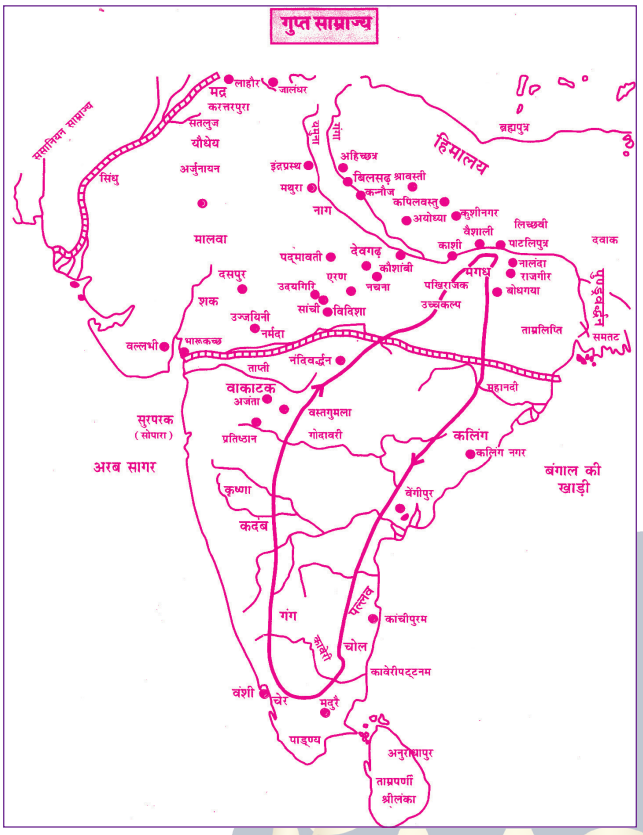


## चन्द्रगुप्त प्रथम ( 319-335 ई. )

- चन्द्रगुप्त प्रथम गुप्तवंश का पहला प्रसिद्ध शासक हुआ। श्रीगुप्त व घटोत्कच महाराज कहलाते थे, वहीं चन्द्रगुप्त प्रथम ने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की थी।
- चन्द्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवी राजकुमारी कुमार देवी से विवाह किया था।
- गुप्त वंश में सर्वप्रथम चन्द्रगुप्त प्रथम ने रजत (चांदी) की मुद्राओं का प्रचलन प्रारम्भ करवाया था।
- चन्द्रगुप्त प्रथम महान शासक हुआ, क्योंकि उसने 319-20 ई. में अपने राज्यारोहण की स्मृति में गुप्त संवत् चलाया था।
- चन्द्रगुप्त का उत्तराधिकारी समुद्रगुप्त (335-753 ई.) था।

## समुद्रगुप्त ( 335-380 ई. )

- समुद्रगुप्त के दरबार में प्रसिद्ध कवि हरिषेण रहता था, जिसने इलाहाबाद के प्रशस्ति लेख में समुद्रगुप्त के विजय अभियानों का उल्लेख किया।
- वी.ए. स्मिथ ने समुद्रगुप्त के निरन्तर विजयों को देखते हुए उसे भारत का नेपोलियन कहा है।
- समुद्रगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ किया और अश्वमेधहर्ता की उपाधि धारण की। वह विष्णु का उपासक था। साथ ही उसे कविराज भी कहा जाता है।
- समुद्रगुप्त ने गरुड़ (सर्वाधिक लोकप्रिय), धनुर्धर, परशु, अश्वमेध, व्याघ्रहन्ता एवं वीणासरण (वीणा बजाता हुआ समुद्रगुप्त- संगीत प्रेम) प्रकार के सिक्के चलाये।
- श्रीलंका के राजा मेघवर्मन ने कुछ उपहार भेजकर समुद्रगुप्त से गया में एक बुद्ध मंदिर बनवाने की अनुमति माँगी थी।

## चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य

- समुद्रगुप्त का उत्तराधिकारी चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य (380 ई.-412 ई.) हुआ। इसने परमभागवत राजाधिराज, नरेन्द्र, शकारि इत्यादि उपाधि धारण की। इसे देवगुप्त या देवराज भी कहा जाता है।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने उज्जैन को गुप्त साम्राज्य की दूसरी राजधानी बनाया।

| गुप्तकालीन अधिकारी | |
|---|---|
| महासेनापति | सेना का सर्वोच्च अधिकारी |
| महापीलुपति | गजसेना का अध्यक्ष |
| महाश्वपति | अश्वसेन का अध्यक्ष |
| महासंधिविग्राहिक | युद्ध और शांति का मंत्री |
| दण्डपाशिक | पुलिस विभाग का मुख्य अधिकारी |
| चाट एवं भाट | साधारण कर्मचारी (पुलिस) |
| विनयस्थित स्थापक | धार्मिक मामलों का मुख्य अधिकारी |
| शौल्किक | शुल्क वसूलने वाला (व्यापार) |

- चन्द्रगुप्त द्वितीय के दरबार में नवरत्न थे। ये हैं– अमरसिंह, कालिदास, वेतालभट्ट, घटकर्पर, क्षपनक, वररुचि, शंकु, धन्वतंरि (आयुर्वेदाचार्य) तथा वाराहमिहिर।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय चीनी यात्री फाह्यान (399-414 ई.) ने भारत भ्रमण किया।
- बौद्ध विद्वान दिक्नाथ को संरक्षण दिया, जिसे मध्यकालीन न्याय का पिता कहा जाता है।

## कुमार गुप्त महेन्द्रादित्य ( 415-454 ई. )

- चन्द्रगुप्त द्वितीय का उत्तराधिकारी कुमार गुप्त महेन्द्रादित्य (415-454 ई.) हुआ।
- ह्वेनसांग ने कुमारगुप्त को शक्रादित्य कहा है। वह कार्तिकेय का उपासक था।
- कुमार गुप्त के समय ही पुष्यमित्र जातियों का विद्रोह हुआ।
- नालन्दा विश्वविद्यालय का संस्थापक कुमार गुप्त था। उसने अश्वमेध यज्ञ किया।
- कुमारगुप्त का उत्तराधिकारी स्कन्दगुप्त विक्रमादित्य (455-67 ई.) हुआ।
- स्कन्दगुप्त ने सौराष्ट्र में पर्णदत्त को गवर्नर नियुक्त किया एवं उसके पुत्र चक्रपालित को सुदर्शन झील के पुनरुद्धार का कार्य सौंपा। चक्रपालित ने झील के किनारे एक विष्णु मंदिर बनवाया।
- स्कन्दगुप्त ने सौ राजाओं के स्वामी की उपाधि धारण की। उसने चीन में अपना राजदूत भेजा।
- स्कंदगुप्त के समय प्रथम हूण आक्रमण हुआ।
- गुप्त साम्राज्यों का विभाजन प्रांतों में हुआ, जिसे भुक्ति/अवनि/देश कहा जाता था। जिसका प्रधान उपरिक कहलाता था।
- भुक्ति के नीचे विषय होता था, जिसके प्रमुख विषयपति कहलाते थे।
- गुप्तवंश का अन्तिम शासक विष्णुगुप्त था।
- सीमा प्रांत का प्रशासक गोप्ता कहलाता था।

- प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी, जिसके प्रमुख ग्रामीक कहलाते थे।
- ग्राम समूहों की छोटी इकाई को पेठ कहा जाता था।
- भाग- राजा का भूमि के उत्पादन से प्राप्त होने वाला छठा हिस्सा।
- भोग- राजा को हर दिन फल एवं सब्जियों के रूप में दिया जाने वाला कर।
- उपरिकर एवं उद्रंकर- एक प्रकार का भूमिकर था।
- भूमि का स्वामी कृषकों से बेगार या विष्टि लिया करता था।
- कृषि से जुड़े हुए कार्यों को महाक्षपटलिक एवं कारणिक देखता था।
- सिंचाई के लिए रहट या घटी यंत्र का प्रयोग होता था।
- श्रेणियाँ, व्यावसायिक उद्यम एवं निर्माण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं। श्रेणी का प्रधान ज्येष्ठक (वंशानुगत) होता था। श्रेणियाँ आधुनिक बैंक का भी काम करती थीं।
- श्रेणी से बड़ी संस्था निगम थी, जिसका प्रधान श्रेष्ठि कहलाते थे। व्यापारिक कारवाँ का नेतृत्व करने वाला सार्थवाह कहलाते थे।
- मंदसौर अभिलेख के अनुसार रेशम बुनकरों की श्रेणी ने एक सूर्य मंदिर बनवाया।
- स्कन्द गुप्त के इंदौर ताम्रपत्र अभिलेख में तैलिक श्रेणी का उल्लेख मिलता है।
- कुमार गुप्त के दामोदर ताम्रपत्र में भूमि बिक्री संबंधी क्रियाकलापों का उल्लेख है।
- गुप्तकालीन स्वर्ण सिक्के को दीनार कहा जाता था।
- गुप्तकाल में उज्जैन सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यापारिक स्थल था। गुप्त काल के अन्तिम चरण में पाटलिपुत्र, मथुरा, सोनपुर, सोहगौरा एवं गंगाघाटी के कुछ नगरों का ह्रास हुआ।
- गुप्तकाल में शूद्रों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ।
- दासों को दासत्व भाव से मुक्त कराने का प्रथम प्रयास नारद स्मृति ने किया।
- सर्वप्रथम सती-प्रथा का प्रमाण 510 ई. के भानुगुप्त के एरण अभिलेख से मिलता है। जिसमें किसी गोपराज (सेनापति) की मृत्यु पर उसकी पत्नी के सती होने का उल्लेख है।
- नारद एवं पराशर स्मृति में विधवा विवाह के प्रति समर्थन जताया गया है।
- वेश्यावृत्ति करने वाली स्त्रियों को गणिका एवं वृद्ध वेश्या को कुट्टनी कहा जाता था।
- गुप्त स्थापत्य ने नागर शैली का आधार तैयार किया।
- अजन्ता में निर्मित कुल 29 गुफाओं में वर्तमान में केवल 6 ही (1, 2, 9, 10, 16 एवं 17) शेष हैं, जिनमें 16 एवं 17 गुप्कालीन हैं। इसमें गुफा संख्या 16 में उत्कीर्ण मरणासन्न राजकुमारी का चित्र प्रशंसनीय है।
- गुफा संख्या 17 को चित्रशाला कहा गया है। इस चित्रशाला में बुद्ध के जन्म, जीवन, महाभिनिष्क्रिमण एवं महापरिनिर्वाण की घटनाओं से संबंधित चित्र शामिल हैं।
- गुप्तकाल की मूर्तियों में कुषाणकालीन नग्नता एवं कामुकता का पूर्णतः लोप हो गया।
- ग्वालियर के समीप विन्ध्यपर्वत को काटकर बाघ की गुफायें बनाई गयीं।
- अजन्ता का चित्र महायान शाखा एवं बाघ गुफाओं का चित्र लौकिक जीवन से संबंधित हैं।
- विष्णु शर्मा का पंचतंत्र (संस्कृत) बाइबिल के पश्चात् विश्व का दूसरा लोकप्रिय ग्रंथ है।
- गुप्त काल में पुराणों की रचना प्रारम्भ हुई, जिसमें ऐतिहासिक परम्पराओं का उल्लेख मिलता है।
- बुद्धघोष (हीनयान) ने त्रिपिटकों पर भाष्य लिखा, इसका प्रसिद्ध ग्रंथ विसुद्दिमग्ग' है।

**राजस्व शब्दावली**

| | शब्द | अर्थ |
|---|---|---|
| 1. | भाग | राजा को दिया जानेवाला उपज का छठा भाग |
| 2. | भोग | राजा को फल व सब्जियों के रूप में दिया जाने वाला कर |
| 3. | उपरि | अस्थायी कृषकों से लिया जाने वाला कर |
| 4. | ध्रुवाधिकरण | भूमिकर संग्रह करने वाला पदाधिकारी |
| 5. | न्यायाधिकरणिक | भूमि सम्बंधी विवादों का निपटारा करने वाला पदाधिकारी |
| 6. | महाखपटलिक | भूमि आलेखों को सुरक्षित रखने वाला अधिकारी |
| 7. | उद्रग | स्थायी कृषकों से लिया जानेवाला कर |
| 8. | अयुक्तक व विनियुक्तक | भूमि क्रय-विक्रय से संबंधित अधिकारी |
| 9. | शुल्क | सीमा बिक्री की वस्तुओं पर लगने वाला कर। |
| 10. | हलदंड | हल पर लगने वाला कर |

**गुप्तकालीन अधिकारी**

| | अधिकारी | विभाग |
|---|---|---|
| 1. | महासेनापति | सेना का सर्वोच्च अधिकारी |
| 2. | रणभांडागारिक | सेना की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाला प्रधान अधिकारी। |
| 3. | महासंधिविग्राहक | युद्ध व शांति का प्रधान |
| 4. | महाभांडागाराधिकृत | राजकीय कोष का प्रधान |
| 5. | महाअक्षपटलिक | अभिलेख विभाग का प्रधान |
| 6. | सर्वाध्यक्ष | केंद्रीय सचिवालय का प्रधान |
| 7. | महाप्रतिहार | राजप्रासाद का मुख्य सुरक्षा अधिकारी |
| 8. | ध्रुरुवाधिकरण | भूमि कर वसूलने वाले विभाग का प्रधान |
| 9. | आहारिक | दान विभाग का प्रधान |
| 10. | महाबलाधिकृत | सेना का सेनापति (सर्वोच्च अधिकारी) |
| 11. | महादण्डनायक | न्यायाधीश |
| 12. | संधिविग्रहिक | युद्ध तथा संधि के विषयों से सम्बंधित (युद्ध मंत्री) |
| 13. | दण्डपाशिक | पुलिस विभाग का सर्वोच्च अधिकारी |
| 14. | विनयस्थिति स्थापक | शिक्षा अधिकारी |

| गुप्तकालीन प्रशासनिक इकाई | |
|---|---|
| **प्रशासनिक इकाई** | **अधिकारी** |
| ❖ देश | गोरना (गोपत्री) |
| ❖ भुक्ति | उपरिक |
| ❖ विषय | विषयपति |
| ❖ पेठ | पेठपति |
| ❖ ग्राम | ग्रामपति या महत्तर |
| राज्य कई भुक्तियों अर्थात् प्रांतों में विभाजित था तथा प्रत्येक भुक्ति एक-एक उपरिक के प्रभार में रहती थी। भुक्तियाँ अनेक विषयों अर्थात् जिलों में विभाजित थी, जिसमें प्रत्येक विषय का प्रभारी विषयपति होता था। पूर्वी भारत में प्रत्येक विषय को बीथियों में बाँटा गया था तथा वीथियाँ ग्रामों में विभाजित थी। | |

| गुप्तकालीन प्रमुख मंदिर | | |
|---|---|---|
| | **मंदिर** | **स्थिति** |
| 1. | ऐरण का विष्णु मंदिर | ऐरण, सागर जिला मध्य प्रदेश |
| 2. | भूमरा का शिव मंदिर | भूमरा, सतना जिला मध्य प्रदेश |
| 3. | साँची का मंदिर | साँची रायसेन जिला, मध्य प्रदेश |
| 4. | पिपरिया का विष्णु मंदिर | पिपरिया, सतना जिला, मध्य प्रदेश |
| 5. | तिगवा का कंकाली देवी मंदिर | तिगवा, जबलपुर, मध्य प्रदेश |
| 6. | तिगवा का विष्णु मंदिर | तिगवा, जबलपुर, मध्य प्रदेश |
| 7. | नचना कुठार का पार्वती मंदिर | नचना कुठार, पन्ना (मध्य प्रदेश) |
| 8. | नागोद का शिव मंदिर | नागोद, सतना जिला मध्य प्रदेश |
| 9. | मुकुंद दर्रा का मंदिर | मुकुंद दर्रा, कोटा जिला, राजस्थान |
| 10. | भीतरगाँव का कृष्ण मंदिर | भीतरगाँव, कानपुर जिला, उत्तर प्रदेश |
| 11. | सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर | सिरपुर, रायपुर जिला, छत्तीसगढ़ |
| 12. | मणि नाग का मंदिर | राजगीर, नालंदा जिला बिहार |
| 13. | खोह का शिव मंदिर | खोह, सतना जिला मध्य प्रदेश |
| 14. | मढ़ी का मंदिर | मढ़ी, जबलपुर जिला मध्य प्रदेश |
| 15. | देवगढ़ का दशावतार मंदिर | देवगढ़, झांसी जिला, उत्तर प्रदेश |

- ❖ जैन दार्शनिक आचार्य सिद्धसेन ने न्याय दर्शन पर न्यायावतारम् ग्रंथ लिखा।
- ❖ वाराहमिहिर प्रसिद्ध खगोलशास्त्री थे। इनके ग्रंथ वृहत्संहिता तथा पञ्चसिद्धान्तिका हैं। वृहत्संहिता में नक्षत्र-विद्या, वनस्पतिशास्त्र, इतिहास, भौतिक भूगोल जैसे विषयों का वर्णन है।
- ❖ आर्यभट्ट (गणितज्ञ) ने आर्यभट्टीयम एवं सूर्यसिद्धान्त नामक ग्रंथ लिखे। इन्होंने दशमलव प्रणाली का विकास किया। सर्वप्रथम उसी ने बताया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। इन्होंने सूर्यग्रहण एवं चन्द्रग्रहण होने के वास्तविक कारण पर प्रकाश डाला।
- ❖ ब्रह्मगुप्त ने ब्रह्म सिद्धान्त में बताया कि प्राकृतिक नियमानुसार समस्त वस्तुएँ पृथ्वी पर गिरती हैं।
- ❖ वागभट्ट ने आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ अष्टांग हृदय की रचना की।

❖ सांस्कृतिक उपलब्धियों के कारण गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग कहा जाता है।

## पुष्यभूति वंश

❖ गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद हरियाणा के अम्बाला जिले के थानेश्वर नामक स्थान पर पुष्यभूति वंश की स्थापना हुई। इस वंश का प्रथम प्रतापी शासक प्रभाकरवर्धन था।

❖ इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक हर्षवर्धन 606 ई. में सिंहासन पर बैठा।

❖ हर्षवर्धन की प्रथम राजधानी थानेश्वर थी और बाद में कन्नौज में स्थापित की।

❖ हर्षचरित का लेखक बाणभट्ट हर्षवर्धन का दरबारी कवि था।

❖ हर्षवर्धन की प्रसिद्ध रचना नागानन्द, रत्नावली और प्रियदर्शिका।

❖ हर्षवर्धन के दरबार में अन्य कवि थे– मयूर, हरिदत्त एवं जयसेन।

❖ हर्ष ने परम भट्टारक मगध नरेश की उपाधि ली। उसे शिलादित्य भी कहा जाता है।

❖ चीनी यात्री ह्वेनसांग (630 से 640 ई. तक) हर्षवर्धन के शासन काल में भारत आया।

❖ ह्वेनसांग को यात्रियों का राजकुमार, नीति का पण्डित एवं वर्तमान शाक्यमुनि कहा जाता है।

❖ हर्ष ने 643 ई. में कन्नौज एवं प्रयाग में दो विशाल धार्मिक सभाओं का आयोजन किया।

❖ हर्ष ने 641 ई. में एक ब्राह्मण को अपना दूत बनाकर चीन भेजा।

❖ 643 ई. में चीनी सम्राट ने ल्यांग-होआई- किंग को दूत बनाकर हर्ष के दरबार में भेजा।

❖ हर्ष द्वारा प्रयाग में आयोजित सभा को मोक्ष-परिषद कहा गया।

❖ चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय ने हर्ष को ताप्ती नदी के किनारे परास्त किया।

❖ ह्वेनसांग के अनुसार मंत्रियों एवं अधिकारियों को वेतन भूमि अनुदान के रूप में दिया जाता था।

❖ साधारण सेना को चाट एवं भाट, अश्वसेना के प्रधान को वृहदेश्वर एवं पैदल सेनाओं के प्रधान को बलाधिकृत एवं महाबलाधिकृत कहा जाता था।

## संगम युग

❖ संगम का अर्थ है तमिल कवियों, विद्वानों, आचार्यों, ज्योतिषियों एवं बुद्धजीवियों की एक परिषद। इसका आयोजन पाण्ड्य राजाओं के राजकीय संरक्षण में हुआ।

❖ कुल तीन संगम हुए, जिसमें पहला संगम मदुरा में अगस्त्य ऋषि की अध्यक्षता में हुआ।

❖ दूसरा संगम कपाटपुरम (अलवै) में ऋषि अगस्त्य एवं तौल्लकापियर की अध्यक्षता में हुआ। इसी सम्मेलन में तोल्कापियर ने तोल्कापियम नामक व्याकरण ग्रंथ लिखा।

| पुस्तक | लेखक | पुस्तक | लेखक |
|---|---|---|---|
| जीवक चिंतामणि | तिरुतक्कदेवर | शिल्पादिकारम | इलांगो आदीगल |
| मणिमेखलै | सीतलै सत्तनार | तिरुमुरुकात्रुप्पदै | नक्कीरर |

❖ तीसरा संगम उत्तरी मदुरा में नक्कीरर की अध्यक्षता में हुआ।

❖ संगम साहित्य में तीन राजवंश- चोल, चेर एवं पाण्ड्य का वर्णन है।

❖ चोल के बारे में पहली जानकारी पाणिनी की अष्टाध्यायी में मिलती है।

❖ चोलों का शासकीय चिन्ह बाघ था।

❖ इसकी पहली राजधानी उत्तरी मनलूर एवं बाद में उरैयुर तथा तंजावुर थी।

- इस वंश का महत्वपूर्ण शासक करिकाल था, जिसने कावेरी नदी के मुहाने पर पुहार (कावेरीपत्तनम) की स्थापना की। इन्होंने श्रीलंका पर आक्रमण किया।
- चेरों के बारे में पहली जानकारी ऐतरेय ब्राह्मण के चेरपाद से मिलती है।
- चेर वंश का महत्वपूर्ण शासक शेनगुट्वन (लाल चेर) था, जिसने पत्तिनी या कण्णागी पूजा प्रारम्भ करवाया।
- पाण्ड्य का प्रारम्भिक उल्लेख अष्टाध्यायी में मिलता है।
- पाण्ड्य की राजधानी मदुरा कीमती मोतियों, उच्चकोटि के वस्त्र एवं व्यापारिक केन्द्र के लिए प्रसिद्ध थी। इसका राजकीय चिन्ह मत्स्य (मछली) था।
- पाण्ड्य शासक नेडियोन ने समुद्र पूजा की प्रथा आरम्भ करवायी।
- संगम साहित्य की भाषा तमिल एवं लिपि ब्राह्मी है।
- मुजीरिस में रोमन सम्राट आगास्टस का मंदिर रोमनों द्वारा बनवाया गया।
- संगम काल में दास-प्रथा का प्रचलन नहीं था एवं सती प्रथा का प्रचलन था।
- संगम काल में मुरुगन (सुब्रह्मण्यम, कार्तिक) की उपासना सर्वाधिक प्राचीन है। उसका प्रतीक चिन्ह मुर्गा (कुक्कुट) को माना जाता है।

## पल्लव वंश

- कांची के पल्लव वंश की प्रथम जानकारी हरिषेण के प्रयाग प्रशस्ति एवं ह्वेनसांग के यात्रा विवरण से मिलती है। पल्लव पहले सातवाहनों के सामंत थे।
- पल्लव वंश के संस्थापक सिंहविष्णु (575-600 ई.) वैष्णव धर्म के अनुयायी थे।
- किरातार्जुनीयम के लेखक भारवि सिंह विष्णु के दरबार में निवास करते थे।
- सिंह विष्णु ने मामल्लपुरम में आदिवराह गुहा मंदिर बनवाया।
- महेन्द्र वर्मन प्रथम (60-30 ई.) ने मत्तविलास, विचित्रचित्त एवं गुणभार की उपाधि धारण की। उसने मत्तविलास प्रहसन एवं भागवद्ज्जकीयम ग्रंथ की रचना की।

| संगमकालीन प्रदेश एवं देवता | | |
|---|---|---|
| **क्षेत्र** | **प्रदेश** | **देवता** |
| कुरुंजि | पर्वत | मुरुगन |
| पल्लै | निजेलस्थल | कोरनावाई |
| मुल्लै | जंगल | मेयन (विष्णु) |
| मरुदम | जुते क्षेत्र | इन्द्र |
| नेयतल | समुद्र तट | वरुण |

- नरसिंह वर्मन प्रथम (630-68 ई.) वातापीकोंड एवं महामल्ल की उपाधि धारण की। इन्हीं के समय ह्वेनसांग (641 ई.) पल्लवों की राजधानी कांची पहुंचा।
- महाबलीपुरम के एकाश्मक रथों का निर्माण नरसिंह वर्मन प्रथम ने करवाया।
- परमेश्वर वर्मन प्रथम (राजसिंह) (670-80) ने मामल्लपुर का गणेश मंदिर बनवाया।

- नरसिंह वर्णन द्वितीय (680-720 ई.) कांचीं में कैलाश नाथ मंदिर (राजसिद्धेश्वर मंदिर), महाबलीपुरम का समुद्रतटीय मंदिर एवं ऐरावतेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।
- दशकुमारचरित का लेखक दण्डी नरसिंहवर्मन द्वितीय के दरबार में रहता था।
- परमेश्वर वर्मन द्वितीय (720-31 ई.) ने वैकुण्ठ पेरुमल का मंदिर बनवाया।
- नंदिवर्मन द्वितीय (731-95 ई.) ने काँची में मुक्तेश्वर मंदिर बनवाया।
- दंतिवर्मन को पल्लव कुल भूषण कहा जाता है।
- नन्दिकुलम्बकम के लेखक पोरुन्देवनार को नंदिवर्मन तृतीय का राजाश्रय मिला।
- अपराजित ने विरुत्तनि में वीरट्टानेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।

## वातापी के चालुक्य

- जयसिंह वातापी चालुक्य राजवंश का प्रथम ऐतिहासिक शासक था, जिसकी राजधानी वातापी है।
- महाकूट स्तम्भ लेखानुसार कीर्तिवर्मन प्रथम ने बहु सुवर्ण एवं अग्निष्टोम यज्ञ सम्पन्न करवाया।
- पुलकेशिन द्वितीय सत्याश्रय, श्रीपृथ्वी वल्लभ महाराज दक्षिणापथेश्वर एवं हर्ष को हराकर परमेश्वर की उपाधि धारण की।
- एहोल अभिलेख के लेखक रविकीर्ति को पुलकेशिन द्वितीय का संरक्षण प्राप्त था।
- पुलकेशिन द्वितीय को पल्लव शासक नरसिंह वर्मन प्रथम ने पराजित किया।
- जिनेन्द्र के मेगुती मंदिर का निर्माण पुलकेशिन द्वितीय ने करवाया।
- अजन्ता के एक गुहा चित्र में फारसी दूत मंडल का स्वागत करते हुए पुलकेशिन द्वितीय को दिखाया गया है।
- मालवा को जीतने के उपरांत विनयादित्य ने सकलोत्तरपथनाथ की उपाधि धारण की।

- विक्रमादित्य-द्वितीय ने पल्लव नरेश नंदिवर्मन को पराजित कर कोचिनकोंड की उपाधि धारण की।
- विक्रमादित्य के समय अरबों का आक्रमण हुआ, जिसे पुलकेशी (भतीजा) ने विफल कर दिया। फलतः विक्रमादित्य ने उसे अवनिजनाश्रय की उपाधि प्रदान की।
- विक्रमादित्य-द्वितीय की प्रथम पत्नी लोकमहादेवी ने पट्टदकल में विरुपाक्षमहादेव एवं दूसरी पत्नी त्रैलोक्य देवी ने त्रैलोकेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।
- चालुक्य के सामंत दंतिदुर्ग ने कीर्तिवर्मन द्वितीय को 752 ई. में परास्त कर राष्ट्रकूट वंश की स्थापना की, जिसकी जानकारी समनगढ़ अभिलेख से मिलती है।

## राष्ट्रकूट राजवंश

- राष्ट्रकूटों की राजधानी मान्यखेत या मालखंड थी।
- दन्तिदुर्ग ने उज्जयिनी में हिरण्यगर्भ (महादान) यज्ञ किया था।
- एलोरा के प्रसिद्ध कैलाश मंदिर का निर्माण कृष्ण प्रथम ने कराया।
- ध्रुव (धारावर्ष) प्रथम राष्ट्रकूट शासक था जिसने कन्नौज पर अधिकार करने हेतु त्रिपक्षीय संघर्ष में भाग लिया और प्रतिहार नरेश वत्सराज एवं पाल नरेश धर्मपाल को पराजित किया।
- अमोघवर्ष जैन धर्म का अनुयायी था। उसने कन्नड़ भाषा में कविराजमार्ग की रचना की।
- अमोघवर्ष ने आदिपुराण के लेखक जिनसेन, गणितसार संग्रह के लेखक महावीराचार्य एवं अमोघवृत्ति के लेखक सक्तायन को संरक्षण प्रदान किया।
- अरब यात्री अलमसूदी राष्टकूट शासक इन्द्र तृतीय के समय भारत आया और उसे भारत का सर्वश्रेष्ठ शासक कहा।
- एलोरा एवं एलिफेन्टा (महाराष्ट्र) गुहा मंदिरों का निर्माण राष्ट्रकूटों के समय ही हुआ।
- एलोरा में उप शैलकृत गुफाएं हैं। इनमें 1 से 12 तक बौद्ध, 13 से 29 तक हिन्दुओं एवं 30 से 34 तक जैनों की गुफाएं हैं। इसमें 10 चैत्यगृह हैं जो विश्वकर्मा को समर्पित हैं।
- एलिफेन्टा गुफा पौराणिक देवताओं की अत्यन्त भव्य मूर्तियों के लिए विख्यात है। इन मूर्तियों में त्रिमूर्ति शिव की मूर्ति सर्वाधिक लोकप्रिय है।
- 973 ई. में तैलप द्वितीय ने राष्ट्रकूट शासक खोटिख के भतीजे कर्क को पराजित कर कल्याणी के चालुक्य वंश की नींव डाली।

## कल्याणी के चालुक्य राजवंश

- चालुक्य वंश के प्रमुख शासक–तैलप प्रथम, तैलप द्वितीय, विक्रमादित्य, जयसिंह, सोमेश्वर, सोमेश्वर द्वितीय, विक्रमादित्य षष्ठ, सोमेश्वर तृतीय एवं तैलप तृतीय थे।
- सोमेश्वर प्रथम ने मान्यखेत से राजधानी हटाकर कल्याणी (कर्नाटक) को बनाया।
- इस वंश का सबसे महान राजा विक्रमादित्य षष्ठ था, जिसके दरबार में मिताक्षर (हिन्दू विधि ग्रंथ) के लेखक विज्ञानेश्वर एवं विक्रमांकदेव चरित के लेखक विल्हण रहता था।
- वेंगी के चालुक्यवंश का संस्थापक विष्णुवर्धन था, जिसकी राजधानी वेंगी (आंध्र प्रदेश) में थी।

## सोलंकी के चालुक्य (गुजरात) (942 से 1178 ई. तक)

- इस राजवंश का संस्थापक मूलराज प्रथम था, जिसने अन्हिलवाड़ को अपनी राजधानी बनाया।
- भीम प्रथम के शासन काल में महमूद गजनी ने सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण किया।
- जयसिंह ने सिद्धपुर में रुद्रमहाकाल मंदिर बनवाया।
- जयसिंह के दरबार में प्रसिद्ध जैन आचार्य हेमचन्द्र रहते थे।
- माउण्ट आबू पर्वत पर जयसिंह ने अपने सातों पूर्वजों के गजरोही मूर्तियों की स्थापना की।
- मूलराज द्वितीय ने 1178 में आबू पर्वत के समीप मुहम्मद गोरी को परास्त किया।
- सोलंकी चालुक्य के शासक भीम द्वितीय को हराकर उसके मंत्री लवण प्रसाद ने वघेल वंश की नींव रखी। बघेल वंश के अंतिम शासक रामकर्ण द्वितीय को अलाउद्दीन ने हराकर सल्तनत में मिला लिया।
- भीम प्रथम के सामन्त विमल ने आबू पर्वत पर दिलवाड़ा का जैन मंदिर बनवाया।
- मोढेरा के सूर्य मंदिर का निर्माण सोलंकी राजाओं ने करवाया।
- सोलंकी शासक कुमार पाल जैनधर्म का अनुयायी था। वह जैन धर्म का अंतिम राजकीय प्रवर्तक माना जाता है।

## राजपूतों की उत्पत्ति

- पृथ्वीराजरासो (चन्दरबरदाई कृत), नवसाहसांक चरित, हम्मीर रासो, वंश भास्कर एवं सिसाणा अभिलेख के अनुसार राजपूतों की उत्पत्ति अग्निकुंड से हुई।
- महर्षि वशिष्ठ ने दैत्यों के विनाश के लिए आबू पर्वत (राजस्थान) पर एक अग्निकुण्ड का निर्माण कर यज्ञ किया। इस यज्ञ की अग्नि से चार योद्धाओं प्रतिहार, परमार, चौहान एवं चालुक्य की उत्पत्ति हुई।

### गुर्जर प्रतिहार

- इस वंश का संस्थापक नागभट्ट प्रथम था। इसने अरबों (जुनैद) को भारत से भगा दिया।
- प्रतिहार शासक वत्सराज ने धर्मपाल (पाल) को पराजित किया एवं ध्रुव (राष्ट्रकूट) से पराजित हुआ।
- प्रतिहार वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली राजा मिहिरभोज था।
- मिहिरभोज वैष्णव भक्त था, इसलिए उसने आदिवराह की उपाधि धारण की।
- मिहिरभोज ने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया।
- मिहिरभोज के शासन काल में अरब यात्री सुलेमान भारत आया।
- महेन्द्रपाल के दरबार में संस्कृत के विद्वान राजशेखर रहते थे। उन्होंने काव्यमीमांसा, कर्पूरमंजरी, हरविलास, बालरामायण तथा विद्वशालभञ्जिका नामक ग्रंथ की रचना की।
- महीपाल के शासनकाल में अलमसूदी भारत आया और उसने प्रतिहारों को अल-गुजर एवं राजा को बोरा कहा।

## गहड़वाल राजवंश

- गहड़वाल वंश का संस्थापक चन्द्रदेव था। इसकी राजधानी कन्नौज थी।
- गहड़वाल शासक चन्द्रदेव ने मुसलमानों से लड़ने के लिए तुरुष्कदंड नामक कर लगाया।
- गहड़वाल शासकों को काशी नरेश भी कहा जाता है, क्योंकि बनारस इनके राज्य की पूर्वी सीमा के नजदीक था।
- इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली राजा गोविन्दचन्द्र था।
- कल्पद्रुम (विधि ग्रंथ) के लेखक लक्ष्मीधर, गोविन्द चन्द्र का मंत्री था।
- नैषधचरित के लेखक श्रीहर्ष जयचन्द के दरबार में रहता था।
- पृथ्वीराज तृतीय ने स्वयंवर से जयचन्द्र की पुत्री संयोगिता का अपहरण कर लिया था।
- जयचन्द को 1194 ई. के चन्दावर के युद्ध में मोहम्मद गौरी ने पराजित कर हत्या कर दिया और उसके पुत्र हरिश्चन्द्र को अपने अधीन शासक बनाया।

## चाहमान या चौहान वंश (अजमेर और दिल्ली)

- चौहान वंश का संस्थापक वासुदेव था। इसकी आरम्भिक राजधापनी अहिच्छत्र थी।
- शासक अजयपाल ने अजमेर नगर की स्थापना की और उसे अपनी राजधानी बनाया।
- विग्रहराज चतुर्थ विसलदेव ने दिल्ली पर अधिकार कर हांसी को जीत लिया।
- विग्रहराज चतुर्थ विसलदेव ने हरिकेली नाटक की रचना की तथा उसके दरबारी कवि सोमदेव ने ललित-विग्रहराज नामक ग्रंथ लिखा।
- ऐबक द्वारा निर्मित अढ़ाई दिन का झोपड़ा (मस्जिद) आरम्भ में विग्रहराज चतुर्थ द्वारा निर्मित एक संस्कृत विद्यालय था।
- पृथ्वीराजरासो के लेखक चन्दरबरदाई पृथ्वीराज तृतीय के दरबारी कवि थे।
- रणथम्भौर के जैन मंदिर का शिखर पृथ्वीराज तृतीय ने बनवाया था।
- तराईन का प्रथम (1191) एवं द्वितीय (1192) युद्ध पृथ्वीराज तृतीय एवं गोरी के बीच हुआ जिसमें पृथ्वीराज को प्रथम युद्ध में सफलता एवं दूसरी में असफलता (मृत्यु) मिली।
- गोरी ने अपनी अधीनता में उसके पुत्र गोविन्द को राजा बनाया किन्तु उसका चाचा हरिराज उसे हटाकर स्वयं शासक बन गया और कुछ समय बाद उसने आत्महत्या कर ली।

## चंदेल राजवंश (जेजाक भुक्ति-बुंदेलखंड)

- चंदेल प्रतिहार के सामंत थे। इस वंश का पहला राजा नन्नुक था।
- धंगदेव को चन्देलों की वास्तविक स्वाधीनता का जन्मदाता माना जाता है। इसने कलिंजर (महोबा) से खजुराहों अपनी राजधानी स्थानान्तरित किया।
- यशोवर्मन ने खजुराहों में एक विशाल विष्णु मंदिर (चतुर्भुज मंदिर) का निर्माण करवाया।
- धंगदेव के शासन काल में खजुराहों के कन्दरिया महादेव मंदिर का निर्माण हुआ।
- प्रबोध चन्द्रोदय का लेखक कृपण मिश्र कीर्तिवर्मन का दरबारी कवि था।
- विद्याधर ने प्रतिहार शासक राज्यपाल की महमूद गजनवी के समक्ष समर्पण कर देने के कारण हत्या कर दिया।
- कीर्तिवर्मन ने कीर्तिसागर (महोबा के निकट) जलाशय का निर्माण करवाया।
- आल्हा एवं उदल परमार्दिदेव के सेनानायक थे, जिसने 1182 में पृथ्वीराज तृतीय के साथ युद्ध करते हुए अपनी जान गवाई।
- 1203 ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने परमार्दिदेव को पराजित कर कलिंजर पर अधिकार कर लिया और 1205 ई. में चन्देल राज्य दिल्ली में मिला लिया गया।

## सेन वंश

- सेनवंश की स्थापना सामन्त सेन ने राढ़ में की थी। इसकी राजधानी नदिया (लखनौती) थी।
- सेनवंश का प्रथम स्वतंत्र शासक विजयसेन था, जो शैवधर्म का अनुयायी था।
- विजयसेन ने देवपाड़ा में प्रद्युम्नेश्वर मंदिर (शिव मंदिर) की स्थापना की।
- बल्लालसेन ने स्मृति पर दीनसागर नाम का लेख एवं खगोलविज्ञान पर अद्भुतसागर लेख लिखा। अद्भुतसागर को पूर्णरूप लक्ष्मन सेन ने दिया।
- बल्लालसेन ने जाति प्रथा एवं कुलीन प्रथा को प्रोत्साहन दिया।
- बल्लालसेन ने गौड़ेश्वर एवं निःशंक शंकर की उपाधि धारण की।
- लक्ष्मण सेन के राजदरबार में गीत गोविन्द के लेखक जयदेव, पवनदूत के लेखक धोई एवं ब्राह्मणसर्वस्व के लेखक हलायुद्ध रहते थे।
- हलायुद्ध लक्ष्मण सेन का प्रधान न्यायाधीश था।

## कश्मीर का राजवंश

- कश्मीर में क्रमशः कार्कोट वंश, उत्पल वंश एवं लोहर वंश ने शासन किया।
- सातवीं शताब्दी में दुर्लभ वर्धन ने कश्मीर में कार्कोट वंश की स्थापना की।
- प्रतापपुर नगर की स्थापना दुर्लभ के द्वारा की गयी।
- कार्कोट वंश का सबसे शक्तिशाली शासक ललितादित्य मुक्तापीड़ था।
- ललितादित्य ने कश्मीर में मार्तण्ड मंदिर का निर्माण करवाया।
- ललितादित्य ने कश्मीर में परिहासपुर नगर बसाया। उसने चीनी दरबार में एक दूत भेजा था।
- कार्कोट वंश के बाद अवन्ति वर्मन ने उत्पल वंश की स्थापना की।
- अवन्ति वर्मन ने अवन्तिपुर तथा सूय्यापुरा नामक नगरों की स्थापना करवाई।

- उसने कवि रत्नाकर एवं आनन्दवर्धन को अपने दरबार में संरक्षण प्रदान किया।
- अवन्ति वर्मन ने अभियन्ता सुरा के नेतृत्व में कई नहरों का निर्माण करवाया।
- उत्पल वंश के गोपालवर्मन के शासनकाल में अव्यवस्था फैल गयी, जिसका फायदा उठाकर यशस्कर ने कश्मीर की सत्ता ग्रहण की।
- इस वंश की महत्वाकांक्षी शासिका रानी दिद्दा (लोहर वंश की राजकुमारी) थी।
- उत्पल वंश के बाद संग्राम राज ने लोहर वंश का शासन स्थापित किया।
- संग्राम राज का उत्तराधिकारी अनन्त राज हुआ। उसे शासन में पत्नी सूर्यमती से सहयोग मिला।
- लोहर वंश का शासक हर्ष विद्वान, कवि एवं कई भाषाओं का जानकार था।
- राजतरंगिणी के लेखक कल्हण हर्ष के आश्रित कवि थे।
- हर्ष को कश्मीर का नीरो कहा जाता था। वह क्रूर एवं अत्याचारी शासक था।
- लोहर वंश का अन्तिम शासक जयसिंह था। उसने यवनों को परास्त किया था।
- राजतरंगिणी की रचना जयसिंह के समय में हुई। इसमें कश्मीर का इतिहास वर्णित है।

## चोल

- चोल राज्य पेन्नार एवं कावेरी नदियों के बीच पूर्वी तट पर अवस्थित था।
- चोलवंश के संस्थापक विजयालय (850-75 ई.) थे, जो आरम्भ में पल्लवों के सामंत थे।
- तंजौर को जीतने के उपलक्ष्य में विजयालय ने नरकेसरी की उपाधि धारण की।
- आदित्य प्रथम (875-907 ई.) ने पल्लवों को पराजित कर कोदण्डराम की उपाधि धारण की।
- परान्तक प्रथम (907-35 ई.) ने पाण्ड्य नरेश को हराकर मदुरैकोण्ड की उपाधि धारण की।
- तोक्कोलम के युद्ध में परान्तक प्रथम, राष्ट्रकूट एवं पश्चिमी गंग की सम्मिलित सेना से पराजित हुआ।
- राजाराज प्रथम (985-1014 ई.) ने लौह एवं रक्त की नीति का परिपालन करते हुए श्रीलंका के शासक महेन्द्र पंचम को पराजित किया और श्रीलंका में मामुण्डी चोल मण्डलम नामक नया प्रांत बसाया, जिसकी राजधानी पोलन्नरुआ (जनजाथमंगलम) में स्थापित किया।
- राजाराज प्रथम ने मालदीव पर अधिकार स्थापित किया।
- राजाराज प्रथम शैव था। उसने तंजौर में राजराजेश्वर (वृहदीश्वर) का शैव मंदिर बनवाया।
- राजाराज प्रथम ने शैलेन्द्र शासक श्रीमार विजयोक्तंग वर्मन को नागपट्म में चूड़ामणि नामक बौद्ध विहार बनाने की अनुमति दी।
- राजेन्द्र प्रथम (1014-44 ई.) की जानकारी तिरुवालंगाडु एवं करंदाइ अभिलेख से मिलती है।
- राजेन्द्र प्रथम ने संपूर्ण श्रीलंका (सिंहल) एवं द० पू० एशिया पर विजय प्राप्त की।
- राजेन्द्र प्रथम ने गंगा घाटी में सफलता के पश्चात् गंगैकोण्डचोल की उपाधि धारण की।
- राजेन्द्र प्रथम ने कावेरी तट पर गंगैकोण्डचोलपुरम नामक नई राजधानी का निर्माण करवाया। सिंचाई हेतु चोलगंगम नामक तालाब बनवाया।
- राजाधिराज (1052-54 ई.) कोप्पम के युद्ध में चालुक्य नरेश सोमेश्वर के हाथों मारा गया, किन्तु इस युद्ध में चोल विजयी रहे।
- वीर राजेन्द्र ने तुंगभद्रा के तट पर विजय स्तम्भ बनवाया एवं राजकेसरी की उपाधि धारण की।
- चोल शासक अधिराजेन्द्र (1070) की जन-विद्रोह की भीड़ ने हत्या कर दी।
- कुलोतुंग (1070-1120) के शासनकाल में सिंहल नरेश विजयबाहु ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया एवं दोनों के मध्य वैवाहिक संबंध द्वारा मैत्री स्थापित हुई।
- कुलोतुंग ने चीन दरबार में दूतमंडल भेजा।
- चोल लेख में कुलोतुंग को शुंगमतवर्त (करों को हटाने वाला) कहा गया है।
- विक्रम चोल ने वेंगी के चालुक्य को चोल साम्राज्य में मिलाया। उसने त्याग समुद्र की उपाधि धारण की।
- कुलोतुंग द्वितीय ने चिदम्बरम मंदिर में स्थित गोविन्दराज की मूर्ति को समुद्र में फिकवा दिया, जिसे कालान्तर में वैष्णव संत रामानुजाचार्य ने समुद्र से निकलवाकर तिरुपति के मंदिर में प्रतिष्ठित करवाया। बाद में रामराय ने उसे पुनः चिदम्बरम मंदिर में स्थापित करवाया।
- कुलोतुंग तृतीय ने कुंभकोणम (तिरुभुवन) में कम्पारेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया।
- चोल वंश का अंतिम शासक राजेन्द्र तृतीय था। इसके बाद 1279 ई. में पाण्ड्यों का चोल राज्य पर अधिकार स्थापित हो गया।
- चोलों की राजधानी क्रमशः उरैयूर, तंजौर, गंगैकोंडचोलपुरम थी।
- चोल साम्राज्य 6 प्रांतों में विभक्त थे। प्रांतों को मण्डलम् कहा जाता था।
- मण्डलम् को कोट्टम (कमिश्नरी), कोट्टम को नाडु (जिला) एवं नाडु कुर्रम (ग्राम समूह) में विभक्त था।
- स्थानीय स्वशासन चोल शासन- प्रणाली की महत्वपूर्ण विशेषता थी।
- परांतक प्रथम के उत्तर मेरुर शिलालेख से स्थानीय-स्वशासन की विस्तृत जानकारी मिलती है।
- उर सर्वसाधारण लोगों की समिति थी, जिसका कार्य सार्वजनिक कल्याण के लिए तालाबों व बगीचों के निर्माण हेतु गाँव की भूमि का अधिग्रहण करना था।
- उर का रूप लघु गणतंत्र जैसा था।

| शब्दावली | |
|---|---|
| औलनायकम | राजा का प्रधान सचिव |
| पेरुन्दरम | उच्च अधिकारी |
| शेरुन्दरन | निम्न श्रेणी के अधिकारी |
| तिरुन्दनम | प्रधान कर्मचारी |
| नाटुर | नाडु की स्थानीय सभा |
| नगरतार | नगर की स्थानीय सभा |
| वरित्पोत्त गकक | राजस्व विभाग का उच्च अधिकारी |
| वेलैक्कार | राजा का अंगरक्षक |
| महादण्डनायक | सेनाध्यक्ष |

- सभा अग्रहारों (ब्राह्मण बस्तियों) की संस्था थी। इसके सदस्यों को पेरुमक्कल कहा जाता था। यह वरियम नामक समितियों की सहायता से अपना कार्य संचालित करती थी।
- सभा की बैठक गाँव के मंदिर के वृक्ष के नीचे एवं तालाब के किनारे होती थी।
- महासभा भी अग्रहारों की संस्था थी। महासभा को पेरुगुरी एवं इसके सदस्यों को पेरुमक्कल कहा जाता था। सार्वजनिक भूमि पर महासभा का अधिकार होता था।
- महासभा को ग्रामवासियों पर कर लगाने, उसे वसूलने एवं बेगार कराने का अधिकार प्राप्त था।
- नगरम व्यापारियों की सभा थी। इसके प्रमुख नगर पुरुष या नगरेश्वर होते थे।
- भू-राजस्व का निर्धारण भूमि का सर्वेक्षण, वर्गीकरण एवं नाप-जोख के पश्चात् कराया जाता था।
- चोलकालीन व्यापारिक समूह थे-अंजुवण्णम्, वीरवनंजुस, वलंजियार, नानादैसी तथा मणिग्रामम्।
- पंप, पोन्न एवं रन्न कन्नड़ साहित्य के त्रिरत्न हैं।
- नबिआंडारनबि को तमिल व्यास कहा जाता है।
- कंबन, ओट्टक्कुट्टन और पुगलेनिद को तमिल साहित्य का त्रिरत्न कहा जाता है।
- तमिल ग्रंथ कलिंगक्तपर्णि का लेखक जयान्गोन्दार कुलोक्तंग प्रथम का राजकवि था।
- कुलोक्तंग तृतीय के राजकवि कंबन (कंबन रामायण) का काल तमिल साहित्य का स्वर्ण काल माना जाता है। इसी समय शेक्किलार ने पेरिय पुराणम एवं पुलगेन्दि ने नलवेम्ब की रचना की।
- गंगैकोण्डचोलपुरम के वृहदीश्वर मंदिर का निर्माण राजेन्द्र प्रथम ने करवाया।
- तंजौर में दारासुरम का ऐरावतेश्वर मंदिर, त्रिभुवनम् का कंपहरेश्वर मंदिर है।
- चोलकालीन धातु मूर्तियों में नटराज शिव की काँस्य मूर्ति विशेष उल्लेखनीय है।
- पार्सी ब्राउन ने तंजौर के वृहदीश्वर मंदिर के विमान को भारतीय 'वास्तुकला का निकष' माना।
- शैव सन्त इसानशिव राजेन्द्र प्रथम के गुरु थे।
- चोलयुगीन बंदरगाह- महाबलीपुरम्, कावेरीपत्तनम, शालियूर, कोरकई आदि। चोल काल में काशू सोने का सिक्का था।

## मुस्लिम आक्रमण

- अरबों के भारत आक्रमण के विषय में पर्याप्त सूचना 9वीं शताब्दी के बिलादूरी कृत किताब फुतूल-अल-बलदान में मिलती है।
- 712 ई. में मुहम्मद बिन कासिम ने सिन्ध पर सफल आक्रमण किया। इस समय सिन्ध पर दाहिर का शासन था।
- ब्रह्मगुप्त के ब्रह्मसिद्धान्त तथा खण्डखाद्य का अलफजारी ने अरबी में अनुवाद किया।
- पंचतंत्र का अरबी अनुवाद कलिलावादिम्ना नाम से हुआ।
- अरबों ने दिरहम नामक सिक्के को सिंध में चलाया।
- अरब आक्रमणकारी मुहम्मद बिन कासिम ने सिंधवासियों से जजिया नामक कर की पहली बार भारत में वसूली की।
- मुहम्मद बिन कासिम को सिन्ध अभियान में बौद्ध भिक्षुओं ने सहायता दी।
- महमूद गजनवी की उपाधि यमीन-उद-दौला तथा यमीन-उल-मिल्लाह थी।
- महमूद गजनवी पहला शासक था, जिसने सुल्तान की उपाधि धारण की।
- महमूद गजनवी ने 1001 ई. से 1027 ई. तक भारत पर 17 आक्रमण किया। उसके इन आक्रमणों का उल्लेख विद्वान हेनरी इलिएट ने किया है।
- गजनवी ने भारत पर पहला आक्रमण 1001 ई. में शाही शासक जयपाल पर किया और उसे पराजित किया।
- गजनवी का भारत पर अंतिम अभियान 1027 ई. में जाटों के विरुद्ध हुआ। 1030 में उसकी मृत्यु हो गयी।
- गजनवी ने भारत में एक सेना गठित की, जिसकी कमान तिलक नामक हिन्दू के अधीन थी।
- महमूद गजनवी के दरबार में वैहाकी, फारुकी, अल्बरुनी, फिरदौसी एवं उत्बी आदि विद्वान थे। फिरदौसी ने शाहनामा लिखा। वैहाकी को लेनपुल ने पूर्वी पेप्स की उपाधि प्रदान की।
- मुहम्मद गोरी का प्रथम आक्रमण 1175 ई. में मुल्तान पर हुआ। उस समय मुल्तान पर करमाथि जाति (मुसलमान) का शासन था।
- 1194 ई. में गोरी एवं जयचन्द के बीच चन्दावर का युद्ध हुआ जिसमें जयचन्द पराजित हुआ।
- मुहम्मद गोरी का अन्तिम युद्ध खोक्खरो के साथ 1205 ई. में हुआ और गजनी लौटते समय रास्ते में ही 15 मार्च 1206 को खोखरो ने उसकी हत्या कर दी।
- गोरी के सिक्के पर देवनागरी लिपि में लेख और हिन्दू देवी-देवता का चित्र मिलता है।
- बख्तियार खिलजी ने विक्रमशिला एवं नालन्दा विश्वविद्यालय को दुर्ग समझकर उसे नष्ट कर दिया।
- महमूद गजनवी खैबर दर्रे एवं मुहम्मद गोरी गोमल दर्रे से भारत आए।

# मध्यकालीन भारत

## दिल्ली सल्तनत

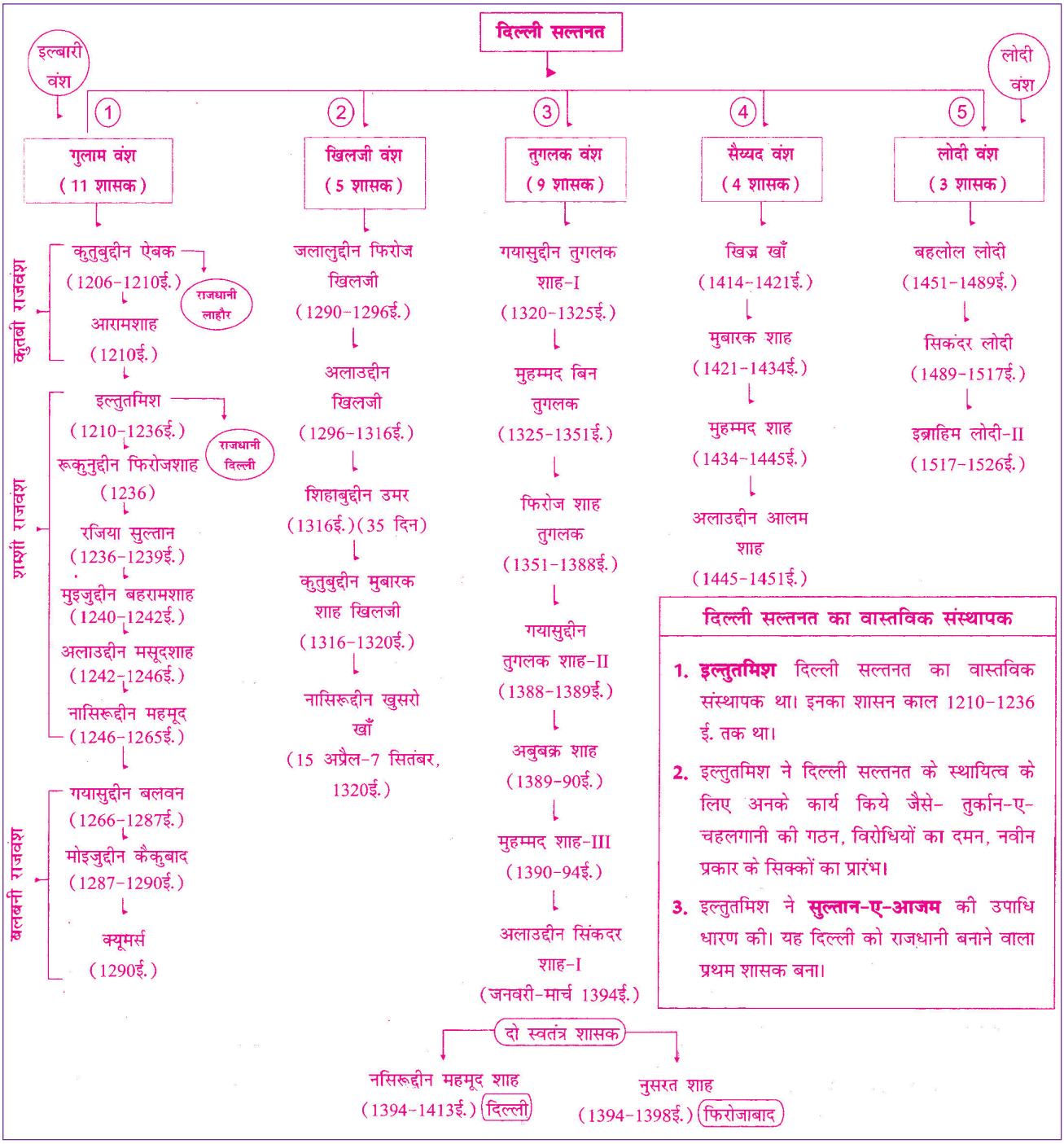


### दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक

1. **इल्तुतमिश** दिल्ली सल्तनत का वास्तविक संस्थापक था। इनका शासन काल 1210-1236 ई. तक था।
2. इल्तुतमिश ने दिल्ली सल्तनत के स्थायित्व के लिए अनके कार्य किये जैसे- तुर्कान-ए-चहलगानी की गठन, विरोधियों का दमन, नवीन प्रकार के सिक्कों का प्रारंभ।
3. इल्तुतमिश ने **सुल्तान-ए-आजम** की उपाधि धारण की। यह दिल्ली को राजधानी बनाने वाला प्रथम शासक बना।

### गुलाम या मामलुक वंश

- 24 जून 1206 ई. में गोरी के गुलाम कुतबुद्दीन ऐबक ने गुलाम वंश की स्थापना की।
- ऐबक को भारत में तुर्की राज्य का संस्थापक माना जाता है। उसकी राजधानी लाहौर थी।
- ऐबक ने मलिक एवं सिपहसालार की उपाधि धारण की, सुल्तान की नहीं।

- गोरी के उत्तराधिकारी गियासुद्दीन ने 1208 में ऐबक को दासता से मुक्त कर दिया।
- ऐबक ने लाखबख्श (लाखों का दान देने वाला) की उपाधि धारण की।
- सूफी संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के याद में ऐबक ने दिल्ली में कुतुबमीनार की नींव डाली, जिसे इल्तुतमिश ने पूरा करवाया। यह पाँच मंजिला है।
- दिल्ली में कुबत-उल-इस्लाम मस्जिद एवं अजमेर में अढ़ाई दिन का झोपड़ा नामक मस्जिद का निर्माण ऐबक ने करवाया।
- हसन निजामी एवं फक्र-ए-मुदब्बिर को ऐबक का संरक्षण प्राप्त था।
- 1210 में लाहौर में चौगान खेलते समय घोड़े से गिर जाने के कारण उसकी मृत्यु हो गई।
- ऐबक और उसका दास एवं दामाद इल्तुतमिश (गोरी के कहने पर दासता से मुक्त) इल्बरी तुर्क था।
- ऐबक के उत्तराधिकारी आरामशाह को पराजित कर इल्तुतमिश ने सत्ता प्राप्त की।
- इल्तुतमिश सल्तनत का वास्तविक संस्थापक था। ऐबक काल में वह बदायूँ का सूबेदार था।
- इल्तुतमिश ने सुल्तान के पद को वंशानुगत बनाया। अपनी राजधानी दिल्ली स्थापित की।
- 1229 ई. में बगदाद के अब्बासी खलीफा से खिलअत प्राप्त किया। इसके बाद इल्तुतमिश ने नासिर अमीर उल मोमिन की उपाधि धारण की। वह वैधानिक सुल्तान हो गया।
- 1221 ई. में चंगेज़ खाँ ने ख्वारिज्म पर आक्रमण किया।
- इल्तुतमिश ने चालीस गुलामों का दल तुर्कान-ए-चहलगानी या चालीसा का गठन किया।
- मिनहाजुद्दीन सिराज तथा मलिक ताजुद्दीन को इल्तुतमिश का संरक्षण प्राप्त हुआ।
- इल्तुतमिश ने अरबी लेख युक्त सिक्के, चाँदी का टंका एवं ताँबे का जीतल चलाया।
- उसने भारतीय सामंत व्यवस्था को कमजोर करने के लिए इक्ता प्रथा को चलाया।
- इल्तुतमिश ने बदायूँ में हौज-ए-शम्सी, शम्मी-ईदगाह एवं जामा मस्जिद बनवाया।
- इल्तुतमिश ने नागौर (राजस्थान) में 1230 में अतारिकीन का विशाल दरवाज़ा बनवाया।
- इल्तुतमिश ने मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह अजमेर में बनवाई।
- 1236 ई. में इल्तुतमिश की मृत्यु हो गयी और उसका पुत्र रुकनुद्दीन फिरोज सुल्तान बना किन्तु उसकी माँ शाह तुरकान के हस्तक्षेप से अव्यवस्था व्याप्त हो गई।
- रजिया बेगम को 1236 में ही दिल्ली की जनता ने गद्दी पर बैठाया। यह पहली महिला तुर्क सुल्तान थी।
- रजिया ने अपने सिक्के पर उद्मत-उल-निश्वां की उपाधि धारण की।
- रजिया ने जलालुद्दीन याकूत (अबीसीनियन) को अमीरे-अखुर नियुक्त किया।
- रजिया ने भटिंडा के सूबेदार अल्तूनिया से पराजित होकर उससे विवाह कर लिया।

**मध्यकालीन महिला शासिकाएँ, व उनका कालक्रम**

| | महिला शासक | शासनकाल | वंश | राज्य |
|---|---|---|---|---|
| 1. | रजिया सुल्तान | 1236-1240 ई. | गुलाम | दिल्ली |
| 2. | रानी रूद्रम्मा | 1260-1291 ई. | काकतीय | द्वार समुद्र |
| 3. | मरदूमजहाँ | 1461-1469 ई. | बहमनी | दक्षिण बहमनी |
| 4. | रानी दुर्गावती | 1560-1564 ई. | गोंड | गढ़कटंगा |
| 5. | चाँदबीबी सुल्तान | 1595-1596 ई | अहमदशाही | अहमदनगर |
| 6. | बेगम बड़ी साहिब | 1656-1663 ई. | आदिलशाही | बीजापुर |
| 7. | ताराबाई | 1700-1707 ई. | भोंसले | मराठा |

- अल्तूनिया एवं रजिया ने सत्ताच्युत होने के बाद मिलकर सत्ता प्राप्त करने का प्रयास किया, किन्तु 13 अक्टूबर 1240 को कैथल के पास डाकुओं ने उनकी हत्या कर दी।
- रजिया लालवस्त्र पहनकर जनता के समक्ष न्याय मांगने गयी थी।
- बहरामशाह (1240-42) के समय तुर्क सरदारों ने सुल्तान के अधिकार को कम करने के लिए नाइब-ए-मामलिकात पद का सृजन किया और यह पद एतगीन को सौंपा।
- अलाउद्दीन मसूदशाह (1242-46) के समय बलबन की अमीर-ए-हाजिब के पद पर नियुक्ति हुई।
- नासिरुद्दीन महमूद (1246-66) बलबन के सहयोग से सुल्तान बना।
- उसने बलबन को नायबे-मामलकात का पद एवं उलूग खाँ की उपाधि प्रदान की।
- बलबन ने अपनी पुत्री का विवाह महमूद से किया।
- महमूद हस्तलिखित कुरान शरीफ बेचकर और टोपी सीकर अपनी आजीविका चलाता था।
- महमूद ने बलबन को छत्र (सुल्तान के पद का प्रतीक) प्रदान किया।
- मिनहाजुद्दीन सिराज ने अपनी तबकात-ए-नासिरी महमूद को ही समर्पित की।
- बलबन महमूद का उत्तराधिकारी और इल्तुतमिश का गुलाम था।
- बलबन को ख्वाजा जमालुद्दीन वसरी दिल्ली लाए, जिसे इल्तुतमिश ने खरीदा।

## बलबन (1266-1287 ई.)

- उलूग खाँ नामक एक तुर्क सरदार 1265 ई. में दिल्ली सल्तनत की गद्दी पर बैठा। वह अपने खिताबी नाम बलबन के रूप में इतिहास में प्रसिद्ध हुआ। इसने बलबनी वंश की स्थापना की। बलबन राजपद की शक्ति और प्रतिष्ठा की अभिवृद्धि करने के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहा।
- गद्दी पर अपने पक्ष को मजबूत करने के लिए उसने घोषणा की कि, वह विख्यात ईरानी शहंशाह अफरासियाब का वंशज है।
- अपने कुलीन रक्त का पक्ष सिद्ध करने के लिए बलबन ने खुद को तुर्क अमीरों के हितों के रक्षक के रूप में पेश किया।

इतिहासकार बरनी ने लिखा है कि, बलबन कहता था, जब भी मैं किसी नीच कुल में उत्पन्न हुए व्यक्ति को देखता हूँ तो मेरी आँखों में अंगारे फूटने लगते हैं और क्रोध से मेरा हाथ (उसे मारने के लिए) मेरी तलवार पर चला जाता है।

- बलबन पहला सुल्तान था जिसने राजत्व के सिद्धांत का प्रतिपादन किया उसने राजत्व को नियाबते-खुदाई (ईश्वर द्वारा प्रदत्त) तथा राजा को जिल्ले-इलाही (ईश्वर की छाया) कहा है। बलबन ने मद्यपान का निषेध कर दिया था।
- बलबन ने फारसी नववर्ष की शुरूआत पर मनाये जाने वाले उत्सव नौरोज को भारत में प्रारम्भ किया था तथा सुल्तान की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए दरबार में फारसी परंपरा सिजदा (घुटनों के बल बैठकर सुल्तान के सामने सिर झुकाना) तथा पेबोस (पेट के बल लेटकर सुल्तान के पैरों को चूमना) प्रथाएँ प्रारम्भ की थीं।
- अपनी स्थिति को सुरक्षित रखने के लिये बलबन ने चालीसा दल को पूर्णत: समाप्त कर दिया।
- स्वयं को राज्य की परिस्थितियों से परिचित रखने के लिये गुप्तचर प्रणाली प्रारम्भ की। गुप्तचरों को बरीद कहा जाता था।
- दिल्ली सल्तनत के लिए खतरा बने मंगोलों का सामना करने के लिए बलबन ने एक शक्तिशाली केंद्रीयकृत सेना संगठित की। इस प्रायोजन से उसने सैन्य विभाग ( दीवान-ए-अर्ज) का पुनर्गठन किया। विरोधियों एवं लुटेरों से निपटने के लिए बलबन ने रक्त और लौह की नीति अपनाई। इसके अन्तर्गत, लुटेरों का दूर तक पीछा कर उनकी हत्या कर दी जाती थी।

बलबन ने गढ़मुक्तेश्वर की मस्जिद की दीवारों पर उत्कीर्ण शिलालेख पर स्वयं को खलीफा का सहायक कहा है।

- बलबन ने बदायूँ के आस-पास के क्षेत्रों में राजपूतों के गढ़ों को नष्ट कर दिया। लोगों पर अपनी शक्ति और सामर्थ्य को प्रदर्शित करने के लिए बलबन अपने दरबार का वातावरण अत्यधिक शानो-शौकत से भरा रखता था। बलबन की मृत्यु 1286 ई. में हुई थी।

## खिलजी वंश ( 1290 से 1320 ई. तक )

- जलालुद्दीन फिरोज खिलजी ने कैकुबाद द्वारा निर्मित किलोखरी में अपना राज्याभिषेक करवाया।
- जलालुद्दीन पहला सुल्तान है जिसने शासन में गैर तुर्क एवं भारतीय मुसलमान को शामिल किया।
- जलालुद्दीन के समय ईरानी फकीर सीदी मौला को हाथी के पैरो तले कुचला गया।
- जलालुद्दीन-"मैं एक वृद्ध मुसलमान हूँ और मुसलमानों का रक्त बहाने की मेरी आदत नहीं है।"
- जलालुद्दीन की हत्या 12 जुलाई 1296 को कड़ामानिकपुर (इलाहाबाद) के सूबेदार, उसके भतीजा एवं दामाद अलाउद्दीन खिलजी ने कड़ा में कर दिया।
- अलाउद्दीन का बचपन का नाम अली तथा गुरशास्प था।
- अलाउद्दीन ने 22 अक्टूबर 1296 को बलबन के लाल महल में अपना राज्याभिषेक करवाया।
- अलाउद्दीन ने सिकन्दर द्वितीय की उपाधि धारण की।
- विश्वविजय एवं नए धर्म की स्थापना का विचार अलाउद्दीन ने दिल्ली के कोतवाल जलाउल मुल्क के समझाने पर त्याग दिया।
- अलाउद्दीन एक साम्राज्यवादी शासक था। विजयों और शत्रु को मित्र बनाने की नीति का पालन करने में उसकी तुलना अकबर से की जाती है।
- मलिक काफूर को गुजरात अभियान के दौरान एक हजार दीनार में नुसरतशाह ने खरीदा और अलाउद्दीन को तोहफे के रूप में दिया।

**अलाउद्दीन खिलजी का उत्तर भारत अभियान**

| राज्य | शासक | अभियान का नेतृत्व | वर्ष | विशेष विवरण |
|---|---|---|---|---|
| गुजरात | रायकरन बला (कर्ण) | उलूग खां + नुसरत खाँ | 1298 ई. | गुजरात अभियान के काल में जैसलमेर को विजित किया। राजा कर्ण भाग गया। |
| रणथम्भौर | राणा हम्मीर देव (चौहान वंश) | उलूग खाँ+ नुसरत खाँ | 1301 ई. | पहले राणा सांगा ने आक्रमण को विफल कर दिया और नुसरतखाँ मारा गया। तत्पश्चात् अलाउद्दीन ने सेना का नेतृत्व किया। युद्ध में राजपूतों की पराजय हुई फलस्वरूप स्त्रियों ने जौहर कर लिया। |
| चित्तौड़ | रतन सिंह | अलाउद्दीन खिलजी | 1303 ई. | चित्तौड़ पर अधिकार कर उसका नाम खिजाबाद रखा। 1311 ई. में चित्तौड़ मालदेव को सौंप दिया। |
| मालवा | महलकदेव | आइनुलमुल्क मुल्तानी | 1305 ई. | महलकदेव माण्डू भाग गया व मालवा खिलजी साम्राज्य के अधीन हो गया। |
| सिवाना | शीतलदेव (परमार वंश) | कमालुद्दीन कुर्ग | 1308 ई. | |
| जालौर | कान्हदेव (कृष्णदेव) | कमालुद्दीन कुर्ग | 1311 ई. | कान्हदेव के भाई मालदेव को खुश होकर चित्तौड़ सौंप दिया। |

**अलाउद्दीन खिलजी का दक्षिण भारत अभियान**

| राज्य | शासक | अभियान का नेतृत्व | वर्ष | विशेष विवरण |
|---|---|---|---|---|
| देवगिरि | रामचंद्र देव (यादव शासक) | अलाउद्दीन खिलजी | 1296 ई. | रामचंद्र देव ने एलिचपुर प्रान्त से होने वाली आय देने का वचन दिया। |
| देवगिरि | रामचंद्र देव | मलिक काफूर | 1307 ई. | वचन देने के बाद भी रामचंद्र ने अलाउद्दीन को कर देना बंद कर दिया जिसके परिणामस्वरूप खिलजी ने आक्रमण कर दिया। इसके पश्चात् रामचंद्र दिल्ली पहुँचा। जहाँ अलाउद्दीन ने मित्रवत् व्यवहार कर रामचन्द्र को रायरायन की उपाधि दी और नवसारी जिला भेंट किया। रामदेव की पुत्री इल्लापाली से अलाउद्दीन ने विवाह कर लिया। |
| वारंगल | प्रताप रुद्र देव (काकतीय वंश) | मलिक काफूर | 1309 ई. | देवगिरि ने काफूर की सहायता की तथा मलिक काफूर तेलंगाना की राजधानी पहुँचा जहाँ से वह शासक की सोने की मूर्ति कोहिनूर हीरा तथा भारी मात्रा में लूट का माल लेकर लौटा। |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| द्वारसमुद्र | वीर बल्लाल-III (होयसल वंश) | मलिक काफूर | 1310 ई. | देवगिरि के सेनापति पारसदेव (परशुराम दलावे) ने भी काफूर की सहायता की। वीर बल्लाल ने पाण्ड्य उत्तराधिकार के युद्ध में भाग लिया तथा समर्पण कर दिया और काफूर के साथ दिल्ली चला गया। जिसका अलाउद्दीन ने भव्य स्वागत किया। |
| पाण्ड्य | वीर पाण्ड्य | मलिक काफूर | 1311 ई. | काफूर पाण्ड्य राज्य के उत्तराधिकार युद्ध में सुंदर पाण्ड्य के पक्ष में गया था जिसके साथ में वीर बल्लाल भी था। यह अभियान लूट की दृष्टि से श्रेष्ठ था। |
| देवगिरि | शंकरदेव (सिंघण-III) | मलिक काफूर | 1313 ई. | शंकरदेव सिंघण-III मारा गया और देवगिरि अधिकांशत: दिल्ली सल्तनत में शामिल कर लिया गया। |

- मलिक काफूर ने दक्षिण विजय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- देवगिरी के शासक रामचन्द्र देव को अलाउद्दीन राय ने रायन की उपाधि, नवसारी जागीर एवं एक लाख स्वर्ण टका उपहार स्वरूप दिया।
- तेलंगाना के शासक प्रतापरुद्र देव ने अपनी एक सोने की मूर्ति बनवाकर गले में एक सोने की जंजीर डालकर आत्मसमर्पण स्वरूप काफूर के पास भेजी।
- होयसल शासक वीर वल्लाल तृतीय को अलाउद्दीन ने खिलअत, एक मुकुट, छत्र एवं दस लाख टके की थैली उपहार स्वरूप दी।
- काफूर के आक्रमण के समय माबार में पाण्ड्य शासक सुन्दर पाण्ड्य एवं वीर पाण्ड्य का शासन था। काफूर ने बरमत पती के मंदिर में लूट-पाट की।
- अलाउद्दीन के समय में क्रमश: कादर, सलदी, कुतलुग ख्वाजा एवं तार्गी के नेतृत्व में मंगोल आक्रमण हुआ।
- अलाउद्दीन ने भ्रष्टाचार रोकने के लिए चार अधिनियम पारित करवाए।
- अलाउद्दीन ने पहली बार स्थायी सेना की नींव रखी एवं सेना को नकद वेतन देना आरम्भ किया।
- सैनिकों का हुलिया लिखने एवं घोड़ा दागने की प्रथा की शुरुआत अलाउद्दीन ने की।
- अलाउद्दीन की आर्थिक नीति की व्यापक जानकारी जियाउद्दीन बरनी की तारीखे फिरोजशाही से मिलती है।
- अलाउद्दीन ने जाब्ता (भूमि की पैमाइश) के आधार पर लगान का निर्धारण किया।
- भूमि के माप की इकाई बिस्वा थी। उसने भूमिकर ½ भाग कर दिया।
- अलाउद्दीन ने राशनिंग व्यवस्था को लागू किया।
- अलाउद्दीन ने अपने शासन काल में मूल्य नियंत्रण के लिए सात अधिनियम पारित किए।
- अलाउद्दीन ने तीन प्रकार के बाज़ार स्थापित किये:-
  1. शहना-ए-मंडी- खाद्यान्नों की बिक्री हेतु।
  2. सराय-ए-अदल- वस्त्र, शक्कर, जड़ी-बूटी, मेवा आदि वस्तुओं की बिक्री हेतु। इसका निर्माण बदायूँ द्वार के समीप हुआ था।
  3. पशु एवं दास बाजार

## बाज़ार नियंत्रक अधिकारी एवं संगठन

1. **दीवान-ए-रियासत**- यह व्यापारियों पर नियंत्रण रखने वाली संस्था थी, जिसका प्रमुख दीवान-ए-रियासत होता था। बाहर के व्यापारियों को इसी के पास अपना नाम दर्ज करना होता था। अलाउद्दीन ने मलिक याकूब को यह पद सौंपा।
2. **शहना-ए-मंडी**- प्रत्येक बाज़ार में बाज़ार का अधीक्षक।
3. **बरीद एवं मुनहियान**- गुप्तचर (गुप्तचर विभाग का प्रमुख अधिकारी-बरीदे-मुमालिक)।
4. **परवाना-नवीस**- महँगी वस्तुओं को खरीदने के लिए परमिट देता था।
5. **मुहतसिब**- जनसामान्य के आचार की रक्षा एवं देखभाल करता था।
6. **नाजिर**- नाप-तौल अधिकारी

- अलाउद्दीन ने चराई कर (दुधारू पशुओं पर) एवं घरी कर लगाया।
- खुम्स (लूट का धन) में राज्य का हिस्सा 1/5 भाग के स्थान पर 4/5भाग कर दिया।
- कम तौलने वाले के शरीर से उतना मांस काट लिया जाता था।
- अलाउद्दीन ने सीरी नामक गाँव में एक नगर की स्थापना की एवं वहाँ किला बनवाया।
- अलाई दरवाजा का निर्माण अलाउद्दीन ने करवाया। इसमें बौद्ध तत्वों का आभास मिलता है।
- जमात खाँ मस्जिद का निर्माण अलाउद्दीन ने करवाया। यह पूर्णरूप से इस्लामी परम्परा में निर्मित भारत की पहली मस्जिद है।
- हजार खम्भा महल का निर्माण अलाउद्दीन ने करवाया।
- अलाउद्दीन ने राजस्व व्यवस्था से भ्रष्टाचार एवं लूट को खत्म करने के लिए एक नये विभाग दीवान-ए-मुस्तखराज की स्थापना की।
- अलाउद्दीन ने अमीर खुसरो एवं अमीर हसन देहलवी को संरक्षण दिया।
- अलाउद्दीन की मृत्यु (5 जनवरी 1316 ई.) के बाद सुल्तान मुबारक शाह खिलजी ने अपने पिता की बाज़ार नियंत्रण नीति एवं कठोर आदेश को रद्द घोषित कर दिया।
- मुबारक शाह खिलजी ने देवगिरि पर पुन: विजय प्राप्त की।
- उसे नग्न स्त्री-पुरुष की संगत पसन्द थी।
- मुबारक शाह ने स्वयं को खलीफा घोषित किया। ऐसा करने वाला वह सल्तनत का प्रथम शासक था। उसने अल इमाम, उल इमाम एवं खिलाफत-उल-लह आदि की उपाधि धारण की।
- खुसरव शाह हिन्दू धर्म से परिवर्तित मुसलमान था। उसने पैगम्बर के सेनापति की उपाधि धारण की।
- खुसरव शाह के शत्रुओं ने उसके विरुद्ध 'इस्लाम का शत्रु एवं इस्लाम खतरे में है' के नारे लगाये।

## तुगलक वंश ( 1320- 1414 ई. )

- इस वंश की स्थापना गयासुद्दीन तुगलक (गाजी मलिक) ने 5 सितम्बर 1320 ई. को खुसरव शाह को हराकर 8 सितम्बर 1320 को राज्याभिषेक करवाया।
- गयासुद्दीन तुगलक खिलजी काल में उत्तर-पश्चिमी सीमान्त प्रांत का सूबेदार था। उसने 29 मंगोल आक्रमण को विफल किया।
- गयासुद्दीन ने खुद्द एवं मुक्द्म के पुराने सभी अधिकार लौटा दिये।
- सिंचाई हेतु नहर निर्माण कराने वाला गयासुद्दीन सल्तनत का पहला शासक था।

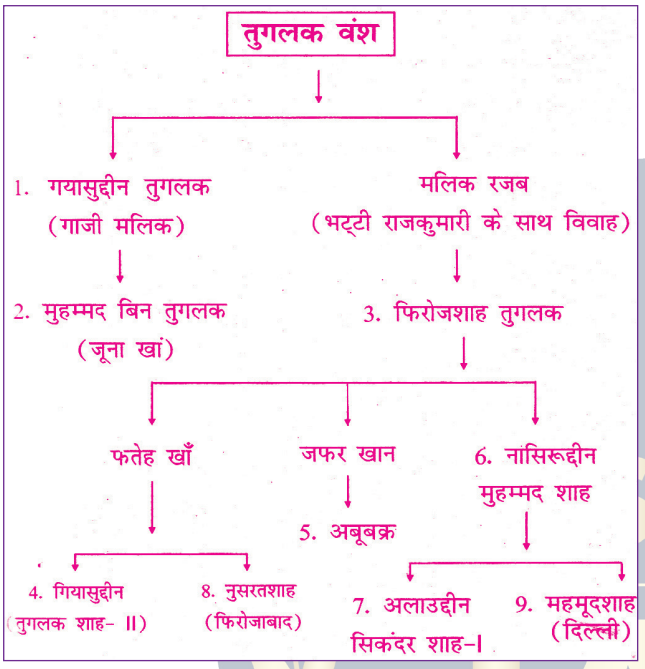


- न्याय-व्यवस्था के अन्तर्गत गयासुद्दीन ने एक-न्याय विधान का निर्माण करवाया।
- निजामुद्दीन औलिया ने गयासुद्दीन के बारे में कहा था- "दिल्ली अभी बहुत दूर है"।
- गयासुद्दीन ने दिल्ली में तुगलकाबाद नामक नया नगर बसाया। यह नगर रोमन शैली में निर्मित था। इस नगर में छप्पनकोट नामक दुर्ग का निर्माण करवाया गया।
- 1325 ई. में गयासुद्दीन के बंगाल अभियान से लौटते समय अफगानपुर गाँव में स्वागत समारोह के दौरान जूना खाँ द्वारा लकड़ी निर्मित महल के गिर जाने से मृत्यु हो गयी।
- गयासुद्दीन का मकबरा कृत्रिम झील के अन्दर निर्मित है। इसकी दीवारें मिस्र के पिरामिडों की तरह भीतर की ओर झुकी हैं। इस मकबरे का पंचभुजीय होना इसकी महत्वपूर्ण विशेषता है। मकबरे में अमलक एवं कलश का प्रयोग हिन्दू मंदिर के समान हुआ है।

## मुहम्मद बिन तुगलक

- गयासुद्दीन के बाद उसका पुत्र जूना खाँ मुहम्मद बिन तुगलक के नाम से गद्दी पर बैठा।
- मुहम्मद बिन तुगलक को स्वप्नशील, पागल, रक्तपिपासु आदि कहा गया। बरनी, सरहिंदी, निजामुद्दीन, बदायूं एवं फरिश्ता ने सुल्तान को अधर्मी घोषित किया।
- अफ्रीकी यात्री इब्नबतूता 1533 ई. में मुहम्मद बिन तुगलक के समय भारत आया। इब्नबतूता ने रेहला लिखी। उसे दिल्ली का काजी नियुक्त किया गया और 1342 में चीनी शासक तोगन तिमूर के दरबार में राजदूत बनाकर भेजा।
- बरनी ने सुल्तान की पाँच योजनाओं का उल्लेख किया है- (1) दोआब क्षेत्र में कर वृद्धि (1326-27), (2) राजधानी परिवर्तन (1326-27), (3) सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन (1329-30), (4) खुरासान अभियान एवं (5) कराचिल अभियान।
- मुहम्मद बिन तुगलक ने कृषि के विकास के लिए 'अमीर-ए-कोही' विभाग की स्थापना की। अकाल राहत संहिता तैयार करवायी एवं कृषि ऋण (तकाबी) प्रदान किया गया।
- सांकेतिक मुद्रा के अन्तर्गत पीतल (फरिश्ता के अनुसार), तांबा (बरनी के अनुसार) धातु के सिक्के चलवाए, जिसका मूल्य चाँदी के टंका के बराबर घोषित किया।
- खुरासान अभियान मुहम्मद बिन तुगलक, तरमाशरीन एवं मिश्र के सुल्तान की सम्मिलित योजना थी।
- मुहम्मद बिन तुगलक ने देवगिरि (दौलताबाद) को सल्तनत की दूसरी राजधानी बनाया।
- मुहम्मद बिन तुगलक के समय 1328-29 ई. में तरमाशरीन चगताई (मंगोल) का आक्रमण हुआ।
- मुहम्मद बिन तुगलक के समय प्रमुख विद्रोह हुआ- दक्षिण में बहाउद्दीन गुरशस्प, मुल्तान में बहाराम किच्लू एवं बंगाल में गयासुद्दीन आदि।
- मुहम्मद बिन तुगलक के समय 1336 में हरिहर एवं बुक्का नामक दो भाइयों ने स्वतंत्र राज्य विजयनगर की स्थापना की।

### खुरासान योजना

यह अभियान हिमालयी क्षेत्र में कुमाऊँ के पहाड़ी प्रदेशों में आरम्भ किया गया था और कहा जाता है कि इसका उद्देश्य, चीनियों की बढ़त को रोकना था। दिल्ली की सेना कठिनाई भरे प्रदेशों में बहुत दूर तक आगे बढ़ गयी तथा वहाँ विपत्ति में फँस गयी। कहा जाता है कि, 10,000 की सेना में केवल 10 लोग वापस लौटे। मुहम्मद तुगलक ने काँगड़ा पहाड़ियों पर भी आक्रमण किया।

## कृषि सुधार

- मुहम्मद-बिन-तुगलक ने कृषि में सुधार लाने के लिए कई कदम उठाए। उनमें से अधिकांश सुधार दोआब के क्षेत्र में लागू किए गए। इस योजना के दौरान अकाल का छः साल तक एक लंबा दौर चला, जिसने प्रदेश को नष्ट कर दिया।
- पशुओं और बीजों के लिए तथा कुएँ खोदने के लिए ऋण सुलभ करा कर राहत देने का प्रयास किया गया। लेकिन इस समय तक दिल्ली में इतने लोगों की मृत्यु हो चुकी थी कि वातावरण दूषित हो गया।
- सुल्तान दिल्ली छोड़कर 100 मील दूर गंगा के किनारे स्वर्गद्वारी नामक शिविर में चला गया लगभग ढाई वर्षों तक वहीं रहा। उसने दोआब में कृषि के विस्तार और सुधार के लिए एक योजना आरम्भ की। उसने दीवान-ए-अमीर कोही नाम से एक अलग विभाग की स्थापना की। कृषि क्षेत्रों को विकास प्रखण्डों में विभाजित कर दिया गया।

- प्रत्येक प्रखण्ड को एक अधिकारी के अधीन रखा गया, जिसका काम किसानों को ऋण देकर कृषि का विस्तार करना तथा उन्हें बेहतर फसलें उगाने के लिए प्रेरित करना था, जैसे- जौ के स्थान पर गेहूँ, गेहूँ के बदले गन्ना और गन्ने की जगह अंगूर और खजूर।
- यह योजना विफल हो गयी, जिसका कारण इसे कार्यान्वित करने के लिए नियुक्त किए गए अधिकारियों की अनुभवहीनता और भ्रष्टाचार था।
- मुहम्मद बिन तुगलक के समय 1347 ई. में महाराष्ट्र में अलाउद्दीन बहमनशाह ने स्वतंत्र बहमन राज्य की स्थापना की।
- मुहम्मद बिन तुगलक ने मिश्र के अब्बासी खलीफा से स्वीकृति पत्र प्राप्त किया तथा खुतबा एवं सिक्कों पर अपने नाम के बदले खलीफाओं का नाम अंकित करवाया।
- इब्नबतूता ने सती प्रथा के प्रचलन का उल्लेख किया है।
- मुहम्मद बिन तुगलक का जैन विद्वान जिन प्रभु सूरी एवं राजशेखर से अच्छे संबंध थे।
- मुहम्मद बिन तुगलक के समय में चीन, ईरान, इराक, ख्वारिज्म आदि के साथ राजदूतों का आदान-प्रदान हुआ।
- मुहम्मद बिन तुगलक की 20 मार्च 1351 को सिन्ध जाते समय थट्टा के निकट गोडाल में मृत्यु हो गयी। उसके मरने पर बदायूनी/बरनी ने कहा कि सुल्तान को उसकी प्रजा से और प्रजा को अपने सुल्तान से मुक्ति मिली।
- मुहम्मद बिन तुगलक मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह एवं बहराइच में सालार मसूद गाजी के मकबारे पर जाने वाला पहला सुल्तान था। वह शेख निजामुद्दीन औलिया चिश्ती का शिष्य था।
- मुहम्मद बिन तुगलक ने जहाँपनाह नगर की स्थापना दिल्ली में करवाया।
- मुहम्मद बिन तुगलक का उत्तराधिकारी फिरोजशाह तुगलक था। वह मुहम्मद बिन तुगलक का चचेरा भाई एवं सिपहसालार रजब का पुत्र था। उसकी माँ बीबी जैला राजपूत सरदार रणमल की पुत्री थी। खलीफा द्वारा इसे कासिम-अमीर-उल मोमीन की उपाधि दी गई।
- फिरोज तुगलक ने पुरी के जगन्नाथ मंदिर एवं नगरकोट की ज्वालामुखी के मंदिर को ध्वस्त किया।
- फिरोज तुगलक 24 कष्टदायक करों को समाप्त कर केवल 4 कर- खराज(भू-राजस्व), खुम्स, जजिया एवं जकात (धार्मिक कर) को वसूल करने का आदेश दिया।
- फिरोज तुगलक पहला ऐसा शासक था जिसने ब्राह्मणों पर भी जजिया लगवाया।
- फिरोज तुगलक ने एक नया कर सिंचाई कर लगाया, जो उपज का 1/10 भाग था।
- सुल्तान ने लगभग 300 नये नगरों की स्थापना की। इनमें से हिसार, फिरोजाबाद (दिल्ली), फतेहाबाद, जौनपुर, फिरोजपुर आदि प्रमुख हैं।
- फिरोज तुगलक ने मुस्लिम अनाथ स्त्रियों, विधवाओं एवं लड़कियों की सहायता हेतु दीवान-ए-खैरात नामक विभाग की स्थापना की।
- दासों की देखभाल के लिए फिरोज तुगलक ने दीवान-ए-बंदगान विभाग की स्थापना की। उसके पास कुल 1,80,000 दास थे।
- फिरोज ने सैन्य पदों को वंशानुगत बना दिया एवं वेतन के रूप में जागीर प्रदान किया।
- सल्तनत काल में उलेमा वर्ग को सबसे अधिक स्वतंत्रता फिरोज तुगलक काल में प्राप्त थी।
- फिरोज तुगलक सल्तनतकालीन पहला शासक था जिसने आमदनी का ब्यौरा तैयार करवाया।
- शिक्षा प्रसार के क्षेत्र में सुल्तान ने अनेक मकतबों एवं मदरसों (13) की स्थापना करवायी।
- फिरोज ने अपनी आत्मकथा फतुहात-ए-फिरोजशाही की रचना की।
- फिरोज तुगलक ने जियाउद्दीन बरनी (फतवा-ए-जहाँदारी एवं तारीख-ए-फिरोजशाही) और शम्स-ए-सिराज अफीफ को संरक्षण प्रदान किया।
- फिरोज ने ज्वालामुखी मंदिर के पुस्तकालय से लूटे गये 1300 ग्रंथों में से कुछ का फारसी में उपाउद्दीन द्वारा दलायते-फिरोजशाही नाम से अनुवाद करवाया।
- फिरोज तुगलक ने ताँबा एवं चाँदी के मिश्रण से निर्मित सिक्के जारी करवाये, जिसे अद्धा एवं बिख कहा जाता था।
- फिरोज तुगलक ने दिल्ली में कोटला फिरोजशाह दुर्ग का निर्माण करवाया।
- फिरोज तुगलक के प्रधानमंत्री खाने जहाँ तेलंगानी का मकबरा उसका पुत्र खाने जहाँ जूनाशाह ने बनवाया। यह मकबरा अष्टभुज के आकार में निर्मित है। इस मकबरे की तुलना जेरुसलम में निर्मित उमर के मस्जिद से की जाती है।
- सुल्तान नसिरुद्दीन महमूदशाह की मृत्यु अधिक शराब पीने के कारण हुई।
- सुल्तान नसिरुद्दीन-महमूदशाह के समय 1398 ई॰ में दिल्ली पर तैमूरों का आक्रमण हुआ।
- नसिरुद्दीन-महमूदशाह तुगलक वंश का अंतिम तुर्क सुल्तान था, किन्तु उसका साम्राज्य दिल्ली से पालम तक ही रह गया था।
- तैमूर के वापस जाने पर नसिरुद्दीन ने अपने वजीर मल्लू इकबाल की सहायता से पुन: दिल्ली सिंहासन पर अधिकार कर लिया।
- नसिरुद्दीन महमूदशाह के समय में मलिक सरवर नाम के एक हिजड़े ने सुल्तान से मलिकुशर्शक (पूर्वाधिपति) की उपाधि धारण की थी और जौनपुर में स्वतंत्र राज्य की स्थापना किया था।
- तुगलक शासक गयासुद्दीन द्वितीय ने कबीरुद्दीन औलिया का मकबरा बनवाया।
- नसिरुद्दीन महमूदशाह की मृत्यु के पश्चात् अल्प समय के लिए दौलत खाँ लोदी ने शासन किया। यह पहला अफगान शासक (भारत में) था।

| दिल्ली सल्तनत की शासकीय व्यवस्था | | |
|---|---|---|
| क्र. | विभाग | शासक |
| 1. | दीवान-ए-अर्ज (सैन्य विभाग) | बलबन |
| 2. | दीवान-ए-रियासत (बाजार नियंत्रण) | अलाउद्दीन खिलजी |
| 3. | दीवान-ए-मुस्तखराज (राजस्व विभाग) | अलाउद्दीन खिलजी |
| 4. | दीवान-ए-अमीरकोही (कृषि विभाग) | मुहम्मद-बिन-तुगलक |
| 5. | दीवान-ए-खैरात (दान विभाग) | फिरोज शाह तुगलक |
| 6. | दीवान-ए-बंदगान (गुलाम विभाग) | फिरोज शाह तुगलक |

## सैय्यद वंश (1414-1450 ई.)

- सैय्यद वंश का संस्थापक खिज्र खाँ था। वह स्वयं को पैगम्बर का वंशज मानता था। इसलिए उसके द्वारा स्थापित वंश सैय्यद वंश कहलाया।
- खिज्र खाँ ने सुल्तान के स्थान पर रैयत-ए-आला की उपाधि धारण की।
- तैमूर लंग ने भारत से वापस जाते समय खिज्र खाँ को मुल्तान, लाहौर एवं दीपालपुर का शासक नियुक्त किया।
- खिज्र खाँ स्वयं को तैमूर के पुत्र शाहरुख का प्रतिनिधि मानता था और उसे नियमित रूप से कर भेजता था।
- फरिश्ता ने खिज्र खाँ को एक न्यायप्रिय एवं उदार शासक बताया।
- मुबारकशाह (1421-1434 ई.) ने शाह की उपाधि धारण की, अपने नाम से खुतबा पढ़वाया और सिक्के चलवाये।
- मुबारकशाह के समय सल्तनत में पहली बार दो हिन्दू अमीरों का उल्लेख मिलता है।
- मुबारकशाह ने तारीख-ए-मुबारकशाही के लेखक शेख अहमद सरहिन्दी को राज्याश्रय दिया।
- मुबारकशाह ने मुबारकाबाद (यमुना नदी के तट पर) नगर की स्थापना की।
- मुहम्मदशाह ने बहलोल लोदी को खान-ए-खाना की उपाधि प्रदान की।
- अलाउद्दीन आलमशाह इस वंश का अंतिम शासक था।

## लोदी वंश (1451-1526 ई.)

- बहलोल लोदी दिल्ली में प्रथम अफगान राज्य (लोदी वंश) का संस्थापक था।
- बहलोल लोदी अफगानिस्तान के गिलजाई कबीले की शाखा शाहूखेल में पैदा हुआ।
- 19 अप्रैल 1951 को वह 'बहलोलशाह गाजी' की उपाधि से दिल्ली के सिंहासन पर बैठा।
- बहलोल लोदी ने बहलोल सिक्के का प्रचलन करवाया।
- बहलोल की सबसे बड़ी सफलता जौनपुर को एक बार फिर दिल्ली राज्य में शामिल करना था।
- बहलोल लोदी का पुत्र एवं उत्तराधिकारी निजाम खाँ 17 जुलाई 1489 को सुल्तान सिकन्दरशाह की उपाधि से दिल्ली के सिंहासन पर बैठा।
- 1504 ई. में सिकन्दर लोदी ने आगरा नगर बसाया एवं उसे अपनी राजधानी बनाया।
- सिकन्दर ने भूमि के माप के लिए गजे सिकन्दरी का प्रचलन करवाया।
- सिकन्दर ने नगरकोट के ज्वालामुखी मंदिर की मूर्ति को तोड़कर उसके टुकड़ों को कसाइयों को मांस तोलने के लिए दे दिया था।
- सिकन्दर गुलरुखी उपनाम से फारसी में कविता लिखता था।
- मुसलमानों को ताजिया निकालने एवं मुसलमान स्त्रियों को पीरों एवं सन्तों की मजार पर जाने पर सिकन्दर ने प्रतिबन्ध लगा दिया।
- सिकन्दर ने एक संस्कृत के आयुर्वेद ग्रंथ का फारसी में फरहंगे सिकन्दरी के नाम से अनुवाद एवं गान-विद्या के श्रेष्ठ ग्रन्थ 'लज्जत-ए-सिकन्दरशाही' की रचना करवायी।
- सिकन्दर लोदी की 21 नवम्बर 1517 को गले की बीमारी के कारण मृत्यु हो गयी और उसका पुत्र उसी दिन इब्राहीमशाह की उपाधि से आगरा के सिंहासन पर बैठा।
- इब्राहीम लोदी ने लोहानी, फारमूली एवं लोदी जातियों के दमन का पूर्ण प्रयास किया।
- इब्राहीम लोदी घटोली के युद्ध में राणा सांगा से पराजित हुआ।
- 21 अप्रैल 1526 को पानीपत के प्रथम युद्ध में इब्राहीम लोदी बाबर के हाथों मारा गया और सल्तनत की सत्ता समाप्त हुई।
- अफगानों की शासन व्यवस्था राजतन्त्रीय न होकर कुलीन तन्त्रीय थी।
- मोठ की मस्जिद का निर्माण सिकन्दर लोदी के वजीर द्वारा करवाया गया था।
- पर्सी ब्राउन ने लोदी युग को मकबरों का युग के नाम से सम्बोधित किया।
- अब्बास खाँ शेरवानी ने अफगानों को टिड्डी का झुण्ड कहा।

## सल्तनतकालीन प्रशासन

- खलीफा इस्लामिक संसार में पैगम्बर के बाद का सर्वोच्च नेता होता था। इसलिए अधिकांश दिल्ली के सुल्तानों ने स्वयं को खलीफा का नाइब कहा।
- सुल्तान केन्द्रीय प्रशासन का प्रधान होता था। वह शरीयत के अधीन कार्य करता था।
- अमीरों का प्रभाव सुल्तान पर होता था, किन्तु बलबन और अलाउद्दीन के समय वह प्रभावहीन हो गया और लोदी शासन के समय उसका महत्व चरमोत्कर्ष पर था।
- मजलिस-ए-खास में मजलिस-ए-खलवत (मंत्रिपरिषद) की बैठक हुआ करती थी।

| सल्तनत कालीन अधिकारी एवं उनके कार्य | |
|---|---|
| अधिकारी | कार्य |
| वजीर (प्रधानमंत्री) | राजस्व विभाग का प्रधान |
| नायब वजीर | वजीर की अनुपस्थिति में वजीर का कार्य |
| मुशरिफ-ए-मुमालिक (महालेखाकार) | आय-व्यय का लेखा-जोखा रखने वाला |

| | |
|---|---|
| नाजिर | मुशर्रिफ-ए-मुमालिक का सहायक |
| मुस्तौफी-ए-मुमालिक (महालेखापरीक्षक) | मुशर्रिफ द्वारा तैयार किये गये लेखा-जोखा की जाँच करता था |
| मजमुआदार | उधार दिये गये धन एवं आय-व्यय का हिसाब रखने वाला |
| आरिज-ए-मुमालिक | सैन्य विभाग का प्रमुख अधिकारी |
| खजीन (खजांची) | कोषाध्यक्ष के रूप में काम करता था |
| दीवान-ए-इंशा | सुल्तान की घोषणाओं एवं पत्रों का मसविदा तैयार करने वाला (फिरोज तुगलक के समय इसका स्तर मंत्री का नहीं रहा) |
| दीवान-ए-रसालत | विदेशों से पत्र-व्यवहार एवं विदेशी राजदूतों की देख-भाल |
| नाइब | इस पद का सर्वाधिक उपयोग बलबन ने किया |
| सद्र-उस-सुदूर | धर्म एवं दान विभाग का प्रमुख |
| काजी-उल-कजात | सुल्तान के बाद न्याय का सर्वोच्च अधिकारी |
| वरीद-ए-मुमालिक | गुप्तचर विभाग का प्रधान अधिकारी |
| वकील-ए-दर | शाही महल एवं सुल्तान की व्यक्तिगत सेवाओं की देख-रेख |
| अमीर-ए-हाजिब | सुल्तान से मिलने वाले की जाँच पड़ताल करने वाला |
| सर-ए-जांदर | सुल्तान के अंगरक्षकों का अधिकारी |
| अमीर-ए-आखुर | अश्वशाला का अध्यक्ष |
| शहना-ए-पील | हस्तिशाला का अध्यक्ष |
| अमीर-ए-सदा | एक शहर या 100 गाँव का शासन देखता था |
| तले अह एवं यज्की | गुप्तचर (शत्रु सेना की गतिविधियों की जानकारी एकत्र करने वाला) |

| सैन्य व्यवस्था | | |
|---|---|---|
| 1. | सुल्तान | 10 खान (सर्वोच्च अधिकारी) |
| 2. | खान | 10 मलिक |
| 3. | मलिक | 10 अमीर, |
| 4. | अमीर | 10 सिपहसालार |
| 5. | सिपहसालार | 10 सर-ए-खेल |
| 6. | सर-ए-खेल | अश्वारोही |

| सल्तनत काल के प्रमुख वजीर | |
|---|---|
| **सुल्तान** | **वजीर** |
| महमूद गजनवी | अब्बास फजल बिन अहमद |
| इल्तुतमिश | फखरूल मुल्क इसामी, निजामुल मुल्क जुनैदी |
| रजिया | निजामुलमुल्क जुनैदी |
| बलबन | एवाजा हसन बसरी |
| अलाउद्दीन खिलजी | नुसरत खाँ, मलिक काफूर, ताजुलमुल्क |
| मुहम्मद बिन तुगलक | ख्वाजा जहाँ, अहमद अयाज |
| फिरोज तुगलक | खान-ए-जहाँ |
| सिकन्दर लोदी | मियाँ भुँआ |

- बार-ए-खास में सुल्तान दरबारियों, खानों, अमीरों, मालिकों एवं अन्य रईसों को बुलाता था।
- बार-ए-आजम में सुल्तान विद्वान, मुल्ला एवं काजी की उपस्थिति में राजकीय कार्यों का अधिकांश भाग पूरा करता था।
- अमीर-ए-तुमन दस हजार सैनिकों की टुकड़ी का प्रधान अधिकारी।

| सल्तनत कालीन विभिन्न विभाग | | |
|---|---|---|
| **विभाग** | **संस्थापक** | **कार्य** |
| दीवान-ए-विजारत | – | राजस्व विभाग (लोदी काल में यह महत्वहीन हो गया) |
| दीवान-ए-इसराफ | – | लेखा परीक्षक विभाग |
| दीवान-ए-इमारत | – | लोक-निर्माण विभाग |
| दीवान-ए-अमीर कोही | मुहम्मद बिन तुगलक | कृषि विभाग |
| दीवान-ए-वकूफ | जलालुद्दीन खिलजी | व्यय के कागजात का देखभाल करना |
| दीवान-ए-मुस्तखराज | अलाउद्दीन खिलजी | अतिरिक्त मात्रा में वसूले गये कर का हिसाब रखना |
| वकील-ए-सुल्तान | नसिरुद्दीन महमूद | शासन व्यवस्था एवं सैनिक व्यवस्था की देखभाल करना |
| दीवान-ए-अर्ज | बलबन | सैन्य विभाग |
| दीवान-ए-इस्तिहाक | फिरोजशाह तुगलक | पेंशन विभाग |
| दीवान-ए-खैरात | फिरोजशाह तुगलक | दान विभाग |
| दीवान-ए-बंदगान | फिरोजशाह तुगलक | दास विभाग |
| हश्म-ए-कल्ब | इल्तुतमिश | केन्द्रीय सेना |
| हश्म-ए-अतरफ | इल्तुतमिश | सामन्तों व प्रांतपतियों की सेना |
| साहिब-ए-वरीद-ए-लश्वर विभाग | – | युद्ध के समय की समस्त जानकारी राजधानी भेजता था |

- दिल्ली सल्तनत अनेक प्रान्तों में बटी थी, जिसे इक्ता कहा जाता था। यहाँ का शासन नायब वली व मुक्ति द्वारा संचालित किया जाता था।
- इक्ता शिकों (जिलों) में विभाजित था, जिसका प्रधान अमील या नजीम था।
- ग्राम प्रशासन की सबसे छोटी इकाई थी। ग्रामों में मुकद्दम (मुखिया), पटवारी व कारकून होते थे।
- सुल्तान की स्थायी सेना को खासखेल कहा जाता था।
- सल्तनत में सेना का सबसे बड़ा अधिकारी मालिक एवं खान सबसे प्रतिष्ठित पद था।
- सल्तनतकालीन सेना का वर्गीकरण एवं पदों का विभाजन मंगोल से प्रभावित था- दस अश्वारोही = एक सर-ए-खेले, दस सर-ए-खेल = एक सिपहसालार, दस सिपहसालार = एक अमीर, दस अमीर = एक मालिक, दस मालिक = एक खान।
- बारुद की सहायता से गोला फेंकने की मशीन को मंगलीक एवं अर्राद कहा जाता था।
- अलाउद्दीन खिलजी ने इक्ता प्रथा को समाप्त किया, जिसे फिरोज तुगलक ने पुनः आरम्भ किया।
- अच्छे नस्ल के घोड़े तुर्की, अरबी एवं रुस से तथा हाथी बंगाल से मंगाया जाता था।
- सल्तनत काल में इस्लामी कानून शरीयत, कुरान एवं हदीस पर आधारित था।
- कुरान के अनुसार मुस्लिम शासक का कर्तव्य है- मूर्ति पूजा को नष्ट करना, जिहाद (धर्मयुद्ध) लड़ना एवं दारुल हर्ब (काफिरों के देश) को दारुल इस्लाम में बदलना।
- सल्तन काल में लगान निर्धारण की मिश्रित प्रणाली को मुक्तई कहा जाता है।

- सल्तनत काल में देवल अंतर्राष्ट्रीय बंदरगाह के रूप में, अन्हिलवाड़ व्यापारियों के तीर्थस्थल के रूप में, आगरा नील उत्पादन के लिए एवं बनारस सोने, चाँदी एवं जरी के काम के लिए प्रसिद्ध था।
- सुल्तान फिरोजशाह ने फिरोजाबाद में एक धूपघड़ी एवं एक जलघड़ी बनवाया।
- पूर्णत: केन्द्र नियंत्रण में रहने वाली भूमि खालसा भूमि कहलाती थी।
- उश्र-वह भूमिकर था जो केवल मुसलमानों से लिया जाता था।
- इसामी कृत फुतूह-उस-सलातीन से सर्वप्रथम चरखा का वर्णन मिलता है।
- इब्नबतूता ने दिल्ली को संसार की सबसे बड़ी मंडी कहा है।
- पुर्तगालियों से पूर्व भारतीय-विदेश व्यापार अरबों एवं इरानियों के हाथों में केन्द्रित था।
- तांबे के सिक्के को सल्तनत काल में दिरहम कहा जाता था।

## साहित्य एवं संस्कृति

- अमीर खुसरों ने आठ सुल्तानों का कार्यकाल देखा। वे निजामुद्दीन औलिया के शिष्य थे।
- खुसरों का जन्म बदायूँ में हुआ था। उसको तूतिये-हिन्द भी कहा जाता था।
- खुसरों तबला, सितार, हिन्दवी भाषा एवं कव्वाली को पहली बार प्रचलन में लाए।
- सल्तनत काल में ख्याल गायिकी का अविष्कार जौनपुर के सुल्तान हुसैन शाह शर्की ने किया।
- बलबन का पौत्र कैकुबाद महान संगीत-प्रेमी सुल्तान था।
- मुहम्मद बिन तुगलक के काल में ईरानी चित्रकार शाहपुर के द्वारा एक चित्र बनाया गया।
- शेख मुइनुद्दीन चिश्ती के अनुसार- संगीत आत्मा के लिए पौष्टिक आहार है।
- ख्वाजा नासिरुद्दीन हसन को हिन्दुस्तानी सादी कहा जाता है।

**सल्तनत काल की प्रमुख रचनाएँ (Sultanate Period Books)**

| पुस्तक | लेखक |
|---|---|
| तारीख-ए-फिरोजशाही | जियाउद्दीन बरनी |
| फतवा-ए-जहांदारी | जियाउद्दीन बरनी |
| तबकार-ए-नासिर | मिनहाज-उस-सिराज |
| फुतूहात-उस-सलातीन | ख्वाजा अबू वक्र इसामी |
| किताब-उल-रहला | इब्नेबतूता |
| फुतूहात-उल-फिरोजशाही | फिरोजशाह तुगलक |
| तहकीक-ए-हिन्द | अलबरूनी |
| तारीख-ए-मुबारकशाही | याहिया बिन अहमद सरहिन्दी |
| तारीख-ए-सलातीन-ए-अफगान | अहमद यादगार |
| ताज-उल-मासिर | हसन निजामी |
| खजाय-नुल-फुतूह | अमीर खुसरो |
| तारीख-ए-अलाई | अमीर खुसरो |
| तुगलकनामा | अमीर खुसरो |
| ब्रह्मसूत्र | रामानुजन |
| तारीख-ए-मुहम्मदी | मुहम्मद बिहमद खान |
| मुनशत-ए-महरू | मुल्तानी |
| तारीख-ए-सिन्ध | मीर मुहम्मद मसूम |
| तारीख-ए-यामिनी | उत्बी |
| हम्मीर मद-मर्दन | जयसिंह सूरी |
| गीत गोविन्द | जयदेव |
| हरकेलि नाटक | जयदेव |
| ललित विग्रहराज | जयदेव |
| प्रसन्न राघव | जयदेव |
| प्रद्युम्नाभ्युदय | रविवर्मन |
| पार्वती परिणय | वामन भट्ट |
| पृथ्वीराज रासो | चंद बरदाई |
| जाम्बवती कल्याणम | कृष्णदेव राय |
| राजतरंगिणी | कल्हण |
| बीसलदेव रासो | नरपतिनाथ |
| चंदावत | मुल्ला दाउद |
| आल्हखंड | जगनिक |

## सूफी आन्दोलन

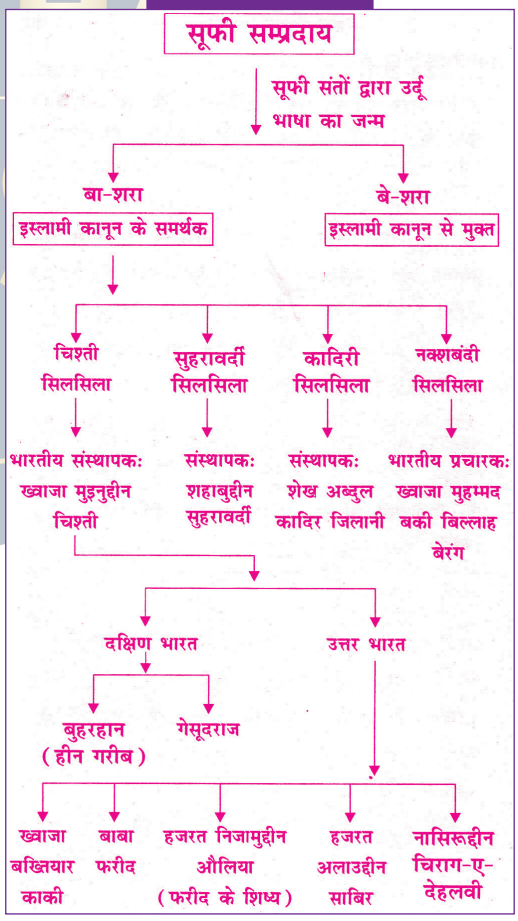


- अबू नसर अल सराज की पुस्तक किताब-उल-लुमा में सूफी शब्द की उत्पत्ति का उल्लेख है।
- सूफी संतों से शिष्यता ग्रहण करने वाले को मुरीद कहा जाता था।

- सूफी जिन आश्रमों में निवास करते थे उन्हें खनकाह व मठ कहा जाता था।
- मंसूर हल्लाज ऐसे पहले सूफी साधक थे जो स्वयं को अनलहक घोषित किये।
- इब्नुल अरबी ने वहादत-उल-वुजूद में सूफी सिद्धान्त का उल्लेख किया है।
- अबुल फजल ने आइने अकबरी में 14 सूफी सिलसिलों का उल्लेख किया है।
- सूफियों के धर्मसंघ बा-शारा (इस्लामी सिद्धान्त के समर्थक) एवं बे-शारा (इस्लाम से बंधे नहीं) में विभाजित थे।
- 1192 में मुहम्मद गौरी के साथ ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती भारत आये। इन्होंने यहाँ चिश्तिया परंपरा की स्थापना की। इसके मुख्य केन्द्र अजमेर एवं अन्य केन्द्र नारनौली, झाँसी, सरवर, बदायूँ एवं नागौर थे। इस सिलसिला के अन्य संत बख्तियार काकी, बाबा फरीद आदि थे।
- बाबाफरीद की रचनाएं गुरुग्रंथ साहिब में शामिल हैं। हजरत निजामुद्दीन औलिया एवं हजरत अलाउद्दीन साबिर उनके दो प्रमुख शिष्य थे।
- निजामुद्दीन औलिया ने अपने जीवनकाल में दिल्ली के सात सुल्तानों का शासन देखा था। उनके प्रमुख शिष्य थे-अमीर खुसरों, अमीर हसन देहलवी एवं शेख सलीम चिश्ती।
- शेख बुरहानुद्दीन गरीब ने 1340 में दक्षिण भारत में चिश्ती सम्प्रदाय की शुरुआत की और दौलताबाद को अपना मुख्य केन्द्र बनाया।
- निजामुद्दीन औलिया के अनुसार कुछ हिन्दू जानते हैं कि इस्लाम एक सच्चा धर्म है किन्तु वे इसे अपनाते नहीं हैं।
- सुहरावर्दी सिलसिला की स्थापना शेख शिहाबुद्दीन उमर सुहरावर्दी ने की। किन्तु इसके संचालन का श्रेय बहाउद्दीन जकारिया को है। उन्होंने मुल्तान को अपना केन्द्र बनाया। इस सिलसिले के अन्य प्रमुख संत थे- रुकनुद्दीन अबुल फतह, सैय्यद सुत्खजोश, बुरहान, हमीदुद्दीन नागौरी।
- सुहरावर्दी राजकीय संरक्षण को स्वीकार किया किन्तु चिश्ती ने उसे अस्वीकार किया।
- सत्तारी सिलसिले की स्थापना शेख अब्दुल सत्तारी ने की। इनका मुख्य केन्द्र बिहार था।
- सत्तारी के प्रमुख संत मुहम्मद गौस से हुमायूँ एवं तानसेन अधिक प्रभावित थे।
- कादिरी सिलसिला की स्थापना सैय्यद अबुल कादिर अल जिलानी ने की थी।
- कादिरी इस्लाम में प्रथम रहस्यवादी पंथ था। इसके प्रसिद्ध संत शेख मुहम्मद मियाँ मीर थे।
- दारा शिकोह कादिरी सिलसिला का अनुयायी था। उसके गुरु मुल्तान शाह बदख्शी थे।
- नक्शबन्दी सिलसिला की स्थापना ख्वाजा उबेदुल्ला ने की थी। भारत में इसका प्रसार ख्वाजा बाकी बिल्लाह के शिष्य शेख अहमद सरहिन्दी (अकबर के समकालीन) ने की।
- सरहिन्दी ने वजहद-उल-वजूद के स्थान पर वजहद-उल-शूद को महत्व प्रदान किया।

| | सिलसिला | संस्थापक |
|---|---|---|
| 1. | चिश्ती | ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती |
| 2. | सुहरावर्दी | शिहाबुद्दीन सुहरावर्दी बहाउद्दीन जकारिया (भारत) |
| 3. | कादिरी | शेख अब्दुल कादिर जिलानी |
| 4. | सत्तारी | शाह अब्दुल्ला सत्तारी |
| 5. | फिरदौसी | शेख बदरूद्दीन |
| 6. | नक्शबंदी | बाकी बिल्लाह |
| | **उपाधियाँ** | **सूफी सन्त** |
| 1. | चिराग-ए-देहलवी | शेख नासिरूद्दीन महमूद |
| 2. | महबूब-ए-इलाही | शेख निजामुद्दीन औलिया |
| 3. | मुजद्दि | शेख अहमद सरहिन्दी |
| 4. | बन्दानवाज | सैय्यद मुहम्मद गेसूदराज |

- नक्शबन्दी सबसे अधिक कट्टरवादी सिलसिला था। इसने अकबर की उदारनीति का विरोध किया।
- सूफियों में ऋषि सिलसिला कश्मीर में शेख नुरुद्दीन ऋषि द्वारा चलाया गया।
- महदवी सिलसिला के संस्थापक सैय्यद मुहम्मद (जौनपुर) थे।
- कलंदरी सिलसिला की स्थापना भारत में नज्मुद्दीन कलंदर ने किया।
- रोशनिया सिलसिला के संस्थापक वायजीद अंसारी थे।
- मदरिया सिलसिला के संस्थापक शेख बहाउद्दीन शाह मदार थे।

## भक्ति आंदोलन (सुधारवादी आंदोलन)

- शंकराचार्य ने अद्वैतवाद दर्शन का प्रतिपादन किया। उसने चार मठ को स्थापित किया- (1) शृंगेरी पीठ, मैसूर (कर्नाटक), (2) ज्योतिष पीठ, बद्रीनाथ (उत्तराखण्ड), (3) शारदा पीठ, द्वारिका (गुजरात), (4) गोवर्धन पीठ, पुरी (उड़ीसा)।

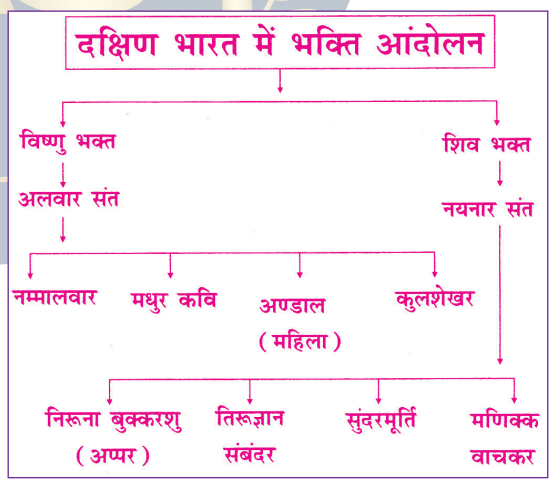


- कुम्भ मेले का आयोजन उज्जैन, प्रयाग, हरिद्वार तथा नासिक में किया जाता है। प्रत्येक तीसरे वर्ष कुम्भ तथा प्रत्येक 12वें वर्ष महाकुंभ का आयोजन होता है।
- शंकराचार्य के अद्वैतदर्शन के विरोध में चार वैष्णव मतों का विकास हुआ।
- भक्ति आन्दोलन को दक्षिण भारत से उत्तर भारत में 12वीं शताब्दी के आरम्भ में रामानन्द के द्वारा लाया गया।

## भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत

- **रामानुज**- इनका जन्म 1016 ई. में पेरुम्बदर (मद्रास) में हुआ था। वे वेदान्त में प्रशिक्षण अपने गुरु (काँचीपुरम के) यादव प्रकाश से प्राप्त किए थे। वे सगुण (राम) ईश्वर में विश्वास करते थे। उनके क्रिया-कलाप का मुख्य केन्द्र काँची और श्रीरंगपट्टम था। चोल प्रशासन के विरोध के कारण यह स्थान उन्हें छोड़ना पड़ा।

| 12 अलवार संत | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | तिरूमंगयी | 2. | अण्डाल | 3. | पेरियालवार |
| 4. | तिरूमलिराई | 5. | पोयगयी | 6. | भूत्तार |
| 7. | नम्मालवार | 8. | कुलशेखर | 9. | पेयलवार |
| 10. | तोण्डरदिप्पोडि | 11. | तिरुप्पान | 12. | मधुरकवि |
| अलवारों में मात्र एक महिला संत अण्डाल थी। | | | | | |

- **माध्वाचार्य**- लक्ष्मी नारायण के उपासक थे।

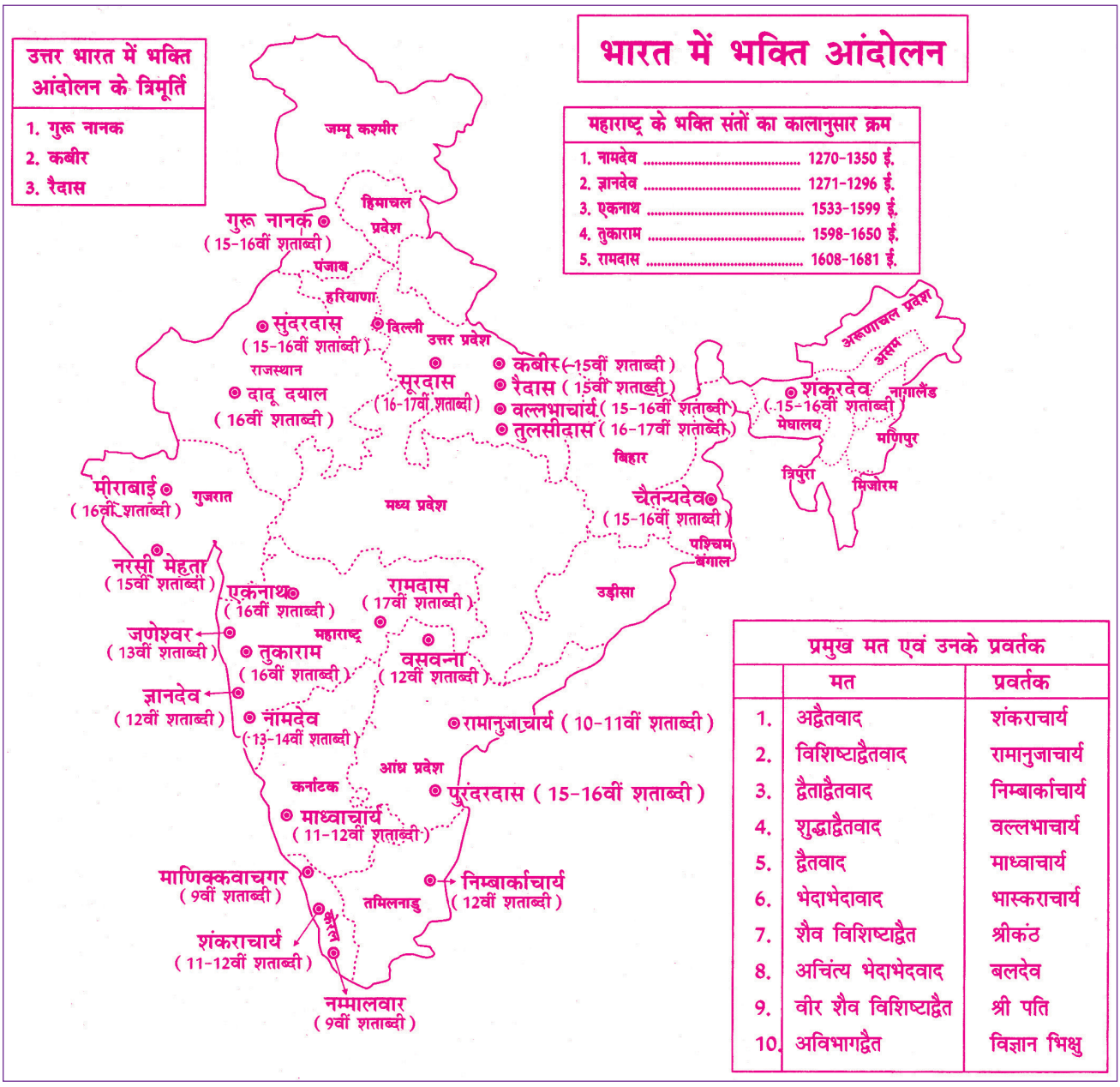


| प्रमुख मत एवं उनके प्रवर्तक | | |
|---|---|---|
| | मत | प्रवर्तक |
| 1. | अद्वैतवाद | शंकराचार्य |
| 2. | विशिष्टाद्वैतवाद | रामानुजाचार्य |
| 3. | द्वैताद्वैतवाद | निम्बार्काचार्य |
| 4. | शुद्धाद्वैतवाद | वल्लभाचार्य |
| 5. | द्वैतवाद | माध्वाचार्य |
| 6. | भेदाभेदावाद | भास्कराचार्य |
| 7. | शैव विशिष्टाद्वैत | श्रीकंठ |
| 8. | अचिंत्य भेदाभेदवाद | बलदेव |
| 9. | वीर शैव विशिष्टाद्वैत | श्री पति |
| 10. | अविभागद्वैत | विज्ञान भिक्षु |

- **रामानन्द**- इनका जन्म 1299 ई. में प्रयाग में हुआ था। वे रामानुज के शिष्य थे। इनकी शिक्षा प्रयाग तथा वाराणसी में हुई। हिन्दी में उपदेश देने वाले वे पहले वैष्णव संत थे। उनके शिष्यों में सभी जाति के लोग शामिल थे- कबीर (जुलाहा), सेना (नाई), रैदास (चमार) आदि। वे राम के उपासक थे।
- **कबीर**- यह सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। उनके ईश्वर निराकार और निर्गुण थे। उन्होंने जात-पात, मूर्ति-पूजा तथा अवतार सिद्धान्त को अस्वीकार किया। कबीर की शिक्षाएँ बीजक में संग्रहीत हैं। उन्होंने संत होते हुए गृहस्थ जीवन का निर्वाह किया। कबीर के उपदेश सबद सिक्खों के आदिग्रंथ में संगृहीत हैं। उनके अनुयायी कबीरपंथी कहलाते है।

| आदि शंकराचार्य द्वारा स्थापित 4 मठ | | | |
|---|---|---|---|
| क्र.म. | पीठ | स्थल | राज्य |
| 1. | श्रृंगेरीपीठ (शिव) | मैसूर | कर्नाटक |
| 2. | गोवर्धनपीठ (बलभद्र व शुभद्रा | पुरी | उड़ीसा |
| 3. | शारदापीठ (कृष्ण) | द्वारिका | गुजरात |
| 4. | ज्योर्तिषपीठ (विष्णु) | बद्रीनाथ | उत्तराखण्ड |

- **गुरु नानक ( 1469-1539 )**- इनका जन्म लाहौर के पास तलवंडी नामक स्थान पर हुआ था। उनकी मृत्यु करतारपुर में हुई थी। गुरुनानक के उपदेश आदिग्रंथ में संकलित हैं। उन्होंने बहुदेववाद, जाति-पाति, छुआछूत, उपवास, मूर्तिपूजा, अंध विश्वास आदि की आलोचना की। नानक के अनुयायी सिक्ख कहलाए। गुरु ग्रंथ में नानक, कबीर, नामदेव, बाबा फरीद, धन्ना, रैदास, सेन आदि के वचन शामिल है।
- **रविदास ( रैदास )**- ये अपना जीविकोपार्जन जूता बनाकर करते थे। मीराबाई उन्हें अपना गुरु मानती थीं। उनके अनुसार मानव सेवा ही जीवन में धर्म की सर्वोत्कृष्ट अभिव्यक्ति का माध्यम है।
- **दादू ( 1544-1603 )**- इनका जन्म अहमदाबाद में एक जुलाहा के यहाँ हुआ था। सांभर में आकर उन्होंने ब्रह्मसम्प्रदाय की स्थापना की। दादू ने एक असाम्प्रदायिक मार्ग (निपख सम्प्रदाय) का उपदेश दिया। अकबर ने धार्मिक चर्चा के लिए इन्हें एक बार फतेहपुर सीकरी बुलाया था। सुन्दरदास, रज्जब तथा सूरदास प्रमुख थे। रज्जब ने कहा कि- यह संसार वेद है, यह सृष्टि कुरान है।
- **चैतन्य ( 1486-1533 )**- इनका जन्म बंगाल के नदिया जिला के मायापुर गाँव में हुआ था। उनका वास्तविक नाम विश्वम्भर (निमाई) था। उन्हें केशव भारती ने संन्यास की दीक्षा दी। उन्होंने गौड़ीय वैष्णव धर्म (अचिन्त्य भेदाभेद) की स्थापना की। उन्होंने गोसाई संघ की स्थापना की। चैतन्य ने भक्ति में कीर्तन को मुख्य स्थान दिया। वे वृंदावन में कृष्ण भक्ति सम्प्रदाय की स्थापना किए। उड़ीसा नरेश प्रताप रुद्र गजपति उनके शिष्य थे। उनके संरक्षण में चैतन्य स्थायी रुप से पुरी में रहे, जहाँ उनका देहावसान हुआ। उनके शिष्यों में हरिदास प्रमुख थे।
- **वल्लाभाचार्य ( 1479-1531 )**- इनका जन्म चम्पारण्य (वाराणसी) में हुआ था। इन्होंने काशी में अपनी शिक्षा पूरी की। वल्लाभाचार्य शुद्धाद्वैत में विश्वास करते थे। उनकी प्रमुख कृति सुबोधिनी एवं सिद्धान्त रहस्य अत्यधिक प्रसिद्ध हैं। वे श्रीनाथ जी के नाम से भगवान कृष्ण की पूजा करते थे। वे पुष्टिमार्ग एवं भक्तिमार्ग में विश्वास करते थे। अकबर ने उनके पुत्र विट्ठल नाथ को गोकुल और जैतपुरा की जागीरें प्रदान कीं।
- **मीराबाई ( 1498-1546 )**- ये मेंड़ता के राजा रत्नसिंह राठौर की पुत्री एवं राणा सांगा के पुत्र भोजराज की पत्नी थीं।
- **शंकर देव ( 1449-1568 )**- ये असम के महानतम धार्मिक सुधारक थे। इनके द्वारा स्थापित सम्प्रदाय एक शरण सम्प्रदाय के रुप में प्रसिद्ध है। इनके धर्म को महापुरुषीय धर्म कहा जाता है।
- **सूरदास**- इनका जन्म आगरा- मथुरा मार्ग पर रुनकता नामक ग्राम में हुआ था। ये अकबर एवं जहाँगीर के समकालीन थे। इन्होंने ब्रजभाषा में सूरसारावली, सूरसागर एवं साहित्य लहरी की रचना की। ये राधाकृष्ण के उपासक थे।
- **तुलसीदास ( 1532-1623 )**- इनका जन्म बाँदा जिले के राजापुर नामक ग्राम में हुआ था। इनकी महत्वपूर्ण कृतियाँ है- रामचरित मानस, गीतावली, कवितावली, विनयपत्रिका, वरवै रामायण आदि (अवधि भाषा में)।

**तुलसीदास की प्रमुख रचनाएँ**- रामलला नहछू, वैराग्य संदीपनी, बरवै रामायण, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, रामाज्ञा प्रश्न, दोहावली, कवितावली, गीतावली, श्रीकृष्ण गीतावली और निय पत्रिका आदि है।

- **ज्ञानदेव**- इन्होंने मराठी भाषा में भागवत गीता पर ज्ञानेश्वरी नामक टीका लिखी।
- **नामदेव ( दर्जी )**- व्यक्तिगत जीवन में डाकू थे। इनके कुछ पद्य गुरु ग्रन्थ साहिब में संकलित हैं।
- **एकनाथ**- इनका जन्म पैठण (औरंगाबाद) में हुआ था।
- **तुकाराम ( शूद्र )**- शिवाजी के समकालीन थे। उन्होंने वरकरी पंथ की स्थापना की।
- **रामदास**- ये शिवाजी के आध्यात्मिक गुरु थे। इन्होंने दासबोध लिखा।
- **नरसी मेहता ( गुजरात )**- इनके गीत सुरत संग्राम में संकलित हैं। महात्मा गाँधी के प्रिय भजन वैष्णवजन तो तेने कहिए के रचयिता नरसी मेहता ही थे।

**नरसी मेहता ( 15वीं सदी )**

ये गुजरात के प्रमुख संत, थे इनके गीत सूरत-संग्राम में संकलित हैं। वैष्णव जन तो तेनो कहिये, पीर पराई जाने रे इनका प्रसिद्ध भजन है।

## बहमनी साम्राज्य

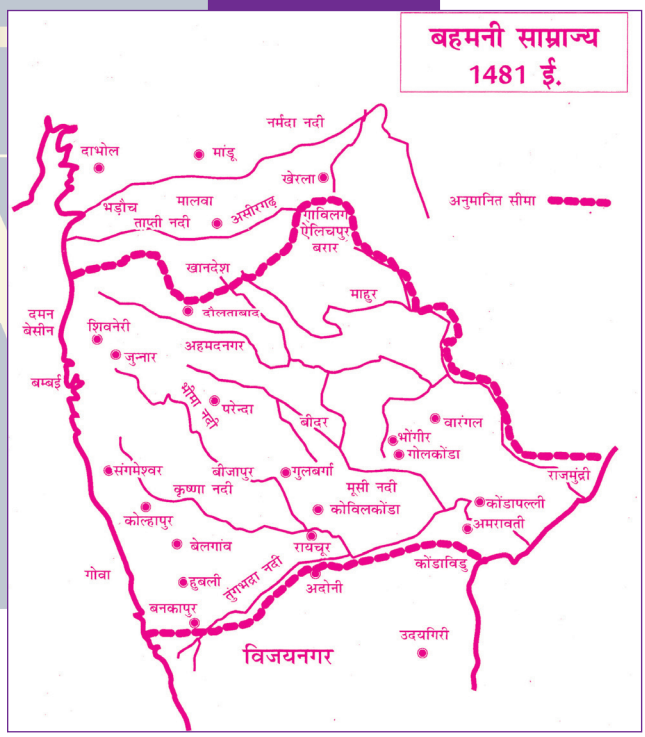


- जफर खाँ (हसन-गंगू) ने अलाउद्दीन हसन बहमनशाह की उपाधि धारण करके 1347 ई. में बहमन साम्राज्य की स्थापना की और सिंहासनारुढ़ हुआ।
- उसने गुलबर्गा को अपने साम्राज्य की राजधानी बनाया और उसका नाम अहसानाबाद रखा।
- मुहम्मदशाह प्रथम के समय पहली बार बारुद का प्रयोग युद्ध में हुआ।
- ताजुद्दीन फिरोज ने भीमा नदी के तट पर फिरोजाबाद नगर बसाया।

- फिरोज का शासनकाल गुलबर्गा के सन्त गेसूदराज के साथ संघर्ष के कारण दूषित हो गया।
- शिहाबुद्दीन अहमद प्रथम ने गुलबर्गा के स्थान पर बीदर को अपनी राजधानी बनाया और उसका नाम मुहम्मदाबाद रखा।
- ताजुद्दीन फिरोज ने विजयनगर के शासक देवराय प्रथम को पराजित कर उसकी पुत्री से विवाह किया।
- फिरोज ने खगोलशास्त्र के अध्ययन के लिए दौलताबाद में एक वेधशाला का निर्माण कराया।
- फिरोज के समय 1417 ई. में रुसी यात्री निकितन ने बहमनी साम्राज्य की यात्रा की।
- अलाउद्दीन अहमद द्वितीय के काल में ईरानी (अफाकी) निवासी महमूद गवाँ का उत्कर्ष हुआ।
- हुमायूँ को निष्ठुरता के कारण जालिम एवं दक्कन का नीरो कहा जाता है।
- मुहम्मद तृतीय के शासन काल में महमूद गवाँ को ख्वाजा जहाँ की उपाधि दी गई और उसे प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया।
- महमूद गवाँ ने बीदर में एक मदरसा का निर्माण कराया। रियाजुल-इन्शा के नाम से महमूद गवाँ के पत्रों का संग्रह किया गया।
- 1482 में दक्खनियों के षडयंत्र द्वारा मुहम्मद तृतीय को भड़काकर गवाँ की हत्या करवा दी।
- बहमनी साम्राज्य का अंतिम शासक कलीमुल्लाह था। 1527 ई. में उसकी मृत्यु के बाद बहमनी साम्राज्य का अन्त हो गया।
- इमादशाही और निजामशाही वंश के संस्थापक हिन्दू से इस्लाम स्वीकार करने वाले दक्कनी लोग थे।
- बहमनी साम्राज्य से सबसे पहले बरार और सबसे बाद में बीदर अलग हुआ।
- बहमनी साम्राज्य के विघटन से पाँच स्थानीय राज्यों का उदय हुआ-

| राज्य | राजधानी | वंश | संस्थापक | वर्ष |
|---|---|---|---|---|
| बरार | एलिचपुर, गाविलगढ़ | इमादशाही | फतेहउल्ला इमादशाह | 1484 |
| बीजापुर | नौरसपुर | आदिलशाही | युसुफ आदिलशाह | 1489 |
| अहमदनगर | अहमदनगर, खिरकी | निजामशाही | मलिक अहमद | 1490 |
| गोलकुण्डा | गोलकुण्डा | कुतुबशाही | कुलीकुतुबशाह | 1512 |
| बीदर | बीदर | वरीदशाही | अमीर अली बरीद | 1526 |

- बीजापुर के शासक इब्राहीम आदिलशाह द्वितीय को गरीबों के प्रति उदार दृष्टिकोण के कारण अबलाबाबा एवं विद्वानों के सरंक्षण के कारण जगत गुरु कहा जाता है।
- उसने किताब-ए-नौरस (हिन्दी में) की रचना की एवं नौरसपुर नामक नगर बसाया।
- उसने तारीख-ए-फरिश्ता के लेखक मुहम्मद कासिम (फरिश्ता) को संरक्षण दिया।
- बीजापुर के शासक मुहम्मद आदिलशाह ने गोल-गुम्बज का निर्माण करवाया।
- अहमदनगर के शासक हुसैन निजामशाह द्वितीय ने हुसैनाबाद नामक नगर बसाया। उसने फारसी लेखक शाह ताहिर को संरक्षण दिया, जिनकी प्रमुख कृति है-फतहनामा, इन्शा-ए-शाह-ताहिर, तोहफा-ए-शाही एवं रिशाला-ए-पाल आदि।
- अहमद नगर का दुर्ग एवं बाग-ए-हश्व-बहिश्त का निर्माण अहमद निजामशाह ने करवाया।
- 1574 में बरार को अहमद नगर के सुल्तानों ने अहमदनगर में मिला लिया।
- 1618-19 में बीजापुर के सुल्तानों ने बीदर को बीजापुर साम्राज्य में मिला लिया।
- बहमनी की राजभाषा मराठी एवं उसकी मुद्रा हुण थी।

## विजयनगर साम्राज्य

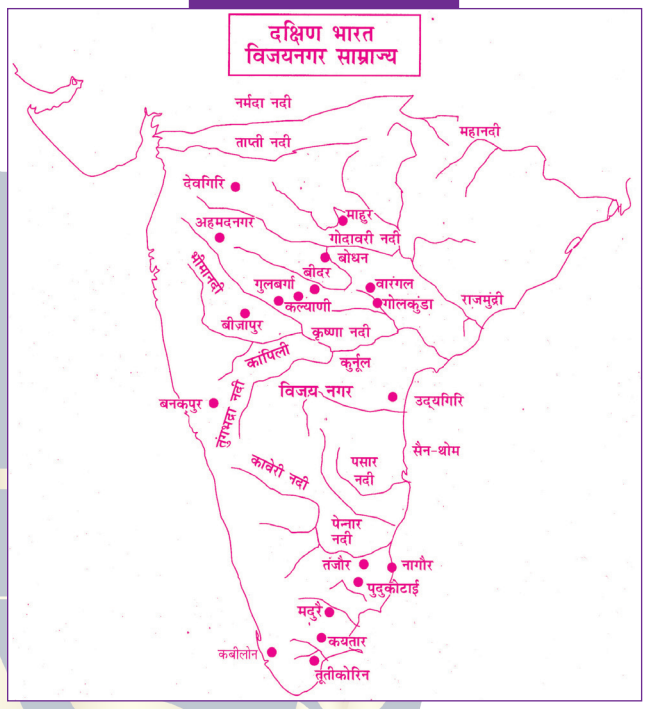


- 1336 ई. में विजयनगर (जीत का शहर) साम्राज्य की स्थापना विद्यारण्य संत के आशीर्वाद से हरिहर एवं बुक्का नामक दो भाइयों ने की थी।
- हरिहर एवं बुक्का ने अपने पिता संगम के नाम पर संगम राजवंश की स्थापना की।
- विजयनगर की राजधानियाँ क्रमशः अनेगोण्डी, विजयनगर, बेनुगोण्डा एवं चन्द्रगिरि थीं।

| संगम वंश (1336-1485 ई.) | | | |
|---|---|---|---|
| वंश | संस्थापक | समय | अंतिम शासक |
| संगम | हरिहर प्रथम | 1336-1356 ई. | विरूपाक्ष द्वितीय |
| सालुव | सालुव नरसिंह | 1485-1505 ई. | इम्माडी नरसिंह |
| तुलुव | वीर नरसिंह | 1505-1570 ई. | सदाशिव राय |
| अराविडु | तिरूमल | 1570 के बाद | रंग तृतीय |

- विजयनगर का वर्तमान नाम हम्पी है, जो तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी किनारे पर स्थित है।
- विजयनगर के बारे में फारसी यात्री अब्दुल रज्जाक ने लिखा था कि यह नगर दुनियाँ के सबसे भव्य शहरों में से एक लगा, जो उसने देखे या सुने थे।
- विजयनगर में चार राजवंशों ने शासन किया। ये थे- संगम वंश, सालुववंश, तुलुववंश, अराबीडुवंश।

- हरिहर एवं बुक्का पहले काकतीय शासक प्रतापरुद्रदेव के सेवक थे। मुहम्मद बिन तुगलक ने उसे बन्दी बनाया। वह इस्लाम कबूल किया, फिर दक्कन का विद्रोह दबाने के लिए मुहम्मद बिन तुगलक द्वारा दक्षिण भेजा गया। उसने पुनः हिन्दू धर्म अपनाया और संगम वंश की स्थापना की।
- हरिहर ने होयसल राज्य को अपने में मिलाया एवं बुक्का ने मदुरा को अपने साम्राज्य में मिलाया।
- बुक्का के समय ही बहमनी विजयनगर संघर्ष की शुरुआत हुई।
- बुक्का ने वेदमार्ग प्रतिष्ठापक की उपाधि ग्रहण की।
- हरिहर द्वितीय ने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की।
- देवराय प्रथम के शासनकाल में इटली यात्री निकोलो काण्टी विजयनगर आया।
- देवराय प्रथम ने राज्य में सिंचाई की सुविधा के लिए तुंगभद्रा नदी पर बाँध बनाकर नहरें निकाला।
- देवराय द्वितीय (इमाडिदेवराय) आंध्र एवं उड़ीसा के गजपति शासक को पराजित किया।
- उसने तुर्क धनुषधारियों को अपनी सेना में शामिल किया।
- फारसी राजदूत अब्दुल रज्जाक देवराय द्वितीय के दरबार में आया था।
- देवराय द्वितीय ने मुसलमानों को मस्जिद निर्माण की स्वतंत्रता दी।
- देवराय को एक अभिलेख में गजबेटकर (हाथियों का शिकारी) कहा गया है।
- देवराय द्वितीय ने संस्कृत ग्रंथ महानाटक सुधानिधि एवं ब्रह्मसूत्र पर भाष्य लिखा। तेलुगु कवि श्रीनाथ कुछ दिन तक उसके दरबार में रहा।
- मल्लिकार्जुन को प्रौढ़ देवराय भी कहा जाता है।
- चीनी यात्री फाह्यान 1451 में मल्लिकार्जुन के समय में विजयनगर आया था।
- सालुव वंश का संस्थापक सालुवनरसिंह था।
- तुलुव वंश का संस्थापक वीरनरसिंह था।
- तुलुव वंश का सबसे प्रतापी राजा कृष्णदेव राय (1509-30) था।
- कृष्ण देवराय की उपाधियाँ यवनराज्यस्थापनाचार्य, अभिनवभोज, आन्ध्रपितामह थीं।
- उसने गजपति शासक प्रतापरुद्र देव को पराजित किया और उसकी पुत्री से विवाह किया।
- कृष्णदेव राय का अन्तिम सैनिक अभियान बीजापुर के सुल्तान इस्माइल आदिल के विरुद्ध था।
- कृष्णदेव राय ने पुर्तगाली शासक अल्बुकर्क से मित्रता की और उसे भटकल में किला बनाने की अनुमति प्रदान किया।
- कृष्णदेव राय के शासनकाल में पुर्तगाली यात्री डोमिगोस पायस विजयनगर आया था।
- बाबरनामा में कृष्णदेव राय को भारत का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक कहा गया है।
- कृष्णदेव राय ने तेलुगु भाषा में अमुक्तमाल्याद एवं संस्कृत में जाम्बवती कल्याणम् एवं उषा परिणय की रचना की।
- कृष्णदेव राय के दरबार में तेलुगु साहित्य के आठ सर्वश्रेष्ठ कवि रहते थे, जिन्हे अष्टदिग्गज कहा जाता था। अतः इस युग को तेलुगु साहित्य का क्लासिक युग कहा गया है।
- अष्टदिग्गज में सर्वाधिक महत्वपूर्ण अल्लसीन पेड्ड़ना को तेलुगु कविता का पितामह कहा गया। इसकी कृति है- स्वारोचितसंभव या मनुचरित्र तथा हरिकथा सरनसम्।
- अष्टदिग्गज में अन्य कवि थे- तेनालीराम (पांडुरंग महात्म्य), नंदितिम्मन (परिजात हरण), यादय्यगी मल्लन (राजशेखर चरित), घूर्जटि (कलहस्ति महात्म्य), भट्टमूर्ति (नरसमूयामिलयम), जिंग्लीरन्न (राघवपांडवीय) और अच्युलराजु रामचन्द्र (रामाभ्युदय, सकलकथा एवं सार संग्रह)।
- कृष्णदेव राय ने नागलपुर नामक नये नगर की स्थापना की।
- कृष्णदेव राय ने हजारा एवं विट्ठलस्वामी नामक मंदिर का निर्माण करवाया।
- कृष्णदेव राय के शासनकाल में पुर्तगाली यात्री डोमिगो पायस ने विजयनगर की यात्रा की।
- पुर्तगाली यात्री डुआर्ट बारबोस कृष्णदेव राय के शासनकाल में आया था।
- कृष्णदेव राय विवाह कर समाप्त कर दिया। वह शतरंज का खिलाड़ी था।
- तुलुव वंश का अंतिम शासक सदाशिव था। इसके समय वास्तविक सत्ता रामराय के हाथों में थी।
- तालीकोटा या रक्षसी तंगड़ी या बन्नीहट्टी का युद्ध 25 जनवरी 1565 को हुआ। उस युद्ध में विजयनगर पराजित हुआ।
- इस युद्ध में बीजापुर, अहमदनगर, गोलकुण्डा एवं बीदर के संयुक्त मोर्चे का नेतृत्व अली आदिलशाह एवं विजयनगर का नेतृत्व रामराय ने किया।
- अरावीडु वंश की स्थापना 1570 के लगभग तिरुमल ने सदाशिव को अपदस्थ कर पेनुकोंडा में की।
- 1612 ई. में राजा ओएडयार ने उसकी (वेंकट द्वितीय) अनुमति लेकर रंगपट्टम की सूबेदारी के नष्ट होने पर मैसूर राज्य की स्थापना की।
- वेंकट द्वितीय ने दो जेसुइट चित्रकार को अपने राज्य में सरंक्षण दिया।
- श्रीरंग तृतीय विजयनगर का अंतिम शासक था। इस समय मैसूर, वेदनूर, एवं तंजौर आदि स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हुई।
- राजा को राय कहा जाता था।
- रायसम राजा के मौखिक आदेशों को लिपिबद्ध करता था तथा कर्णिकम लेखाधिकारी होता था।
- विजयनगर का प्रशासनिक निकाय-प्रांत (मंडल) कोट्टम या बलनाडु (जिला) नाडु (परगना) मेलाग्राम (50 गाँवों का समूह) स्थल एवं सीमा उर या ग्राम।
- प्रांतीय गवर्नरों को काफी स्वायत्तता प्राप्त थी। उसे सिक्के प्रसारित करने, नये कर लगाने तथा पुराने करों को माफ करने, भूमिदान देने आदि का अधिकार प्राप्त था।
- कृष्णदेव राय के शासनकाल में प्रान्तों की संख्या सर्वाधिक थी।

| विजयनगर साम्राज्य के राजवंश | | | |
|---|---|---|---|
| यात्री | देश | शासक | विवरण |
| अब्दुर्रज्जाक | फारस | देवराय प्रथम | वियजनगर सचिवालय का वर्णन। |
| निकोलो कॉण्टी | इटली | देवराय प्रथम | विजयनगर शहर का वर्णन |
| पायस | पुर्तगाली | कृष्णदेवराय | विजयनगर के शिल्प व व्यापार का वर्णन |
| बारबोसा | पुर्तगाली | कृष्णदेवराय | सतीप्रथा का वर्णन |
| सीजर फ्रेडरिक | पुर्तगाली | तालीकोट युद्ध के बाद भारत | विजयनगर का वर्णन किया |
| नूनीज | पुर्तगाली | अच्युत देवराय | सतीप्रथा का उल्लेख |
| निकितिन | रूस | मुहम्मद तृतीय | विजयनगर की असमानता का वर्णन |

- **नायंकर व्यवस्था**- विजयनगर की सेना के सेनानायकों को नायक कहा जाता था। ये नायक वस्तुतः मूलसामंत थे। उन्हें वेतन के बदले एवं स्थानीय सेना के खर्च को चलाने के लिए अमरम नामक विशेष भू-खण्ड दिया जाता था।
- नायक को अमरम भूमि में शांति, सुरक्षा एवं अपराधों को रोकने के दायित्व का भी निर्वाह करना होता था।
- अच्चुत देवराय ने नायकों की उच्छृंखलता को रोकने के लिए महामंडलेश्वर की नियुक्ति की।
- **आयंगर व्यवस्था**- प्रशासन को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए प्रत्येक ग्राम में एक स्वतंत्र इकाई के रूप में संगठित किया गया था। इसमें बारह अवैतनिक प्रशासकीय अधिकारी होते थे। इनका पद अनुवांशिक होता था। वह अपने पद को बेच सकता था या गिरवी रख सकता था। कर्णिक नामक आयंगर के पास जमीन के क्रय एवं विक्रय से संबंधित समस्त दस्तावेज होते थे।
- **सेनेटेयवा**- गाँव के आय-व्यय की देखभाल करता था- तलस- गाँव का चौकीदार और बेगरा- गाँव में बेगार मजदूरी आदि की देखभाल करता था।
- **कृष्णदेव राय**- के शासनकाल में भूमि का एक व्यापक सर्वेक्षण करवाया गया। भूमि की उर्वरता के अनुसार उपज का 1/3 या 1/6 भाग कर के रूप में निर्धारित किया गया।
- **भंडारवादी**- ग्राम वे ग्राम थे जिनकी भूमि सीधे राज्य के नियंत्रण में थी।
- **उबलि**- ग्राम में विशेष सेवाओं के बदले दी जाने वाली लगानमुक्त भूमि की भू-धारण पद्धति थी।
- **रत्त कोडगे**- युद्ध में शौर्य का प्रदर्शन करने वाले या अनुचित रूप से युद्ध में मृत लोगों के परिवार को दी गई भूमि।
- **कुट्टगि**- ब्राह्मण, मंदिर एवं बड़े भू-स्वामी द्वारा किसानों को पट्टे पर दी गई भूमि।
- **कुदि**- वे कृषक मजदूर जो भूमि के क्रय-विक्रय के साथ ही हस्तांतरित हो जाते थे।
- सैन्य विभाग को कन्दाचार एवं इस विभाग के उच्च अधिकारी को दण्डनायक कहा जाता था।
- विजयनगर में पुलिस विभाग का खर्च वेश्याओं पर लगाये गए कर से चलता था।
- उत्तर भारत से दक्षिण भारत में आकर बसने वाले लोगों को बडवा कहा जाता था।
- दास प्रथा का प्रचलन था। सती-प्रथा का प्रचलन था, जिसकी चर्चा बारबोसा करता है।
- देवदासी प्रथा का प्रचलन था। मनुष्य के क्रय-विक्रय को बेस-बाग कहा जाता था।
- बोमलाट (छाया-नाटक), नाटक और यक्षगान इस काल में बहुत लोकप्रिय थे।
- राजस्व विभाग को अठावन कहा जाता था और भूमिकर को शिष्ट कहते थे।
- विजयनगर की मुद्रा को पेगोडा एवं टकसाल विभाग को जोरीखाना कहा जाता था।

## विजयनगर प्रशासन

- वियजनगर राज्य में राजा को सलाह देने के लिए मंत्रियों की एक परिषद् होती थी, जिसमें राज्य के प्रमुख सरदार हुआ करते थे।

राज्य मंडलम् में विभाजित होता था। वैसे, मंडलम् को राज्य भी कहा जाता था। मंडलम् के नीचे क्रमशः नाडु (जिला), स्थल (उप-जिला) और ग्राम होता था।

- प्रांतीय शासक को अत्यधिक स्वायत्तता प्राप्त होती थी। वह अपना दरबार लगाता था, अपने अधिकारी नियुक्त करता था तथा अपनी सेना भी रखता था।
- राजा सैनिक सरदारों को अमरम् या (पालिगार) निश्चित राजस्व वाला क्षेत्र देता था। पलफूगार (पोलिगार) या नायक कहे जाने वाले इन सरदारों को राज्य की सेवा के लिए एक निश्चित संख्या में पैदल सैनिक, घोड़े और हाथी रखने पड़ते थे।
- फसल, मिट्टी की किस्म और सिंचाई की विधि आदि के अनुसार राजस्व की दरों में अंतर होता था।
- विजय नगर में दास प्रथा का प्रचलन था।
- भू-राजस्व के अतिरिक्त अन्य कर जैसे संपत्ति कर, पैदावार की बिक्री पर लगने वाला कर, पेशागत कर, सैनिक कर (मुसीबत के दिनों में) और विवाह कर आदि थे।

सोलहवीं सदी का यात्री निकितिन कहता है- जमीन आबादी से भरी हुई थी, लेकिन जो लोग गाँवों में रहते हैं, वे बहुत दयनीय अवस्था में हैं, जबकि सरदार लोग खूब समृद्ध हैं एवं विलासिता का जीवन बिताते हैं।

- विजयनगर साम्राज्य में शहरी जीवन का विकास हुआ तथा वाणिज्य-व्यापार में भी अत्यधिक वृद्धि हुई। बहुत-से शहर मंदिरों के आस-पास विकसित हुए।
- मंदिर बहुत बड़े-बड़े होते थे तथा उन्हें तीर्थयात्रियों को प्रसाद, ईश्वर की सेवा, पुजारियों के निर्वाह आदि के लिए खाद्य पदार्थों एवं अन्य वस्तुओं की बहुत अधिक मात्रा में जरूरत होती थी। मंदिर बहुत समृद्ध थे। ये मंदिर आंतरिक एवं अंतर्राष्ट्रीय दोनों तरह के व्यापार में सक्रिय रूप से हिस्सा लेते थे।

# मुगल साम्राज्य

## मुगल वंश के शासक व उत्तराधिकारी

तैमूर वंश से संबद्ध होने के कारण मुगलों को तिमूरियन भी कहा जाता है।

| मुगल शासकों के मकबरे | |
|---|---|
| शासक | मकबरा |
| 1. बाबर | आगरा/काबुल |
| 2. हुमायूँ | दिल्ली |
| 3. अकबर | सिकंदरा (आगरा) |
| 4. जहाँगीर | लाहौर (शाहदरा) |
| 5. शाहजहाँ | आगरा |
| 6. औरंगजेब | औरंगाबाद (दौलताबाद) |

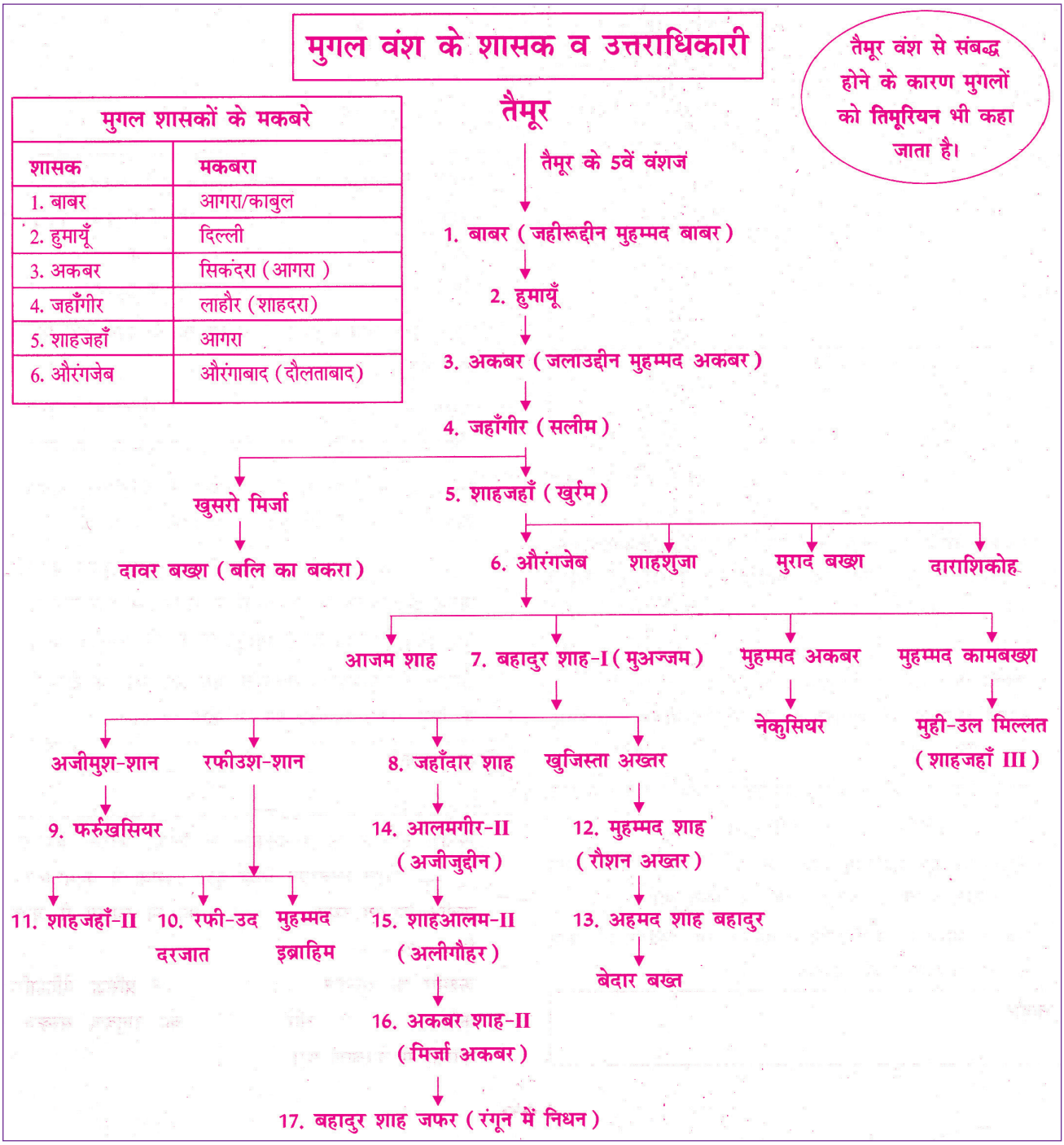


### बाबर

- मुगल वंश का संस्थापक बाबर था। बाबर का जन्म 14 फरवरी 1483 को फरगाना में हुआ था।
- बाबर का पिता उमरशेख मिर्जा फरगाना की जागीर का शासक था।
- बाबर पितृ पक्ष की ओर से तैमूर का पाँचवां वंशज तथा मातृ पक्ष की ओर से चंगेज खाँ का चौदहवां वंशज था। बाबर तुर्की नस्ल के चुगताई वंश का था।
- बाबर फरगाना की गद्दी पर 8 जून, 1494 ई. में बैठा। 1507 में बाबर ने अपने पूर्वजों द्वारा धारण की गई उपाधि मिर्जा का त्याग कर नई उपाधि पादशाह धारण की।
- बाबर का भारत के विरुद्ध किया गया प्रथम अभियान 1519 में यूसुफजाई जाति के विरुद्ध था। बाबर ने भारत पर पाँच बार आक्रमण किया।
- बाबर को भारत पर आक्रमण करने का निमंत्रण पंजाब के शासक दौलता खाँ लोदी एवं मेवाड़ के शासक राणा सांगा ने दिया था।
- पानीपत के प्रथम युद्ध में बाबर ने उज्बेकों की तुलगामा युद्ध पद्धति तथा तोपों को सजाने में उस्मानी विधि (रूसी विधि) का प्रयोग किया और इब्राहीम लोदी को पराजित किया।
- पानीपत में विजय के उपरांत बाबर ने काबुल के प्रत्येक निवासी

को एक-एक चाँदी का सिक्का दान में दिया था, जिसके कारण बाबर को कलन्दर कहा जाता था।

- इस युद्ध में बाबर के तोपखाने का नेतृत्व उस्ताद अली और मुस्तफा खाँ नामक तुर्क अधिकारियों ने किया था।
- खानवा के युद्ध (17 मार्च 1527) में बाबर ने राणा सांगा को पराजित किया।

| बाबर के आक्रमण के समय भारतीय राज्य | | |
|---|---|---|
| क्र.स. | राज्य | शासक |
| 1. | विजयनगर | कृष्णदेवराय |
| 2. | दिल्ली | इब्राहिम लोदी |
| 3. | कश्मीर | मुहम्मद शाह |
| 4. | मालवा | महमूदशाह-II |
| 5. | गुजरात | बहादुरशाह |
| 6. | बंगाल | नुसरतशाह |
| 7. | मेवाड़ | राणा सांगा |
| 8. | सिंध | शाहबेग अरमून |

| वर्ष | युद्ध |
|---|---|
| पानीपत का प्रथम युद्ध | 21 अप्रैल, 1526 |
| खानवा का युद्ध | 16 मार्च, 1527 |
| चन्देरी का युद्ध | 29 जनवरी, 1528 |
| घाघरा का युद्ध | 5 मई, 1529 |
| चौसा का युद्ध | 26 जून, 1539 |
| कन्नौज का युद्ध | 17 मई, 1540 |

**बाबर की आत्मकथा**

बाबर ने तुर्की भाषा में अपनी आत्मकथा तुजुक-ए-बाबरी की रचना की थी। इसे बाबरनामा (वाकियाते-बाबरी) के नाम से जाना जाता है। सर्वप्रथम अकबर के समय में इसका फारसी भाषा में अनुवाद पायंदा खाँ ने किया था। इसके पश्चात् 1590 ई. में अब्दुर्रहीम खान ने इसका फारसी में अनुवाद किया। बाबरनामा का फारसी भाषा से अंग्रेजी अनुवाद सर्वप्रथम लीडन, अर्सकिन व एल्किंग ने 1826 ई. में किया था।

- बाबर ने इस युद्ध में जिहाद का नारा दिया एवं मुसलमानों पर लगने वाले तमगा कर की समाप्ति की घोषणा की। इस युद्ध में विजय प्राप्ति के बाद बाबर ने गाजी (योद्धा एवं धर्म प्रचारक) की उपाधि धारण की।
- 29 जनवरी 1528 ई. को बाबर ने चन्देरी के युद्ध में मेदनी राय को पराजित किया।
- बाबर ने 6 मई 1529 को घाघरा के युद्ध में बिहार एवं बंगाल की संयुक्त अफगान सेना को पराजित किया।
- बाबर कुषाणों के बाद पहला शासक था जिसने काबुल एवं कंधार पर नियंत्रण स्थापित किया।
- 27 दिसम्बर 1530 को आगरा में बाबर की मृत्यु हो गयी।
- आरम्भ में बाबर को आगरा में नूर अफगान बाग (आरामबाग) में दफनाया गया, परन्तु बाद में उसे काबुल में उसी के द्वारा चुने गये स्थान पर दफना दिया गया।
- बाबर ने आगरा में ज्यामितीय विधि से आरामबाग को बनवाया था।
- बाबर ने तुर्की भाषा में अपनी आत्मकथा बाबरनामा लिखा, जिसका फारसी अनुवाद पायन्द खाँ एवं अब्दुर्रहीम खानखाना और अंग्रेजी अनुवाद इर्स्किन एवं श्रीमती बेबरिज ने की।
- बाबर को मुबईयान नामक पद्य शैली का जन्मदाता कहा जाता है।
- बाबर नक्शबन्दी सूफी संत ख्वाजा उबैदुल्ला अहरार का अनुयायी था।
- बाबर ने रिसाल-ए-उसज की रचना की जिसे खत-ए-बाबरी कहा जाता है।

## नसिरुद्दीन मुहम्मद हुमायूँ (1530-1556 ई.)

- हुमायूँ का जन्म बाबर की पत्नी माहम अनगा के गर्भ से 1508 को काबुल में हुआ।
- 1520 ई. में वह बादख्शाँ का सूबेदार बना।
- बाबर की मृत्यु के बाद 30 दिसम्बर 1530 ई. को आगरा में हुमायूँ का राज्याभिषेक हुआ।

| प्रांतीय व्यवस्था | |
|---|---|
| मेवात | हिन्दाल |
| संभव | अस्करी |
| बदख्शां | मिर्जा सुलेमान |
| मुल्तान, काबुल, कंधार, पंजाब | कामरान |

- अपने पिता के आदेश का पालन करते हुए हुमायूँ ने मुगल साम्राज्य को अपने चारों भाइयों में बाँट दिया। कामरान को काबुल, कान्धार एवं पंजाब की सूबेदारी, अस्करी को सम्भल की सूबेदारी एवं हिन्दाल को अलवर की सूबेदारी प्रदान की।
- 1533 ई. में हुमायूँ ने दिल्ली में दीनपनाह नामक एक दुर्ग का निर्माण करवाया, जिसका उद्देश्य मित्र एवं शत्रुओं को प्रभावित करना था।
- हुमायूँ द्वारा लड़ा गया प्रमुख युद्ध था, क्रमशः कालिंजर पर अभियान (1532), दौहरिया का युद्ध (1533) चुनार का घेरा (1532), बहादुरशाह से युद्ध (1535-36), चौसा का युद्ध (26 जून 1539), विलग्राम की लड़ाई (17 मई 1540), मच्छीवार का युद्ध (15 मई 1555) और सरहिन्द का युद्ध (22 जून 1555)।
- चौसा के युद्ध में शेर खाँ ने हुमायूँ को पराजित किया और शेरशाह की उपाधि धारण की।
- विलग्राम या कन्नौज के युद्ध में शेर खाँ ने हुमायूँ को पराजित कर आगरा एवं दिल्ली पर अधिकार स्थापित कर लिया। हुमायूँ को सिंध में निर्वासित जीवन व्यतीत करना पड़ा।

चूँकि हुमायूँ ज्योतिष में विश्वास करता था, इसलिए उसने सप्ताह के सातों दिन 7 रंग के कपड़े पहनने के नियम बनाए थे। वह मुख्यतः रविवार को पीला, शनिवार को काला एवं सोमवार को सफेद कपड़े पहनता था।

- अपने निर्वासन काल में हुमायूँ ने हिन्दाल के आध्यात्मिक गुरु मीर अली अकबरजामी की पुत्री हमीदा बेगम से निकाह कर लिया। कालान्तर में हमीदा से ही अकबर का जन्म हुआ।
- सरहिन्द के युद्ध में विजय प्राप्ति के बाद हुमायूँ दोबारा सत्ता प्राप्त किया। इस युद्ध में अफगान सेना का नेतृत्व सुल्तान सिकन्दरशाह एवं मुगल सेना का नेतृत्व बैरम खाँ ने किया।
- 1556 में दीनपनाह भवन में स्थित पुस्तकालय की सीढ़ियों से गिरने के कारण हुमायूँ की मृत्यु हो गयी।

- **लेनपूल ने कहा**- हुमायूँ गिरते-पड़ते इस जीवन से मुक्त हो गया। ठीक उसी तरह जिस तरह तमाम जिन्दगी वह गिरते-पड़ते चलता रहा था।
- हुमायूँ ज्योतिष में विश्वास करता था, इसलिए उसने सप्ताह के सातों दिन सात रंग के कपड़े पहनने के नियम बनाए। इतवार-पीला, शनिवार-काला और सोमवार-सफेद कपड़ा।
- हुमायूँ को अबुल फजल ने इन्सान-ए-कामिल कहकर सम्बोधित किया है।

## शेरशाह सूरी ( 1540-1545 ई. )

- इसका जन्म 1472 ई. में बजवाड़ा (होशियार पुर) में हुआ था। इसके पिता हसन खाँ जौनपुर के छोटे जमींदार थे। शेरशाह के बचपन का नाम फरीद खाँ था।
- फरीद खाँ को शेर खाँ की उपाधि बिहार के अफगान सुल्तान मुहम्मद बहार खाँ लोहानी ने दी, जहाँ वह नौकरी करता था।
- शेरशाह ने जब्त प्रणाली, कबूलियत एवं पट्टा प्रथा की शुरुआत करवाया।
- शेरशाह ने अपनी उत्तर-पश्चिमी सीमा को सुरक्षित करने के लिए रोहतासगढ़ किले का निर्माण कराया।
- शेर खाँ ने बाबर की सेना में भी नौकरी किया और चन्देरी के युद्ध में मुगलों की ओर से भाग लिया।

शेरशाह मारवाड़ के युद्ध में राजपूतों के शौर्य से इतना प्रभावित हुआ कि, उसने कहा- मैं मुट्ठी भर बाजरे के लिए लगभग हिन्दुस्तान का साम्राज्य खो चुका था।

- शेरशाह का अंतिम सैन्य अभियान कालिंजर पर हुआ। इसी अभियान के दौरान 22 मई 1545 को शेरशाह की मृत्यु हो गई। मृत्यु के समय वह उक्का नामक अग्नेयास्त्र चला रहा था।
- शेरशाह के उत्तराधिकारी हुए क्रमशः इस्लामशाह, फिरोज, मुहम्मद आदिलशाह, इब्राहिमशाह सूरी एवं सिकन्दर सूरी।

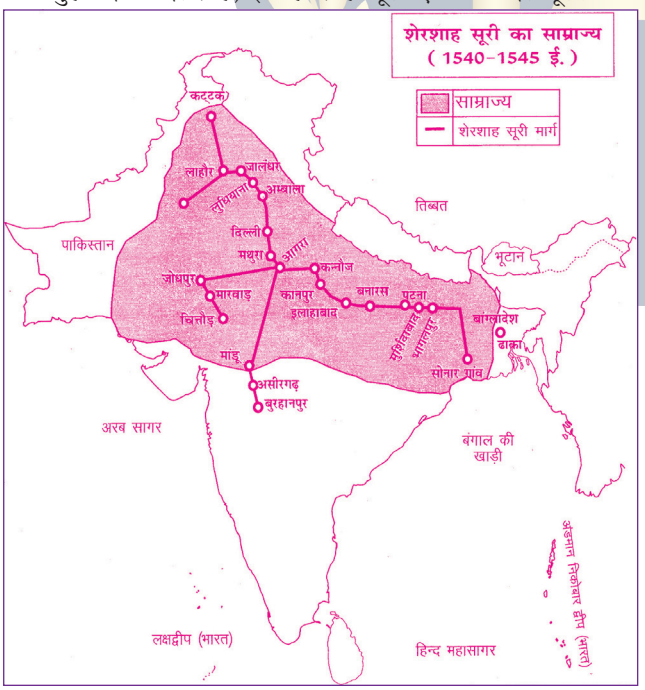


- शेरशाह की लगान व्यवस्था मुख्य रूप में रैय्यतवाड़ी थी। उसने उत्पादन के आधार पर भूमि का विभाजन उत्तम, मध्यम एवं खराब श्रेणियों में किया।
- शेरशाह ने भूमि की माप के लिए सिकन्दरी गज (39 अंगुल या 32 इंच) एवं सन् की डंडी का प्रयोग करवाया।
- राजा टोडरमल शेरशाह का वित्तमंत्री था। वह बाद में अकबर का भी वित्तमंत्री बना।
- शेरशाह ने सुल्तान-उल-अदल की उपाधि धारण की।

अब्बास खाँ सारवानी ने कहा था कि, इन सरायों का यह नियम था कि, इनमें जो भी दाखिल होता था, उसे सरकार की ओर से अपनी पद-प्रतिष्ठा के अनुरूप सुविधाएँ, भोजन और उसके पशु के लिए चारा दिया जाता था।

- शेरशाह ने ग्राण्ड-ट्रंक रोड (बंगाल के सोनारगाँव से पेशावर तक) का निर्माण करवाया।
- शेरशाह ने चाँदी का रुपया (180 ग्रेन) एवं तांबे का दाम (380 ग्रेन) चलाया। जिस पर शेरशाह का नाम और पद अरबी एवं नागरी लिपि में अंकित होता था।
- शेरशाह के काल में ही जायसी ने पद्मावत की रचना की।
- शेरशाह ने कन्नौज नगर को बरबाद करके शेरसूर नामक नगर बसाया।

**मुगल कालीन उच्च अधिकारी**

| क्र.म. | विभाग | उच्च अधिकारी |
|---|---|---|
| 1. | दीवान-ए-इंशा | सुल्तान के आदेश को लिखने, डाकसंबंधी कार्य |
| 2. | दीवान-ए-वजारत | लगान, अर्थव्यवस्था, राज्य की आय-व्यय, मंत्रियों के कार्यों की देख-रेख आदि |
| 3. | दीवान-ए-कजा | न्याय विभाग (काजी-उल-कुजात) |
| 4. | दीवान-ए-बरीद | गुप्तचर विभाग बरीद-ए-मुमालिक 1/9 अधीन |
| 5. | दीवान-ए-आरिज | सेना की भर्ती, रसद, शिक्षा, संगठन की देख-रेख |
| 6. | दीवान-ए-रिसालत | विदेश विभाग |

- शेरशाह ने दिल्ली में दीनपनाह के ध्वंसावशेष पर पुराने किले का निर्माण करवाया, जिसके अन्दर किला-ए-कुहना नामक मस्जिद बनवाया।
- 1541 ई. में शेरशाह ने पाटलिपुत्र को पटना नाम से पुनः स्थापित किया।
- शेरशाह ने दिल्ली में एक दान के लंगर की स्थापना की।

## अकबर ( 1556-1605 )

- अकबर महान का जन्म 15 अक्टूबर 1542 को (हमीदा बानू बेगम से) अमरकोट के राणा वीर साल के महल में हुआ।
- हुमायूँ दिल्ली पर अधिकार कर लेने के बाद अकबर को लाहौर का सूबेदार नियुक्त किया और तुर्क सेनापति बैरम खाँ को उसका संरक्षक नियुक्त किया।
- अकबर का राज्याभिषेक 14 फरवरी 1556 को कलानौर (पंजाब) में बैरम खाँ ने करवाया और वह जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर बादशाह गाजी की उपाधि से राजसिंहासन पर बैठा।
- अकबर ने बैरम खाँ को वकील वजीर नियुक्त कर खान-ए-खान की उपाधि प्रदान की।
- बैरम खाँ 1556 से 1560 तक अकबर का संरक्षक रहा।
- मक्का की तीर्थ यात्रा के दौरान पाटन में मुबारक खाँ ने बैरम खाँ की हत्या कर दी।

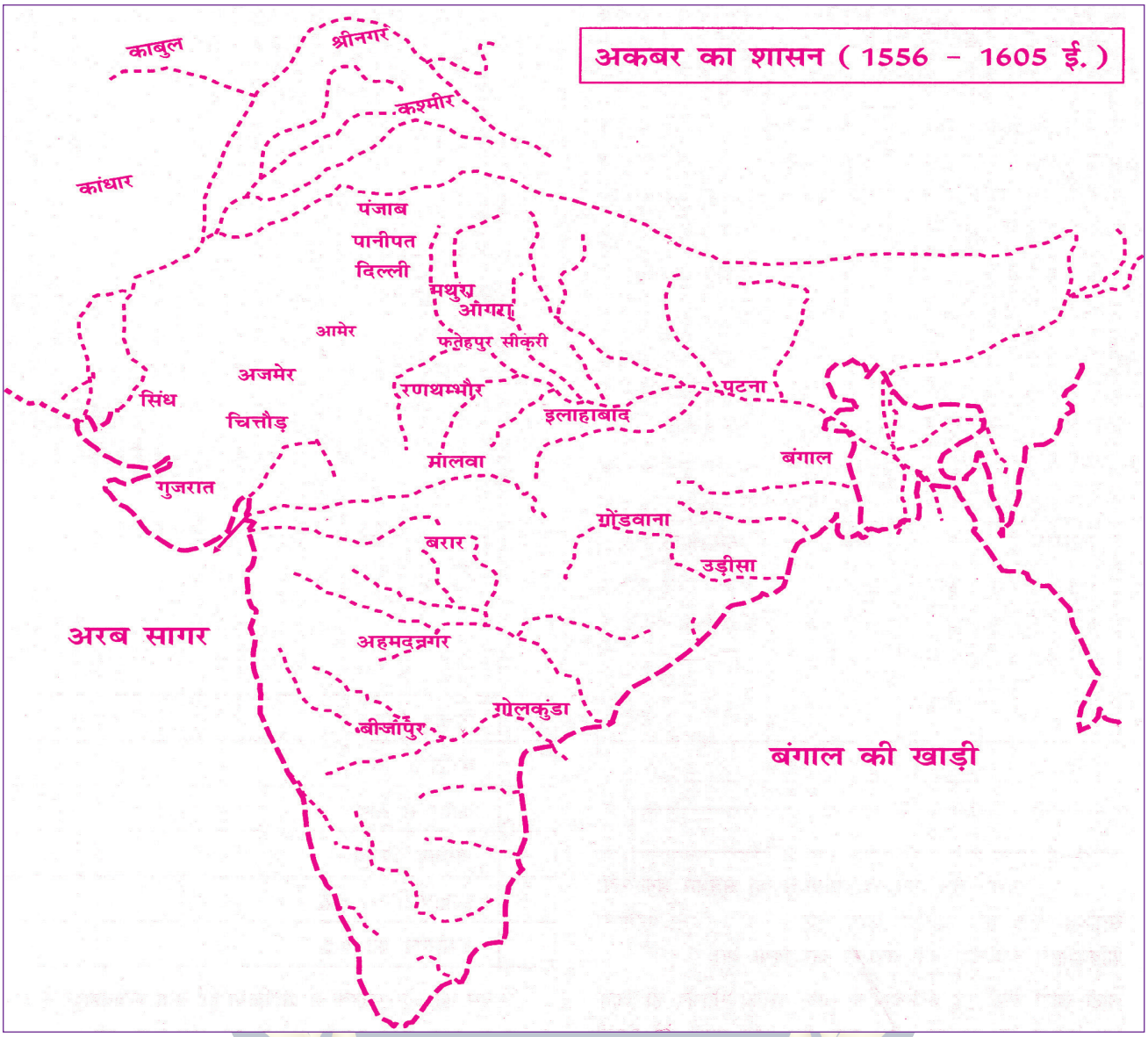


- पानीपत के द्वितीय युद्ध (5 नवम्बर 1556) में अकबर ने हेमू को पराजित किया।
- हेमू सूर शासक आदिल शाह का प्रधानमंत्री था। आदिल शाह ने हेमू को विक्रमादित्य की उपाधि प्रदान की। ऐसी उपाधि धारण करने वाला वह भारत का 14वाँ शासक था।
- अकबर 1562 ई. में हरम-दल से मुक्त हुआ और 1562 में दास-प्रथा, 1563 ई. में तीर्थ यात्राकर तथा 1564 ई. में जजिया कर को समाप्त कर दिया।

| अकबर के समकालीन शासक | | | |
|---|---|---|---|
| | शासक | देश | कार्यकाल |
| 1. | महारानी एलिजाबेथ | इंग्लैंड | 1558-1603 ई. |
| 2. | सम्राट हेनरी-IV | फ्रांस | 1553-1610 ई. |
| 3. | शाह अब्बास | ईरान | 1588-1629 ई. |
| 4. | जारईवान बेसिल येविच | रूस | 1530-1584 ई. |
| नोट: *उपनाम: ईवानदि टेरिबल | | | |

- अकबर ने सबसे पहला आक्रमण 1561 ई. में मालवा के शासक बाजबहादुर के ऊपर किया।
- अकबर ने आमेर के शासक भारमल की पुत्री हरखा बाई से विवाह किया।
- भारमल प्रथम ऐसा राजपूत शासक था जिसने स्वेच्छा से अकबर की अधीनता स्वीकार की।
- हल्दीघाटी के युद्ध (18 जून 1576 ई.) में अकबर ने मेंवाड़ के शासक महाराणा प्रताप को पराजित किया। इस युद्ध में मुगल सेना का नेतृत्व मानसिंह एवं आसफ खाँ ने किया था।
- महाराणा प्रताप पराजित होने के बाद छावन्द को अपनी राजधानी बनाया और गुरिल्ला युद्ध शुरु किया।
- अकबर गुजरात विजय (1572 ई.) के दौरान सर्वप्रथम समुद्र देखा और पुर्तगालियों से मिला।
- स्मिथ ने अकबर के गुजरात अभियान को संसार के इतिहास का सर्वाधिक द्रुतगामी आक्रमण कहा।
- अकबर ने गुजरात को जीतने के बाद राजा टोडरमल को लगान व्यवस्था का उत्तरदायित्व सौंपा।
- अकबर की राजपूत नीति दमन और समझौते की नीति पर आधारित थी।

| अकबर की विजय | | |
|---|---|---|
| 1. | गोण्डवाना विजय | 1564 ई. |
| 2. | चित्तौड़ विजय | 1568 ई. |
| 3. | कालिंजर विजय | 1570 ई. |
| 4. | आमेर से संधि | 1562 ई. |
| 5. | मारवाड़ विजय | 1570 ई. |
| 6. | हल्दीघाटी का युद्ध | 1576 ई. |
| 7. | असीरगढ़ का युद्ध | 1601 ई. |

- अकबर की धार्मिक नीति का मूल उद्देश्य सार्वभौमिक सहिष्णुता (सुलह-ए-कुल) थी।
- अकबर ने 1571 ई. में फतेहपुर सीकरी की स्थापना की एवं राजधानी को आगरा से फतेहपुर स्थानान्तरित किया।
- 1575 ई. में फतेहपुर सीकरी में इबादत खाने की स्थापना करवायी, जिसका उद्देश्य था परस्पर धार्मिक विषयों पर वाद-विवाद। जिसमें ईसाई, जरथुस्ट्रवादी, हिन्दू, जैन, बौद्ध, सूफी, फारसी आदि भाग लिए।
- 1579 में अकबर ने मजहर की घोषणा की और सुल्ताने आदिल की उपाधि धारण की।
- 1582 में अकबर ने दीन-ए-इलाही (सभी धर्मों का सार संग्रह) की स्थापना की।
- दीन-ए-इलाही का प्रधान पुरोहित अबुल फजल था।
- हिन्दुओं में केवल महेसदास (बीरबल) ने ही इसे स्वीकार किया था।
- सूफी मत में अपनी आस्था जताते हुए अकबर ने चिश्ती सम्प्रदाय को आश्रय दिया। वह शेख सलीम चिश्ती का परम भक्त था। उसी के नाम पर अपने बेटे का नाम सलीम रखा।
- अकबर ने आगरा एवं लाहौर में ईसाइयों को गिरिजाघर बनाने की अनुमति प्रदान की।
- अकबर ने जैनधर्म के जैनाचार्य हरविजय सूरि को जगत गुरु की उपाधि प्रदान की।
- 1583 में अकबर ने एक नया कैलेण्डर इलाही संवत जारी किया।
- अकबर के पुत्र सलीम (जहाँगीर) ने विद्रोह कर दिया और उसके निर्देश पर ओरछा के बुन्देल सरदार बीर सिंह देव ने अबुल फजल की हत्या कर दी।

| क्र.म. | शासक | वजीर और वकील |
|---|---|---|
| 1. | बाबर | मेहदी ख्वाजा |
| 2. | हुमायूँ | निजामुद्दीन अहमद व हिन्दूवेग |
| 3. | अकबर | बैरम खाँ (सर्वाधिक शक्तिशाली) |
| 4. | जहाँगीर | यह पद रिक्त था |
| 5. | शाहजहाँ | यह पद समाप्त हो गया। |

- 25 अक्टूबर 1605 को अतिसार रोग के कारण अकबर की मृत्यु हो गयी। अकबर को बौद्ध प्रभाव से प्रभावित सिकन्दरा के मकबरे में दफनाया गया।
- अकबर ने वेश्याओं को रहने के लिए शहर से बाहर स्थान दिया तथा उसे शैतानपुरी का नाम दिया।

| अकबर के नवरत्न | |
|---|---|
| बीरबल | नवरत्नों में सबसे बुद्धिमान बीरबल को ही माना जाता था। इनका जन्म 1528 ई. में काल्पी के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके बचपन का नाम महेशदास था। |
| अबुल फजल | ये सूफी शेख मुबारक के पुत्र थे जिनका जन्म 1550 ई. में हुआ था। अकबरनामा व आइने अकबरी जैसे ग्रंथों की रचना करके वे प्रसिद्ध हो गये। |
| तानसेन | मिर्जा तानसेन का जन्म ग्वालियर में हुआ था ये संगीत कला में अत्यधिक निपुण थे। तानसेन को संगीत सम्राट भी कहा जाता है। अकबर ने इन्हें कण्ठाभरणवाणी विलास की उपाधि से सम्मनित किया। |
| अब्दुर्रहीम खान-ए-खाना | ये बैरम खाँ के पुत्र थे। इन्होंने तुर्की में लिखे बाबरनामा का फारसी में अनुवाद किया था। इन्हें खानखाना की उपाधि से सम्मानित किया। |
| मानसिंह | ये आमेर के राजा भारमल के पौत्र तथा भगवानदास के पुत्र थे। इन्होंने अकबर के साम्राज्य विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनकी मृत्यु 1611 ई. में हुई थी। |
| राजा टोडरमल | इनका जन्म अवध के जिला सीतापुर के लहरपुर तहसील में हुआ था। इनकी प्रसिद्धि का मुख्य कारण इनके द्वारा किये गये भूमि सुधार थे। दीवान-ए-अशरफ के पद पर रहकर इन्होंने भूमि सुधार की सफल योजना चलायी। |
| फैजी | ये अबुल फजल के बड़े भाई थे। इन्होंने महाभारत व श्री मद्भगवत गीता का फारसी अनुवाद व अकबरनामा नामक ग्रंथ की भी रचना इन्होंने की थी। |
| हकीम हमाम | ये अकबर के विश्वासपात्र मित्र थे। अकबर ने प्रसन्न होकर इन्हें अपने नवरत्नों में शामिल कर लिया था। |
| मुल्ला-दो प्याजा | अपनी बुद्धिमानी व वाक्पटुता के कारण ये नवरत्नों में शामिल किए गए। इनको खाने में दो प्याजा व्यंजन अत्यधिक पसन्द होने के कारण इनका नाम अकबर ने मुल्ला-दो प्याजा कर दिया। |

- अकबर के समय में भारत में निर्मित सबसे बड़ा पुल जौनपुर में था।
- अकबर के दरबार के नौ रत्न- बीरबल, अबुल फजल, टोडरमल, भगवानदास, तानसेन, मानसिंह, अब्दुर्रहीम खानखाना, मुल्ला दो प्याजा और हकीम हुक्काम थे।
- बीरबल (कविराज एवं राजा की उपाधि) की हत्या युसुफजाइयों के विद्रोह को दबाने के दौरान हुई।
- अबुल फजल और फैजी अकबर के दरबार में राजकवि थे।
- भगवानदास को अमीर-उल-उमरा की उपाधि दी गई। वह कुछ दिन लाहौर में सूबेदार रहा।

| अकबर के इबादतखाने के धर्माचार्य | | |
|---|---|---|
| क्र.स. | धर्म | धर्माचार्य |
| 1. | हिंदू | देवी, पुरूषोत्तम |
| 2. | जैन | हरिविजय सूरि, जिनचन्द्रसूरि |
| 3. | पारसी | दस्तूर मेहरजी राणा |
| 4. | ईसाई | एकाबीवा, मोंसेरात |

- तानसेन- (रामतनु पाण्डेय) को अकबर ने कण्ठाभरणवाणीविलास की उपाधि प्रदान की। उसने ध्रुपद गायन शैली का विकास किया। उसकी मुख्य कृतियाँ हैं- मियाँ की टोडी, मियाँ की मल्हार, मियाँ की सारंग, दरबारी कन्हड़ा। इसने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया।
- अब्दुर्रहीम खानखाना सलीम का गुरु था।

**अकबर द्वारा जीते गए प्रदेश**

| प्रदेश | शासक | वर्ष | मुगल सेनापति |
|---|---|---|---|
| मालवा | बाजबहादुर (संगीतज्ञ) | 1561 | आधम खाँ, पीरमुहम्मद |
| चुनार | अफगानों का शासन | 1562 | अब्दुल्ला खाँ |
| गोंडवाना | वीरनारायण एवं दुर्गावती | 1564 | आसफ खाँ |
| आमेर | भारमल (प्रथम राजपूत) | 1562 | स्वेच्छा से स्वीकार किया |
| मेड़ता | जयमल | 1562 | सरफुद्दीन |
| मेंवाड़ | राणा प्रताप | 1576 | मानसिंह एवं आसफ खाँ |
| रणथम्भौर | सुरजनहारा | 1569 | भगवान दास एवं अकबर |
| कालिंजर | रामचन्द्र | 1569 | मजनू खाँ काकशाह |
| गुजरात | मुजफ्फर खाँ-III | 1572 | खाने आजम सम्राट् अकबर |
| बिहार एवं बंगाल | दाऊद खाँ | 1574 | मुनीम खाँ खानखाना |
| काबुल | हकीम मिर्जा | 1581 | मानसिंह एवं अकबर |
| कश्मीर | युसुफ याकूब खाँ | 1586 | भगवान दास एवं कासिम खाँ |
| सिन्ध | जानीबेग | 1591 | अब्दुर्रहीम खानखाना |
| उड़ीसा | निसार खाँ | 1590 | मान सिंह |
| बलूचिस्तान | पन्नी अफगान | 1595 | मीर मासूम |
| कन्धार | मुजफ्फर हुसैन | 1595 | शाहबेग |
| खानदेश | अली खाँ | 1591 | स्वेच्छा से अधीनता स्वीकारी |
| अहमदनगर | चाँद बीबी | 1600 | |
| असीरगढ़ | मीरन बहादुर | 1601 | अकबर (अकबर का अंतिम अभियान) |

## जहाँगीर (1605-1627 ई.)

- जहाँगीर का जन्म फतेहपुर सीकरी में स्थित शेख सलीम चिश्ती की कुटिया में भारमल की बेटी मरियम उज्जमानी के गर्भ से 30 अगस्त 1569 को हुआ।
- 1585 में अकबर ने जहाँगीर को बारह हजार का मनसबदार बनाया।
- 1585 में जहाँगीर ने आमेर के राजा भगवान दास की पुत्री मान बाई से विवाह किया और उसे शाह बेगम की उपाधि प्रदान की।
- जहाँगीर ने मोटा राजा उदय सिंह की पुत्री जगत गोसाई (जोधाबाई) से भी विवाह किया।
- अकबर की मृत्यु के आठवें दिन 3 नवम्बर 1605 को सलीम का राज्याभिषेक नूरुद्दीन मुहम्मद जहाँगीर बादशाह गाजी की उपाधि से आगरा में हुआ।
- जहाँगीर ने न्याय की जंजीर के नाम से प्रसिद्ध सोने की जंजीर को आगरा किले के शाहबुर्ज एवं यमुना तट पर स्थित पत्थर के खम्भे में लगवाया।
- लोक कल्याण के कार्यों से संबंधित 12 आदेशों की घोषणा जहाँगीर ने करवायी।
- 1606 ई. में जहाँगीर के पुत्र खुसरो ने विद्रोह कर दिया। जहाँगीर ने खुसरो को अंधा करवा दिया। अन्ततः 1621 ई. में शाहजहाँ ने खुसरो की हत्या करवा दी।
- गुरु अर्जुनदेव ने तरनतारन में खुसरो को शरण दी। जहाँगीर ने उनपर दो लाख रुपए का जुर्माना लगाया और जुर्माना की राशि देने से इंकार करने पर उन्हें फाँसी की सजा दी गई।
- 1615 ई. में अपनी प्रेमिका अनारकली की याद में लाहौर में एक मकबरा बनवाया।
- जहाँगीर ने शेर अफगान की विधवा मेहरून्निसा को नवरोज त्योहार के अवसर पर देखा और उसके सौंदर्य पर मोहित हो गया। जहाँगीर ने मेहरून्निसा से शादी कर ली और उसे नूर-ए-महल एवं नूर-ए-जहाँ की उपाधि दी।
- नूरजहाँ के पिता गयास बेग को एतमादुद्दौला की उपाधि मिली तथा वजीर का पद मिला।
- नूरजहाँ के भाई आसफ खाँ को खानसामा का पद मिला।
- नूरजहाँ जहाँगीर के साथ शिकार पर जाती थी तथा उसके साथ झरोखा-दर्शन में भी उपस्थित होती थी। उसका राजनीति में भी काफी हस्तक्षेप था।
- नूरजहाँ का नाम जहाँगीर के साथ सिक्कों तथा आदेश-पत्रों पर भी अंकित किया जाने लगा था।
- नूरजहाँ की माँ अस्मत बेगम ने गुलाब से इत्र निकालने की विधि को खोजा था।
- नूरजहाँ गुट के सदस्य-एतमादुद्दौला, आसफ खाँ, खुर्रम और नूरजहाँ थे।
- महावत खाँ का विद्रोह 1626 ई. में जहाँगीर के शासनकाल की एक महत्वपूर्ण घटना थी। महावत खाँ ने जहाँगीर को बंदी बना लिया था। नूरजहाँ की बुद्धिमानी के कारण महावत खाँ की योजना असफल हो गयी।
- जहाँगीर के समय में दक्षिण विजय में महत्वपूर्ण रूकावट अहमदनगर का योग्य एवं पराक्रमी वजीर मलिक अम्बर था। मलिक अम्बर ने टोडरमल की लगान व्यवस्था से प्रेरणा लेकर अहमदनगर में भूमि सुधार किया तथा सैनिक सुधार के अन्तर्गत सेना में मराठों की भर्ती कर गुरिल्ला युद्ध पद्धति का सफल संचालन किया।
- 1617 ई. में खुर्रम तथा मलिक अम्बर के बीच सन्धि हो गयी जिसके तहत अहमदनगर के दुर्ग पर मुगलों का कब्जा हो गया। खुर्रम की इस सफलता से खुश होकर जहाँगीर ने उसे शाहजहाँ की उपाधि प्रदान की।
- नवम्बर 1627 ई. को भीमवार में जहाँगीर की मृत्यु हो गयी। उसे शाहदरा (लाहौर) में रावी नदी के किनारे दफनाया गया।
- जहाँगीर के पाँच पुत्र थे-खुसरो, परवेज, खुर्रम, शहरयार और जहाँदार।

- जहाँगीर के दरबार में विलियम हाकिंस, विलियम फिंच, सर थॉमस रो एवं एडवर्ड टैरी जैसे यूरोपीय यात्री आये थे। जहाँगीर ने हाकिंस को 400 का मनसब दिया।
- जहाँगीर ने तुजुक-ए-जहाँगीरी नामक आत्मकथा लिखी, जिसके अंतिम भाग को पूरा करने का श्रेय मौतविंद खाँ को है।

## शाहजहाँ ( 1627-1658 ई. )

- शाहजहाँ का जन्म लाहौर में 5 जनवरी 1592 ई. को जोधाबाई से हुआ था।
- शाहजहाँ का विवाह 1612 ई. में आसफ खाँ की पुत्री अर्जुमन्द बानू बेगम से हुआ था, जो इतिहास में मुमताज महल के नाम से विख्यात हुई। शाहजहाँ ने उसे मलिका-ए-जमानी की उपाधि प्रदान की।
- द्वार बख्श (बलि का बकरा) को समाप्त कर शाहजहाँ ने 24 फरवरी 1628 को आगरे में अबुल मुजफ्फर शहाबुद्दीन मुहम्मद साहिब किरन-ए-सानी की उपाधि से सिंहासन पर बैठा।
- शाहजहाँ ने आसफ खाँ को वजीर एवं महावत खाँ को खान-खाना की उपाधि प्रदान की।
- नूरजहाँ को 2 लाख की वार्षिक पेंशन पर लाहौर भेज दिया गया, जहाँ 1645 ई. में उसकी मृत्यु हो गई।
- पुर्तगालियों के प्रभाव को समाप्त करने के उद्देश्य से शाहजहाँ ने 1632 में उनके व्यापारिक केन्द्र हुगली पर अधिकार कर लिया एवं आगरे का गिरजाघर तुड़वा दिया।
- शाहजहाँ के शासनकाल में सिख पंथ के छठे गुरु हरगोविन्द से मुगलों का संघर्ष हुआ, जिसमें सिक्खों की हार हुई।
- पीटर मुण्डी शाहजहाँ काल में दुर्भिक्ष का उल्लेख करता है।
- शाहजहाँ के समय में कन्धार अन्तिम रूप से मुगलों के अधिकार से छिन गया।
- शाहजहाँ ने सिजदा एवं पैबोस की प्रथा समाप्त कर दी और चहार-तस्लीम प्रथा शुरू की।
- शाहजहाँ ने इलाही संवत के स्थान पर हिजरी संवत चलाया।
- गंगा लहरी एवं रस गंगाधर के लेखक पण्डित जगन्नाथ उसके राजदरबार में थे। इसके अतिरिक्त चिन्तामणि, कवीन्द्राचार्य और सुन्दरदास आदि इनके समकालीन थे।
- शाहजहाँ ने दाराशिकोह को शाहबुलन्द इकबाल की उपाधि प्रदान की।
- दाराशिकोह ने अपनी देखरेख में संस्कृत ग्रन्थ भगवत गीता एवं योगवशिष्ठ का फारसी में अनुवाद करवाया।
- दाराशिकोह ने मज्म-उल-बहरीन (दो समुद्रों का संगम) की रचना की।
- दारा ने बावन उपनिषदों का सिर्र-ए-अकबर नाम से फारसी में अनुवाद कराया।
- शाहजहाँ के रत्नजटित सिंहासन तख्तेताऊस में विश्व का सबसे महंगा हीरा कोहिनूर लगा था, जो शाहजहाँ को मीरजुमला से प्राप्त हुआ था।
- शाहजहाँ पहला मुगल बादशाह था जिसके जीवित रहते हुए उत्तराधिकार का युद्ध हुआ।

**उत्तराधिकार का युद्ध**

| स्थान | समय | शामिल पक्ष | पराजित पक्ष |
|---|---|---|---|
| बहादुरगढ़ | जनवरी, 1658 | शाही सेना और शाहशुजा के मध्य | शाहशुजा |
| धरमत | अप्रैल, 1658 | शाही सेना, जसवंत सिंह, औरंगजेब व मुराद की संयुक्त सेना के मध्य | जसवंत सिंह |
| सामूगढ़ | मई, 1658 | औरंगजेब व दारा के मध्य | दारा |
| खजुआ | जनवरी 1659 | औरंगजेब व शाहशुजा के मध्य | शुजा |
| देवराई | अप्रैल 1659 | औरंगजेब व दारा के मध्य | दारा |

- इस उत्तराधिकार के युद्ध में अन्तिम रूप से औरंगजेब सफल रहा। दारा को इस्लाम धर्म की अवहेलना करने के अपराध में 30 अगस्त 1659 को कत्ल कर दिया गया।
- वास्तुकला की दृष्टि से शाहजहाँ का शासनकाल मध्यकालीन इतिहास का स्वर्णकाल माना जाता है।
- औरंगजेब ने सितम्बर 1658 में अपने पिता शाहजहाँ को आगरे के किले के नगीना मस्जिद में कैद कर लिया, जहाँ 31 जनवरी 1666 को 74 वर्ष की अवस्था में उसकी मृत्यु हो गयी।

## औरंगजेब ( 1658-1707 ई. )

- 18 मई 1637 ई. को औरंगजेब का विवाह फारस राजघराने की राजकुमारी दिलरास बानो बेगम (राबिया बीबी) से हुआ था।
- देवराई के युद्ध में सफल होने के बाद 15 मई 1659 ई. को औरंगजेब ने दिल्ली में प्रवेश किया और शाहजहाँ के शानदार महल में 5 जून 1659 को दूसरी बार राज्याभिषेक करवाया।
- सामूगढ़ की विजय के उपरान्त एवं आगरा पर अधिकार कर लेने के पश्चात् औरंगजेब ने 21 जुलाई 1658 ई. को आगरा में अपना प्रथम राज्याभिषेक अबुल मुजफ्फर-मुहउद्दीन मुजफ्फर औरंगजेब बहादुर आलमगीर की उपाधि से करवाया।
- औरंगजेब ने 1686 ई. में बीजापुर एवं 1697 में गोलकुण्डा को मुगल साम्राज्य में मिला लिया।
- मदन्ना एवं अकन्ना नामक ब्राह्मणों का संबंध गोलकुण्डा के शासक अबुल हसन से था।
- मुगल सेनापति जयसिंह एवं शिवाजी के बीच 22 जून 1665 को पुरन्दर की संधि हुई।
- पुरन्दर की संधि की शर्तों के तहत शम्भाजी को मुगल दरबार में पंचहजारी मनसब देना, उचित जागीर देना तथा शिवाजी का मुगल दरबार में उपस्थित होना था।
- 22 मई 1666 ई. को शिवाजी आगरा के किले में दीवाने आम में उपस्थित हुआ। यहाँ शिवाजी को कैद कर जयपुर भवन में रखा गया।
- नेपोलियन प्रथम कहा करता था कि जैसे स्पेन के फोड़े ने मेरा नाश किया वैसे ही दक्षिण के फोड़े ने औरंगजेब का नाश किया।
- औरंगजेब के गुरु थे-मीर मुहम्मद हकीम।

- औरंगजेब ने 1679 ई. में जजिया कर को पुनः लागू किया।
- औरंगजेब का प्रमुख लक्ष्य इस देश को दार-उल-हर्ब के स्थान पर दार-उल-इस्लाम बनाना था।
- औरंगजेब के आदेश पर बनारस का विश्वनाथ मंदिर, मथुरा में वीरसिंह बुन्देला द्वारा निर्मित केशवराय मन्दिर तथा गुजरात का सोमनाथ मंदिर तोड़ा गया।
- उसने झरोखा दर्शन (11वें वर्ष) एवं तुलादान प्रथा (12वें वर्ष) समाप्त करवा दिया।
- औरंगजेब ने मुहतसिब (सार्वजनिक सदाचार निरीक्षक या धर्म अधिकारी) नामक एक अधिकारी की नियुक्ति की।
- मारवाड़ और मुगलों के बीच हुए तीस वर्षीय युद्ध (1679-1709) का नायक दुर्गादास था।
- औरंगजेब के पुत्र अकबर ने दुर्गादास के प्रभाव में आकर अपने पिता के खिलाफ विद्रोह कर दिया।
- औरंगजेब के समय 1667 ई. में अफगान विद्रोह हुआ, जिसका उद्देश्य पृथक अफगान राज्य की स्थापना था। इसकी पृष्ठभूमि रोशनाई नामक धार्मिक सम्प्रदाय ने प्रदान की।
- औरंगजेब के समय जाट विद्रोह हुए, जिसका नेतृत्व गोकुला एवं राजाराम ने किया। विद्रोह का मुख्य कारण किसानों एवं भूमि विषयक समस्या थी।
- राजाराम ने अकबर की कब्र खोद दी और उसका भतीजा चुरामन ने भरतपुर राजवंश की नींव रखी।
- 1672 ई. में सतनामी नामक एक धार्मिक सम्प्रदाय ने आर्थिक कारण से विद्रोह किया।
- औरंगजेब ने 1686 ई. में अंग्रेजों को हुगली से बाहर खदेड़ दिया।
- औरंगजेब ने सिक्खों के 9वें गुरु तेगबहादुर को इस्लाम धर्म नहीं स्वीकार करने के कारण प्राणदण्ड की सजा दी।
- सिक्खों के दसवें गुरु गोविन्द सिंह और औरंगजेब के बीच भी युद्ध हुआ। अपने अन्तिम युद्ध में गुरु ने मुगल सेना को परास्त कर दिया।
- औरंगजेब के समय में हिन्दू मनसबदारों की संख्या लगभग 33% थी, जो अन्य मुगल सम्राटों की तुलना में अधिक थी।
- 1708 में गुरु गोविन्द की गुल खाँ नामक अफगान सरदार ने नान्देड़ में हत्या कर दी।

## मुगल प्रशासन

- मुगलों के राजस्व सिद्धान्त का मूल आधार शरिअत (कुरान एवं हदीस का सम्मिलित नाम) था। इसकी स्पष्ट व्याख्या अबुल फजल ने आइने-अकबरी में की है।
- मन्त्रिपरिषद के लिए विजारत शब्द का प्रयोग होता था।
- बाबर और हुमायूँ के समय में वजीर को सैन्य एवं असैन्य दोनों अधिकार प्राप्त थे।
- अकबर ने दीवान-ए-वजीरात-ए-कुल की स्थापना की, जिसका मुख्य कार्य राजस्व एवं वित्तीय मामलों का प्रबन्ध करना था।
- अकबर के काल में चार मंत्रीपद थे- वकील, दीवान अथवा वजीर, मीर बख्शी एवं सद्र।
- अकबर ने वकील के कार्यों को दीवान, मीर बख्शी, सद्र-उस-सद्र एवं मीर समन में विभाजित कर दिया और यह पद केवल सम्मान सूचक रह गया, जो शाहजहाँ तक चलता रहा।
- दीवान वजीर एवं राजस्व का सर्वोच्च अधिकारी होता था। इस पद का सर्वाधिक उपयोग औरंगजेब के समय में असद खाँ (31 वर्ष) ने किया।
- मीर बख्शी सैन्य विभाग का सर्वोच्च अधिकारी होता था। इसका मुख्य कार्य सैनिकों की भर्ती, उसका हुलिया रखना, रसद प्रबन्ध, सेना में अनुशासन रखना तथा सैनिकों के लिए हथियारों तथा हाथी घोड़ों का प्रबंध करना था।
- मीर बख्शी द्वारा सरखत नामक पत्र पर हस्ताक्षर के पश्चात् सेना को हर माह वेतन मिलता था।
- प्रांतों में वाकयानवीस मीर बख्शी को सीधे सूचना देते थे।
- सद्र-उस-सुदूर धार्मिक मामलों में बादशाह का सलाहकार होता था। सद्र दान में दी जाने वाली लगान मुक्त भूमि सयूरगाल या मदद-ए-माश का भी निरीक्षण करता था।
- सद्र जब न्याय विभाग का कार्य देखता था तो उसे काजी कहा जाता था।
- मीर समान सम्राट के घरेलू विभागों का प्रधान होता था।
- मीर आतिश शाही तोपखाने का प्रधान था। इसी के सिफारिश से कोतवाल की नियुक्ति होती थी।
- दीवान-ए-तन वेतन और जागीर से संबंधित मामलों का निपटारा करता था।
- दरोगा-ए-डाक चौकी गुप्तचर विभाग का प्रमुख होता था।
- हरकारा जासूस और संदेशवाहक होता था।
- वाकिया नवीस समाचार लेखक (केन्द्र और राज्यों के बीच) और खुफिया नवीस गुप्त पत्रों का लेखक होते थे।
- मुशर्रिफ राज्य की आय-व्यय का लेखा-जोखा रखता था।
- मुस्तौफी मुशर्रिफ द्वारा तैयार आय-व्यय के लेखा-जोखा की जाँच करता था।
- प्रशासन की दृष्टि से मुगल साम्राज्य को सूबों (प्रान्तों) में, सूबों को सरकारों (जिलों) में, सरकारों को परगनों (महालों) में तथा परगनों को गाँवों में बाँटा गया था।
- शाहजहाँ ने अपने शासनकाल में सरकार एवं परगना के मध्य चकला नामक एक नई इकाई की स्थापना की थी।
- सूबेदार सूबे का सैन्य एवं असैन्य दोनों तरह के कार्यों का संचालन करता था।
- फौजदार जिले का प्रधान सैनिक अधिकारी था।
- आमिल या अमलगुजार जिले का प्रमुख राजस्व अधिकारी होता था।
- शिकदार परगने का प्रमुख अधिकारी होता था। परगने में शान्ति व्यवस्था के साथ अपराधियों को दण्डित करना इसके मुख्य कार्य थे।
- आमिल गाँवों में राजस्व का निर्धारण एवं वसूली करता था।

| मुगलकालीन उच्चाधिकारी | | |
|---|---|---|
| 1. | मुहतसिब | ये प्रजा के नैतिक आचरण को नियंत्रित करता था। साथ ही शरीयत के प्रतिकूल कार्यों को रोकता था। औरंगजेब ने हिंदू मंदिरों व पाठशालाओं को तोड़ने के लिए मुहतसिबों की नियुक्ति की थी। |
| 2. | वाकिया-नवीस | यह समाचार लेखक होता था जो राज्य के सभी समाचारों से केन्द्र को सूचित करता था। |
| 3. | खुफिया-नवीस | यह गुप्त पत्र लेखक होते जो गुप्त रुप से केन्द्र को महत्वपूर्ण सूचनाओं को उपलब्ध कराते थे। |
| 4. | दरोगा-ए-डाक | यह गुप्तचर विभाग का प्रमुख होता था। इसके अतिरिक्त यह पत्र व्यवहार का प्रभारी होता था। |
| 5. | दीवान-ए-तन | यह वेतन और जागीरों से सम्बंधित मामलों का निपटारा करता था। इसे (युद्ध के अवसर पर छोड़कर) सामान्यतया सेना को वेतन बाँटने का अधिकार था। |
| 6. | मीर-आतिश | यह शाही तोपखाने का प्रधान था। यह मंत्री पद नहीं होता था। इसकी सिफारिश पर महत्वपूर्ण नगरों में केन्द्र द्वारा कोतवाल की नियुक्ति होती थी। |
| 7. | मीर-ए-बहर | यह जल सेना का प्रधान होता था। द्य इसका प्रमुख कार्य शाही नौकाओं की देखभाल करना था। |
| 8. | हरकारा | ये जासूस व संदेशवाहक दोनों होते थे। |
| 9. | वितिक्ची | अकबर ने अपने शासनकाल के 19वे वर्ष दरबार की सभी घटनाओं व खबरों को लिखने हेतु इनकी नियुक्ति की थी। |
| 10. | मुशरिफ | यह राज्य की आय व्यय का लेखा -जोखा रखता था। |
| 11. | नाजिर-ए-बयूतात | यह शाही कारखानों का अधीक्षक / होता था। |

- फोतदार परगने का खजाँची था। कारकून आज के क्लर्क के रूप में कार्य करते थे।
- गाँव का मुख्य अधिकारी प्रधान होता था। उसे खूत, मुकद्दम, चौधरी आदि कहा जाता था।
- खालसा भूमि प्रत्यक्ष रूप से बादशाह के नियंत्रण में होती थी।
- जागीर भूमि राज्य के प्रमुख कर्मचारियों को उनकी तनख्वाह के बदले दी जाती थी।
- अकबर ने शेरशाह द्वारा भू-राजस्व हेतु अपनायी जाने वाली पद्धति राई को अपनाया था।
- गुजरात को जीतने के बाद 1573 में अकबर ने पूरे उत्तर-भारत में करोड़ी नाम के अधिकारी की नियुक्ति की जिसे अपने क्षेत्र में एक करोड़ दाम वसूल करना होता था।
- वास्तविक उत्पादन, स्थानीय कीमतें, उत्पादकता आदि के आधार पर अकबर ने 1580 में दहसाला प्रणाली चलाया। इस व्यवस्था को टोडरमल बन्दोबस्त भी कहा जाता है। इसके तहत भूमि को चार भागों में विभाजित किया गया।
- पोलज- जिस पर नियमित रूप से खेती होती थी।
- परती- उर्वरा शक्ति प्राप्त करने के लिए इस भूमि को एक-दो वर्ष के लिए छोड़ दिया जाता था।
- छच्छर या चाचर- इस पर तीन-चार वर्ष के अंतराल पर खेती होती थी।
- बंजर- निकृष्ट भूमि- जिस पर पाँच वर्ष तक खेती नहीं हुई है।
- अकबर ने 1587 में भूमि की पैमाइश हेतु सिकन्दरी गज के स्थान पर इलाही गज का प्रयोग प्रारम्भ किया। यह गज 41 अंगुल या 33 इंच के बराबर होता था।
- अकबर के शासनकाल में 1570-71 में टोडरमल ने खालसा भूमि पर भू-राजस्व के लिए जब्ती-प्रणाली प्रारम्भ किया। यह प्रणाली बिहार-लाहौर, इलाहाबाद, मुल्तान, मालवा, गुजरात में प्रचलित थी।
- लगान निर्धारण की बटाई या गल्ला बख्शी मुगल काल की सर्वाधिक प्राचीन प्रचलित प्रणाली थी।
- शाहजहाँ ने लगान के लिए ठेकेदारी प्रथा को आरम्भ किया।
- औरंगजेब ने अपने शासनकाल में नस्क प्रणाली को अपनाया।
- मुगलकाल में कृषक तीन वर्गों में विभाजित थे।
- खुदकाश्त- ये किसान उसी गाँव की भूमि पर खेती करते थे, जहाँ के वे निवासी थे।
- पाहीकाश्त- ये दूसरे गाँव जाकर कृषि कार्य करते थे।
- मुजारियन- ये कम भूमि होने के कारण खुदकाश्त से पट्टे पर भूमि लेते थे।
- स्वर्ण का सर्वाधिक प्रचलित सिक्का इलाही एवं सबसे बड़ा सिक्का शंसब था।

| मुगल कालीन भू-राजस्व प्रणाली |
|---|
| खेत बँटाई- खेत में ही अनाज का बँटवारा<br>लंक बँटाई- अनाज को खलिहान से लाकर बगैर भूसा निकाले बँटाई<br>रास बँटाई- अनाज से भूसा निकालकर बँटाई |

- शाहजहाँ ने दाम और रुपये के मध्य एक नया आना सिक्का चलाया।
- मुगल काल में सर्वाधिक रुपये की ढलाई औरंगजेब के शासनकाल में हुई।
- चाँदी का रुपया मुगलकालीन अर्थव्यवस्था का आधार था। यह 175.5 ग्रेन का होता था।
- दैनिक लेन-देन के लिए ताँबे के दाम का प्रचलन था। एक रुपये में 40 दाम होते थे।
- टकसाल का अधिकारी चौधरी कहलाता था। केन्द्रीय टकसाल से कोई भी व्यक्ति 5 या 6% शुल्क देकर सिक्का ढलवा सकता था।
- लाल-पत्थर- फतेहपुर सीकरी एवं राजस्थान से, पीला-पत्थर-थट्टा से, संगमरमर- जयपुर एवं जोधपुर से, हीरा- गोलकुण्डा, फुलदार कालीन- मुल्तान, ऊनी कालीन-कश्मीर में मिलते थे।
- जहाँगीर ने अमृतसर में ऊनी वस्त्र के उद्योग की स्थापना की थी।
- अकबर ने मनसबदारी व्यवस्था आरम्भ की जो मंगोल नेता चंगेज खाँ की दशमलव प्रणाली पर आधारित थी।
- जात से व्यक्ति के वेतन व प्रतिष्ठा का ज्ञान होता था एवं सवार से घुड़सवार दस्तों की संख्या का ज्ञान होता था। जात से सवार अधिक नहीं हो सकता था।
- 10 से 500 तक मनसब प्राप्त करने वाला मनसबदार, 500 से 2500 तक मनसब प्राप्त करने वाला उमरा और 2500 से ऊपर का मनसब प्राप्त करने वाला व्यक्ति अमीर-ए-उम्दा (आजम) कहलाते थे।
- जहाँगीर ने सवार पद में दु-अस्पा एवं सिंह-अस्पा की व्यवस्था की।

### हुमायूँ का मकबरा

- मकबरे का निर्माण 1565 ई. में हुमायूँ की प्रिय पत्नी हमीदाबानो बेगम ने प्रारम्भ करवाया।
- दोहरी गुंबद वाला यह भारत का पहला मकबरा है।
- चारबाग पद्धति का प्रयोग पहली बार हुमायूँ के मकबरे में हुआ। वैसे भारत में पहला बाग युक्त मकबरा सिकंदर लोदी का मकबरा था।
- इस मकबरे को ताजमहल का पूर्वगामी माना जाता है।
- हुमायूँ के मकबरे में दफनाये गये मुगल घरानों के लोगों में हाजी बेगम, हमीदाबानो बेगम, हुमायूँ की छोटी बेगम, दारा शिकोह, जहांदारशाह फरूखसियर, रफीउद्दरजात और आलमगीर द्वितीय प्रमुख हैं।
- दिल्ली के अतिंम मुगल बादशाह बहादुरशाह जफर और उसके तीन शहजादों को अंग्रेज लेफ्टीनेंट हडसन ने 1857 ई. में हुमायूँ के मकबरे से गिरफ्तार किया।

- शाहजहाँ ने माहनामा-पद्धति शुरू किया।
- अकबर ने दाग एवं हुलिया लिखने की प्रथा 1574 ई. में शुरू किया।
- अकबर ने अनुवाद विभाग की स्थापना की।
- जहाँगीर को फारसी एवं तुर्की भाषा का अच्छा ज्ञान था।
- मुगलकाल के शासकों ने फारसी को राजभाषा बनाया।
- महाभारत का फारसी भाषा में रज्मनामा नाम से बदायूँनी नकीब खाँ एवं अब्दुल कादिर ने अनुवाद किया।
- रामायण का फारसी में अनुवाद बदायूँनी नकीब खाँ एवं कादिर ने किया।
- अथर्ववेद का अनुवाद फारसी में सरहिन्दी ने किया।
- कालिया दमन का अनुवाद फारसी में अबुल फजल ने आयगर दनिश नाम से किया।
- लीलावती का फारसी में अनुवाद फैजी ने किया।
- भगवत पुराण का फारसी में अनुवाद टोडरमल ने किया।
- अकबर ने नरहरि को महापात्र की उपाधि प्रदान की।
- अकबर ने दरबार के प्रसिद्ध ग्रंथकर्ता कश्मीर के मुहम्मद हुसैन को जरी कमल की उपाधि प्रदान की।
- उर्दू (रेख्ता) में गेसूदराज द्वारा लिखित पुस्तक मिरातुल अशरीन सर्वाधिक प्राचीन है।
- हुमायूँ का मकबरा 1564 ई. में अकबर की सौतेली माँ हाजी बेगम ने बनवाया।
- मुगल बादशाहों में मुहम्मदशाह प्रथम बादशाह था जिसने उर्दू के विकास के लिए दक्षिण के उर्दू कवि शम्सुद्दीनवली को दरबार में बुलाकर सम्मानित किया।
- 1566 ई. में अकबर ने कासिम खाँ के नेतृत्व में आगरा के किले का निर्माण करवाया।
- अकबर ने सलीम के जन्म के बाद 1571 में शेख सलीम चिश्ती के प्रति आदर प्रकट करने के उद्देश्य से फतेहपुर सीकरी के निर्माण का आदेश दिया।
- फतेहपुर सीकरी में अकबर ने दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, पंचमहल, तुर्की सुल्तान की कोठी, खास महल, जोधाबाई का महल, बीरबल का महल, जामा मस्जिद, बुलन्द दरवाजा, शेख सलीम चिश्ती का मकबरा आदि का निर्माण करवाया।
- जहाँगीर के काल को स्थापत्य कला का विश्राम काल कहा जाता है।
- सिकन्दरा स्थित अकबर के मकबरे को अन्तिम रूप से जहाँगीर ने पूरा करवाया। यह मकबरा पंचमंजिला है तथा बौद्ध प्रभाव से प्रभावित है।
- जहाँगीर का मकबरा नूरजहाँ ने शहादरा में बनवाया था।

### मुगलकालीन स्थापत्य

| इमारतें | स्थान | शासक |
|---|---|---|
| शेरशाह का मकबरा | सासाराम (बिहार) | शेरशाह |
| हुमायूँ का मकबरा | दिल्ली | हाजी वेगम |
| जहाँगीरी महल | फतेहपुर सीकरी | अकबर |
| जहाँगीर महल | आगरा | अकबर |
| अकबरी महल | आगरा | अकबर |
| आगरा का किला | आगरा | अकबर |
| दीवान-ए-आम | फतेहपुर सीकरी | अकबर |
| दीवान-ए-खास | फतेहपुर सीकरी | अकबर |
| पंचमहल (हवामहल) | फतेहपुर सीकरी | अकबर |
| मरियम महल | फतेहपुर सीकरी | अकबर |
| जामा मस्जिद | फतेहपुर सीकरी | अकबर |
| तुर्की सुल्तान का महल | फतेहपुर सीकरी | अकबर |
| बुलन्द दरवाजा | फतेहपुर सीकरी | अकबर |
| अकबर का मकबरा | सिकन्दरा | जहाँगीर |
| ऐतमादुद्दौला का मकबरा | आगरा | नूरजहाँ |
| जहाँगीर का मकबरा | शहादरा (लाहौर) | नूरजहाँ |
| दीवान-ए-खास | आगरा | शाहजहाँ |
| दीवान-ए-आम | आगरा | शाहजहाँ |
| शीश महल | आगरा | शाहजहाँ |
| खास महल | आगरा | शाहजहाँ |
| नगीना मस्जिद | आगरा | शाहजहाँ |
| जामा मस्जिद | आगरा | शाहजहाँ |
| मच्छी भवन | आगरा | शाहजहाँ |
| लाल किला | दिल्ली | शाहजहाँ |
| मोती मस्जिद | आगरा | शाहजहाँ |
| जहाँनाबाद | दिल्ली | शाहजहाँ |
| जामा मस्जिद | दिल्ली | शाहजहाँ |
| दीवान-ए-आम | दिल्ली | शाहजहाँ |
| दीवान-ए-खास | दिल्ली | शाहजहाँ |

| राजकवि | शासक |
|---|---|
| मुल्ला गजाली मशद्री | अकबर |
| तालिब अमूली | जहाँगीर |
| अबू तामिल कलीम | शाहजहाँ |
| कादिसी | शाहजहाँ |

- एतमादुद्दौला का मकबरा नूरजहाँ ने आगरा में बनवाया। सर्वप्रथम इसी इमारत में पित्रादुरा नाम का जड़ाऊ काम किया गया है।
- शाहजहाँ ने आगरे के किले में दीवाने आम एवं दीवाने खास का निर्माण करवाया।
- आगरे की मोती मस्जिद का निर्माण शाहजहाँ ने करवाया।

- आगरा किले में स्थित जामा मस्जिद का निर्माण शाहजहाँ की पुत्री जहाँ आरा बेगम ने करवाया।
- आगरा में यमुना नदी के तट पर स्थित मकबरा ताजमहल का निर्माण शाहजहाँ ने मुमताज महल की याद में करवाया।
- ताजमहल की योजना उस्ताद अहमद लाहौरी ने तैयार की थी। शाहजहाँ ने उसे नादिर-उल-असर की उपाधि प्रदान की थी।
- 1638 ई. में शाहजहाँ अपनी राजधानी को आगरा से दिल्ली लाने के लिए शाहजहाँनाबाद नामक नगर बसाया। इस नगर में लाल किले का निर्माण करवाया।

**मुगलकालीन साहित्य**

| | नाम | भाषा | लेखक का नाम |
|---|---|---|---|
| 1. | रामायण | फारसी | बदायूँनी |
| 2. | भगवद् गीता | फारसी | राजा टोडरमल |
| 3. | योग वशिष्ठ | फारसी | दारा शिकोह |
| 4. | अथर्ववेद | फारसी | सरहिन्दी |
| 5. | पंचतन्त्र (कालीला एवं दिमना) | फारसी | मौलाना शाह मुहम्मद शाहाबादी |
| 6. | लीलावती (गणित की पुस्तक) | फारसी | फैजी |
| 7. | कालिया दमन (अयार-ए-दानिश) | फारसी | अबुल फजल |
| 8. | बावन उपनिषद् (सिर्र-ए-अकबर) | फारसी | दारा शिकोह |
| 9. | अकबरनामा (आईने-अकबरी) | फारसी | अबुल फजल |
| 10. | बाबर नामा | फारसी | अब्दुल रहीम खान-ए-खाना |
| 11. | हुमायूँनामा | फारसी | गुलबदन बेगम |
| 12. | तुजुके-ए-बाबरी | तुर्की | बाबर (स्वयं की आत्मकथा) |
| 13. | तुजुके जहाँगीरी (जहाँगीर की आत्मकथा) | फारसी | जहाँगीर, मौतमिद खाँ, मुहम्मद हादी |
| 14. | मुन्तखब-उल-तवारीख | फारसी | अब्दुल कादिर बदायूँनी |
| 15. | इकबालनामा-ए-जहाँगीरी | फारसी | मौतमिद खाँ बख्शी |
| 16. | मआसिरे- जहाँगीरी | फारसी | ख्वाजा कामगार |
| 17. | तबकाते-अकबरी | फारसी | निजामुद्दीन अहमद |
| 18. | शाहजहानामा | फारसी | इनायत खाँ |
| 19. | नुस्खा-ए-दिलकुशा | फारसी | खफी खाँ |
| 20. | आलमगीरनामा | फारसी | मिर्जा मुहम्मद कासिम |
| 21. | मआसिर-ए-आलमगीरी | फारसी | साकी मुश्तैद खाँ |
| 22. | फतवा-ए-आलमगीरी | फारसी | शेख निजामुद्दीन अहमद |
| 23. | पादशाहनामा | फारसी | मोहम्मद अमीन |

- शाहजहाँ ने लाल किला में दीवाने आम, दीवाने खास और जामा मस्जिद का निर्माण करवाया।
- औरंगजेब ने दिल्ली में मोती मस्जिद एवं लाहौर में बादशाही मस्जिद का निर्माण करवाया।
- औरंगजेब ने अपनी बेगम राबिया दोरानी की स्मृति में औरंगाबाद में एक मकबरे का निर्माण करवाया।
- औरंगजेब को दौलताबाद में स्थित फकीर बुहरानुद्दीन की कब्र के आहते में दफना दिया गया।
- मुगलकालीन चित्रकला का प्रेरणा स्त्रोत समरकन्द एवं हेरात रहा।
- मीर सैय्यद अली एवं ख्वाजा अब्दुस्समद हुमायूँ के साथ फारस से भारत आया।
- हम्जनामा (अकबर) मुगल चित्रशाला की प्रथम महत्वपूर्ण कृति है।
- अकबर के दरबारी चित्रकार- दसवंत, बसावन, केशवलाल, मुकुंद, फारूक कलमक, मिशिकिन, माधो जगन, महेश, खेमकरण, तारा, सांवल, हरिवंश एवं राम।
- दसवंत की कृति रज्मनामा, खानदाने-तैमूरिया एवं तूतीनामा थी। दसवंत ने आत्महत्या कर लिया।
- जहाँगीर के दरबार के चित्रकार-फारुख बेग दौलत, मनोहर, बिसनदास, मंसूर एवं अबुल हसन थे।
- जहाँगीर ने हेरात के आगारजा के नेतृत्व में आगरा में एक चित्रणशाला की स्थापना की।
- जहाँगीर ने उस्ताद मंसूर को नादिर-अल-उस्र एवं अबुल हसन को नादिरुज्जमा की उपाधि प्रदान की।
- शाहजहाँ को दैवी-संरक्षण में अपने चित्र बनवाना सदा प्रिय रहा।
- फकीरुल्लाह ने मान कुतूहल का अनुवाद राग दर्पण नाम से करके औरंगजेब को अर्पित किया।
- अबुल फजल ने 17 चित्रकार, 36 संगीतज्ञ एवं 14 सूफी सिलसिला का वर्णन किया है।

## मराठा साम्राज्य

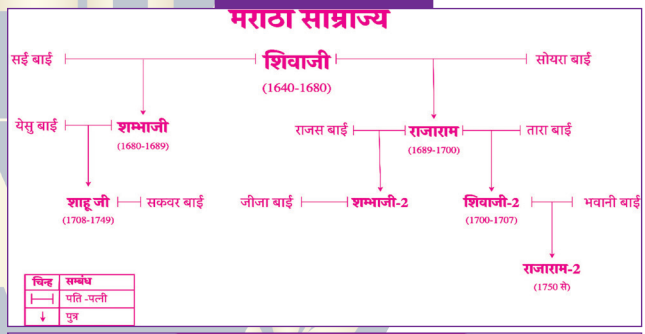


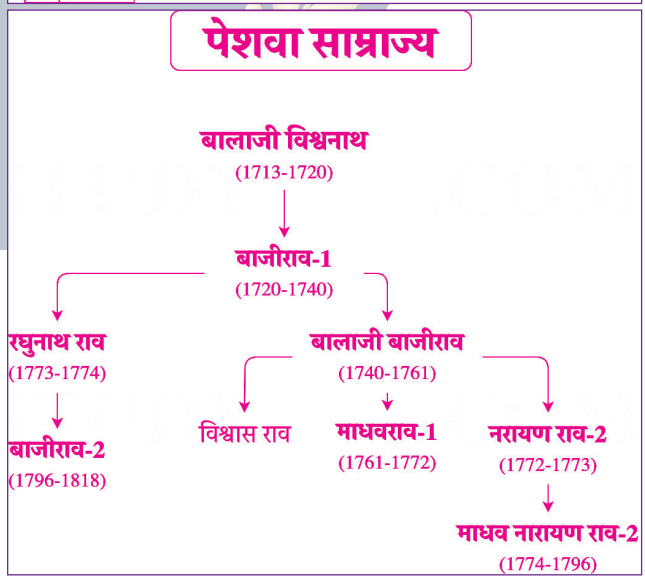


- मराठा साम्राज्य का संस्थापक शिवाजी था। शिवाजी के गुरु दादाजी कोंडदेव थे।
- शिवाजी का जन्म 20 अप्रैल 1627 को शिवनेर (जुन्नार के समीप) में हुआ था।

- शिवाजी के पिता शाहजी भोंसले, माता जीजाबाई, सौतेली माता तुकाबाई मोहिते एवं पत्नी-साइबाई निम्बाल्कर थे।
- आध्यात्मिक क्षेत्र में शिवाजी के आचरण पर गुरु रामदास का काफी प्रभाव था।
- शाहजी ने शिवाजी को पूना की जागीर प्रदान की और स्वयं बीजापुर रियासत में नौकरी कर ली।
- शिवाजी ने मावल प्रदेश को अपने जीवन की प्रारम्भिक कार्यस्थली बनाया।
- अपने सैन्य अभियान के अन्तर्गत 1643 में शिवाजी ने सर्वप्रथम बीजापुर के सिंहगढ़ एवं 1644 में तोरण नामक पहाड़ी किले पर अधिकार किया।
- अप्रैल 1656 में शिवाजी ने रायगढ़ को अपनी राजधानी बनाया।
- 1657 ई. में शिवाजी का पहली बार मुकाबला मुगलों से हुआ, जब वह बीजापुर की तरफ से मुगलों से लड़े।
- बीजापुर के सेनापति अफजल खाँ को शिवाजी ने पराजित एवं क्षमा कर दिया। एक संधि में सुल्तान ने शिवाजी को स्वतंत्र शासक मान लिया। इसके बदले शिवाजी ने उसे पन्हाला एवं चाकन के किले वापस कर दिए।
- शिवाजी ने मुगल सूबेदार शाइस्ता खाँ को हटाया एवं जयसिंह से हार कर 22 जून 1665 को पुरन्दर की संधि की।
- शिवाजी ने सूरत को 1664 एवं 1670 ई. में लूटा।
- औरंगजेब ने शिवाजी को राजा की उपाधि प्रदान की।

| अष्टप्रधान | कार्य |
|---|---|
| पेशवा | राजा का प्रधानमंत्री |
| अमात्य | वित्त एवं राजस्व मंत्री |
| वाकियानविस | गुप्तचर विभाग का अध्यक्ष |
| शुरूनविस | राजकीय पत्र की जाँच-पड़ताल |
| सुमन्त | विदेश मंत्री |
| सर-ए-नौबत | सेनापति |
| पण्डितराव | धार्मिक विभाग का प्रधान |
| न्यायाधीश | न्याय विभाग का प्रधान |

**विशेष:** शिवाजी के अधीन अष्ट प्रधान के सभी पद न ही स्थायी थे और न ही आनुवंशिक थे। वे राजा की इच्छापर्यंत इन पदों पर रहते थे। सभी अधिकारियों का स्थानांतरण भी किया जाता था। इन अधिकारियों के लिए जागीर की व्यवस्था नहीं थी तथा इन्हें नगद वेतन दिया जाता था।

- 14 जून 1674 ई. को शिवाजी ने काशी के प्रसिद्ध विद्वान गंगाभट्ट द्वारा अपना राज्याभिषेक रायगढ़ में करवाया तथा छत्रपति की उपाधि धारण की और छत्रपति, हैंदव धर्मोद्धारक एवं गौब्राह्मण प्रति पालक की उपाधि धारण की।
- शिवाजी ने दरिया सारंग के नेतृत्व में अपने जल बड़े जंजीरा पर आक्रमण के लिए भेजा।
- शिवाजी का प्रशासन अष्टप्रधान के परामर्श से चलता था, किन्तु यह मंत्रिमण्डल नहीं था। इस अष्टप्रधान में पेशवा (प्रधानमंत्री) महत्वपूर्ण होता था।
- शिवाजी ने अपने दुर्गों की सुरक्षा के लिए हवलदार (किले की आंतरिक व्यवस्था), सरेनौबत (किले की सेना का नेतृत्व) एवं सवनिस (किले की अर्थव्यवस्था, पत्र व्यवहार एवं भण्डार) नामक अधिकारियों की नियुक्ति की।
- शिवाजी की सेना पागा सैनिक, सिलहदार एवं पैदल सैनिक में विभक्त है।
- पागा- राजकीय घुड़सवार।
- पायक- पैदल सैनिक।
- शिवाजी की सेना के साथ युद्ध में स्त्रियों का जाना वर्जित था।
- शिवाजी की कर व्यवस्था मलिक अम्बर की कर व्यवस्था पर आधारित थी।
- शिवाजी ने रस्सी द्वारा माप की व्यवस्था के स्थान पर काठी एवं मानक छड़ी के प्रयोग को आरम्भ किया। 20 छड़ी एक बीघा, 120 बीघे का एक चावर।
- 1679 में शिवाजी के आदेश पर अन्नाजी दत्तो ने व्यापक स्तर पर भूसर्वेक्षण करवाया।
- शिवाजी आरम्भ में उपज का 33% फिर आगे चलकर 40% राजस्व कर लेते थे।
- शिवाजी ने जमींदारी एवं जागीरदारी व्यवस्था का विरोध किया और रैय्यतबाड़ी व्यवस्था को अपनाया।
- चौथ- शिवाजी पड़ोसी राज्य पर आक्रमण नहीं करने का वादा कर उससे यह कर वसूलते थे।
- सरदेशमुखी- इस कर को शिवाजी इसलिए वसूल करता था क्योंकि वह महाराष्ट्र का पुश्तैनी सरदेशमुख था।
- शिवाजी के उत्तराधिकारी शम्भाजी ने उज्जैन के हिन्दी एवं संस्कृत के विद्वान कविकलश को अपना सलाहकार नियुक्त किया।
- शम्भाजी ने विद्रोही मुगल राजकुमार अकबर को संरक्षण दिया।
- मुगल सेनापति मुकर्रब खाँ ने संगमेश्वर में छिपे हुए शम्भाजी एवं कविकलश को गिरफ्तार कर लिया और उनकी हत्या के बाद खाल में भूसा भर दिया।
- शम्भा जी का उत्तराधिकारी राजाराम (1689-1700) हुआ। उसने जिंजी में शरण ली।
- राजाराम ने सतारा को अपनी राजधानी बनाया।
- राजाराम की मृत्यु (1700 ई.) के बाद उसकी विधवा पत्नी ताराबाई ने अपने चार वर्षीय पुत्र को शिवाजी द्वितीय के नाम से गद्दी पर बैठाकर स्वयं उसकी संरक्षिका बन गई।
- औरंगजेब की मृत्यु के बाद उसके पुत्र आजमशाह ने मई 1707 को शाहू को कैद से मुक्त कर दिया।
- 1707 के खेड़ा-युद्ध में शाहू ने शिवाजी द्वितीय (ताराबाई) को पराजित किया।
- शाहू ने बालाजी विश्वनाथ को सेनाकते एवं 1713 ई. में पेशवा का पद प्रदान किया।
- बालाजी ने 1719 में सैय्यद बन्धुओं से समझौता किया, जिसे मराठा साम्राज्य का मैग्नाकार्टा कहा जाता है।
- 1720 में बालाजी की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र बाजीराव प्रथम पेशवा बना।

- मार्च 1728 को पालखेड़ा के युद्ध में बाजीराव प्रथम ने निजाम निजामुलमुल्क को पराजित किया और उसके साथ मुंशी शिवगांव की संधि की।
- बाजीराव ने मराठा शक्ति के प्रदर्शन हेतु 29 मार्च 1737 को दिल्ली पर आक्रमण किया।
- बाजीराव प्रथम ने पुर्तगालियों से बसीन और सलसिट प्रदेशों को छीनने में सफलता प्राप्त की।
- बाजीराव प्रथम (लड़ाकू पेशवा) का मस्तानी नाम की मुस्लिम स्त्री से प्रेम था।
- शिवाजी के बाद बाजीराव प्रथम दूसरा ऐसा मराठा सेनापति था जिसने गुरिल्ला युद्ध प्रणाली को अपनाया।
- बाजीराव प्रथम की मृत्यु के बाद 1740 में बालाजी बाजीराव (नाना साहब) पेशवा बना।
- बालाजी के समय में पेशवा का पद पैतृक बन गया।
- 1750 में हुई संगोला संधि के बाद पेशवा के हाथों में सारे अधिकार सुरक्षित हो गये।
- बालाजी बाजीराव ने हैदराबाद के निजाम को पराजित कर 1752 में झलकी की संधि की।
- बालाजी बाजीराव के काल में अहमदशाह अब्दाली के साथ मराठों ने 14 जनवरी 1761 को तृतीय पानीपत का युद्ध लड़ा और पराजित हुए।
- इस युद्ध में मराठा सेनाओं का प्रतिनिधित्व सदाशिव राव भाव ने किया। विश्वासराव नाममात्र का सेनापति था। तोपखाने की टुकड़ी की कमान इब्राहीम खाँ गार्दी के हाथों में थी।
- माधवराव नारायण प्रथम 1761 में पेशवा बना। इसने ईस्ट इंडिया कंपनी की पेंशन पर रह रहे मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय को पुन: 1771 में दिल्ली की गद्दी पर बैठाया। शाहआलम अब मराठों का पेंशनभोगी बन गया।
- 1763 में माधवराव ने निजाम को पराजित किया और उसके साथ राक्षस-भुवन की संधि की।
- पेशवा नारायण राव की हत्या उसके चाचा रघुनाथ राव द्वारा की गई।
- पेशवा माधवराव नारायण द्वितीय की अल्पायु के कारण मराठा राज्य की देख-रेख बाराभाई सभा नाम की 12 सदस्यों की एक परिषद करती थी। इन सदस्यों में नाना फड़नवीस एवं महादजी सिंधिया प्रभावशाली व्यक्ति थे। 1795 में तरुण पेशवा ने आत्महत्या कर ली।
- इसी बीच सरदारों द्वारा कुछ अर्द्धस्वतंत्र राज्यों की स्थापना की गई। जैसे- बड़ौदा के गायकवाड़, इंदौर के होल्कर, नागपुर के भोंसले एवं ग्वालियर के सिंधिया।
- माधवराव नारायण के समय ही पहला आंग्ल मराठा युद्ध (1775-82) हुआ।
- इस युद्ध में अंग्रेजों एवं पेशवा के बीच सूरत की संधि (1775), सालबाई की संधि (1782) हुई।
- इस युद्ध में अंग्रेजों को सालसेट एवं एलीफैन्टा द्वीप प्राप्त हुआ।
- पेशवा बाजीराव द्वितीय अंग्रेजों की सहायता से पेशवा बना।

**मराठों द्वारा की गई प्रमुख संधियाँ**

| | संधि | वर्ष | संधिकर्ता पक्ष |
|---|---|---|---|
| 1. | पुरंदर की संधि | 1665 ई. | जयसिंह व शिवाजी |
| 2. | सगौली की संधि | 1750 ई. | बालाजी बाजीराव व राजाराम |
| 3. | झलकी की संधि | 1752 ई. | बालाजी व हैदराबाद के निजाम |
| 4. | राक्षस भुवन की संधि | 1763 ई. | माधवराव सिंधिया व हैदराबाद के निजाम |
| 5. | कंकापुर की संधि | 1769 ई. | माधवराव सिंधिया व जनकोजी |
| 6. | सूरत की संधि | 1775 ई. | रघुनाथराव व ईस्ट इंडिया कम्पनी |
| 7. | पुरंदर की संधि | 1776 ई. | माधवराव नारायण व अंग्रेज |
| 8. | बड़गाँव की संधि | 1779 ई. | माधवराव नारायण व अंग्रेज |
| 9. | सालबाई की संधि | 1782 ई. | माधवराव नारायण व अंग्रेज |
| 10. | बसीन की संधि | 1802 ई. | बाजीराव द्वितीय व अंग्रेज |
| 11. | देवगाँव की संधि | 1803 ई. | भोंसले (बरार) व अंग्रेज |
| 12. | सुर्जी-अर्जुन गाँव की संधि | 1803 ई. | सिंधिया व अंग्रेज |
| 13. | राजापुर घाट की संधि | 1804 ई. | होल्कर व अंग्रेज |
| 14. | पूना की संधि | 1817 ई. | बाजीराव द्वितीय व अंग्रेज |
| 15. | ग्वालियर की संधि | 1817 ई. | दौलतराव सिंधिया व अंग्रेज |
| 16. | मंदसौर की संधि | 1818 ई. | होल्कर व अंग्रेज |

**आंग्ल- मराठा युद्ध**

| | युद्ध | अवधि | पैशवा | गवर्नर जनरल | सन्धि |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | प्रथम आंग्ल-मराठा युद्ध | 1775-82 ई. | माधवराव | वारेन हेस्टिंग्स | सालबाई की संधि, 1782 ई. |
| 2. | द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध | 1803-06 ई. | बाजीराव-II | जार्ज वालों एवं वेलेजली | राजघाट की संधि 1805 ई. |
| 3. | तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध | 1817-18 ई. | बाजीराव-II | लार्ड हेस्टिंग्स | पूना की संधि, 1817 ई. |

- बाजीराव द्वितीय ने अंग्रेजों से 31 दिसम्बर 1802 को बसीन की संधि की और अंग्रेजों की सहायक संधि को स्वीकार कर लिया।
- इसी के समय द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध (1803-06) एवं तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1817-18) हुआ।
- मराठों के पतन में सर्वाधिक योगदान बाजीराव द्वितीय का था।
- स्मिथ ने शिवाजी के राज्य को डाकू राज्य कहा है।
- पेशवा बाजीराव द्वितीय कोरेगाँव एवं अष्टी के युद्ध में हारने के बाद फरवरी 1818 में अंग्रेजों के सामने समर्पण कर दिया। अंग्रेजों ने पेशवा के पद को समाप्त कर बाजीराव द्वितीय को कानपुर के निकट बिठूर में पेंशन पर भेज दिया, जहाँ 1853 में उनकी मृत्यु हो गयी।
- पूना में पेशवा का सचिवालय (हुजुर दफ्तर) मराठा प्रशासन का केन्द्र था।

## उत्तरकालीन मुगल सम्राट

- 1707 में मुअज्जम बहादुरशाह प्रथम की उपाधि के साथ दिल्ली के तख्त पर बैठा।
- जुल्फिकार खाँ के सहयोग से जहाँदारशाह (1712-13) मुगल बादशाह बना।

- जहाँदारशाह के काल में लालकुमारी नामक वेश्या का प्रशासन में हस्तक्षेप था।
- बहादुरशाह को शाह बेखबर एवं जहाँदारशाह को लम्पट मूर्ख कहा जाता है।
- हुसैन खाँ एवं अब्दुल्ला खाँ, जिन्हें सैय्यदबंधु के नाम से जाना जाता है, मुगलकालीन भारतीय इतिहास में शासक निर्माता के रूप में प्रसिद्ध हैं।
- फर्रुखसियार सैय्यद बंधुओं के सहयोग से बादशाह बना।
- फर्रुखसियार ने मारवाड़ के राजा अजीत सिंह एवं सिक्ख नेता बन्दासिंह को पराजित किया।
- फर्रुखसियार को घृणित कायर कहा जाता है।
- 1719 में सैय्यद बंधुओं ने रौशन अख्तर को मुहम्मदशाह के नाम से गद्दी पर बैठाया।
- मुहम्मदशाह को रंगीला उपनाम से भी जाना जाता है।
- निजामुलमुल्क के नेतृत्व में एक तूरानी सैनिक हैदर बेग ने 9 अक्टूबर 1720 को हुसैन अली खाँ की छूरा भोंक कर हत्या कर दी। अब्दुल हसन की विष देकर हत्या की।
- मुहम्मदशाह के शासनकाल में नादिरशाह ने 13 फरवरी 1739 को दिल्ली पर आक्रमण किया।
- नादिरशाह को ईरान का नेपोलियन कहा जाता है।
- मयूर सिंहासन (तख्ते ताऊस) पर बैठने वाला अन्तिम मुगल बादशाह मुहम्मदशाह था।
- मुगल बादशाह अहमदशाह ने हिजड़ों के सरदार जावेद खाँ को नवाब बहादुर की उपाधि प्रदान की।
- अहमदशाह ने रोहिल्ला सरदारों के विद्रोह को दबाने के लिए मराठों को सहायता दी।
- गुलाम कादिर खाँ ने 1806 ई. को शाहआलम द्वितीय की हत्या करवा दिया।
- शाहआलम द्वितीय (अली गौहर) के समय में दिल्ली पर अंग्रेजों का अधिकार (1803) हो गया।
- बहादुरशाह द्वितीय अंतिम मुगलशासक था।
- हैदराबाद- 1724 ई. में चिनकिलिच खाँ ने हैदराबाद में स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। प्रायः उन्हें निजामुलमुल्क के नाम से जाना जाता है।
- मुगल सम्राट मुहम्मदशाह ने चिनकिलिच खाँ को दक्कन का वायसराय स्वीकारते हुए आसफजाह की उपाधि प्रदान की।
- शकूरखेड़ा के युद्ध में चिनकिलिच खाँ ने मुगल सूबेदार मुबारिज खाँ को पराजित किया था।

**मुगल सम्राज्य के पतनके कारण**

- आयोग्य उत्तराधिकारी
- दक्कन सैन्य अभियानों में अधिक धन व्यय
- औरंगजेब की धार्मिक असहिष्णुता की नीति
- जागीरदारी व्यवस्था का संकट
- स्थिर केंद्रीय प्रशासन का अभाव
- दरबार में विरोधी गुटों का उदय
- सैनिक दुर्बलताएँ

## अवध

- अवध के स्वतंत्रता की घोषणा 1722 ई॰ में सआदत खाँ बुरहान मुल्क ने की।
- सआदत खाँ ने नादिरशाह को दिल्ली पर आक्रमण के लिए प्रेरित किया और उसने नादिरशाह से किये गये वादे पूरा नहीं कर पाने के कारण आत्महत्या कर ली।
- सआदत खाँ के उत्तराधिकारी सफदरजंग को 1744 में मुगल बादशाह मुहम्मदशाह ने अपना वजीर नियुक्त किया।
- अवध का अन्तिम नवाब वाजिद अलीशाह था। 1856 में कुशासन के आधार पर अंग्रेजों ने अवध को अपने साम्राज्य में मिला लिया।
- **कर्नाटक**- स्वतंत्र कर्नाटक राज्य के संस्थापक सादतुल्ला खाँ थे। इसकी राजधानी आरकाट थी। कर्नाटक का प्रयोग अंग्रेजी एवं फ्रांसीसियों ने भारतीय युद्धों के मैदान के रूप में किया।
- **भरतपुर**- भरतपुर में स्वतंत्र जाट राज्य की स्थापना चूड़ामन एवं बदनसिंह ने किया। जाट नेता सूरजमल को जाट जाति का प्लेटो कहा जाता है।
- **रूहेलखण्ड**- स्वतंत्र रूहेलखण्ड की स्थापना वीर दाऊद और अलीमुहम्मद खाँ ने किया। रूहेला सरदार नजीबुद्दौला अहमदशाह अब्दाली का विश्वासपात्र था।
- **राजपूत**- 18वीं शताब्दी के राजपूत शासकों में सवाई राजा मिर्जा जयसिंह का स्थान सर्वोपरि है। जयसिंह कुशल शासक होने के साथ-साथ महान विधिवेत्ता, खगोलशास्त्री, नगर-नियोजक, नगर-संस्थापक एवं वैज्ञानिक थे।
- आमेर के राजा जयसिंह को मिर्जा राजा सवाई की उपाधि मुगल बादशाह जहाँदारशाह ने दी थी।
- जयसिंह ने मथुरा, उज्जैन, जयपुर और दिल्ली में आधुनिक उपकरणों से युक्त वेधशालाओं का निर्माण कराया।

## विदेशी यात्रा के वृत्तांत

### अलबरूनी

- अलबरूनी का जन्म 973 ई. में ख्वारिज्म (आधुनिक उज्बेकिस्तान) में हुआ था। अलबरूनी कई भाषाओं का ज्ञाता था, जिसमें सीरियाई, फारसी, हिब्रु और संस्कृत शामिल हैं।
- 1017 ई. में ख्वारिज्म पर आक्रमण के पश्चात् महमूद गजनवी यहाँ से अनेक विद्वानों व कवियों को अपने साथ राजधानी गजनी ले गया. जिसमें एक अलबरूनी भी शामिल था।
- अलबरूनी बंधक के रूप में गजनी आया था, परन्तु धीरे-धीरे उसे शहर पसंद आने लगा और 70 वर्ष की आयु में अपनी मृत्यु तक शेष जीवन यहीं बिताया।
- गजनी में ही अलबरूनी को भारत के प्रति रूचि विकसित हुई। अलबरूनी ने ब्राह्मण पुरोहितों और विद्वानों के साथ अनेक वर्ष व्यतीत किये तथा संस्कृत धर्म दर्शन का ज्ञान प्राप्त किया।
- अनेक भाषाओं में दक्षता हासिल करने के कारण अलबरूनी भाषाओं की तुलना व ग्रंथों का अनुवाद करने में सक्षम था। उसने अनेक संस्कृत कृतियों जिनमें पतंजलि का व्याकरण ग्रंथ का अनुवाद अरबी में किया था।

## किताब-उल-हिन्द

- यह अलबरूनी द्वारा अरबी में लिखी गयी पुस्तक है। इसकी भाषा सरल व स्पष्ट है। यह एक विस्तृत ग्रंथ है जो धर्म, दर्शन, त्यौहार, खगोल विज्ञान, रीति-रिवाजों, प्रथाओं, सामाजिक जीवन, माप-तौल व मापन विधि, मूर्तिकला और कानून इत्यादि विषयों के आधार पर 80 अध्यायों में विभाजित है।
- अलबरूनी ने प्रत्येक अध्याय में एक विशिष्ट शैली का प्रयोग किया, जिसके आरम्भ में एक प्रश्न होता था फिर संस्कृतवादी परम्पराओं पर आधारित वर्णन और अंत में अन्य संस्कृतियों के साथ तुलना की जाती थी।
- इन समस्याओं की जानकारी होने पर भी अलबरूनी लगभग पूर्ण रूप से ब्राह्मणों द्वारा रचित कृतियों पर आश्रित रहा। वह भारतीय समाज को समझने के लिए वेद, पुराण, भगवद्गीता पतंजलि की कृतियों व मनुस्मृति इत्यादि पर निर्भर रहा
- संस्कृत के विषय में अलबरूनी लिखता है कि, संस्कृत भाषा सीखना सरल नहीं है, क्योंकि अरबी भाषा की पहुँच बहुत विस्तृत है।
- वह बताता है कि इस्लाम में सभी लोगों को समान माना जाता था तथा भिन्नताएं केवल धार्मिकता के पालन में थीं। जाति व्यवस्था के संदर्भ में ब्राह्मणवादी व्यवस्था को मानने के बाद भी अलबरूनी ने अपवित्रता की मान्यता को स्वीकार नहीं किया। उसके अनुसार जाति व्यवस्था में निहित अपवित्रता की धारणा प्रकृति के नियमों के विरुद्ध है।
- उसने यह भी लिखा है कि, प्रत्येक वह वस्तु जो अपवित्र हो जाती है, पवित्रता को पुनः प्राप्त करने का प्रयास करती है तथा उसमें सफल भी होती है।
- अलबरूनी लिखता है कि वैश्य व शूद्र वर्ण के बीच अधिक अंतर नहीं है। ये दोनों एक साथ ही शहर व गाँवों में रहते हैं।
- जाति व्यवस्था के विषय में अलबरूनी का विवरण संस्कृत ग्रंथों से पूर्ण रूप से प्रभावित है। यद्यपि अंत्यज (शाब्दिक रूप में व्यवस्था से परे) सामाजिक प्रताड़ना के शिकार थे, परन्तु फिर भी अर्थतंत्र का हिस्सा थे।

## इब्नबतूता

- इब्नबतूता का जन्म टाँजियर (मोरक्को) के एक सम्मानित परिवार में हुआ, जो इस्लामी कानून अथवा शरिया पर अपनी विशेषज्ञता के लिए प्रसिद्ध था।
- इब्नबतूता पुस्तकों के स्थान पर यात्राओं से अर्जित अनुभव को ज्ञान का अधिक महत्वपूर्ण स्रोत मानता था।
- भारत प्रस्थान से पहले वह मक्का, सीरिया, इराक, यमन, ओमान एवं पूर्वी अफ्रीका के अनेक तटीय बंदरगाहों की यात्रा कर चुका था। मध्य एशिया के मार्ग से होकर इब्नबतूता 1333 ई. में स्थल मार्ग से सिंध पहुँचा था।
- मुहम्मद-बिन-तुगलक ने उसे दिल्ली का काजी नियुक्त किया इब्नबतूता इस पद पर अनेक वर्षों तक रहा, फिर उसने सुल्तान का विश्वास खो दिया तथा उसे कैद कर लिया गया। यद्यपि बाद में पुनः उसे राजकीय सेवा में ले लिया गया।
- मुहम्मद-बिन- तुगलक ने 1342 ई. में मंगोल शासक (चीन) के पास सुल्तान के दूत के रूप में जाने का आदेश दिया।
- उसने व्यापक रूप से चीन में यात्रा की एवं बीजिंग तक गया, परन्तु वहाँ लम्बे समय तक प्रवास नहीं किया तथा 1347 ई. में घर जाने का निश्चय किया। 1354 ई. में वह घर वापस पहुँचा।
- इब्नबतूता ने रहला नामक पुस्तक लिखी जिसमें भारत से सम्बंधित जानकारी मिलती है।
- चीन के विषय में उसके वृतांतों की तुलना मार्कोपोलो (13वाँ सदी) जो वेनिस का यात्री था, से की जाती है।
- उस समय यात्रा करना अधिक असुरक्षित था। इब्नबतूता अनेक बार डाकुओं के आक्रमणों से परेशान हुआ था। यही कारण है कि, वह अपने साथियों के साथ कारवों में चलना पसन्द करता था।
- इब्नबतूता एक हठीला यात्री था। जब वह वापस गया. तो स्थानीय शासक के निर्देश पर उसकी कहानियों/ वृतांतों को दर्ज किया गया।

इब्नबतूता द्वारा नारियल का वर्णन एक प्रकृति के विस्मयकारी वृक्षों के रूप में किया गया। भारतीय इससे रस्सी बनाते हैं, लोहे की कीलों के बजाए इससे जहाज को मिलते हैं। इब्नबतूता पान का वर्णन भी करता है। ध्यातव्य है कि, वह नारियल व पान से पहले से परिचित नहीं था।

- इब्नबतूता के अनुसार, दिल्ली भारत का सबसे बड़ा शहर था। प्राचीन नगर दौलताबाद (महाराष्ट्र) भी अत्यधिक बड़ा था। जिसमें 28 द्वार थे, जिसमें बदायूँ दरवाजा सबसे विशाल था। मांडवी द्वार के भीतर एक अनाज की मंडी थी। देहली शहर में एक सुन्दर कब्रगाह थी, जिससे चमेली व गुलाब जैसे फूल उगाये जाते थे, जो सभी मौसमों में खिले रहते थे। अधिकांश नगरों में एक मस्जिद और एक मंदिर होता था।
- बंद नगरों में नर्तकों, संगीतकारों और गायकों के सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए स्थान चिह्नित होते थे।
- यद्यपि इब्नबतूता को शहरों की समृद्धि का वर्णन करने में अधिक रूचि नहीं थी। ताराबाद, दौलताबाद में पुरुष व महिला गायकों का बाजार था।
- इब्नबतूता डाक प्रणाली (संचार व्यवस्था) का विस्तृत विवरण देता है। इब्नबतूता डाक प्रणाली की कार्यकुशलता देखकर चकित हो गया। इसमें न केवल लम्बी दूरी तक सूचना भेजना व उधार प्रेषित करना था, बल्कि अल्प सूचना पर माल भेजना भी था।
- डाक प्रणाली इतनी कुशल थी कि जहाँ सिंध से दिल्ली की यात्रा में 50 दिन लगते थे, वहीं गुप्तचरों की खबरें सुल्तान तक इस डाक व्यवस्था के माध्यम से मात्र 5 दिनों में पहुँच जाती थीं। लगभग सभी व्यापारिक मार्गों पर सराय और विश्राम गृह स्थापित किए गए थे।

## बर्नियर

- यह फ्रांसीसी चिकित्सक, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक और इतिहासकार था। बर्नियर 1656-1668 ई. तक शाहजहाँ के ज्येष्ठ पुत्र दाराशिकोह के चिकित्सक के रूप में तथा बाद में मुगल दरबार के एक अर्मीनियाई अमीर वानिशमंद खान के साथ एक

बुद्धिजीवी एवं वैज्ञानिक के रूप में मुगल दरबार में रहा था। उसने अपनी प्रमुख कृति को फ्रांस के शासक लुई 14वें को समर्पित किया था।

- प्रत्येक दृष्टांत में बर्नियर भारत की स्थिति को यूरोप से निम्न दिखाता है। बर्नियर के कार्य फ्रांस में 1670-1671 ई. में प्रकाशित हुए और अगले 5 वर्षों में अंग्रेजी, डच, जापानी और इतालवी भाषा में इसका अनुवाद हुआ।
- बर्नियर ने अनेक बार मुगल सेना के साथ यात्राएँ की एक बार वह कश्मीर भी गया। बर्नियर की कृति ट्रावेल इन मुगल एपावर (Travel in Mughal Empire) थी। भू-स्वामित्व पर बनियर कहता है कि, यूरोप के विपरीत भारत में निजी भू-स्वामित्व का अभाव था। मुगल सम्राट सारी भूमि का स्वामी था जो इसे अपने अमीरों के बीच बाँट देता था. यह अर्थव्यवस्था के लिए हानिकारक था।
- राजकीय भू-स्वामित्व के कारण भूधारक भूमि अपने बच्चों को नहीं दे सकते थे, इसलिए वे भूमि में सुधार व निवेश में रूचि नहीं लेते थे। इस कारण से कृषि का विकास अवरूद्ध हुआ। बर्नियर लिखता है कि भारत में मध्य वर्ग नहीं था। हिन्दुतान के बारे में उसने लिखा कि. यहाँ की कृषि अच्छी नहीं है। कृषि योग्य भूमि का एक बड़ा हिस्सा श्रमिकों के अभाव में कृषि विहीन है। यहाँ की हवा दूषित है।
- बर्नियर चेतावनी देता है कि यदि यूरोपीय शासकों ने मुगलों का अनुसरण किया, तो यूरोप तबाह हो जाएगा। बर्नियर हिन्दुस्तान की अधिकांश समस्याओं की जड़ निजी भू-स्वामित्व के अभाव को मानता था फ्रांसीसी दार्शनिक माटेस्क्यू ने उसके वृत्तांत का प्रयोग प्राच्य निरंकुशवाद की धारणा को विकसित करने में किया। इसी आधार पर मार्क्स ने एशियाई उत्पादन पद्धति का सिद्धांत दिया।
- एक भी सरकारी मुगल दस्तावेज यह इंगित नहीं करता कि, राज्य ही भूमि का एकमात्र स्वामी था।
- शिल्पकारों के संदर्भ में बर्नियर लिखता है कि शिल्पकार मूल रूप से आलसी होता है जो भी निर्माण करता है, वह अपनी आवश्यकता या अन्य बाध्यताओं के कारण करता है। शिल्पकारों के पास अपने उत्पादों को बेहतर बनाने की कोई प्रेरणा नहीं थी; क्योंकि मुनाफे का अधिग्रहण राज्य द्वारा किया जाता था। इसलिए उत्पादन प्रत्येक जगह पतनोन्मुख था। हालाँकि वह यह भी मानता है कि, सम्पूर्ण विश्व से बड़ी मात्रा में बहुमूल्य धातुएँ भारत आती थीं। नगरों के विषय में वह लिखता है कि 17वीं सदी में लगभग 15% भारतीय जनसंख्या नगरों में रहती थी। यह अनुपात उस समय के यूरोप से अधिक था।

इसके बावजूद भी बर्नियर भारतीय नगरों को शिविर नगर कहता है, जिसका आशय उन नगरों से है जो अपने अस्तित्व के लिए राजकीय शिविरों पर निर्भर थे। उसका कहना है कि, वे नगर राजकीय दरबार के आगमन के साथ अस्तित्व में आते है।

- मध्यकालीन यात्रियों का राजकुमार मार्कोपोलो (1292-93) ने पाण्ड्य नरेश मारवर्मन कुलशेखर के शासनकाल में दक्षिण भारत की यात्रा की थी। उसने काकतीय वंश की शासिका रूद्राम्बा का उल्लेख किया है।
- एथेनेसियस निकितिन (रूसी) एवं फर्नादीस फ्रेडरिक (पुर्तगाली) घोड़े का व्यापारी था।
- विलियम हॉकिन्स 1608 से 1611 तक जहाँगीर के दरबार में ब्रिटिश राजा जेम्स प्रथम का राजदूत था।
- फ्रांसीसी यात्री जीन वैप्टिस्ट ट्रैवर्नियर ने 1638 से 1663 के बीच भारत की छः बार यात्रा की। इसने अपने यात्रा विवरण ट्रेवल्स इन इण्डिया में लिखा।
- इतालवी यात्री निकोलाओ मनूची ने शहजादा दारा शिकोह की सेना में तोपची के रूप में नौकरी की और दारा शिकोह की मृत्यु के बाद उसने चिकित्सक का पेशा अपना लिया।
- फ्रांसिस वर्नियर (फ्रांसीसी यात्री) पेशे से चिकित्सक था। यह शाहजहाँ के दरबार से संबंधित था और दारा शिकोह और औरंगजेब के बीच होने वाले उत्तराधिकार युद्ध का साक्षी था।

| भारत के प्रमुख नगरों के संस्थापक | | |
|---|---|---|
| 1. | कोलकाता | जॉब चारनाक |
| 2. | मुंबई | गेरॉल्ड ऑग्यिर |
| 3. | भोपाल | राजा भोज |
| 4. | नई दिल्ली | एडविन लुट्यन्स |
| 5. | आगरा | सिकंदर लोदी |
| 6. | इंदौर | अहिल्या बाई |
| 7. | धार | राजा भोज |
| 8. | तुगलकाबाद | मोहम्मद तुगलक |
| 9. | जयपुर | सवाई राजा जयसिंह |
| 10. | सागर (MP) | उदालशाय |
| 11. | लखनऊ | आसफुद्दौला |
| 12. | इलाहाबाद | अकबर |
| 13. | झाँसी | वीरसिंह जूदेव |
| 14. | अजमेर | अजयराज सिंह |
| 15. | उदयपुर | राणा उदय सिंह |
| 16. | टाटानगर | जमशेदजी टाटा |
| 17. | भरतपुर | राजा सूरजमल |
| 18. | कुम्भलगढ़ | राणा कुम्भा |
| 19. | पटना | उदयन |
| 20. | मुंगेर | चन्द्रगुप्त मौर्य |
| 21. | नालंदा | राजा धर्मपाल |
| 22. | रायपुर | ब्रह्मदेव |
| 23. | दुर्ग | जगतपाल |
| 24. | देहरादून | राजा जौनसार बाबर |
| 25. | पुरी | गंग चोल |
| 26. | द्वारका | शंकराचार्य |
| 27. | जम्मू | राजा जम्मू लोचन |
| 28. | पूना | शाह जी भोंसले |
| 29. | हैदराबाद | कुली कुतुब शाह |
| 30. | अमृतसर | गुरु रामदास |
| 31. | दिल्ली | अन्नंतपाल तोमर |

| | |
|---|---|
| ❖ राजपूत काल कब से कब तक माना जाता है | छठी सदी से बारहवीं सदी तक |
| ❖ 712 ई. में सिंध पर मोहम्मद बिन कासिम के आक्रमण के समय वहाँ का शासक कौन था | दाहिर |
| ❖ सर्वप्रथम जजिया कर लगाने का श्रेय किसे दिया जाता है | मोहम्मद बिन कासिम |
| ❖ 'दिल्लिका' किसका पुराना नाम है | दिल्ली का |
| ❖ 'पृथ्वीराजरासों' की रचना किसने की | चंद्रबरदई ने |
| ❖ प्रसिद्ध दिलवाड़ा जैन मंदिर कहाँ स्थित है | माउंट आबू पर |
| ❖ खजुराहो में स्थित मंदिरों का निर्माण किसने कराया | चंदेल शासकों ने |
| ❖ विजय स्तंभ कहाँ स्थित है | चित्तौड़गढ़ |
| ❖ महमूद गजनवी ने भारत पर कितनी बार आक्रमण किये | 17 बार |
| ❖ महमूद गजनवी का प्रसिद्ध आक्रमण कौन-सा था | सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण |
| ❖ मुहम्मद गजनवी ने गुजरात के प्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर को कब लूटा | 1025-26 |
| ❖ सोमनाथ मंदिर पर मुहम्मद गजनवी के आक्रमण के समय गुजरात का शासक कौन था | भीमदेव I |

| | |
|---|---|
| ❖ किस नाटक के कुछ अंश 'अढ़ाई दिन का झोपड़ा' नामक मस्जिद पर लिखे हैं | हरिकेलि |
| ❖ रानी पद्मनी का नाम खिलजी की चित्तौड़ विजय से जोड़ा जाता है। रानी पद्मनी किसकी पत्नी थीं | राणा रतन सिंह |
| ❖ विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना की | धर्मपाल |
| ❖ 'गीत गोविंद' किसने लिखी | जयदेव |
| ❖ जयदेव किसकी सभा को अलंकृत करते थे | लक्ष्मण सेन |
| ❖ किसने सोमपुर महाविहार का निर्माण कराया | धर्मपाल |
| ❖ भारत पर सर्वप्रथम अरब आक्रमण किसने किया | मुहम्मद बिन कासिम |
| ❖ जगन्नाथ मंदिर किस राज्य में है | ओड़िशा |
| ❖ कोणार्क में स्थित सूर्य देव मंदिर के संस्थापक कौन थे | नरसिंह I |
| ❖ ब्लैक पगोड़ा कहाँ स्थित है | कोणार्क में |
| ❖ 'अलवर' के संस्थापक कौन थे | अजय पाल |
| ❖ किस शासक के दरबार में जैन आचार्य हेमचंद्र को संरक्षण मिला | जय सिंह (सिद्धराज) |
| ❖ चंदावर का युद्ध किस-किस के मध्य हुआ | जयचंद और मोहम्मद गौरी |
| ❖ लिंगराज मंदिर कहाँ स्थित है | भुवनेश्वर में |
| ❖ लिंगराज मंदिर की नींव किसने डाली | ययाति केसरी ने |

# आधुनिक भारत

## यूरोपीय वाणिज्य कंपनियों का भारत आगमन

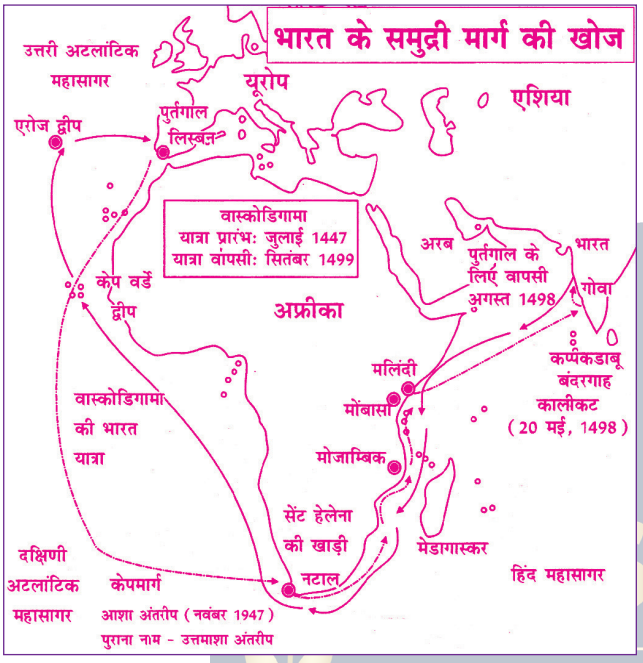


- प्रथम पुर्तगीज एवं प्रथम यूरोपीय यात्री वास्कोडिगामा 17 मई 1498 को भारत के पश्चिमी तट पर स्थित बन्दरगाह कालीकट पहुँच कर भारत के नये समुद्री मार्ग की खोज की। कालीकट के तत्कालीन शासक जमोरिन ने उसका स्वागत किया तथा अरबों ने उसका विरोध किया।
- वास्कोडिगामा पुन: 1502 में भारत आया और कोचीन में पुर्तगाली फैक्ट्री की स्थापना की।
- 1505 में फ्रांसिस्को द अल्मेडा प्रथम पुर्तगाली वायसराय बन कर भारत आया।
- पुर्तगाली सामुद्रिक साम्राज्य को एस्तादो द इण्डिया नाम दिया गया।
- 1509 में अलफांसो द अल्बुकर्क पुर्तगाली वायसराय बनकर भारत आया।
- 1510 में अल्बुकर्क ने बीजापुरी शासक युसुफ आदिलशाह से गोवा जीता।
- पुर्तगालियों की आबादी को बढ़ाने के ख्याल से अल्बुकर्क ने भारतीय स्त्रियों से विवाह को प्रोत्साहन दिया। 1518 में पुर्तगालियों ने कोलम्बो में और फिर मलक्का में कारखाना की स्थापना की।
- पुर्तगालियों ने कोचीन में अपने पहले दुर्ग की स्थापना की।
- 1530 में कोचीन की जगह गोवा को पुर्तगालियों की राजधानी बनाया गया।
- पुर्तगाली गोवा, दमन और दीव पर 1961 तक शासन करते रहे।
- पुर्तगालियों के भारत आगमन से भारत में तम्बाकू की खेती, जहाज निर्माण (गुजरात और कालीकट), प्रिंटिंग प्रेस एवं गोथिक स्थापत्यकला का आगमन हुआ।
- 1602 ई. में डच ईस्ट इंडिया कंपनी (वेरिगंदे ओस्त इंडिसे कंपनी) की स्थापना हुई।
- डचों द्वारा भारत से मसालों, नील, शोरा और सूतीवस्त्र का निर्यात किया जाता था।
- 1596 में भारत आनेवाला प्रथम डच नागरिक कारनेलिस डहस्तमान था।
- डचों का भारत में अंतिम रूप से पतन 1759 में अंग्रेजों एवं डचों के मध्य हुए वेदरा के युद्ध से हुआ। डचों के पतन का मुख्य कारण अत्यधिक केन्द्रीयकरण की नीति थी।
- डचों की कोठियाँ-मसूलीपट्टनम्, पुलीकट, चिनसुरा, कासिम बाजार, पटना, बालासोर आदि थीं।
- इंग्लैण्ड की रानी एलिजाबेथ प्रथम के समय में 31 दिसम्बर 1600 को दि गवर्नर एण्ड कम्पनी ऑफ मर्चेण्ट्स ऑफ लन्दन ट्रेडिंग इन्टू दि ईस्ट इंडीज अर्थात् ईस्ट इंडिया कम्पनी की स्थापना हुई।
- ईस्ट इंडिया कम्पनी में कुल 217 साझीदार थे। इसका पहला गवर्नर टॉमस स्मिथ था।
- 1608 में इंग्लैण्ड के राजा जेम्स-I के दूत के रूप में फारसी भाषा के जानकार कैप्टन हॉकिन्स जहाँगीर से आगरा में मिला। प्रथम कोठी सूरत में 1603 ई. में खोली गयी।
- 1615 में सम्राट जेम्स-I के राजदूत टामस रो व्यापारिक संधि के उद्देश्य से जहाँगीर के दरबार में आया। उसने गुजरात के सूबेदार खुर्रम से व्यापारिक कोठी खोलने के लिए फरमान प्राप्त किया।
- दक्षिण भारत में ई.ई. कंपनी ने अपना पहला कारखाना 1611 में मसूलीपट्टनम् में एवं पूर्वी भारत में बालासोर में स्थापित किया।
- 1661 में पुर्तगालियों ने अपनी राजकुमारी कैथरीन ब्रेयांजा का विवाह ब्रिटेन के चार्ल्स द्वितीय से करके बम्बई को दहेज के रूप में दिया। जिसे 1668 में दस पौंड के वार्षिक किराये पर ईस्ट इंडिया कंपनी को दे दिया गया। बम्बई का संस्थापक गेराल्ड औंगियार है।
- विलियम-हैजेज बंगाल का प्रथम अंग्रेज गवर्नर था।
- 1698 में कम्पनी ने तीन गांव सुतानटी, कोलिकत्ता एवं गोविन्दपुर की जमींदारी इब्राहिम खाँ से प्राप्त कर फोर्ट विलियम का निर्माण किया, जो कालांतर में कलकत्ता (कोलकाता) कहलाया। जिसकी नींव जार्ज चार्नाक ने रखा। फोर्ट विलयम का प्रथम गवर्नर चार्ल्स आयर था।

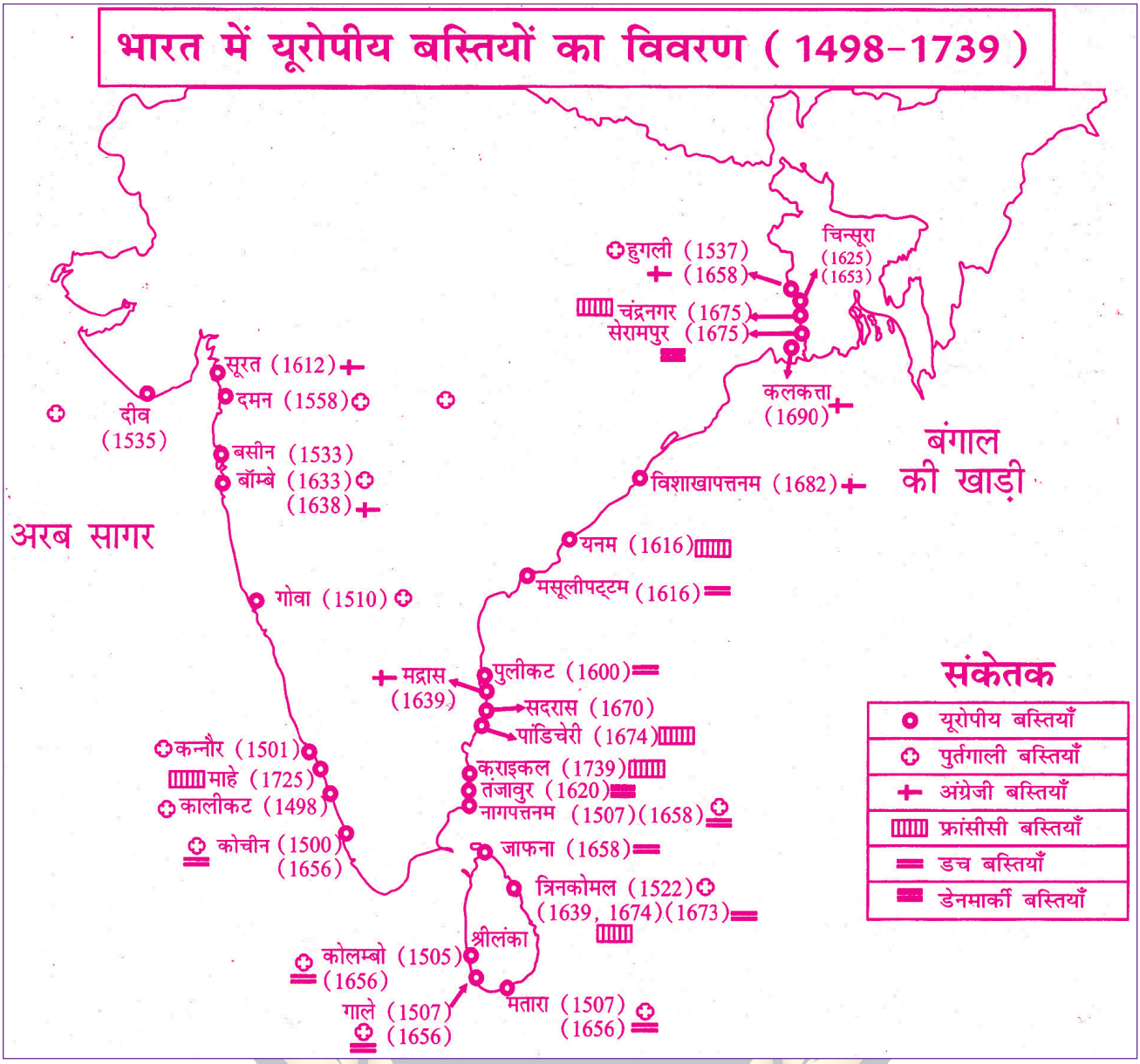


- 1717 में कंपनी एवं फर्रुखसियार के मध्य संधि हुई, जिसे 'कम्पनी का महाधिकार पत्र' कहा जाता है।
- लुई चौदहवें के मंत्री कॉलबर्ट द्वारा 1664 ई. में फ्रेंच ईस्ट इंडिया कंपनी (कम्पने देस इण्दसे ओरियंटलेस) की स्थापना हुई।
- भारत में फ्रांसीसियों की पहली कोठी फैंको कैरो द्वारा सूरत में 1668 में स्थापित की गयी। 1674 में फ्रांसिस मार्टिन ने पांडिचेरी की स्थापना की।
- प्रथम कर्नाटक युद्ध (1746-48 ई.) अंग्रेजों एवं फ्रांसीसियों के मध्य हुआ, जिसका मुख्य कारण आस्ट्रिया का उत्तराधिकारी युद्ध था। 1748 में हुई ए-ला-शापल की संधि द्वारा आस्ट्रिया का युद्ध समाप्त हो गया और कर्नाटक का प्रथम युद्ध समाप्त हुआ। इसी युद्ध में सेन्ट टोमे का युद्ध भी हुआ, जिसमें डूप्ले ने कर्नाटक के शासक अनवरुद्दीन को पराजित किया।
- कर्नाटक का द्वितीय युद्ध (1749-54 ई.) हैदराबाद तथा कर्नाटक के सिंहासनों के विवादास्पद उत्तराधिकारियों के कारण हुआ। इस युद्ध में फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले की हार हुई और उसकी जगह गोडेट्यू को भारत में अगला फ्रांसीसी गवर्नर बनाया गया। पांडिचेरी की संधि के साथ युद्धविराम हुआ।
- कर्नाटक का तीसरा युद्ध (1758-63 ई.) आस्ट्रिया एवं प्रशा में शुरू हुए सप्तवर्षीय युद्ध का ही एक अंश था। 1760 ई. में अंग्रेजी सेना ने सर आयरकूट के नेतृत्व में वांडिवाश की लड़ाई में फ्रांसीसियों को बुरी तरह शिकस्त दिया। 1763 की पेरिस संधि द्वारा दोनों के मध्य युद्ध समाप्त हुआ।
- भारत में यूरोपीय व्यापारिक कंपनियों के आगमन का क्रम -पुर्तगीज-डच-अंग्रेज-डेन- फ्रांसीसी और कंपनियों की स्थापना का क्रम-पुर्तगीज-अंग्रेज-डच-डेन-फ्रांसीसी।
- भारत में पुर्तगाली सबसे पहले 1498 में आये और सबसे अंत में 1961 में वापस गये।
- डैनिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना 1616 ई. एवं स्वीडिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना 1731 ई. में हुई। इस कंपनी ने विशेष तौर पर धर्मप्रचार का कार्य किया। सीरमपुर इसका मुख्य केन्द्र था।
- फिजियोक्रैटस (फ्रांसीसी) भारत में मुक्त व्यापार के पक्षधर थे।

| भारत में विदेशी कंपनियों का आगमन | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | कम्पनी | देश | स्थापना | स्थल | गवर्नर |
| 1. | पुर्तगाली ईस्ट इंडिया कम्पनी (एस्तादो द इंडिया) | पुर्तगाल | 1498 ई. | कालीकट | एफ. डी. अल्मीडा |
| 2. | अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी (द गवर्नर एंड कम्पनी ऑफ मर्चेंट्स ऑफ लंदन ट्रेडिंग इन टू द ईस्ट इंडीज) | ब्रिटेन | 1600 ई. | सूरत | सर टॉमस रो |
| 3. | डच ईस्ट इंडिया कम्पनी | हॉलैण्ड | 1602 ई. | मसूलीपट्टनम | विर्निच ओ |
| 4. | डेनिश ईस्ट इंडिया कम्पनी | डेनमार्क | 1616 ई. | सूतानाती | डिहस्तमान |
| 5. | फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कम्पनी (द इंडेस ओरियतलेस) | फ्रांस | 1664 ई. | सूरत | कॉल्बर्ट/मार्टिन |
| 6. | स्वीडिश ईस्ट इंडिया कम्पनी | स्वीडन | 1731 ई. | गोहनबर्ग | विलियम-यूसेलिक्स |
| **यूरोपीय व्यापारियों का भारत आगमन क्रम:** पुर्तगाली → डच → ब्रिटिश → डेनिश → फ्रांसीसी → स्वीडिश | | | | | |

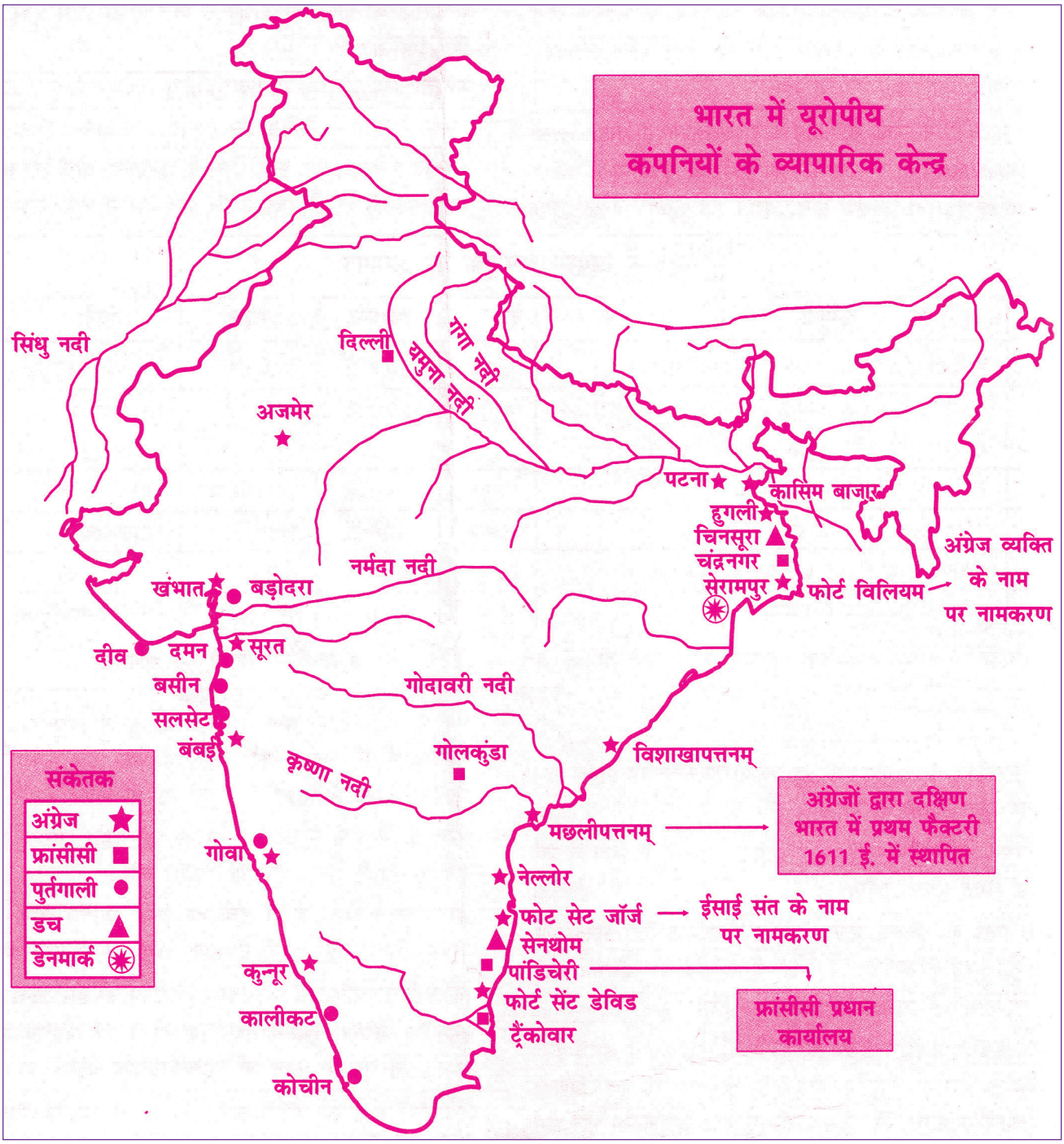

## बंगाल पर अंग्रेजों का आधिपत्य

- बंगाल का प्रथम स्वतंत्र शासक मुर्शीदकुली खाँ तथा उसके उत्तराधिकारी शुजाउद्दीन और अलीवर्दी खाँ के समय बंगाल इतना अधिक सम्पन्न हो गया कि इसे भारत का स्वर्ग कहा जाने लगा।
- अलीवर्दी खाँ ने यूरोपियों की तुलना मधुमक्खियों से करते हुए कहा कि 'यदि उन्हें न छेड़ा जाय तो वे शहद देंगी, यदि छेड़ा जाय तो काट-काट कर मार डालेंगी।'
- सिराज-उद-दौला और अंग्रेजों के बीच युद्ध का मुख्य कारण था अंग्रेजों का नवाब के विरुद्ध षड्यंत्र, कासिम बाजार की फैक्ट्री के निरीक्षण की अनुमति नहीं मिलना, फोर्ट विलियम की किलेबंदी एवं दस्तक (कर मुक्त व्यापार-पत्र) का दुरुपयोग।

मुर्शिद कुली खाँ ने नए भू-राजस्व बंदोबस्त के जरिए जागीर भूमि के एक बड़े भाग को खालसा भूमि बना दिया तथा इजारा व्यवस्था (ठेके पर भू-राजस्व वसूल करने की व्यवस्था) आरंभ की।

अलीवर्दी खाँ ने यूरोपीय लोगों की तुलना मधुमक्खी के छत्ते से की, जिसका अपने लाभ के लिए शहद के रूप में उपयोग किया। जा सकता है।

### ब्लैक होल (Black Hole) की घटना (20 जून, 1756)

एक अंग्रेज अधिकारी जे. जेड. हॉलवेल द्वारा बताया गया कि, नवाब ने 20 जून की रात में 146 अंग्रेज बन्दियों को 18 फुट लम्बी एवं 14' 10' चौड़ी कोठरी में बंद कर दिया। अगले दिन हॉलवेल सहित मात्र 23 व्यक्ति जिन्दा बचे। यह घटना इतिहास में ब्लैक होल त्रासदी (Black Hole Tragedy) के नाम से प्रसिद्ध है।

### अलीनगर की सन्धि (9 फरवरी, 1757 ई.)

यह सन्धि बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला और क्लाइव के बीच हुई। इस सन्धि के द्वारा कम्पनी के क्षेत्राधिकार और विशेषाधिकार पुनः स्थापित हो गए। इस सन्धि के अन्तर्गत कम्पनी को अपने अधीन स्थलों को दुर्गीकृत करने एवं सिक्के डालने की अनुमति प्रदान की गई।

### प्लासी का युद्ध (23 जून, 1757 ई.)

क्लाइव की सेना में 950 यूरोपीय पैदल 100 यूरोपीय तोपची, 50 नाविक और 2.100 भारतीय सैनिक थे। नवाब की सेना लगभग 50 हजार थी। युद्ध में मीरजाफर ने नवाब को धोखा दिया। नवाब की ओर से मीरमदान, मोहन लाल एवं कुछ फ्रांसीसी सैनिकों ने भाग लिया। मीरमदान युद्ध में मारा गया और अंग्रेज विजयी हो गए। नवाब भागकर मुर्शिदाबाद पहुंचा, जहाँ मीरजाफर के पुत्र मीरन ने मोहम्मद वेग द्वारा उसकी हत्या करवा दी। युद्ध के बाद कम्पनी को 24 परगने की जमींदारी प्राप्त हुई, जिससे उसकी आय में वृद्धि हुई। क्लाइव को 2 लाख 34 हजार रुपये भेंट दी गयी तथा 50 लाख रुपये सेना और नाविकों के लिए दिया गया।

- 9 फरवरी 1757 को कंपनी और नवाब के मध्य अलीनगर की संधि हुई।
- 23 जून 1757 को प्लासी के युद्ध में मीरजाफर राय दुर्लभ एवं जगतसेठ की गद्दारी के कारण नवाब अंग्रेजों से परास्त हुआ।
- मीर जाफर ने कंपनी को 24 परगना दिया।
- मीरजाफर को क्लाइव का गीदड़ कहा जाता था।
- आलमगीर द्वितीय ने क्लाइव को उमरा की उपाधि दिया।
- मीर कासिम ने अपनी राजधानी को मुर्शिदाबाद से मुंगेर स्थानान्तरित किया और वहाँ तोपों एवं तोड़दार बंदूकों के निर्माण हेतु कारखाने की स्थापना की।
- 23 अक्टूबर 1764 के बक्सर युद्ध में अंग्रेजों ने मीर कासिम, अवध के नवाब शुजाद्दौला एवं मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय की सम्मिलित सेना को परास्त किया। इस युद्ध में अंग्रेजी सेना का नेतृत्व हेक्टर मुनरो ने किया।
- बंगाल में 1765 से 1772 के मध्य द्वैध शासन रहा, जिसके जनक लियोनल कार्टिस हैं।
- अंग्रेजों का संरक्षण प्राप्त बंगाल का प्रथम नवाब नज्मुद्दौला था।

## अंग्रेजों के मैसूर से सम्बन्ध

- हैदर अली ने 1755 में फ्रांसीसियों के सहयोग से डिंडीगुल में एक शस्त्रागार की स्थापना किया और 1761 में मैसूर का स्वतंत्र शासक बना।

मंगलौर की संधि से असंतुष्ट गवर्नर जनरल वॉरेन हेस्टिंग्स ने कहा कि, यह लॉर्ड मैकार्टनी कैसा आदमी है, मैं अभी भी विश्वास करता हूँ कि वह संधि के बाद भी कर्नाटक को खो देगा।

टीपू सुल्तान एक पढ़ा लिखा योग्य शासक था। इसे अरबी, फारसी, उर्दू एवं कन्नड़ भाषाओं का ज्ञान था। इसने अपने नवीन प्रयोगों के अन्तर्गत नई मुद्रा, नई माप-तौल की इकाई और नवीन संवत् को प्रारम्भ करवाया।

टीपू सुल्तान ने फ्रांसीसी क्रांति में गहरी दिलचस्पी ली। उसने श्रीरंगपट्टनम् में स्वतंत्रता का वृक्ष लगाया और जैकोबिन क्लब का सदस्य बन गया।

सर जॉन शोर 1793-98 ई. के दौरान मद्रास का गवर्नर जनरल था, जिसने बाद में लिखा था कि टीपू सुल्तान के राज्य के किसानों को संरक्षण मिलता था तथा उनको श्रम के लिए प्रोत्साहित और पुरस्कृत किया जाता था

- हैदर अली की मृत्यु द्वितीय आँग्ल मैसूर युद्ध के दौरान 1782 ई. में हो गयी।
- वेलेजली को आयरलैण्ड ने मार्क्विस की उपाधि प्रदान की।
- हैदर अली का उत्तराधिकारी उसका पुत्र टीपू सुल्तान हुआ।
- टीपू 1787 में अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टनम में फ्रांस एवं मैसूर के मैत्री का प्रतीक स्वतंत्रता का वृक्ष रोपा और फ्रांसीसी क्रांति से प्रभावित होकर जैकोबिन क्लब का सदस्य बना।
- टीपू ने पादशाह की उपाधि धारण की। उसने 1796 में नौसेना बोर्ड का गठन किया।

### मैसूर (1799)

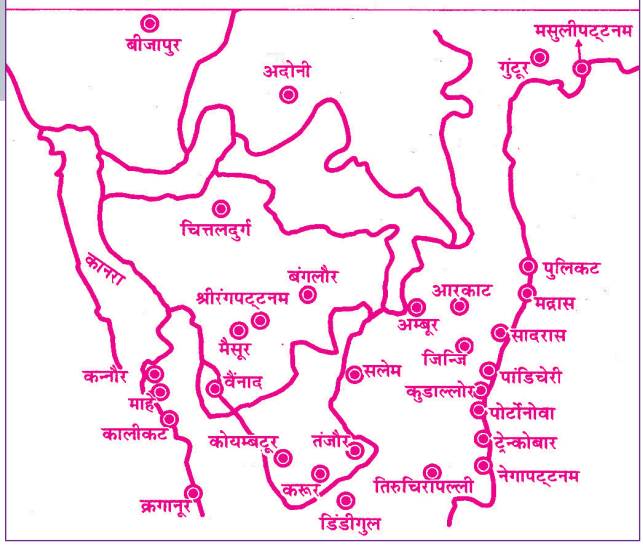


- टीपू ने आधुनिक कैलेण्डर की शुरुआत की।

| आंग्ल-मैसूर संघर्ष | | | | |
|---|---|---|---|---|
| युद्ध | मैसूर शासक | बंगाल का गवर्नर | संधि | विशेष |
| प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध (1767-69 ई.) | हैदरअली | लॉर्ड वेरेल्स्ट | मद्रास संधि (1769 ई.) | हैदरअली दक्षिण भारत का प्रथम शासक था, जो अंग्रेजों से पराजित नहीं हुआ। |
| द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1780-84 ई.) | हैदरअली | वारेन हेस्टिंग्स | मंगलौर संधि (1784 ई.) | हैदरअली की मृत्यु के बाद टीपू सुल्तान के नेतृत्व में युद्ध हुआ। |
| तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध (1790-92 ई.) | टीपू सुल्तान | लॉर्ड कॉर्नवालिस | श्रीरंगपट्टनम संधि (1792 ई.) | टीपू सुल्तान की स्थिति कमजोर हो गई। |
| चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध (1799 ई.) | टीपू सुल्तान | लॉर्ड वेलेजली | मैसूर सहायक संधि | टीपू सुल्तान की मृत्यु पुनः मैसूर में वाडियार वंश की स्थापना अंग्रेजों ने वाडियार वंश के शासक से सहायक संधि किए। |

- गुरू गोविन्द सिंह की मृत्यु के बाद उनके शिष्य बंदाबहादुर ने सिक्खों का नेतृत्व संभाला।
- बंदाबहादुर का बचपन का नाम लक्ष्मणदेव था। उनके शिष्य उन्हें सच्चा पादशाह अथवा सच्चा सम्राट कहते थे।

## सिक्ख धर्म और राज्य

| नाम/काल | प्रमुख कार्य एवं विशेषताएँ |
|---|---|
| गुरू नानक 1469-1538 ई. | सिक्ख धर्म के संस्थापक, हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल, अवतारवाद एवं कर्मकाण्ड का विरोध, समानता एवं सत्कर्मों पर सर्वाधिक बल, धर्मप्रचार के लिये 'संगतों' की स्थापना। |
| गुरू अंगद 1538-1552 ई. | गुरू के उपदेशों का सरल भाषा में प्रचार, गुरू अंगद के पुत्र, 'उदासी' नामक संप्रदाय की स्थापना की। लंगर व्यवस्था को स्थायी बनाया। गुरुमुखी लिपि की शुरुआत की, हुमायूँ 1504 में अंगद से पंजाब में मिला। |
| गुरू अमरदास 1552-74 ई. | सिक्ख सम्प्रदाय को एक संगठित रूप दिया जिसके लिये 22 गद्दियाँ बनायीं, अपने शिष्यों के लिये 'पारिवारिक सन्त' होने का उपदेश दिया, सती प्रथा, पर्दा प्रथा, मादक द्रव्यों के सेवन का विरोध किया। अकबर ने पंजाब में गुरू से भेंट की, गुरू और उनके शिष्यों को तीर्थ यात्रा कर से मुक्त किया तथा उनकी पुत्री के नाम कई गांव दिये थे। वैष्णव सम्प्रदाय के अनुयायी थे। इन्होंने सिखों और हिन्दुओं के विवाह को पृथक करने के लिए 'लवन पद्धति' शुरू किया। |
| गुरू रामदास 1574-81 ई. | अकबर इनसे बहुत प्रभावित था। 1577 ई. में अकबर ने 500 बीघा जमीन दी जिसमें एक प्राकृतिक तालाब था। यहीं पर 'अमृतसर' नगर की स्थापना हुई। गुरू का पद पैतृक हो गया। |
| गुरू अर्जुनदेव 1581-1606 ई. | सिक्ख सम्प्रदाय को शक्तिशाली बनाया। अपना और अपने पहले के गुरूओं के उपदेश का संकलन 1604 में 'आदिग्रन्थ' में करवाया। अर्जुन ने सूफी संत मियां मीर द्वारा अमृतसर में हरमिंदर साहब की नींव डलवायी। कालांतर में रणजीतसिंह द्वारा हरमिंदर साहब में स्वर्ण जड़वाने के बाद अंग्रेजों द्वारा पहलीबार 'Golden Temple' (स्वर्ण मंदिर) नाम दिया गया। स्थायी रूप से धर्म प्रचारक (मसंद और मेउरा) नियुक्त किया। 'गुरू पद' को सिक्खों का आध्यात्मिक तथा सांसारिक प्रमुख बनाकर 'शान-ओ-शौकत' से रहना प्रारम्भ किया। सिक्खों से उनकी आय का 10 प्रतिशत दान के रूप में लेने की प्रथा प्रारम्भ की। विद्रोही खुसरो को आर्शीवाद देने के कारण राजद्रोह के आरोप में 1606 ई. को फांसी। अपने पुत्र हरगोविन्द को सशस्त्र होकर बैठने और सर्वोच्च सेना गठित करने का आदेश दिया। गुरू के मृत्यु दण्ड को सिक्खों ने मुगलों द्वारा धर्म पर पहला आक्रमण माना। तरनतारन नामक नगर की स्थापना की। |
| गुरु हरगोविन्द 1606-45 ई. | गुरू ने सिक्खों को एक 'सैनिक सम्प्रदाय' बना दिया। अपने समर्थकों से धन के बजाय घोड़े और हथियार लेना प्रारम्भ किया। उन्हें मांस खाने की अनुमति दी। गुरू ने 'तख्त अकाल बंगा' की नींव डाली तथा अमृतसर की किलेबंदी की। सिक्खों को धार्मिक शिक्षा के साथ-साथ सैनिक शिक्षा दी। शाहजहाँ से बाज प्रकरण के कारण संघर्ष हुआ। |
| गुरू हरराय 1645-61 ई. | दारा के सामूगढ़ युद्ध में पराजित होकर पंजाब भागने पर उसकी मदद की। औरंगजेब द्वारा दरबार में बुलाने पर अपने पुत्र रामराय को दरबार में भेजा। फलस्वरूप दूसरे पुत्र हरिकिशन को गद्दी सौंपी। |
| गुरू हरिकिशन 1661-1664 ई. | गद्दी के लिये बड़े भाई रामराय से विवाद। |
| गुरू तेगबहादुर 1664-75 ई. | हरिकिशन ने मृत्यु से पहले उन्हें 'बाकला दे बाबा' कहा। तत्पश्चात् वे बाकला में गुरू स्वीकृत हो गया। धीनामल और रायमल प्रमुख विरोधी थे। औरंगजेब की धार्मिक नीतियों का विरोध किया फलस्वरूप 1675 ई. को इस्लाम धर्म नहीं स्वीकार करने के कारण गुरू की हत्या कर दी गयी। |
| गुरू गोविन्द सिंह 1675-1708 ई. | पटना में जन्म हुआ। पंजाब की तराई 'मखोवल' अथवा 'आनन्दपुर' में अपना मुख्यालय बनाया। 'पाहुल' प्रथा प्रारम्भ की। इस मत में दीक्षित व्यक्ति को 'खालसा' कहा गया तथा नाम के अन्त में 'सिंह' उपाधि दी गयी। 1699 ई. में 'खालसा' का गठन। प्रत्येक सिक्ख को 'पंचमकार' (केश, कंघा, कड़ा, कच्छ और कृपाण) धारण करने का आदेश दिया। अपनी मृत्यु से पहले गद्दी को समाप्त कर दिया। एक पूरक ग्रन्थ 'दसवें बादशाह का ग्रन्थ' संकलन किया। सिक्खों के अन्तिम गुरू। |

- फरुखसियार के आदेश पर 1716 ई. में बन्दा सिंह को गुरुदासपुर नांगल नामक स्थान पर पकड़कर मौत के घाट उतार दिया गया।
- नादिरशाह के आक्रमण का लाभ उठाकर कपूर सिंह ने छोटे-छोटे सिक्ख टुकड़ियों को मिलाकर दल खालसा की स्थापना किया। कपूर सिंह की मत्यु के बाद जस्सा सिंह अहलूवालिया ने दल खालसा को नेतृत्व प्रदान किया, जिसे बाद में बारह दलों में विभाजित किया गया। इसे मिसल कहा गया।
- मिसल अरबी भाषा का शब्द है, जिसका अर्थ समान होता है।

| बारह सिख मिसलें | | |
|---|---|---|
| क्र.स. | मिसल | नेता / संस्थापक |
| 1. | सुकरचकिया मिसल | चरत सिंह |
| 2. | भंगी मिसल | छज्जा सिंह |
| 3. | अहलूवालिया मिसल | जस्सा सिंह |
| 4. | सिंहपुरिया मिसल | नवाब कपूर सिंह |
| 5. | कन्हैया मिसल | जयसिंह |

| | | |
|---|---|---|
| 6. | फुलकियां मिसल | संधू जाट चौधरी |
| 7. | रामगढ़िया मिसल | जस्सा सिंह रामगढ़िया |
| 8. | करोड़ खिधिंया मिसल | बघेल सिंह |
| 9. | निशानवालिया मिसल | सरदार संगत सिंह |
| 10. | शहीदी मिसल | बाबा दीप सिंह |
| 11. | नकी मिसल | हीरा सिंह |
| 12. | बुलेवालिया मिसल | गुलाब सिंह |

फ्रांसीसी यात्री विक्टर जाकमा ने रणजीत सिंह की तुलना नेपोलियन बोनापार्ट से की थी।

- आधुनिक पंजाब के निर्माण का श्रेय सुकरचकिया मिसल को दिया जाता है।
- सुकरचकिया मिसल के प्रमुख महासिंह के पुत्र रणजीत सिंह थे, जिसका जन्म गुजरांवाला में 2 नवम्बर 1780 ई. को हुआ।
- काबुल के शासक जमनशाह ने रणजीत सिंह को 1798 में राजा की उपाधि प्रदान की।
- रणजीत सिंह ने लाहौर को अपनी राजधानी बनाया।
- 25 अप्रैल 1809 को चार्ल्स मेटकाफ और रणजीत सिंह के बीच अमृतसर की संधि हुई।
- रणजीत सिंह की सरकार को सरकार खालसा और स्थायी सेना को फौजेआइन कहा जाता था।
- रणजीतसिंह ने पैदल सेना को एलार्क एवं वेंचुरा (फ्रांसीसी) के अधीन रखा।
- रणजीत सिंह का विदेशमंत्री फकीर अजीजुद्दीन एवं वित्त मंत्री दीनानाथ था।

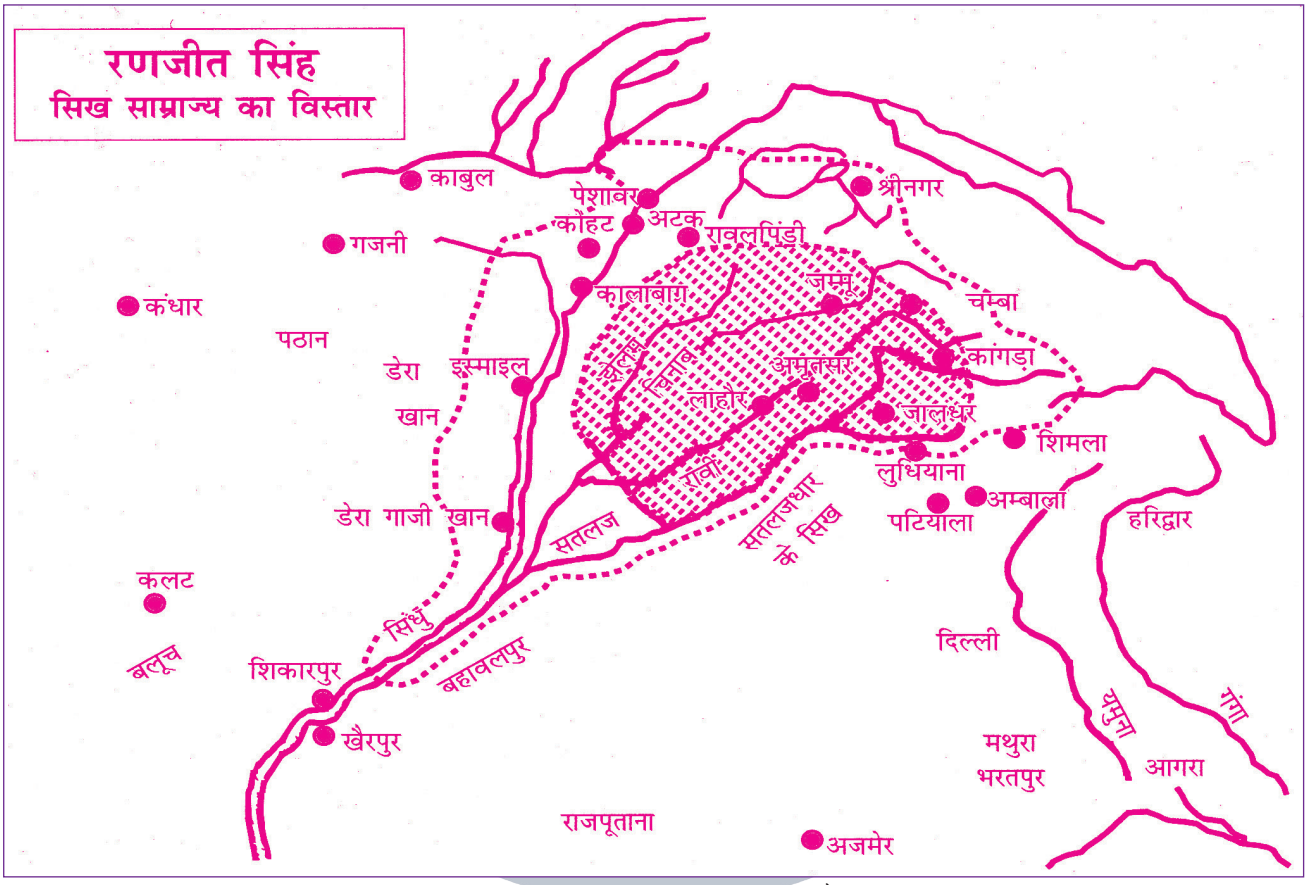


- 7 जून 1839 को रणजीत सिंह की मृत्यु के बाद क्रमशः खड़क सिंह, नौनिहाल सिंह, शेर सिंह एवं दिलीप सिंह राजमाता जिंदा के नेतृत्व में गद्दी पर बैठे।
- प्रथम आंग्ल सिख युद्ध (1846-46) के अन्तर्गत भुदकी, फिरोजशाह, बुद्धोवाल तथा अलीवाल की लड़ाइयाँ लड़ी गयीं। इन युद्धों में अंग्रेजी गवर्नर लॉर्ड हार्डिंग ने सिखों को पराजित किया और 9 मार्च 1846 को लाहौर की संधि की।
- सिखों और अंग्रेजों के मध्य 16 दिसंबर 1846 को भैरोवाल की संधि हुई।
- द्वितीय आंग्ल सिख युद्ध (1848-49) का तात्कालिक कारण मुगल का विद्रोह था।
- चिलियाँवाला युद्ध (13 जनवरी 1849) एवं गुजरात के युद्धों (21 फरवरी 1849) में सिखों को पराजित करने के बाद अंग्रेजी गवर्नर डलहौजी ने 30 मार्च 1849 को अपने साम्राज्य में विलय कर लिया।
- महाराजा दिलीप सिंह को अंग्रेजों ने 5 लाख रुपये की वार्षिक पेंशन पर रानी जिंदा के साथ इंग्लैण्ड भेज दिया।

## ब्रिटिश प्रभुसत्ता की स्थापना (1848 -1856 ई.)

- रणजीत सिंह के शासनकाल में उसके राज्य के विस्तार को अंग्रेजों ने रोक दिया था। सतलज के पूर्व का सिख राज्य अंग्रेजों के अधिकार में था।
- रणजीत सिंह की मृत्यु के पश्चात् पंजाब में राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न हो गई। सेना में सिखों के खालसा नामक समूह का वर्चस्व हो गया तथा उसने राज्य के मामलों में हस्तक्षेप करना प्रारम्भ कर दिया।

- अंग्रेजों ने पंजाब की सीमाओं पर अपनी सेना का एकत्रीकरण प्रारम्भ कर दिया। रणजीत सिंह के बाद उसका बेटा दिलीप सिंह गद्दी पर बैठा था एवं उसकी माँ, रानी जिंदनकौर अपने कृपापात्र अधिकारियों की सहायता से प्रशासन का कार्य करती थीं।
- 1845 ई. में पहला अंग्रेज-सिख युद्ध प्रारम्भ हुआ। खालसा की हार के साथ युद्ध समाप्त हो गया।
- पंजाब ब्रिटिश सरक्षण में आ गया, परन्तु दिलीप सिंह शासक बना रहा। अंग्रेजों ने गुलाब सिंह को जम्मू और कश्मीर का महाराजा बना दिया।
- 1848 ई. में पंजाब में अंग्रेजों के विरुद्ध कई विद्रोह हुए, जिसके परिणामस्वरूप दूसरा अंग्रेज-सिख युद्ध हुआ। पंजाब की सेनाएँ वीरतापूर्वक लड़ीं, परन्तु हार गई। पंजाब को अंग्रेजों ने अपने राज्य में मिला लिया।

पंजाब पर जिस समय अंग्रेजों का अधिकार हुआ, उस समय डलहौजी गवर्नर जनरल था। उसके कार्यकाल (1848 से 1856 ई. तक) में भारत में अंग्रेजों की प्रभुसत्ता स्थापित हो गई।

## बंगाल के प्रशासन की दोहरी व्यवस्था

- 1765 ई. से ईस्ट इण्डिया कम्पनी बंगाल की वास्तविक स्वामी हो गई। कम्पनी का बंगाल पर एकछत्र नियंत्रण स्थापित हो गया तथा राजनीति की संपूर्ण शक्ति इसके हाथों में आ गई।
- दीवान के रूप में कम्पनी स्वयं प्रत्यक्ष रुप से राजस्व वसूल करने लगी। कंपनी का निजामत अथवा पुलिस और न्यायिक शक्तियों पर पूर्ण रूप से नियंत्रण स्थापित हो गया। इस व्यवस्था को दोहरी या द्वैय सरकार कहा जाता है। कम्पनी का बंगाल की सत्ता पर पूर्ण अधिकार हो गया, जबकि उनके ऊपर किसी प्रकार की जिम्मेदारी नहीं थी।
- प्रशासन का दायित्व नवाब और उसके पदाधिकारियों पर था, यद्यपि इनका निर्वाह करने की शक्ति उनके पास नहीं रही।
- 1770 ई. में बंगाल में भयंकर अकाल पड़ा। 772 ई. में वॉरेन हेस्टिंग्स बंगाल का गवर्नर बना एवं 1773 ई. में उसे भारत में ब्रिटिश प्रदेशों का गवर्नर जनरल बनाया गया।
- 1772 ई. में दोहरी सरकार को समाप्त कर दिया गया और बंगाल पर कम्पनी का प्रत्यक्ष शासन लागू हो गया।
- कलकत्ता, जो कि कम्पनी का प्रमुख केंद्र था, बंगाल की वास्तविक राजधानी बनी। कालांतर में ब्रिटिश भारत की राजधानी कलकत्ता में ही रही।

| बंगाल के गवर्नर जनरल | | |
|---|---|---|
| 1. | वॉरेन हेस्टिंग्स | 1772-1785 ई. |
| 2. | सर जॉन मैकफर्सन (स्थानापन्न) | 1785-1786 ई. |
| 3. | अर्ल माक्विस कॉर्नवालिस (प्रथम शासनकाल) | 1786-1793 ई. |
| 4. | सर जॉन शोर | 1793 1798 ई. |
| 5. | सर ए. क्लार्क (कार्यवाहक) | 1798-1798 ई. |
| 6. | रिचर्ड वेलेजली | 1798-1805 ई. |
| 7. | कॉर्नवालिस (द्वितीय शासनकाल) | 1805-1805 ई. |
| 8. | सर जॉर्ज बालों (कार्यवाहक) | 1805-1807 ई. |
| 9. | लॉर्ड मिण्टो | 1807-1813 ई. |
| 10. | माक्विस ऑफ लॉर्ड हेस्टिंग्स | 1813-1823 ई. |
| 11. | जॉन एडम्स (कार्यवाहक) | 1823 1823 ई. |
| 12. | लॉर्ड एमहर्स्ट | 1823 1828 ई. |
| 13. | विलियम बटरवर्थ बेली (स्थापन्न) | 1828 1828 ई. |
| 14. | लॉर्ड विलियम बेंटिक | 1828-1833 ई. |

- कम्पनी के अधिकारी बंगाल की जनता पर मनमाने ढंग से अत्याचार कर रहे थे तथा ये अत्याचार दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे थे।
- कम्पनी के पदाधिकारी बंगाल की संपदा को दोनों हाथों से लूट रहे थे, जिसके परिणामस्वरूप बंगाल की आर्थिक स्थिति अत्यन्त दयनीय हो गयी।
- कम्पनी ने भारतीय माल खरीदने के लिए इंग्लैण्ड से धन भेजना बंद कर दिया। वे बंगाल से प्राप्त राजस्व से भारतीय माल खरीदते और इसे विदेशों में बेचते।
- इस धन को कम्पनी की लागत पूँजी समझा जाता था तथा इसे कम्पनी के लाभ के रूप में स्वीकार किया जाता था।
- 1766 1768 ई. में बंगाल से लगभग 57 लाख पौंड की धन-निकासी हुई। इस धन निकासी के फलस्वरूप यह प्रांत दरिद्र हो गया।
- 1770 ई. में बंगाल में अकाल (Draught) पड़ा। यह अकाल मानव जाति के इतिहास में पड़े भयंकर अकालों में से एक सिद्ध हुआ। लाखों की संख्या में लोगों की मृत्यु हुई और बंगाल की एक-तिहाई जनसंख्या इस अकाल से प्रभावित हुई।

## वॉरेन हेस्टिंग्स और कॉर्नवालिस (1772-1793 ई.)

- 1772 ई. तक ईस्ट इंडिया कंपनी भारत की एक प्रमुख शक्ति बन चुकी थी। इंग्लैण्ड में बैठे डायरेक्टर और भारत में इसके अधिकारी बंगाल में अपनी स्थिति को मजबूत बना लेना चाहते थे।
- 1766 ई. में उन्होंने मैसूर के हैदर अली पर हुए आक्रमण में हैदराबाद के निजाम का साथ दिया। हैदर अली ने मद्रास कौंसिल को अपनी शर्तों पर शांति की संधि करने के लिए विवश कर दिया।
- 1780 ई. में हैदर अली से एक बार पुनः युद्ध आरंभ हो गया। हैदरअली ने कर्नाटक में आंग्ल सेनाओं को बार-बार पराजित किया और उन्हें बड़ी संख्या में आत्मसमर्पण करने पर बाध्य कर दिया। जुलाई, 1781 में आयरकूट की कमान में ब्रिटिश सेना ने पोर्टोनोवो में हैदर अली को पराजित कर मद्रास को सुरक्षित कर लिया।
- दिसंबर, 1782 में हैदर अली की मृत्यु के बाद उसके पुत्र टीपू सुल्तान ने युद्ध जारी रखा। दोनों में से कोई भी पक्ष एक-दूसरे पर विजय की स्थिति में नहीं था, इसलिए उन्होंने मार्च, 1784 ई. में शांति संधि कर ली तथा एक-दूसरे के जीते हुए राज्य लौटा दिए।
- ईस्ट इंडिया कम्पनी के अधिकारी टीपू के शत्रु थे। वे उसे दक्षिण में अपना सबसे शक्तिशाली शत्रु समझते थे। टीपू अंग्रेजों से घृणा करता था तथा अपनी स्वाधीनता के लिए सबसे बड़ा खतरा समझकर उन्हें भारत से बाहर खदेड़ने पर प्रतिबद्ध था।

- अंग्रेज और टीपू सुल्तान के मध्य 1789 ई. में पुनः युद्ध भड़क उठा और अंततः 1792 ई. में टीपू की पराजय हुई।
- श्रीरंगपत्तनम् में हुई संधि के अनुसार टीपू ने अपना आधा राज्य अंग्रेजों और उसके सहयोगियों को दे दिया तथा 330 लाख रुपए हर्जाना दिया।

- वारेन हेस्टिंग्स ने सन् 1774 में पोस्ट मॉस्टर जनरल के अंत कलकत्ता जनरल पोस्ट ऑफिस (GPO) की स्थापना की।
- सन् 1784 में सर विलियम जोन्स द्वारा एशियाटिक ऑफ बंगाल की स्थापना की गई।
- लॉर्ड कार्नवालिस एकमात्र गवर्नर जनरल थे, जिनकी समाधि में गाजीपुर (उत्तर प्रदेश) में स्थित है।

## लॉर्ड वेलेजली के काल (1798-1805 ई.) में अंग्रेजों का प्रसार प्रकार

- भारत में ब्रिटिश शासन का दूसरा बड़ा प्रसार लॉर्ड वेलेजली के काल में हुआ।
- वर्ष 1797 ई. तक दो प्रमुख भारतीय शक्ति अर्थात् और मराठों की शक्ति क्षीण हो चुकी थी।

अपने राजनीतिक उद्देश्य को पूरा करने के लिए वेलेजली ने तो उपायों का सहारा लिया। सहायक संधि प्रथा, खुला युद्ध और पहले से अधीन बनाए जा चुके शासकों का क्षेत्र हड़पना।

- अंग्रेजों की सहायक संधि प्रथा की नीति के अनुसार किसी सहयोगी भारतीय राज्य के शासक को ब्रिटिश सेना अपने राज्य में रखनी पड़ती थी तथा उसके रख-रखाव के लिए अनुदान देश पड़ता था।
- सहायक संधि के अनुसार सामान्यतः भारतीय शासक को अपने यहाँ एक ब्रिटिश रेजीडेंट रखना पड़ता था।
- सहायक संधि से सम्बद्ध भारतीय शासक अंग्रेजों की स्वीकृति के बिना किसी और यूरोपीय को अपनी सेवा में नहीं रखेगा तथा गवर्नर जनरल से सलाह किए बिना किसी दूसरे भारतीय शासक से कोई वार्ता नहीं करेगा।
- इसके बदले अंग्रेज उस शासक की दुश्मनों से रक्षा करने का वचन देते थे तथा सहयोगी के आंतरिक मामलों में दखल नहीं देने का वादा करते थे।

सहायक संधि प्रथा के कारण सुरक्षा प्राप्त राज्य की सेनाएँ भंग कर दी गई। लाखों सैनिक और अधिकारी अपनी पैतृक जीविका से बचित हो गए, जिससे देश में बदहाली और गरीबी की स्थिति उत्पन्न हो गई।

- लॉर्ड वेलेजली ने सर्वप्रथम 1798 ई. और 1800 ई. में हैदराबाद के निजाम के साथ सहायक संधि की। सहायक सेनाओं के खर्च के लिए नगद पैसा देने के बजाए निजाम ने कंपनी को अपने राज्य का एक भाग दे दिया।
- 1801 ई. में अवध के नवाब को सहायक संधि के लिए विवश किया गया। एक बड़ी सहायक सेना के बदले में नवाब को विवश होकर अपना लगभग आधा राज्य अंग्रेजों को देना पड़ा, जिसमें रूहेलखंड का क्षेत्र और गंगा-यमुना का दोआब शामिल था।
- वेलेजली मैसूर, कर्नाटक और सूरत के साथ और भी कड़ाई से पेश आया। परन्तु मैसूर का टीपू सुल्तान कभी सहायक संधि के लिए तैयार नहीं हुआ।

**वेलेजली की सहायक संधि**

| | राज्य | वर्ष | | राज्य | वर्ष |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | हैदराबाद | 1798 | 5. | पेशवा | 1801 |
| 2. | मैसूर | 1799 | 6. | बरार के भोंसले | 1803 |
| 3. | तंजौर | 1799 | 7. | सिंधिया | 1804 |
| 4. | अवध | 1801 | | | |

- ब्रिटिश सेना ने 1799 ई. में टीपू पर आक्रमण किया और एक संक्षिप्त और भीषण युद्ध के बाद फ्रांसीसी सहायता पहुँचने के पहले ही उसे पराजित कर दिया।
- वह अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टनम् की रक्षा करते हुए 4 मई. 1799 को वीरगति को प्राप्त हुआ। टीपू का लगभग आधा राज्य अंग्रेजों और उनके सहयोगी निजाम के बीच विभक्त हो गया। मैसूर राज्य का शेष भाग पुराने वाड्यार राजाओं के वंशजों को वापस कर दिया गया।
- नए राजा को बाध्य कर एक विशेष सहायक संधि पर हस्ताक्षर कराए गए, जिसके अन्तर्गत यदि गवर्नर जनरल आवश्यक समझे तो राज्य का शासन स्वयं संभाल सकता है।
- 1801 ई. में लॉर्ड वेलेजली ने कर्नाटक के पिट्टू नवाब पर एक नई संधि सौंप दी तथा उसे विवश किया कि वह पेंशन लेकर अपना राज्य कंपनी को सौंप दे।
- मैसूर से मालाबार समेत जो क्षेत्र छीने गए थे, उनमें कर्नाटक को मिलाकर मद्रास प्रेसीडेंसी बनाई गई, जो 1947 ई. तक जारी रही। तंजौर और सूरत राज्य भी हड़प लिए गए तथा उनके शासकों को पेंशन देकर अलग कर दिया गया। अब एक प्रमुख शक्ति के रूप में केवल मराठे ही ब्रिटिश प्रभुत्व से बचे हुए थे। वेलेजली ने उनकी ओर ध्यान देना आरंभ किया।

इस समय मराठा साम्राज्य पाँच बड़े सरदारों का एक महासंघ था. जिसके अन्तर्गत पूना का पेशवा, बड़ौदा का गायकवाड़, ग्वालियर का सिंधिया इंदौर का होल्कर और नागपुर के भोसले को शामिल किया गया था।

- वेलेजली ने बार-बार पेशवा और सिंधिया के समय सहायक संधि का प्रस्ताव रखा था। 25 अक्टूबर, 1802 को जब दिवाली के दिन होल्कर ने पेशवा और सिंधिया की मिली-जुली सेना को पराजित कर दिया तो पेशवा बाजीराव द्वितीय भागकर अंग्रेजों की शरण में जा पहुँचा। 1802 ई. के अंतिम दिन उसने बसीन में एक सहायक संधि पर हस्ताक्षर किए।
- दक्षिण में आर्थर वेलेजली की कमान में ब्रिटिश सेना ने असाय में और फिर अरमागांव में सिंधिया और भोंसले की संयुक्त सेना को पराजित किया।
- उत्तर में लॉर्ड लेक ने लसवाड़ी में सिंधिया की सेना को नष्ट कर दिया और अलीगढ़, दिल्ली एवं आगरा पर अधिकार कर लिया।
- मराठा राज्यों को शांति वार्ता करनी पड़ी। अब वे दोनों कम्पनी के अधीनस्थ सहयोगी बन गए। उन्होंने अंग्रेजों को अपने राज्यों के कुछ भाग प्रदान किए. अपने दरबारों में अंग्रेज रेजिडेंट रखे और अंग्रेजों की सहमति के बिना यूरोपियों को सेवा में न रखने का वचन दिया। अब उड़ीसा के समुद्र तट और गंगा-यमुना के दोआब पर अंग्रेजों का पूर्ण अधिकार हो गया।

- यशवंतराव होल्कर अंग्रेजों के लिए अत्यन्त घातक सिद्ध हुआ और अंत तक ब्रिटिश सेना से लड़ता रहा। वेलेजली को भारत से वापस बुला लिया गया और कम्पनी ने जनवरी, 1806 ई. में राजघाट की संधि कर होल्कर के साथ शांति स्थापित कर ली तथा उसे उसके राज्य का एक बड़ा भाग लौटा दिया।

## ब्रिटिश शासन को सुदृढ़ बनाने का काम (1818-1857 ई.)

### सिंध की विजय

- 18वीं सदी में सिंध पर कल्लौर शासक राज करते थे। 1771 ई. में तालपुरों की एक बलूच जाति पहाड़ों से उतरकर सिंध के मैदानों में बस गई।
- 1783 ई. में मीर फतहअली खाँ ने सिंध पर प्रभुत्व जमा लिया और कल्लौरा के राजकुमार को देश से निर्वासित कर दिया।
- 1831 ई. में महाराजा रणजीत सिंह ने विलियम बेटिक से रोपड़ में भेंट के समय यह प्रस्ताव दिया था कि सिंध को जीत कर आधा-आधा बाँट लें। परन्तु बेटिक ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया था।

अंग्रेजों को भय था कि अफगानिस्तान या फारस के रास्ते रूसी भारत पर हमला कर सकते है। सिंध की विजय इसी का परिणाम थी।

- 1832 ई. की एक संधि के द्वारा सिंध की सड़कों और नदियों को ब्रिटिश व्यापार के लिए खोल दिया गया था। सिंध के अमीर कहलाने वाले सरदारों से 1839 ई. में सहायक संधि पर हस्ताक्षर कराए गए।
- सर चार्ल्स नेपियर ने 1843 ई. में एक संक्षिप्त अभियान के बाद सिंघ का अधिग्रहण कर लिया।

नेपियर ने अपनी डायरी में लिखा था कि हमें सिंध पर कब्जा करने का कोई हक नहीं है, फिर भी हम ऐसा करेंगे और यह बदमाशी का एक बहुत ही लाभदायक, उपयोगी और मानवीय उदाहरण होगा।

### पंजाब की विजय

- अब एक ही प्रमुख भारतीय राज्य पंजाब स्वतंत्र रह गया था. जो महाराजा रणजीत सिंह के अधीन था। रणजीत सिंह ने एक छोटी मिसल में 1792 ई. में अपनी सत्ता स्थापित की थी।
- रणजीत सिंह ने 1798 ई. में सतलज के पश्चिमी इलाकों की मिसलों को संगठित किया। 1801 ई. में इन मिसलों ने उसे पंजाब का महाराजा मान लिया।
- रणजीत सिंह ने अपने राज्य का विस्तार पेशावर, मुल्तान, कश्मीर, आदि पहाड़ी क्षेत्रों सहित एक विशाल क्षेत्र में कर लिया। अपनी सेना को आधुनिक ढंग से संगठित और सुसज्जित करने के लिए उसने यूरोपियों की सेवाएँ प्राप्त की।
- अंग्रेजों ने 1809 ई. में रणजीत सिंह के साथ एक मैत्री संधि की। परन्तु, 1839 ई. में महाराजा की मृत्यु के बाद स्थिति बदल गई।

### डलहौजी की राज्य अधिग्रहण की नीति (डाक्ट्रिन ऑफ लैप्स)

- (1848-1856) लॉर्ड डलहौजी 1848 ई. में गवर्नर-जनरल बनकर भारत आया। उसने घोषणा की थी कि भारत के सभी देशी राज्यों का अधिग्रहण अब कुछ ही समय की बात है।
- डलहौजी बिल्कुल विपरीत प्रकृति का व्यक्ति था अर्थात् यदि उसे कोई उचित बहाना मिलता तो वह राज्य को अंग्रेजी साम्राज्य में विलय कर लेता। उसकी विलय नीति, शक्ति पर आधारित और शांतिपूर्ण दोनों प्रकार की थी।

| डलहौजी की हड़प नीति | |
|---|---|
| अवध | कुशासन का आरोप |
| पंजाब, पेगू, (वर्मा) सिक्किम, लोअर | विलय के अधिकार द्वारा |
| सतारा, जैतपुर, सम्भल, बघाट, उदयपुर, झांसी, नागपुर | व्यपगत के सिद्धान्त द्वारा |
| तंजौर व कर्नाटक | नवाबों को उपाधियाँ छीन ली गई |

- डलहौजी की नीति का उद्देश्य, भारत से ब्रिटेन का निर्यात बढ़ाना था। लॉर्ड डलहौजी ने अपनी अधिग्रहण की नीति के लिए जिस साधन का सहारा लिया, उसे राज्य विलय का सिद्धांत (डॉक्ट्रिन ऑफ लैप्स) कहते हैं।

राज्य विलय सिद्धांत के अनुसार, यदि किसी सुरक्षा प्राप्त राज्य के शासक बिना एक स्वाभाविक उत्तराधिकारी के हो जाए तो उसका राज्य उसके दत्तक उत्तराधिकारी को नहीं सौंपा जाएगा। इसके अतिरिक्त, यदि उत्तराधिकारी गोद लेने के विषय में अंग्रेज अधिकारियों की सहमति प्राप्त नहीं होगी तो वह राज्य ब्रिटिश राज्य में मिला लिया जाएगा।

- 1848 ई. में सतारा, वर्ष 1853 ई. में झांसी और 1854 ई. में नागपुर सहित अनेक राज्यों का इसी सिद्धांत के अनुसार कर लिया गया था। नागपुर का विलय करते समय राजा को निय सम्पत्ति कंपनी ने ले ली। अधिग्रहण
- डलहौजी ने भूतपूर्व शासकों के अधिकारों को मान्यता देने और उन्हें पेंशन देने से इनकार कर दिया। इसी क्रम में उसने पेशवा बाजीराव के दत्तक पुत्र नाना साहब की पेंशन रोक दी। कर्नाटक व सूरत के नवाबों और तंजौर के राजा की उपाधियों छीन ली गई।
- अवध के नवाब के कई उत्तराधिकारी थे. इसलिए उस पर राज्य विलय का सिद्धांत लागू नहीं किया जा सकता था। लॉर्ड डलहौजी ने अवध की जनता की दशा सुधारने का विचार दिया।

| व्यपगत सिद्धांत के अंतर्गत अधिग्रहीत किए गए राज्य | | |
|---|---|---|
| राज्य | | सन् |
| सतारा | – | 1848 |
| जैतपुर | – | 1849 |
| संभलपुर | – | 1849 |
| उदयपुर | – | 1852 |
| झांसी | – | 1853 |
| नागपुर | – | 1854 |

- नवाब वाजिद अली शाह पर आरोप लगाया गया कि, उन्होंने अपना शासन ठीक से नहीं चलाया और सुधार लागू करने से इनकार कर दिया है। इसके बाद उसके राज्य को कुशासन के आरोप में 1856 ई. में हड़प लिया गया।

डलहौजी ने पृथक रूप से भारत में प्रथम बार सार्वजनिक निर्माण विभाग (PWD) की स्थापना की।

- 1854 ई. में गंगा नहर को सिंचाई के लिए खोला गया और अँड ट्रैक रोड की मरम्मत करायी गई।

**भारत में रेलवे का जनक**

- लॉर्ड डलहौजी को भारत में रेलवे का जनक माना जाता डलहौजी के प्रयत्नों के फलस्वरूप महाराष्ट्र में बम्बई से थाणे तक प्रथम रेल सन् 1853 में चलायी गयी थी।
- 1853 ई. में प्रथम तार लाइन कलकत्ता से आगरा तक शुरू की।
- 1854 ई. में नया पोस्ट ऑफिस एक्ट पारित किया गया। इसी समय भारत में पहली बार डाक टिकट जारी किया गया।

## बंगाल के गवर्नर एवं भारत के गवर्नर जनरल एवं वायसराय

### बंगाल के गवर्नर

**राबर्ट क्लाइव ( 1758-60 ई. ) एवं ( 1765-67 ई. )**

- इसने मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय को इलाहाबाद की द्वितीय संधि (1766 ई.) के द्वारा कंपनी के संरक्षण में ले लिया।
- अन्य गवर्नर- बरलास्ट (1667-69), कार्टियर (1769-72) वारेन हेस्टिंग्स (1772-74)।

### बंगाल के गर्वनर जनरल

**वारेन हेस्टिंग्स ( 1774-85 ई. )**

- 1772 में वारेन हेस्टिंग्स बंगाल का गवर्नर और 1773 के रेग्युलेटिंग एक्ट के द्वारा 1774 में बंगाल का पहला गर्वनर जनरल बनाया गया। उसने राजस्व सुधार के लिए बोर्ड ऑफ रेवेन्यू की स्थापना की।
- उसने सरकारी खजाना मुर्शिदाबाद से कलकत्ता स्थानान्तरित किया।
- बनारस के राजा चैत सिंह के साथ विवादास्पद संबंध, ब्राह्मण नंदकुमार को फाँसी, अवध की बेगमों से ज्यादती, इसके कारण हेस्टिंग्स के इंग्लैण्ड वापस लौटने पर बर्क के आरोप पर ब्रिटिश पार्लियामेंट में महाभियोग चलाया गया। किन्तु वह आरोप मुक्त हुआ।
- कलकत्ता को बंगाल की राजधानी घोषित किया।
- हेस्टिंग्स ने जमींदारों से न्यायिक अधिकार छीनकर 1772 ई. में प्रत्येक जिले में एक दीवानी न्यायालय एवं एक सदर न्यायालय स्थापित करवाया।
- उसने मुगल सम्राट को मिलने वाली 26 लाख रुपये की वार्षिक पेंशन बन्द करवा दी।
- पिट्स इंडिया ऐक्ट (1784) के विरोध में हेस्टिंग्स ने इस्तीफा दे दिया।

**लॉर्ड कॉर्नवालिस ( 1786-93 ) और दूसरा कार्यकाल ( 1805 ई. )**

- इसने जिले की समस्त शक्ति कलेक्टर के हाथों में केन्द्रित कर दी।
- इसने भारतीय न्यायाधीशों से युक्त जिला फौजदारी अदालतों को समाप्त कर उसके स्थान पर तीन बंगाल एवं एक बिहार के लिए कुल चार भ्रमणशील अदालतें स्थापित करवाई।
- कार्नवालिस ने 1793 में शक्तियों के पृथकीकरण सिद्धान्त पर आधारित कार्नवालिस कोड का निर्माण करवाया। इसके द्वारा कलेक्टरों की न्यायिक शक्ति छीन ली गई और उसके पास मात्र कर संबंधी अधिकार रहे। उसने वकालत पेशा को नियमित बनाया।
- उसने ग्रामीण क्षेत्रों व जमींदार को पुलिस अधिकार से वंचित कर दिया।
- जिलों में पुलिस थाना की स्थापना कर एक दारोगा को इसका इन्चार्ज बनाया गया।
- प्रशासन का यूरोपीयकरण किया। अब भारतीयों को सेना में सूबेदार, जमादार, प्रशासनिक सेवा में मुंसिफ, सदर, अमीन या डिप्टी कलेक्टर से ऊँचा पद नहीं दिया जा सकता था।
- सिविल सेवायें प्रारम्भ कीं। इसलिए कॉर्नवालिस को 'नागरिक सेवा का जनक' कहा जाता है।

**सर जॉन शोर ( 1793-98 ई. )**

- इसने अहस्तक्षेप की नीति अपनाई।

**लॉर्ड वेलेजली ( 1798-1805 ई.-बंगाल का शेर )**

- इसने सहायक संधि की नीति अनिवार्य की। भारत में यह नीति सर्वप्रथम डूप्ले (फ्रांसीसी गवर्नर) ने अपनाया।
- सहायक संधि स्वीकार करने वाले राज्य थे– हैदराबाद (1798), मैसूर (1799), तंजौर (1799), अवध (1801), पेशवा (1801), भोंसले (1803), सिंधिया (1804), जोधपुर, जयपुर, मच्छेड़ी, बूंदी तथा भरतपुर।
- उसने कलकत्ता में नागरिक सेवा में भर्ती किये गये युवकों को प्रशिक्षित करने के लिए फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की।
- इसने ईस्ट इंडिया कम्पनी को व्यापारिक कम्पनी के स्थान पर एक शक्तिशाली राजनैतिक शक्ति के रूप में स्थापित किया।

**सर जार्ज वार्लो ( 1805-07 )**

- रियासतों में अहस्तक्षेप की नीति का समर्थक था। इसी के समय वेल्लौर का सिपाही विद्रोह (1806) हुआ।

**लॉर्ड मिन्टो प्रथम ( 1807-13 ई. )**

- लॉर्ड मिन्टो प्रथम ने बुन्देलखण्ड एवं नागपुर के विद्रोह को दबाया।

**लॉर्ड हेस्टिंग्स ( 1813-23 ई. )**

- आंग्ल-नेपाल युद्ध (1814-16) में अंग्रेजी सेनापति जनरल आक्टरलोनी, कर्नल निकलसन व गार्डनर ने गोरखा राजा अमर सिंह थापा को आत्मसमर्पण के लिए विवश किया और दोनों के बीच 1816 में संगोली की संधि हुई। सिक्किम अंग्रेजों को मिला।
- इसने पिण्डारियों का दमन किया। इसके नेता वासिल मुहम्मद, चीतू एवं करीम खाँ थे।
- इसने प्रेस से प्रतिबंध हटा लिया। मराठों को अन्तिम रूप से पराजित किया।

**लॉर्ड एमहर्स्ट ( 1823-28 ई. )**

- प्रथम आंग्ल-वर्मा युद्ध (1824-26) में अंग्रेजों ने वर्मा को पराजित किया और 1826 में दोनों के मध्य यांडूब की संधि हुई।
- 1824 का बैरकपुर का सैन्य विद्रोह भी इसी के समय में हुआ।

### लॉर्ड विलियम कैवेडिश बैंटिक ( 1828-1835 )

- मिल तथा बेंथम के विचारों से प्रभावित बैंटिक कट्टर ह्विग (उदारवादी) था।
- बैंटिक 1803 में मद्रास का गवर्नर बना। उसी के समय 1806 में माथे पर जातीय चिन्ह लगाने तथा कानों में बालियाँ न पहनने देने पर वेल्लौर में सैनिकों ने विद्रोह कर दिया।
- 1833 के एक्ट द्वारा भारत का पहला गवर्नर जनरल विलियम बैंटिक हुआ।
- बैंटिक ने राजा राममोहन राय के सहयोग से 1829 में बंगाल में, 1830 में समस्त भारत में धारा 17 के द्वारा सती प्रथा पर प्रतिबंध लगा दिया।
- बैंटिक ने कर्नल स्लीमन के सहयोग से 1830 तक ठगी प्रथा को पूर्णतया समाप्त कर दिया।
- बैंटिक ने 1833 के एक्ट द्वारा धारा 87 के अनुसार योग्यता को ही सेवा का आधार माना न कि जाति या रंग को।
- बैंटिक ने मैकाले की अनुशंसा पर अंग्रेजी को शिक्षा का माध्यम बनाया।
- 1835 में बैंटिक ने कलकत्ता में कलकत्ता मेडिकल कॉलेज की नींव रखी।
- बैंटिक ने मैसूर (1831), दुर्ग (1834) एवं मध्य कछार (1834) का कंपनी साम्राज्य में विलय किया।
- बैंटिक कार्नवालिस द्वारा स्थापित प्रान्तीय अपीलीय तथा सरकिट न्यायालयों को बन्द करवा दिया। इसका कार्य मजिस्ट्रेटों तथा कलेक्टरों में बाँट दिया।
- न्यायालय में फारसी के स्थान पर स्थानीय भाषाओं के प्रयोग की अनुमति दी।
- बैंटिक ने खराब स्वास्थ्य के कारण इस्तीफा दिया।

### चार्ल्स मेटकॉफ ( 1835-36 )

- इसने प्रेस से नियंत्रण हटाया। इसीलिए इसे भारतीय प्रेस का मुक्तिदाता कहा जाता है।

### लॉर्ड ऑकलैण्ड ( 1836-42 )

- इसके समय प्रथम अफगान युद्ध (1839-42) हुआ। 1839 में ऑकलैंड ने कलकत्ता से दिल्ली के ग्रांड ट्रंक रोड की मरम्मत करवाया।

### लॉर्ड एलिनबरो ( 1842-44 )

- इसके समय 1833 के एक्ट द्वारा 1843 में दास प्रथा को प्रतिबंधित कर दिया गया।
- इसके समय प्रथम आंग्ल-अफगान युद्ध समाप्त हुआ और दास-प्रथा का उन्मूलन हुआ।
- इसने अगस्त 1843 में सिंध को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया।

### लॉर्ड हार्डिंग ( 1844-48 )

- प्रथम आंग्ल-सिख युद्ध हुआ। इसने नरबलि एवं सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाया।
- इसने उत्पाद कर से बहुत सी वस्तुओं को कर मुक्त किया।

### लॉर्ड डलहौजी ( 1848-56 )

- डलहौजी द्वितीय आंग्ल-वर्मा युद्ध में वर्मा को पराजित कर लोअर वर्मा एवं पीगू का अंग्रेजी साम्राज्य में 1852 में विलय कर लिया।
- डलहौजी ने सिक्किम पर दो अंग्रेज डॉक्टरों के साथ दुर्व्यवहार का आरोप लगाकर 1850 में अधिकार कर लिया।
- डलहौजी ने व्यपगत सिद्धांत (Doctrine of Lapse) के आधार पर अनेक रियासतों को ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया। ऐसे राज्य थे– सतारा (सर्वप्रथम-1848), जैतपुर एवं संभलपुर (1849), बघाट (1850), उदयपुर (1852), झाँसी (1853), नागपुर (1854), करौली (1855, कोर्ट ऑफ डायरेक्टर ने नामंजूर कर दिया।)
- डलहौजी ने 1853 में कर्नाटक के नवाब की पेंशन बंद करवा दी।
- डलहौजी अवध पर कुशासन का आरोप लगाकर उसे 1856 में अंग्रेजी राज्य में मिला लिया। अन्तिम अवध नवाब वाजिद अली शाह था।
- उसने तोपखाने का मुख्यालय कलकत्ता से मेरठ एवं सैन्य मुख्यालय शिमला में स्थापित किया।
- इसने शिमला को ग्रीष्मकालीन राजधानी बनाया।
- डलहौजी को भारत में रेलवे का जनक माना जाता है। इसी के समय सर्वप्रथम 16 अप्रैल 1853 को बम्बई से थाने के बीच 34 किमी. रेल चलाई गई।
- इसी के समय पोस्ट ऑफिस एक्ट पारित हुआ और भारत में पहली बार डाक टिकट का प्रचलन आरम्भ हुआ। 2 पैसे की दर से भारत में कहीं भी पत्र भेजा जा सकता था।
- इसने पृथक रूप से भारत में पहली बार सार्वजनिक निर्माण विभाग की स्थापना की।
- डलहौजी ने भारत के बन्दरगाहों को अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लिए खोल दिया।
- कराची, कलकत्ता एवं बम्बई के बन्दरगाहों को आधुनिक बनाने का प्रयास किया गया।
- 1854 में एक स्वतंत्र विभाग के रूप में लोक सेवा विभाग की स्थापना की।
- इसने कलकत्ता एवं आगरा के बीच पहली बार तार सेवा शुरू करवाया।
- इसने धारा 90 के तहत ईसाई धर्म स्वीकार करने वाले को पैतृक संपत्ति में अधिकार घोषित किया।

### लॉर्ड कैनिंग ( 1856-62 ई. )

- यह भारत में कम्पनी द्वारा नियुक्त अन्तिम गवर्नर जनरल तथा ब्रिटिश सम्राट के अधीन नियुक्त भारत का प्रथम वायसराय था।
- कैनिंग ने ब्रिटिश अर्थशास्त्री विल्सन को भारत बुलाया।
- इसने 500 रु. से अधिक आय पर आयकर लगाया और आयात पर 10% एवं निर्यात पर 4% कर निश्चित किया।
- इसके समय इंडियन हाई कोर्ट एक्ट द्वारा बम्बई, कलकत्ता एवं मद्रास में एक-एक उच्च न्यायालय की स्थापना की गई।

- इसने 1859 में नागरिक विधि संहिता, 1860 में मैकाले द्वारा तैयार भारतीय दण्ड संहिता (IPC) तथा 1861 में फौजदारी विधि संहिता का निर्माण करवाया।
- कैनिंग ने 1861 में पुलिस विभाग का गठन किया।
- इसी के समय विधवा पुनर्विवाह अधिनियम 1856 पारित हुआ। धारा-15 के द्वारा विधवाओं को विवाह का वैधानिक अधिकार मिला।
- लॉर्ड एल्गिन (1862-62) इसके समय वहाबी आंदोलन का दमन हुआ। 1863 में पंजाब में इसकी मृत्यु हुई। इसने पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत में कबाइलियों के दमन के लिए अभियान चलाया।

**लॉर्ड लारेंस ( 1864-69 )**

- 1865 में भूटानियों ने ब्रिटिश भारत पर आक्रमण कर दिया।
- अफगानिस्तान के साथ अहस्तक्षेप (शानदार निष्क्रियता) की नीति अपनाई।
- 1866 में उड़ीसा में तथा 1868-69 में बुन्देलखण्ड एवं राजपूताना में अकाल पड़ा। फलत: लारेन्स ने चैम्बवेल हेनरी की अध्यक्षता में एक अकाल आयोग का गठन किया।
- उसने 1865 में भारत एवं यूरोप के बीच प्रथम समुद्री टेलीग्राफ सेवा शुरू की।

**लॉर्ड मेयो ( 1869-72 )**

- भारतीय युवराजों को राजनीतिक प्रशिक्षण देने के लिए उसने अजमेर में मेयो कॉलेज की स्थापना करवाया।
- भारतीय सांख्यिकी सर्वेक्षण की स्थापना हुई।
- कृषि एवं वाणिज्य विभाग की स्थापना 1872 में हुई।
- 1871 में भारत में प्रथम जनगणना इसी के समय में हुई।
- एक अफगान ने 1872 में चाकू मार कर मेयो की हत्या कर दी।

**लॉर्ड नॉर्थब्रुक ( 1872-76 )**

- इसने आयकर को समाप्त कर दिया। 1875 में प्रिंस ऑफ वेल्स ने भारत भ्रमण किया।
- इसी के समय नैटिव मैरिज एक्ट 1872 में पारित हुआ और अन्तर्जातीय विवाह को मान्यता मिली।
- इसने बड़ौदा के मल्हारराव गायकवाड़ को भ्रष्टाचार के आरोप में पदच्युत कर मद्रास भेज दिया।
- इसके समय पंजाब में कूका आंदोलन हुआ।

**लॉर्ड लिटन ( 1876-1880 )**

- यह एक साहित्यकार था, जिसके कारण उसे ओवन मैरिडिथ के नाम से जाना जाता था।
- उसने 29 वस्तुओं से आयात कर हटा दिया।
- रिचर्ड स्ट्रेची की अध्यक्षता में एक अकाल आयोग की स्थापना की।
- उसने दिल्ली में 1 जनवरी 1877 को ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया को कैसर-ए-हिन्द की उपाधि से सम्मानित करने के लिए दिल्ली दरबार का आयोजन करवाया।
- मार्च 1878 में लिटन ने वर्नाक्यूलर प्रेस अधिनियम पारित कर भारतीय समाचार पत्रों पर कठोर प्रतिबंध लगा दिया।
- 1878 में भारतीय शस्त्र अधिनियम पारित हुआ। इसके तहत कोई भी व्यक्ति बिना लाइसेंस के शस्त्र धारण नहीं कर सकता था।
- उसने सिविल सेवा परीक्षा में प्रवेश की अधिकतम आयु 21 वर्ष से घटाकर 19 वर्ष कर दिया।
- लिटन की गलती के कारण द्वितीय आंग्ल-अफगान युद्ध में अंग्रेजी सेना असफल रही।

**लॉर्ड रिपन ( 1880-89 )**

- रिपन ने 1882 में वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट को समाप्त कर दिया।
- उसने स्थानीय स्वशासन की शुरुआत की। इसके अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय बोर्ड, जिले में जिला उपविभाग, तहसील बोर्ड एवं नगरों में नगरपालिका का गठन किया गया।
- रिपन के समय पहली बार नियमित जनगणना का आरम्भ 1881 में किया गया, तब से अब तक प्रत्येक दस वर्ष पर नियमित जनगणना होती रही है।
- रिपन द्वारा 1881 में प्रथम कारखाना अधिनियम लाया गया।
- रिपन ने वित्तीय विकेन्द्रीकरण की नीति का नियमितीकरण किया।
- उसने 1882 में सर विलियम हण्टर की अध्यक्षता में एक शैक्षिक आयोग का गठन किया।
- इल्बर्ट विवाद (1883-84) एवं मिश्र सैन्य अभियान में व्यय के मुद्दे पर मतभेद के कारण रिपन ने त्यागपत्र दे दिया।
- फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने रिपन को भारत के उद्धारक की संज्ञा दी है।
- ब्रिटिश शासन काल में रिपन के शासनकाल को स्वर्णयुग कहा जाता है।

**लॉर्ड डफरिन ( 1884-88 )**

- इसके समय तृतीय आंग्ल-वर्मा युद्ध (1885-88) में वर्मा को पराजित कर अन्तिम रूप से ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिया गया।
- इसके समय ए.ओ. ह्यूम ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना की।
- इसके समय में ही बंगाल टेनेन्सी एक्ट, अवध टेनेन्सी एक्ट तथा पंजाब टेनेन्सी एक्ट पारित किया गया।

**लॉर्ड लैन्सडाउन ( 1888-94 )**

- इसने सिविल सेवाओं का इम्पीरियल, प्रांतीय एवं अधीनस्थ सेवाओं में वर्गीकरण किया।
- 1891 में द्वितीय कारखाना अधिनियम पारित किया गया।
- भारत और अफगानिस्तान के बीच सीमा निर्धारण के लिए डूरण्ड आयोग का गठन किया गया।
- ऐज ऑफ कन्सेट एक्ट 1891 में पारित हुआ। जिसमें लड़की के विवाह की आयु 12 वर्ष कर दिया गया।

**लॉर्ड एल्गिन द्वितीय ( 1894-99 )**

- एल्गिन ने भारत के विषय में कहा था कि "भारत को तलवार के बल पर विजित किया गया है और तलवार के बल पर ही उसकी रक्षा की जाएगी।"

- उसने 1897 में लायल की अध्यक्षता में एक अकाल आयोग का गठन किया।
- एल्गिन के समय चितराल एवं अफरीदियों की समस्या उभरी।

**लॉर्ड कर्जन ( 1899-1905 )**

- उसने 1902 में सर एण्ड्रयू फ्रेजर की अध्यक्षता में एक पुलिस आयोग की स्थापना की।
- उसने 1902 में सर टामस रैले की अध्यक्षता में विश्वविद्यालय आयोग का गठन किया।
- सर एण्टनी मेकडॉनल की अध्यक्षता में एक अकाल आयोग का गठन हुआ।
- कर्जन ने 1901 में सर कॉलिनस्कॉट मानक्रीफ की अध्यक्षता में एक सिंचाई आयोग का गठन किया।
- उसने स्वर्ण विनियम प्रमाण योजना शुरू किया।
- उसने रेलवे बोर्ड की स्थापना की और रेलवे विशेषज्ञ राबर्टसन को इंग्लैण्ड से भारत बुलाया।
- सैन्य अधिकारियों के प्रशिक्षण के लिए क्वेटा में एक कॉलेज स्थापित करवाया।
- इसके ही समय में कलकत्ता में विक्टोरिया मेमोरियल हॉल का निर्माण हुआ।
- उसने प्राचीन स्मारक परीक्षण अधिनियम-1904 पारित करवाया एवं भारतीय पुरातत्व विभाग की स्थापना किया।
- इसी के समय पूसा में कृषि अनुसंधान केंद्र एवं कृषि बैंक की स्थापना हुई।
- कर्जन ने 1904 में तिब्बत में यंगहस्बैंड मिशन भेजा।
- फ्रेजर के अनुसार भारत में राष्ट्रीयता का संचार कर्जन के समय से ही शुरू हुआ।
- गोखले ने कर्जन की तुलना औरंगजेब से की।
- इसी के समय 16 अक्टूबर 1905 को बंगाल विभाजन हुआ।

**लॉर्ड मिण्टो द्वितीय ( 1905-10 )**

- इसके ही समय में 1907 में आंग्ल एवं रूसी प्रतिनिधियों के बीच बैठक के बाद दोनों के मध्य के सभी मतभेद सुलझ गये।
- इसी के समय 1907 में सूरत अधिवेशन में कांग्रेस का विभाजन हो गया।

**लॉर्ड हार्डिंग द्वितीय ( 1910-15 )**

- 12 दिसम्बर 1911 को दिल्ली दरबार का आयोजन किया गया, जिसमें ब्रिटिश राजा जार्ज पंचम का भारत आगमन हुआ। उसने बंगाल विभाजन को रद्द किया और कलकत्ता के स्थान पर दिल्ली को राजधानी घोषित किया। बंगाल विभाजन रद्द किया गया। बिहार एक अलग राज्य बना जिसमें उड़ीसा भी शामिल था।
- 23 दिसम्बर 1912 को दिल्ली में प्रवेश करते समय हार्डिंग पर बम फेंका गया।
- 1 अप्रैल 1912 को दिल्ली भारत की राजधानी बनी।
- इसी के समय 4 अगस्त 1914 को प्रथम विश्वयुद्ध आरम्भ हुआ।
- इसी के समय तिलक एवं एनीबेसेन्ट ने होम रूल लीग (1915) की स्थापना की।
- हार्डिंग 1916 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय का कुलाधिपति नियुक्त हुआ।
- मदन मोहन मालवीय द्वारा 1915 में हिन्दू महासभा की स्थापना हुई।

**लॉर्ड चेम्सफोर्ड ( 1916-21 )**

- तृतीय अफगान युद्ध इसी के समय हुआ।
- एस.पी. सिन्हा को बिहार के गवर्नर के पद पर नियुक्ति इसी के समय हुई। गवर्नर बनने वाले वे प्रथम भारतीय थे।
- 1916 में पूना में महिला विश्वविद्यालय की स्थापना हुई।

**लॉर्ड रीडिंग ( 1921-26 ई. )**

- इसके काल में ही प्रिंस ऑफ वेल्स की नवम्बर 1921 में भारत की यात्रा हुई। इस दिन भारत में हड़ताल का आयोजन किया गया।
- 1910 के प्रेस ऐक्ट एवं 1919 के रौलेट ऐक्ट की वापसी हुई।
- 1923 से आई.सी.एस. की परीक्षा दिल्ली एवं लंदन दोनों जगह कराने का निर्णय लिया गया।
- दिल्ली एवं नागपुर में विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई।
- रीडिंग के समय में 1922 में विश्वभारती विश्वविद्यालय ने कार्य करना आरम्भ किया।
- दिसम्बर 1925 में आर्यसमाजी राष्ट्रवादी नेता स्वामी श्रद्धानंद की हत्या कर दी गई।

**लॉर्ड इरविन ( 1926-31 )**

- देसी रियासतों के संबंध में 1927 में हार्टोग बटलर समिति की नियुक्ति हुई।
- लॉर्ड इरविन द्वारा 1929 में दीपावली घोषणा की गई।
- ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कांफ्रेंस का आयोजन दिसम्बर 1927 में हुआ।

**लॉर्ड विलिंगटन ( 1931-36 क्रिश्चियन वायसराय )**

- 1935 में इन्हीं के समय बर्मा भारत से अलग हुआ।
- बिहार में 1934 में भयंकर भूकम्प आया।
- लॉर्ड विलिंगटन ने कांग्रेस के बम्बई अधिवेशन 1915 में हिस्सा लिया था।
- 1930 में शारदा एक्ट पारित हुआ, जिसमें लड़की के विवाह की आयु 14 और लड़के की 18 कर दिया गया।

**लॉर्ड लिनलिथगो ( 1936-43 )**

- 1937 में पहली बार कांग्रेस ने चुनाव में भाग लिया और 11 में से 7 प्रांतों में सरकार बनाई।
- 1 सितम्बर 1939 को द्वितीय विश्वयुद्ध आरम्भ हुआ। ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों से बिना पूछे भारत को युद्ध में शामिल कर लिया। फलतः कांग्रेसी मंत्रिमण्डल ने इस्तीफा दे दिया।
- मुस्लिम लीग ने कांग्रेस मंत्रिमण्डल के त्यागपत्र को मुक्ति दिवस के रूप में मनाया।
- 1943 में भयंकर अकाल पड़ा।

**लॉर्ड वेवेल ( 1943-47 )**

- इसके समय राजनीतिक समाधान के लिए 1945 में शिमला सम्मेलन का आयोजन किया गया।
- **लॉर्ड माउंटबेटन ( मार्च 1947-जून 1958 )** यह ब्रिटिश भारत का अंतिम गवर्नर जनरल एवं वायसराय था तथा स्वतंत्र भारत का प्रथम गवर्नर जनरल था।
- स्वतंत्र भारत के प्रथम एवं अंतिम भारतीय गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी हुए।

## आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास

### कृषि-व्यवस्था

- कार्नवालिस ने 1790 में दस वर्षीय व्यवस्था शुरू किया, जिसे 1893 में स्थायी कर दिया गया। इसे ही स्थायी भूमि बन्दोबस्त (सूर्यास्त नियम) कहा जाता है।
- इसके तहत जमींदारों का अधिकार वंशानुगत एवं हस्तांतरणीय था।
- जमींदारों को लगान का 10/11 भाग राज्य को देना पड़ता था तथा 1/11 भाग पर उसका अधिकार होता था।
- स्थायी बंदोबस्त, बंगाल, बिहार, उड़ीसा, मद्रास के उत्तरी जिले एवं बनारस में लागू था।

गवर्नर-जनरल वारेन हेस्टिंग्स ने 1772 ई. में बंगाल में द्वैध शासन व्यवस्था को समाप्त कर फार्मिंग सिस्टम (इजारेदारी प्रथा) का प्रारम्भ भू-राजस्व की वसूली के लिए किया। फार्मिंग सिस्टम के अन्तर्गत कम्पनी किसी क्षेत्र या जिले के भू-क्षेत्र से राजस्व वसूली की जिम्मेदारी उसे सौंपती थी, जो सबसे अधिक बोली लगाता था।

- 1819 में हाल्ट मैकेंजी द्वारा सर्वप्रथम महालवारी व्यवस्था का प्रस्ताव लगाया गया।
- महालवारी व्यवस्था उत्तर प्रदेश, मध्य प्रांत एवं पंजाब में लगू थी।

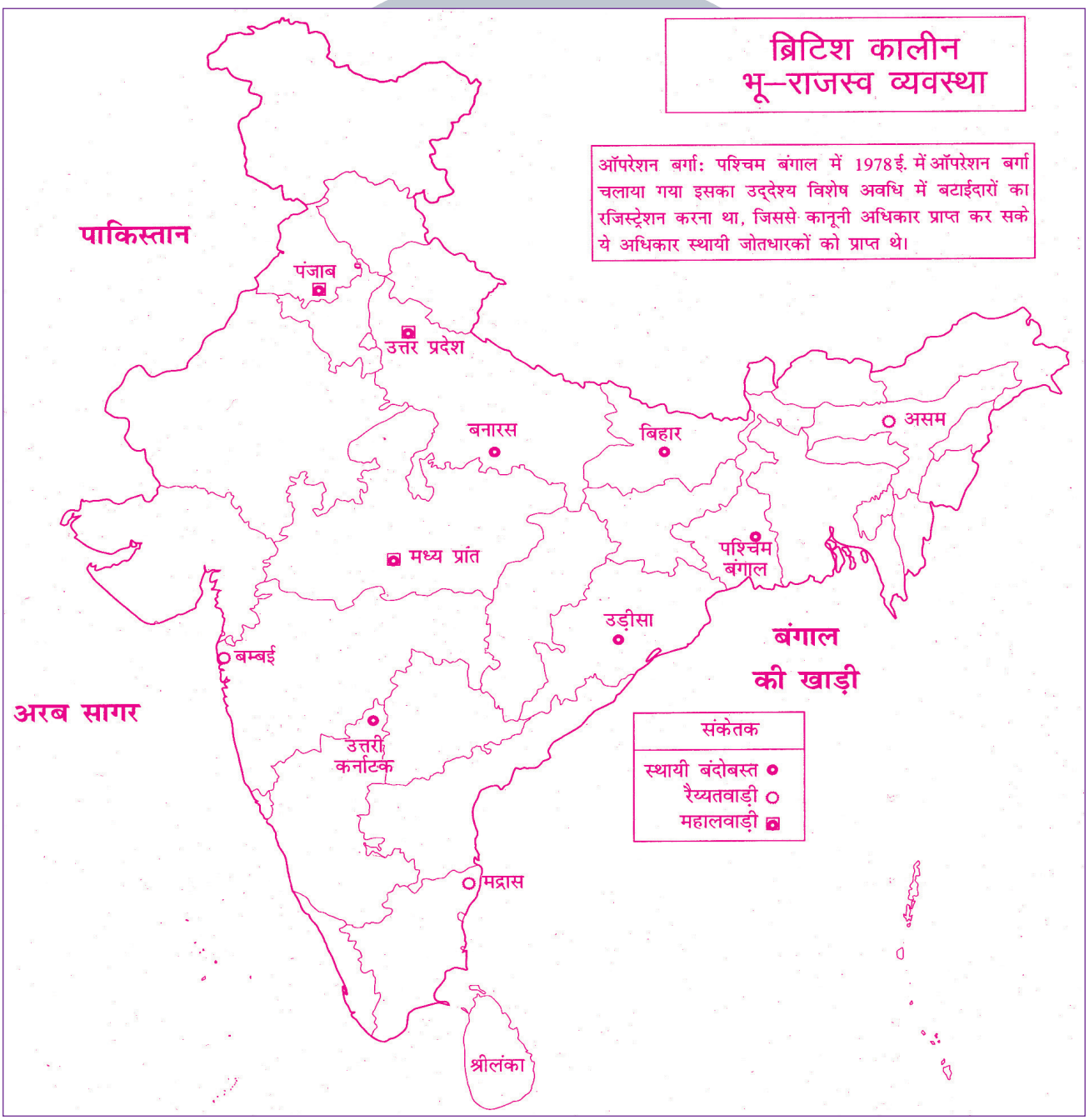

वारेन हेस्टिंग्स के समय में कंपनी ने बंगाल और बिहार में राजस्व वसूली के अधिकार की नीलामी प्रारम्भकी थी। ऐसा व्यक्ति जो सबसे ऊँची बोली लगाता था, उसे एक निश्चित क्षेत्र से राजस्व वसूल करने के अधिकार दे दिए जाते थे। उसे जमींदारी व्यवस्था कहते थे।

- रैयतवाड़ी व्यवस्था सर्वप्रथम थामस मुनरो एवं कैप्टन रीड द्वारा मद्रास प्रांत के बारामहल जिले में लागू की गई।
- रैयतवाड़ी व्यवस्था में किसानों को अधिक लगान लिये जाने के विरुद्ध न्यायालय में जाने की अनुमति नहीं थी।
- ब्रिटिश भारत के कुल 19% भू-भाग पर स्थायी बंदोबस्त, 30% भू-भाग पर महालवारी व्यवस्था एवं 51% भू-भाग पर रैयतवाड़ी व्यवस्था लागू थी।
- रैयतवाड़ी व्यवस्था मद्रास, बम्बई एवं असम में लागू थी।
- विऔद्योगीकरण एवं धन की निकासी संबंधी विचारों को सर्वप्रथम दादा भाई नौरोजी ने उद्घटित किया।
- ताराशंकर बंदोपाध्याय का उपन्यास गणदेवता में जजमानी प्रथा का वर्णन है।
- कवासजी नाना भाई ने 1854 में प्रथम सूती मिल की स्थापना बम्बई में की।

**प्रमुख कृषि पद्धतियाँ**

| | प्रथा | विशेषता |
|---|---|---|
| 1. | तिनकठिया प्रथा | बिहार के चम्पारण जिले में किसानों को इस प्रथा के अतर्गत अंग्रेज नील बागानों से अनुबंध के तहत अपनी भूमि के 3/20 भाग पर नील की खेती करनी पड़ती थी। |
| 2. | दुबला हाली प्रथा | इस प्रथा अमब 4 अनुसार दुबला हाली प्रथा के अंतर्गत भू-दास अपनी सम्पत्ति एवं स्वयं का संरक्षक अपने मालिकों को मानते थे। यह प्रथा सूरत में प्रचलित थी। |
| 3. | ददनी प्रथा | इस प्रथा के अंतर्गत ब्रिटिश व्यापारी, भारतीय उत्पादकों, कारीगरों, शिल्पियों आदि को निर्मित माल प्राप्त करने के लिए अग्रिम अथवा पेशगी के रूप में धन देते थे। |
| 4. | कमियौटी प्रथा | इस प्रथा के अनुसार कृषि दास के रूप में खेती करने वाली कमिया जाति अपने मालिकों से मिले ऋण के ब्याज के बदले जीवनपर्यंत उनकी सेवा करते थे। यह प्रथा बिहार व उड़ीसा में प्रचलित थी। |

- 1855 में जार्ज आकलैण्ड द्वारा बंगाल के रिसरा में जूट मिल स्थापित की गई।
- 1907 में जमशेदजी टाटा ने टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी की स्थापना की।
- जल विद्युत की शुरुआत 1898 में दार्जिलिंग शहर को रौशनी प्रदान करने के लिए किया गया।
- 1916 में राजस्थान के बूँदी में पोर्टलैण्ड सीमेंट का उत्पादन शुरू हुआ।
- 1854 में कलकत्ता से रानीगंज के बीच दूसरी रेलवे लाईन स्थापित की गई।
- 1925 में रेल बजट को आम बजट से अलग कर दिया गया और उसी वर्ष दो निजी कंपनियों- ईस्ट इंडियन रेलवे एवं ग्रेट इंडियन पेनिन्सुलर रेलवे की स्थापना हुई।

## शैक्षणिक आयोग एवं सिफारिशें

| आयोग/समिति | मुख्य सिफारिशें |
|---|---|
| जेम्स टामसन प्लान (1843) | ये देशी भाषा द्वारा ग्रामीण शिक्षा की विस्तृत योजना थी। |
| वुड डिस्पैच (1854) | कंपनी के अधीनस्थ पांच प्रांतों में जन अनुदेश के लिए एक विभाग खोला जाये तथा कलकत्ता, मद्रास व बम्बई में विश्वविद्यालयों की स्थापना की जाये। इसमें उच्च शिक्षा का सबसे अच्छा माध्यम अंग्रेजी बताया गया। |
| हंटर शिक्षा आयोग (1882) | इसकी सिफारिशें प्राथमिक तथा माध्यमिक शिक्षा तक ही सीमित थीं। प्राथमिक शिक्षा स्थानीय भाषा में हो। निजी प्रयासों को अधिनियम प्रोत्साहन। नारी शिक्षा के पर्याप्त प्रबंध का निर्देश। |
| रैले आयोग (1902) | इसकी सिफारिशें विश्वविद्यालय शिक्षा तक सीमित थीं। विश्वविद्यालय को अध्ययन व शोध के लिए प्राध्यापकों की नियुक्ति करनी चाहिए। गवर्नर को विश्वविद्यालय की क्षेत्रीय सीमायें निश्चित करने का अधिकार दिया गया। |
| सैडलर आयोग (1917-19) | इस आयोग ने प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय शिक्षा के अलावा महिला शिक्षा के लिए स्वायत्तापूर्ण संस्थाओं की स्थापना तथा व्यावहारिक शिक्षा पर जोर दिया। |
| हॉर्टोग समिति (1929) | इसने प्राथमिक शिक्षा के राष्ट्रीय महत्व पर बल दिया। परन्तु शीघ्र प्रसार अथवा अनिवार्यता की नीति की निंदा की। उसने सुधार व एकीकरण की नीति की सिफारिश की। |
| सार्जेण्ट योजना (1944) | इस योजना ने एक राष्ट्रीय शिक्षा योजना तैयार की। 6-11 वर्ष के बच्चों के लिए व्यापक, निःशुल्क तथा अनिवार्य शिक्षा का प्रबंध करने को कहा। |
| राधाकृष्णन आयोग (1948-49) | इस आयोग ने विश्वविद्यालय शिक्षा पर अपनी रिपोर्ट पेश की। इस आयोग के अनुसार विश्वविद्यालय से पूर्व 12 साल का अध्ययन होना चाहिए। |
| कोठारी शिक्षा आयोग (1964) | इस आयोग ने शिक्षा पद्धति के लचीलेपन की आवश्यकता पर बल दिया। कार्य अनुभव तथा नैतिक शिक्षा पर बल दिया गया। |

- 1781 में वारेन हेस्टिंग्स ने अरबी एवं फारसी के अध्ययन के लिए कलकत्ता में मदरसा बनवाया।
- 1791 में जोनाथन डंकन ने बनारस में संस्कृत विद्यालय बनवाया।
- 1823 में लोकशिक्षा समिति का गठन किया गया।
- 1813 ई. के चार्टर एक्ट द्वारा एक लाख रुपये विद्या प्रसार, साहित्य पुनरुद्धार एवं विज्ञान के आरम्भ एवं उन्नति के लिए दिया गया।
- 1937 में गाँधी जी ने वर्धा योजना प्रस्तुत किया।
- कोठारी शिक्षा आयोग के आधार पर 1968 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा की गई।
- राधाकृष्णन आयोग के आधार पर 1953 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का गठन किया गया।

## 1857 की महान क्रांन्ति

- 21 मार्च 1857 में गाय एवं सूअर की चर्बीवाले कारतूस को बैरकपुर के 34वीं नेटिव इन्फैन्ट्री के एक सिपाही मंगल पांडे ने उपयोग करने से मना कर दिया। फलतः उसे 8 अप्रैल 1857 को फाँसी दे दी गई।
- 10 मई 1857 को मेरठ की पैदल टुकड़ी 20 एन.आई ने क्रांति की शुरुआत की।
- 1857 की क्रांति के समय ब्रिटिश प्रधानमंत्री पामर्स्टन था।
- विद्रोह से पूर्व अजीमुल्लाह, नाना साहब का एवं रंगोबापू सतारा का पक्ष रखने लंदन गए थे।
- मौलवी अहमदुल्ला ने अंग्रेजों के विरुद्ध जेहाद का नारा दिया।
- राव तुलाराम-हरियाणा, सुरेन्द्र साई-संबलपुर (उड़ीसा), देवी सिंह-मथुरा एवं कदम सिंह ने मेरठ में नेतृत्व किया।

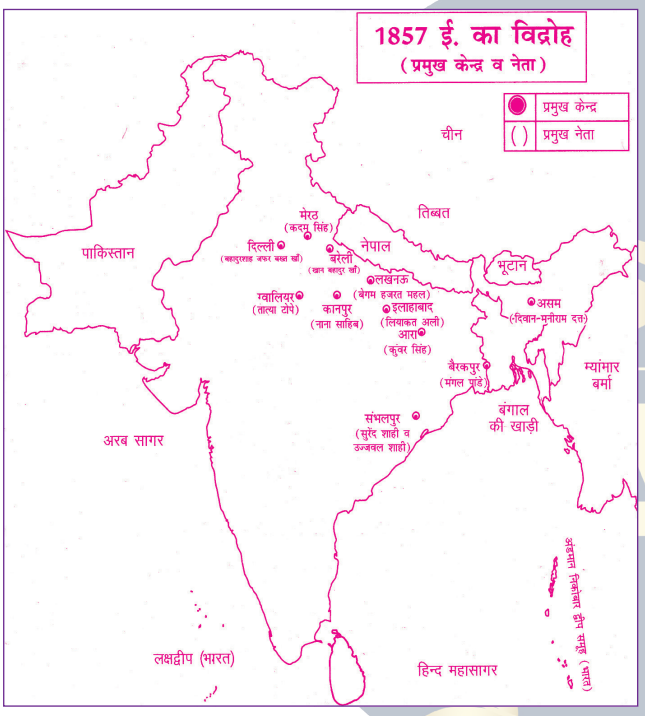


- ह्यूरोज ने लक्ष्मीबाई की वीरता से प्रभावित होकर कहा–भारतीय क्रांतिकारियों में यह अकेली मर्द है।

**1857 ई. के विद्रोह के प्रमुख केन्द्र व प्रमुख विद्रोही नेता**

| | केन्द्र | विद्रोही नेता | विद्रोह तिथि | दमनकर्ता |
|---|---|---|---|---|
| 1. | दिल्ली | बहादुरशाह 11, बख्त खाँ (सैन्य नेतृत्व) | 11 मई, 1857 | निकलसन, हडसन |
| 2. | लखनऊ | बेगम हजरत महल, विरजिस कादिर | 4 जून, 1857 | कॉलिन कैंपवेल |
| 3. | झाँसी /ग्वालियर | रानी लक्ष्मीबाई/ तात्या टोपे | 4 जून, 1857 | जनरल ह्यूरोज |
| 4. | कानपुर | नाना साहब, तात्या टोपे (सैन्य नेतृत्व) | 5 जून, 1857 | कॉलिन कैंपवेल |
| 5. | इलाहाबाद | लियाकत अली | 6 जून 1857 | कर्नल नील |
| 6. | फैजाबाद | मौलवी अहमदुल्ला | जून, 1857 | कर्नल नील |
| 7. | जगदीशपुर | कुंवर सिंह, अमर सिंह | 12 जून, 1857 | विलियम टेलर व विसेंट ऑयर |
| 8. | बरेली | खान बहादुर खाँ | जून, 1857 | विसेंट ऑयर |
| 9. | फतेहपुर | अजीमुल्ला | 1857 | जनरल रेनॉर्ड |

**1857 पर आधारित प्रमुख पुस्तकें**

| | पुस्तक | लेखक |
|---|---|---|
| 1. | द ग्रेट रिबेलियन | अशोक मेहता |
| 2. | फर्स्ट वार ऑफ इन्डिपेन्डेन्स | विनायक दामोदर सावरकर |
| 3. | एट्टीन फिफ्टी सेवेन | एस. एन. सेन |
| 4. | सिपॉय म्यूटिनी एंड द रिवोल्ट ऑफ 1857 | आर.सी. मजूमदार |
| 5. | हिस्ट्री ऑफ इंडियन म्यूटिनी | टी. आर. होम्स |
| 6. | रिबेलियन-1857 | पी.सी. जोशी |
| 7. | कॉजेज ऑफ द इंडियन रिवोल्ट | सर सैय्यद अहमद खान |

**विद्रोह पर विदेशी इतिहासकारों के मत**

| | विदेशी इतिहासकार | मत |
|---|---|---|
| 1. | सर जॉन लॉरेन्स | यदि विद्रोहियों में कोई भी एक योग्य नेता होता तो हम सदैव के लिए हार जाते। |
| 2. | सर जॉन लॉरेन्स | यह पूर्णतः सिपाही विद्रोह था। |
| 3. | बेंजामिन डिजरायली | 1857 ई. का विद्रोह एक राष्ट्रीय विद्रोह था। |
| 4. | सर जॉन शीले | यह विद्रोह पूर्णतः देशभक्ति रहित स्वार्थपूर्ण सैनिक विद्रोह था, जिसका न कोई नेतृत्व था और न कोई जन समर्थन। |
| 5. | पर्सीवल स्पीयर व मैटकॉफ | यह पुनर्स्थापनावादी आंदोलन था। |
| 6. | पी. रॉबर्ट्सन | 1857 ई. का विद्रोह केवल एक सैनिक विद्रोह था, जिसका तत्कालिक कारण चर्बी युक्त कारतूस था। |
| 7. | टी. आर. होम्स | यह सभ्यता एवं बर्बरता का संघर्ष था। |
| 8. | डब्ल्यू. टेलर और जेम्स आउट्रम | यह अंग्रेजों के विरुद्ध हिन्दू मुसलमानों का षड्यंत्र था। |
| 9. | रीज | यह ईसाई धर्म के विरुद्ध एक धर्म युद्ध था। |
| 10. | कूपलैण्ड जॉन ब्रूसनार्टन | 1857 ई. का विद्रोह सैनिक विद्रोह न होकर नागरिक विद्रोह था। |
| 11. | टी. ह्वीलर | यह एशियाई प्रकार का विद्रोह था। |
| 12. | रॉबर्ट्स | यह वस्तुतः मुस्लिम षड्यंत्र था। |

**भारतीय इतिहासकारों के मत**

| | भारतीय इतिहासकार | मत |
|---|---|---|
| 1. | डॉ. एस. एन. सेन | जो कुछ धर्म के लिए लड़ाई के रूप में प्रारम्भ हुआ, वह स्वतंत्रता संग्राम के रूप में समाप्त हुआ। |
| 2. | अशोक मेहता | 1857 ई. के विद्रोह का स्वरूप राष्ट्रीय था। |
| 3. | वी. डी. सावरकर | 1857 ई. का विद्रोह एक सुनियोजित राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम था। |
| 4. | डॉ. आर. सी. मजूमदार | तथाकथित प्रथम राष्ट्रीय संग्राम न तो प्रथम, न ही राष्ट्रीय और न ही स्वतंत्रता संग्राम था। |
| 5. | पी. सी. जोशी | यह राष्ट्रीय और सामान्य जनता तक फैला हुआ विप्लव था। |

| | | |
|---|---|---|
| 6. | बिपिन चन्द्रा | 1857 ई. का विद्रोह विदेशी शासन से राष्ट्र को मुक्त कराने का भक्तिपूर्ण प्रयास था। |
| 7. | मुंशी जीवन लाल, मुइनुद्दीन | 1857 ई. का विद्रोह एक सैनिक विद्रोह था। |
| 8. | जवाहर लाल नेहरू, दुर्गादास बदोपाध्याय, सर सैय्यद अहमद खाँ | 1857 ई. का विद्रोह सिपाही विद्रोह नहीं, अपितु स्वतंत्रता प्राप्ति के निमित्त भारतीय जनता का संगठित संग्राम था। |

- तात्या टोपे का वास्तविक नाम रामचन्द्र पांडुरंग था।
- बेगम हजरत महल और नाना साहब नेपाल भाग गये।

| स्थल | विद्रोही नेता | विद्रोह की तिथि | विद्रोह दबाने वाले ब्रिटिश अफसर | विद्रोह दबाने की तिथि |
|---|---|---|---|---|
| दिल्ली | बहादुरशाह जफर | 11, 12 मई 1857 | निकलसन + हडसन | 21 सितम्बर 1857 |
| कानपुर | नाना साहब + तात्या टोपे | 5 जून 1857 | कैम्पबेल + हैवलाक | 6 सितम्बर 1858 |
| झांसी, ग्वालियर | लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे | 4 जून 1857 | ह्यूरोज | 3 अप्रैल 1858 |
| जगदीशपुर, बिहार | कुँवर सिंह, अमर सिंह | अगस्त 1857 | विलियम टेलर, विन्सेंट आयर | दिसम्बर 1958 |
| इलाहाबाद | लियाकत अली | जून 1857 | कर्नल नील | 1858 |
| फैजाबाद | मौलवी बहादुर खाँ | जून 1857 | कैम्पबेल | मई 1858 |
| बरेली | खान बहादुर खाँ | जून 1857 | कैम्पबेल | मई 1858 |
| फतेहपुर | अजीमुल्ला | 1857 | जनरल रेनर्ड | 1858 |

**प्रमुख कथन:-**

- "यह राष्ट्रीय विद्रोह था" –वीर सावरकर
- "यह प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था" –पट्टाभि सीतारमैय्या
- "धर्मांधों का ईसाइयों के विरुद्ध युद्ध था" –एल.आर. होम्स
- "बर्बरता एवं सभ्यता के बीच युद्ध था।" –टी.आर. होम्स
- "हिन्दू-मुस्लिम षड्यंत्र का परिणाम था" –आउट्रम एवं टेलर
- "यह न तो प्रथम न ही राष्ट्रीय और न स्वतंत्रता संग्राम" –आर. सी. मजूमदार

## अंग्रेजी शासन के विरुद्ध हुए प्रमुख विद्रोह एवं आंदोलन

### किसान/नागरिक विद्रोह

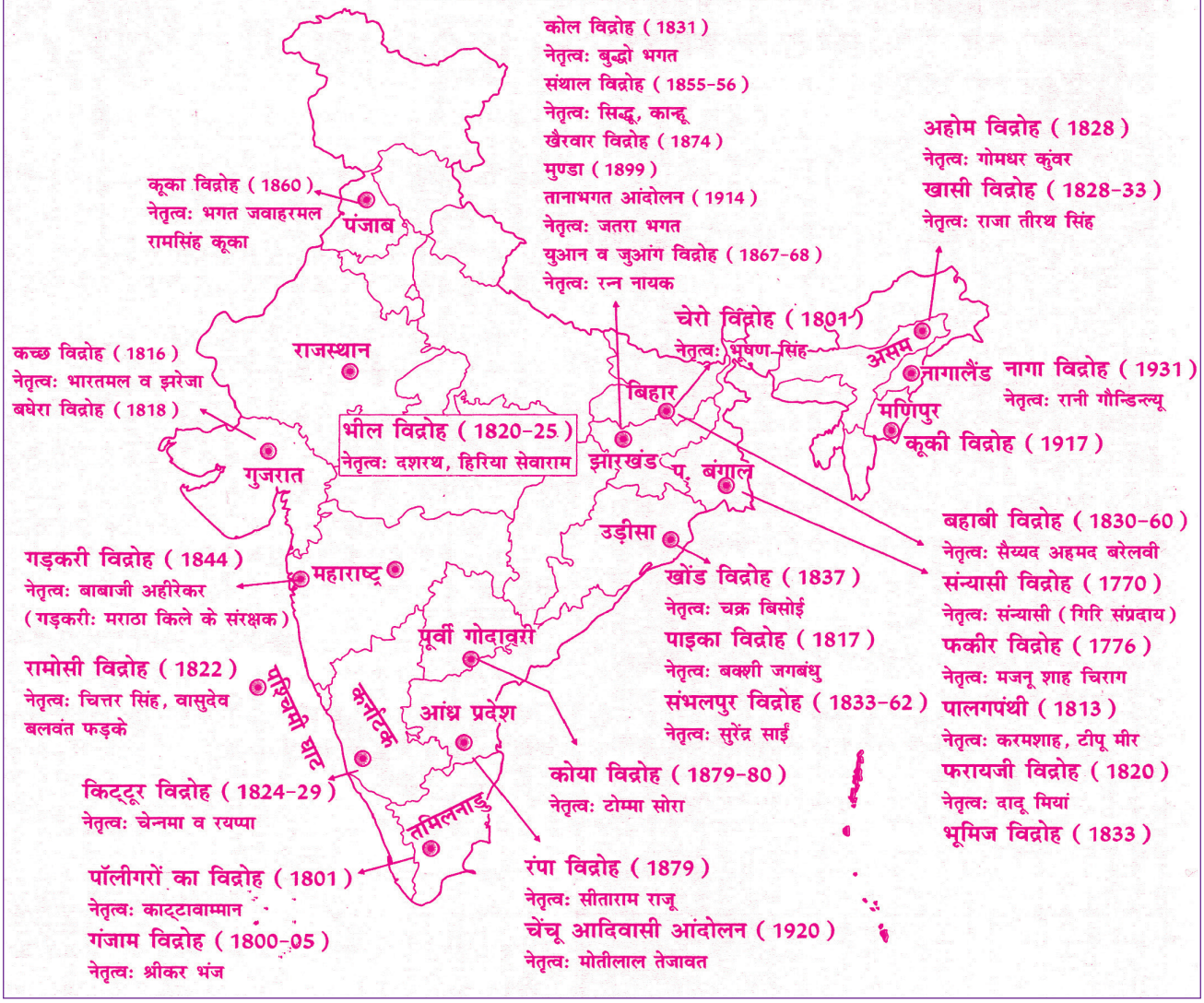

| विद्रोह | नेतृत्वकर्ता | वर्ष | प्रमुख क्षेत्र |
|---|---|---|---|
| संन्यासी विद्रोह | द्विजनारायण, केना सरकार | 1760-1800 | बंगाल, बिहार |
| चुआर विद्रोह | दुर्जन सिंह | 1768 | मिदनापुर |
| पालिगरा विद्रोह | वी.पी. कड्डालाम्मान | 1799 | तमिलनाडु |
| थम्पी विद्रोह | दीवान वेलुथम्पी | 1805 | त्रावणकोर |
| पाइक विद्रोह | बख्शी जगबंधु | 1817-25 | उड़ीसा |
| कच्छ विद्रोह | राजा भारमल | 1819-31 | कच्छ |
| रमोसी विद्रोह | चित्तर सिंह | 1822-29 | पश्चिमी घाट |
| रानी चेन्नमा का विद्रोह | चेन्नमा | 1824 | कित्तूर |
| पागलपंथी विद्रोह | करमशाह | 1825-27 | असम |
| भील विद्रोह | सेवरम | 1825 | खानदेश |
| अहोम विद्रोह | गोमधर कुंवर | 1828-30 | असम |
| कोल विद्रोह | बुद्धो भगत | 1831-32 | छोटा नागपुर (झारखंड) |
| खासी विद्रोह | तीरत सिंह | 1832-33 | जयन्तियां-गारो क्षेत्र |
| फैराजी विद्रोह | दादू मियां | 1838-48 | फरीदपुर (बंगाल) |
| कूका विद्रोह प्रथम | भगत जवाहरमल | 1840-41 | पंजाब |
| संथाल विद्रोह | सिद्धू, कान्हू | 1855-56 | राजमहल क्षेत्र (झारखंड) |
| नील विद्रोह द्वितीय | ईश्वर विश्वास, विष्णु विश्वास | 1859-60 | बंगाल |
| कूका द्रिदोह द्वितीय | रामसिंह कूका | 1872 | पंजाब |
| पावना विद्रोह | ईश्वर चंद राय एवं शंभु पाल | 1873-76 | पावना |
| मुंडा विद्रोह | विरसा मुंडा | 1899 | रांची (झारखंड) |
| चंपारण नील विद्रोह | महात्मा गांधी | 1917 | चंपारण (बिहार) |
| खेड़ा कृषक विद्रोह | महात्मा गांधी | 1918 | खेड़ा |
| नाई-धोबी वंद आंदोलन | बाबा रामचंद्र | 1918 | प्रतापगढ़ |
| अवध किसान आंदोलन | बाबा रामचंद्र | 1920 | प्रतापगढ़ |
| मोपला कृषक आंदोलन | अली मुसीलियार | 1921 | मालाबार (केरल) |
| एका कृषक आंदोलन | – | 1921 | गुन्टूर |
| चटगांव शस्त्रागार | सूर्यसेन | 1930 | चटगांव |
| मणिपुर विद्रोह | रानी गैडिनल्यू | 1930 | मणिपुर |
| गुरुवायूर आंदोलन | सुब्रह्मण्यम तिरूंभावु | 1931-32 | केरल |
| सतारा नागरिक विद्रोह | वाई.पी. चाह्वाण, एवं पटवर्द्धन | 1941 | सतारा |
| नौसेना विद्रोह | – | 1946 | बंबई |
| तेभागा कृषक आंदोलन | कम्पाराम सिंह एवं भवन सिंह | 1946 | बंगाल |
| बहरामपुर नागरिक विद्रोह | भोगेश्वरी देवी फुकन | 1946 | बहरामपुर (असम) |
| तेलंगाना आंदोलन | – | 1946 | आन्ध्रप्रदेश |
| ताना भगत | जतरा भगत | 1914 | बिहार |

## धन निष्कासन का सिद्धांत

- धन-निष्कासन का सिद्धांत (Drain of Wealth) का वर्णन सर्वप्रथम दादाभाई नौरोजी ने अपनी पुस्तक The Poverty and Un-British Rule In India में किया था। उन्होंने इस मान्यता को प्रस्तुत किया कि, ब्रिटेन भारत में अपने शासन की कीमत के रूप में इस देश की सम्पदा को लूट रहा है।
- भारतीय पूँजी के निष्कासन की चर्चा करने वाले लोगों में रमेश चन्द्र दत्त एक प्रमुख नाम है। उन्होंने अपनी पुस्तक इकोनॉमिक हिस्ट्री ऑफ इंडिया (1901) में धन निकासी की चर्चा की है। 27 फरवरी, 1901 को अपने भाषण में इन्होंने कहा कि, भारत से हो रही धन निकासी का उदाहरण आज तक विश्व के किसी अन्य देश में ढूँढ़ने से नहीं मिल सकता है।
- 1896 ई. में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में नौरोजी के धन निकास के सिद्धांत को स्वीकार कर लिया गया। दादाभाई नौरोजी ने धन निकासी सिद्धांत को अनिष्टों में सर्वाधिक अनिष्ट (Evil of all Evils) की संज्ञा दी थी।

मद्रास के बोर्ड ऑफ रेवेन्यू के अध्यक्ष जॉन सुलिवन ने कहा कि, हमारी व्यवस्था बहुत कुछ स्पंज की तरह काम करती है, जिसके द्वारा गंगातट से सभी अच्छी चीजों को सोख लिया जाता। है तथा टेम्स नदी के किनारे लाकर उसे निचोड़ा जाता है।

## लोगों की आर्थिक दशा

- भारतीय समाज में जिन दो नए वर्गों का उदय हुआ था, वे थे- पूँजीपति और औद्योगिक मजदूर। इनके अतिरिक्त एक अन्य वर्ग मध्यवर्ग था।
- प्रशासनिक व्यवस्था, व्यापार और उद्योग के विस्तार के साथ-साथ मध्य वर्ग की संख्या व महत्व तेजी से बढ़ता गया।
- अनेक व्यक्तियों ने कानून, अध्यापन, इंजीनियरिंग और व्यापार संबंधी व्यवसाय अपनाए। इन नए वर्गों ने भारत के इतिहास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा भारत की पुरानी परंपराओं के स्थान पर आधुनिक ढंग से व्यवस्था स्थापित करने का प्रयास किया।
- ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय जनता की आर्थिक दशा की प्रमुख समस्या उनकी अत्यधिक गरीबी थी। प्रति व्यक्ति औसत वार्षिक आय की यदि ठीक से गणना की जाए, तो इससे देश की सामान्य आर्थिक दशा की सही सूचना मिल जाती है।
- भारत में ऐसी आय का अनुमान सामान्य रूप से ही लगाया गया है। ऐसे ही एक अनुमान के अनुसार, 1947 ई. में प्रति व्यक्ति वार्षिक आय 228 रुपए थी. अर्थात् प्रतिदिन एक रुपए से भी कम प्रति व्यक्ति आय।
- समाज के अलग-अलग वर्गों की आय अलग-अलग थी। जमींदारों, कारखाना मालिकों, व्यापारियों और मध्यवर्ग के लोगों

की आय अधिक थी। उनकी तुलना में छोटे किसानों, खेतिहर मजदूरों की आय अत्यन्त कम थी। कम आय वाले लोगों की संख्या बहुत अधिक थी तथा उनका जीवन स्तर बहुत निम्न था।

- सरकार ने ग्रामीण जीवन को उन्नत बनाने और खेती को आधुनिक बनाने के लिए अत्यधिक प्रयास नहीं किये। इसके विपरीत उसने भू-राजस्व बढ़ा दिया तथा कई प्रकार के अतिरिक्त कर लगा दिए।
- परिणामतः छोटे किसान अपनी जमीन से वंचित हो गये और भूमिहीन मजदूर बन गए। इस प्रकार के शोषण के विरुद्ध उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारत के अनेक भागों में किसानों ने विद्रोह किए।
- सेना और प्रशासन पर होने वाले अत्यधिक व्यय के कारण भारत दरिद्र बना रहा। जमींदार धनी किसान और महाजन भी गाँव के गरीब लोगों जैसे- काश्तकारों, भूमिहीन मजदूरों, निम्न जाति के लोगों और आदिवासियों का शोषण करते रहे।

बागानों और कारखानों के मजदूरों की दशा अच्छी नहीं थी. यद्यपि 1881 ई. में काम के घंटे, नौकरी करने की न्यूनतम आयु और न्यूनतम वेतन के बारे में कानून बनते रहे, परंतु उन्हें सख्ती से लागू नहीं किया गया।

**प्रमुख कारखाना अधिनियम**

| | कारखाना अधिनियम | गवर्नर जनरल/ वायसराय |
|---|---|---|
| 1. | कारखाना अधिनियम, 1881 | लॉर्ड रिपन |
| 2. | कारखाना अधिनियम, 1891 | लॉर्ड लेंसडाउन |
| 3. | कारखाना अधिनियम 1911 | लॉर्ड हार्डिंग-II |
| 4. | कारखाना अधिनियम, 1922 | लॉर्ड रीडिंग |
| 5. | कारखाना अधिनियम, 1934 | लॉर्ड विलिंग्टन |
| 6. | कारखाना अधिनियम, 1944 | लॉर्ड येथेल |

- लेवर स्वराज पार्टी नाम से भारत की पहली मजदुर किसान पार्टी की स्थापना बंगाल में की गई।

सन् 1927 में भारत में सर्वप्रथम 1 मई को मजदूर दिवस मनाया गया, जो भारत में मजदूरों की बढ़ती हुई राजनीतिक चेतना का सूचक था।

- सन् 1937 में मानवेन्द्र नाथ राय ने लीग ऑफ रेडिकल कॉंग्रेस तथा सौम्येन्द्र नाथ टैगोर ने क्रांतिकारी साम्यवादी समाज की स्थापना की।
- 1920 ई. में अखिल भारतीय मजदूर संघ कांग्रेस की स्थापना हुई। इसने मजदूर आंदोलन को संगठित करने और मजदूरों के हितों की रक्षा के प्रयास का मार्ग प्रशस्त कर दिया।
- भारतीय पूँजीपति वर्ग और मध्यमवर्ग भी प्रभावित हुआ। ब्रिटिश उद्योगपतियों को सरकारी संरक्षण प्राप्त होने के कारण उन उद्योग के विकास में बाधा पहुँची, जिन पर भारतीय पूँजीपतियों का नियंत्रण था।
- भारतीय पूँजीपतियों ने राजनीतिक अधिकारों और भारत के आर्थिक हितों की रक्षा एवं वृद्धि के लिए आवाजें उठानी शुरू कर दी।
- भारतीय राष्ट्रवादी आरंभ से ही देश की गरीबी और आर्थिक दशा के विषय में चिंतित रहे हैं। वे सरकार की उत्पीड़क भू-राजस्व नीति, भारतीय धन का ब्रिटेन की ओर प्रवाह और भारतीय साधनों को विकसित करने में सरकार की असफलता के विरुद्ध लगातार विरोध प्रकट करते रहे।
- 1938 ई. में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भारत के आर्थिक विकास के सम्बंध में एक रूपरेखा तैयार करने के लिए एक राष्ट्रीय योजना समिति का गठन किया।

## सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन

| संगठन | संस्थापक | वर्ष | स्थान |
|---|---|---|---|
| ब्रह्म समाज | राजा राममोहन राय | 1828 | कलकत्ता |
| तत्वबोधिनी सभा | देवेन्द्रनाथ टैगोर | 1839 | कलकत्ता |
| मानव धर्म सभा | मेहताजी दुर्गाराम मंशाराम | 1844 | कलकत्ता |
| वेद समाज | केशवचन्द्र सेन | 1867 | – |
| रहनुमाई माजदयान समाज | फरदुनजी, दादाभाई नौरोजी | 1851 | मुंबई |
| राधास्वामी सत्संग | शिवदयाल साहब | 1861 | आगरा |
| स्वामी नारायण संप्रदाय | संत स्वामी नारायण | 1861 | दक्षिण भारत |
| आदि ब्रह्म समाज | केशवचंद्र सेन | 1864 | कलकत्ता |
| सांइंटिफिक सोसायटी | सर सैय्यद अहमद खां | 1864 | कलकत्ता |
| प्रार्थना समाज | आत्माराम पांडुरंग व रानाडे | 1867 | मुंबई |
| पूना सार्वजनिक सभा | रानाडे एवं चिपलंकर | 1870 | पुणे |
| ब्रह्म समाज ऑफ साउथ इंडिया | श्री धरालू नायडू | 1871 | मद्रास |
| सत्य शोधक समाज | ज्योतिबा फुले | 1873 | पुणे |
| अलीगढ़ आंदोलन | सर सैय्यद अहमद खां | 1875 | अलीगढ़ |
| आर्य समाज | दयानन्द सरस्वती | 1875 | अलीगढ़ |
| थियोसॉफिकल सोसायटी | मैडम ब्लाट्यस्की व कर्नल ऑलकॉट | 1875 | अड्यार |
| राजमुंदरी सोशल एसोसिएशन | वीरसेलिंगम पंटुलु | 1876 | हैदराबाद |
| गौ रक्षिणी सभा | दयानन्द सरस्वती | 1882 | – |
| राष्ट्रीय समाज सुधार समिति | एम.जी. रानाडे | 1887 | मुंबई |
| अहमदिया आंदोलन | मिर्जा गुलाम अहमद | – | गुरुदासपुर |
| रामकृष्ण मिशन | स्वामी विवेकानन्द | 1897 | बेल्लूर |
| विधवा आश्रम | डी.के. कर्वे | 1899 | पुणे |
| देवबंद स्कूल आन्दोलन | अबुल कलाम आजाद | 1912 | देवबंद |
| हिन्दू महासभा | मदन मोहन मालवीय | 1915 | हरिद्वार |
| साबरमती आश्रम | महात्मा गांधी | 1917 | अहमदाबाद |
| विश्व भारती | रविन्द्रनाथ टैगोर | 1918 | कलकत्ता |
| भील सेवा मंडल | अमृतलाल विट्ठल दास | 1922 | राजस्थान |
| बहिष्कृत हितकारिणी सभा | बी.आर. अंबेडकर | 1924 | मुंबई |
| देव समाज | शिव नारायण अग्निहोत्री | – | – |

- **राजाराममोहन राय–** राजाराम की महत्वपूर्ण कृति तुहफर्तुल-मुवाईद्दीन, गिफ्ट टू मोनोथेइस्ट्स, प्रीसेप्टस ऑफ जीसस है। इन्होंने संवाद कौमुदी का सम्पादन किया। 1815 में आत्मीय सभा एवं 1825 में वेदांत कॉलेज की स्थापना की। ब्रह्मसमाज का प्रतिज्ञापत्र देवेन्द्र नाथ ठाकुर ने तैयार किया।

- **दयानन्द सरस्वती–** इन्हें भारतीय लूथर कहा जाता है। इन्होंने सत्यार्थ प्रकाश की रचना हिन्दी में की। इनका बचपन का नाम मूलशंकर था। वेदों की ओर चलो इनका मुख्य नारा था। वैलेण्टाइन शिरोल ने आर्य समाज को भारतीय अशांति का जन्मदाता कहा है। इन्हीं का नारा था "भारत भारतीयों के लिए है।"

| स्वामी दयानंद द्वारा लिखी गई महत्वपूर्ण रचनाएँ | |
|---|---|
| स्तयार्थ प्रकाश | (1874) (संस्कृत) |
| पाखण्ड खण्डिनी पताका | (1866) |
| वेद भाष्य भूमिका | (1876) |
| अद्वैत मत का खण्डन | (1873) |
| पंच महायज्ञ विधि | (1875) |
| बल्लभाचार्य मत का खण्डन | (1875) |
| ऋग्वेद भाष्य | (1887) |

- **नरेन्द्र नाथ दत्त ( विवेकानन्द )** ने अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस की प्रेरणा से रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। इसका मुख्य केन्द्र बेलूर (कलकत्ता) एवं मायवती (अल्मोड़ा) था। 1893 में शिकागो धर्म सभा में उन्होंने भाग लिया।
- भारतीय पुनर्जागरण का जनक राजा राममोहन राय को कहा जाता है।
- थियोसोफिकल सोसायटी ने सांख्य एवं उपनिषद् से प्रेरणा ग्रहण की।
- हेनरी विवियन डेरोजियो आधुनिक भारत के प्रथम राष्ट्रवादी कवि माने जाते हैं।
- सर सैय्यद अहमद खाँ ने 1875 में अलीगढ़ में ऐंग्लो मुस्लिम स्कूल की स्थापना की। 1920 तक यही केन्द्र अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के रूप में सामने आया।

- मिर्जा गुला अहमद स्वयं को हजरत मुहम्मद के बराबर एवं श्रीकृष्ण के अवतार मानते थे।
- 1922 में सिक्ख गुरुद्वारा अधिनियम पारित हुआ।
- परमहंस मंडली की स्थापना गोपाल हरिदेशमुख (लोकहितवादी) ने की।
- दीनबन्धु सार्वजनिक सभा की स्थापना 1884 में ज्योतिबा फुले ने किया।
- 1926 में अखिल भारतीय महिला संघ की स्थापना हुई।
- 1956 में हिन्दू उत्तराधिकारी अधिनियम पारित हुआ।
- गाँधी जी ने अछूतों को हरिजन (भगवान के जन) कहा।
- 1906 में बी.आर. शिन्दे ने बम्बई में डिप्रेस्ड क्लासेज मिशन सोसायटी की स्थापना की।
- 1920 में रामास्वामी नायकर आत्मसम्मान आंदोलन चलाया।
- अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना लखनऊ में हुई।
- ब्राह्मण विरोधी संगठन प्रजामित्र मंडली के संस्थापक सी.आर. रेड्डी थे।
- मुदालियार, नायर एवं चेन्नी ने दक्षिण भारत में जस्टिसपार्टी की स्थापना की।

| सामाजिक व धार्मिक आन्दोलन | |
|---|---|
| ‘ब्रह्म समाज’ की स्थापना कब हुई | 1828 ई. |
| ‘ब्रह्म समाज’ की स्थापना किसके द्वारा और कहाँ की गई | कलकत्ता में, राजा राममोहन राय |
| आधुनिक भारत में हिंदू धर्म के सुधार का पहला आंदोलन कौन-सा था | ब्रह्म समाज |
| ब्रह्म समाज का विरोधी संगठन कौन-सा था जिसने सती प्रथा व अन्य सुधारों का विरोध किया | धर्म सभा |
| धर्म सभा के संस्थापक कौन थे | राधाकांत देव |
| सती प्रथा का अंत कब हुआ | 1829 ई. |
| सती प्रथा के अंत में सबसे अधिक प्रयास किसका रहा | राजा राममोहन राय |
| ‘आर्य समाज’ की स्थापना कब हुई | 1875 ई., मुंबई |
| ‘आर्य समाज’ की स्थापना किसने की | स्वामी दयानंद सरस्वती ने |
| आर्य समाज किसके विरुद्ध है | धार्मिक अनुष्ठान व मूर्ति पूजा |
| 19वीं सदी में भारतीय पुनर्जागरण का पिता किसे माना जाता है | राजा राममोहन राय को |
| राजाराम मोहन राय का जन्म कहाँ हुआ | राधानगर, जिला वर्धमान |
| स्वामी दयानंद सरस्वती का मूल नाम क्या था | मूलशंकर |
| राजा राममोहन राय के इंग्लैंड जाने के बाद ब्रह्म समाज की बागडोर किसने संभाली | रामचंद विधावागीश |
| किसके प्रयासों से ब्रह्म समाज की जड़े उत्तर प्रदेश, पंजाब व मद्रास में फैली | केशवचंद्र सेन |
| 1815 ई. में कलकत्ता में किसने ‘आत्मीय सभा’ की स्थापना की | राजा राममोहन राय |
| राजा राममोहन राय व डेविड हेयर हकिस संस्था से जुड़े थे | हिन्दू कॉलेज |
| थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना कब और कहाँ हुई | 1875 ई., न्यूयॉर्क में |
| थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना भारत में कब और कहाँ हुई | 1882 ई., अडयार, मद्रास में |
| ‘सत्यार्थ प्रकाश’ की रचना किसने की | दयानंद सरस्वती |
| ‘वेदों की ओर लौटो’ का नारा किसने दिया | दयानंद सरस्वती |
| ‘रामकृष्ण मिशन’ की स्थापना कब हुई | 1896-97 ई., बैलूर (कलकत्ता) |
| ‘रामकृष्ण मिशन’ की स्थापना किसने की | स्वामी विवेकानंद |
| अलीगढ़ आंदोलन किसने चलाया | सर सैय्यद अहमद खाँ |
| अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय की नींव किसने डाली | सर सैय्यद अहमद खाँ |
| ‘युवा बंगाल’ आंदोलन के नेता कौन थे | हेनरी विवियन डेरोजियो |
| ‘सत्य शोधक समाज’ की स्थापना किसने थी | ज्योतिबा फुले |
| किस धर्म सुधारक की मृत्यु भारत से बाहर हुई | राजा राममोहन राय |
| वहाबी आंदोलन का मुख्य केंद्र कहाँ था | पटना |
| भारत में दास प्रथा को कब अवैध घोषित किया गया | 1843 ई. |
| भारत में अंग्रेजी शिक्षा की व्यवस्था किसके द्वारा की गई | विलियम बैंटिंक द्वारा |
| ‘वेदों में संपूर्ण सच्चाई निहित है’ यह कथन किसका है | स्वामी दयानंद सरस्वती |
| ‘महाराष्ट्र का सुकरात’ किसे कहा जाता है | महादेव गोविंद रानाडे |
| विवेकानंद किस स्थान पर विश्व धर्म सम्मेलन में प्रसिद्ध हुए | शिकागो |
| ‘संवाद कौमुदी’ पत्र के संपादक कौन थे | राजा राममोहन राय |
| ‘तत्व रंजिनी सभा’, ‘तत्व बोधिनी सभा’ व ‘तत्व बोधिनी पत्रिका’ किससे संबंधित हैं | देवेंद्र नाथ टैगोर |
| ‘प्रार्थना समाज’ की स्थापना किसकी प्रेरणा के फलस्वरूप हुई | केशवचंद्र सेन |
| ‘वामा बोधिनी’ पत्रिका महिलाओं के लिए किसने निकाली | केशवचंद्र सेन |
| शारदामणी कौन थी | रामकृष्ण परमहंस की पत्नी |
| ‘कूका आंदोलन’ किसने चलाया था | गुरु राम सिंह |
| 1856 ई. में कौन-सा धार्मिक कानून पारित हुआ | धार्मिक अयोग्यता कानून |
| महाराष्ट्र के किस सुधारक को ‘लोकहितवादी’ कहा जाता है | गोपाल हरि देशमुख |
| ब्रह्म समाज किस सिद्धांत पर आधारित है | एकेश्वरवाद |
| ‘देव समाज’ की स्थापना किसने की | शिवनारायण अग्निहोत्री |
| ‘राधास्वामी सत्संग’ के संस्थापक कौन हैं | शिवदयाल साहब |
| फेबियन आंदोलन का प्रस्तावक कौन था | एनी बेसेंट |
| 20वीं सदी के आरंभिक दशक में आरंभ होने वाला आंदोलन कौन-सा था | अहरार |
| ‘भारत समाज सेवक’ की स्थापना कब और किसके द्वारा की गई | 1905 ई., गोपाल कृष्ण गोखले द्वारा |
| सिक्ख गुरुद्वारा अधिनियम कब पारित हुआ | 1925 ई. |
| रामकृष्ण परमहंस का मूल नाम क्या था | गदाधर चटोपाध्याय |
| डॉ. ऐनी बेसेंट भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्ष कब बनी | 1917 ई. |
| शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानंद ने कब भाग लिया | 1893 ई. |
| ‘प्रीसेप्टस ऑफ जीसस’ की रचना किसने की | राजा राममोहन राय ने |

| | |
|---|---|
| ❖ राजा राममोहन राय की फारसी पुस्तक कौन-सी थी जिसका प्रकाशन 1809 में हुआ | तुहफतुह-उल-मुवाहिदीन |
| ❖ वेदांत कॉलेज की स्थापना किसने की | राजा राममोहन राय ने |
| ❖ राजा राममोहन राय को किसने 'युग दूत' कहा | सुभाष चंद्र बोस ने |

### भारत में रेलवे का विकास

1. भारत में रेलवे निर्माण की दिशा में प्रथम प्रयास लॉर्ड डलहौजी (1848-56) द्वारा किया गया था।
2. भारत में रेलवे लाइन लाने वाले अग्रणी व्यक्ति रोलैंड मैक्डोनॉल्ड स्टीफेन्सन थे।
3. भारत में रेल लाइन बिछाने का प्रथम प्रस्ताव मद्रास में 1831 ई. में आया था जिसमें रेल के डिब्बों को घोड़ों से खीचने का प्रस्ताव था।
4. भारत की प्रथम रेलगाड़ी 16 अप्रैल, 1853 ई. को बंबई से थाणे के बीच चलायी गयी थी। 1854 ई. में कलकत्ता से रानीगंज के बीच दूसरी रेलवे लाइन स्थापित की गई।
5. लॉर्ड कर्जन के कार्यकाल (1899-1905) में भारत में रेलवे लाइन का सर्वाधिक विस्तार एवं रेलवे का सर्वाधिक विकास हुआ था।
6. 1902 ई. में मिस्टर रॉबर्टसन की अध्यक्षता में रेल आयोग का गठन किया गया। इस आयोग में 2 भारतीय सदस्य (1. गुरूदास बनर्जी, 2. सैय्यद बिलग्रामी) शामिल थे।
7. 1908 ई. में रेलवे को स्वायत्तशासी संस्था का दर्जा प्रदान किया गया।
8. 1924 ई. में एकवर्थ समिति के सुझाव पर रेल बजट को सामान्य बजट से पृथक किया गया था।
9. वर्ष 2016-17 के बजट से रेल बजट को सामान्य बजट के साथ परित करना प्रारम्भ कर दिया गया है।

## ब्रिटिशकालीन समाचार पत्र

- भारत में प्रथम समाचार पत्र निकालने का श्रेय जेम्स ऑगस्ट्स हिक्की को मिला। उसने 1780 में बंगाल गजट का प्रकाशन किया।
- पहला भारतीय अंग्रेजी समाचार पत्र 1816 में कलकत्ता में गंगाधर भट्टाचार्य द्वारा बंगाल गजट निकाला गया।
- राजाराम मोहन राय ने चंद्रिका (धार्मिक कट्टरता का विरोध), मिरातुल अखबार एवं ब्रह्मनिकल मैंगजीन का प्रकाशन किया।
- हिन्दू पैट्रियाट के सम्पादक क्रिस्टोदास पाल को भारतीय पत्रकारिता का राजकुमार कहा जाता है।

| पत्र-पत्रिका | वर्ष | संस्थापक | संस्थान | भाषा |
|---|---|---|---|---|
| सोम प्रकाश | 1859 | ईश्वरचन्द्र विद्यासागर | कलकत्ता | बंगाली |
| इंडियन मिरर | 1861 | देवेन्द्रनाथ टैगोर | कलकत्ता | अंग्रेजी |
| टाइम्स ऑफ इंडिया | 1861 | अंग्रेजी प्रेस | मुंबई | मराठी |
| इन्दु प्रकाश | 1862 | रानाडे | मुंबई | मराठी |
| नेटिव ओपिनियन | 1864 | वी.एन. मांडलिक | मुबई | अंग्रेजी |
| कविवचन सुधा | 1867 | भारतेन्दु हरिश्चन्द्र | वाराणसी | हिन्दी |
| अमृत बाजार पत्रिका | 1868 | मोतीलाल घोष | कलकत्ता | बंगाली |
| बंग दर्शन | 1873 | बंकिम चंद्र चटर्जी | कलकत्ता | बंगाली |
| हिन्दी प्रदीप | 1877 | बालकृष्ण भट्ट | वाराणसी | हिन्दी |
| स्टेट्समैन | 1878 | राबर्ट नाइट | कलकत्ता | अंग्रेजी |
| हिन्दू | 1878 | वी. राघवाचारी | मद्रास | अंग्रेजी |
| केसरी | 1881 | तिलक | मुंबई | मराठी |
| इंडिया | 1890 | दादाभाई नौरोजी | मुंबई | अंग्रेजी |
| हिन्दुस्तान स्टैंडर्ड | 1899 | सच्चिदानन्द सिन्हा | दिल्ली | अंग्रेजी |
| इंडियन ओपिनियन | 1903 | महात्मा गांधी | द. अफ्रीका | अंग्रेजी |
| इंडियन सोशियोलॉजिस्ट | 1905 | श्यामजी कृष्णवर्मा | लन्दन | अंग्रेजी |
| प्रताप | 1910 | गणेश शं. विद्यार्थी | कानपुर | हिन्दी |
| अल हिलाल | 1912 | अबुल कलाम आजाद | कलकत्ता | उर्दू |
| गदर | 1913 | लाला हरदयाल | सैनफ्रांसिस्को | अंग्रेजी |
| कॉमन व्हील | 1914 | एनी बेसेन्ट | मुंबई | अंग्रेजी |
| न्यू इंडिया | 1914 | एनी बेसेन्ट | मुंबई | अंग्रेजी |
| इंडिपेंडेन्ट | 1919 | मोतीलाल नेहरू | इलाहाबाद | अंग्रेजी |
| नवजीवन | 1919 | महात्मा गांधी | अहमदाबाद | गुजराती |
| यंग इंडिया | 1922 | महात्मा गांधी | अहमदाबाद | अंग्रेजी |
| हिन्दुस्तान टाइम्स | 1922 | के.एम. पणिक्कर | मुंबई | अंग्रेजी |

### अंग्रेजों द्वारा बनाए गए कानून व अधिनियम

| | कानून | गवर्नर जनरल | वर्ष | विशेषता |
|---|---|---|---|---|
| 1. | नवजात कन्या हत्या कानून | जॉन शोर | 1795 | इस कानून के द्वारा कन्याओं की हत्या पर रोक लगायी गयी। |
| 2. | बाल हत्या निरोधक कानून | लॉर्ड वेलेजली | 1804 | इस कानून के द्वारा नवजात शिशुओं को मारने पर रोक लगाई गई। |
| 3. | सतीप्रथा निषेध कानून | विलियम बेंटिक | 1829 | इसके द्वारा सती प्रथा पर कानूनी रोक लगाकर इसे हत्या माना गया। |
| 4. | हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम | लॉर्ड डलहौजी | 1856 | इस अधिनियम द्वारा विधवा विवाह को कानूनी मान्यता दी गयी। |
| 5. | सम्मति आयु अधिनियम | लेंसडाऊन | 1891 | 12 वर्ष से कम आयु के बालकों के विवाह पर रोक लगायी गई। |
| 6. | शारदा एक्ट | लॉर्ड इरविन | 1929 | इस एक्ट द्वारा बालकों के लिये विवाह की न्यूनतम आयु 18 वर्ष एवं बालिकाओं के लिये 14 वर्ष निश्चित की गई। |
| 7. | हिंदू महिला सम्पत्ति अधिनियम | लॉर्ड ऑकलैण्ड | 1937 | इसमें हिंदू महिलाओं को सम्पत्ति का अधिकार प्रदान किया गया। |
| 8. | दास प्रथा प्रतिबंध | लॉर्ड एलेनबरो | 1943 | 1833 के चॉर्टर अधिनियम द्वारा 1843 ई. को दास प्रथा प्रतिबंधित किया गया। |

### प्रमुख सामाजिक सुधार

| सामाजिक कुप्रथा | उन्मूलन के दिशा में किए गए प्रयास |
|---|---|
| 1. बाल-विवाह | बाल विवाह के विरूद्ध आंदोलन सर्वप्रथम राजा राममोहन राय ने किया था। केशवचन्द्र सेन व बहरामजी द्य मालाबारी के प्रयासों से 1872 ई. में देशी बाल-विवाह अधिनियम पारित किया गया। इस अधिनियम में 14 वर्ष से कम आयु को बालिकाओं तथा 18 वर्ष से कम आयु के बालकों के विवाह को प्रतिबंधित किया गया। एच. एस. बंगाली के प्रयासों के फलस्वरूप 1891 ई. में ब्रिटिश सरकार ने एज ऑफ कन्सेंट एक्ट पारित किया, जिसमें 12 वर्ष से कम आयु की कन्याओं के विवाह पर प्रतिबंध लगा दिया गया। |

| | |
|---|---|
| 2. सती प्रथा | भारत में सती प्रथा का प्रथम उल्लेख 510 ई. के एरण अभिलेख में मिलता है। सर्वप्रथम 15वीं शताब्दी में कश्मीर के शासक सिकंदर ने सती प्रथा को बंद करवाया था। पुर्तगाली वायसराय अल्बुकर्क ने 1510 ई. में गोवा में इस प्रथा को बंद करवाया था। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा का विरोध करते हुए ब्रिटिश सरकार से इसे पूर्णत: बंद करवाने का अनुरोध किया था। राजा राममोहन राय के प्रयासों से ही लॉर्ड विलियम बेंटिक ने 4 दिसम्बर 1829 का नियम XVII के तहत बंगाल में सती प्रथा पर रोक लगायी। |
| 3. दास प्रथा | भारतीय समाज में प्रचलित दास प्रथा को बंद करने के लिए 1823 ई. में लिस्टर स्टैनहोप ने इंग्लैण्ड के इयूक ऑफ ग्लॉस्टर से अनुरोध किया था। जिसके फलस्वरूप दासों के निर्यात को बंद कर दिया गया। 1833 ई. के चार्टर एक्ट द्वारा ब्रिटिश सरकार ने दासता पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया तथा इस प्रतिबंध को 1843 ई. में संपूर्ण भारत में लागू किया गया। 1860 ई. में दासता को भारतीय दंड संहिता के द्व ारा अपराध घोषित कर दिया गया। |
| 4. विधवा पुनर्विवाह | विधवा पुनर्विवाह के क्षेत्र में सर्वाधिक योगदान कलकत्ता के संस्कृत कॉलेज के प्राचार्य ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने दिया। उन्होंने 1,000 हस्ताक्षरों से युक्त पत्र, डलहौजी को भेजकर विधवा पुनर्विवाह को कानूनी रूप देने का अनुरोध किया था। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर के प्रयासों के फलस्वरूप ब्रिटिश सरकार (लॉर्ड कैनिंग) ने 1856 ई. हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम- XV (1856 का अधिनियम) पारित किया, जिसमें विधवा पुनर्विवाह को कानूनी मान्यता दी गई। प्रो. धोंधो केशव कर्वे एवं वीरेसालिंगम पंतुलू ने भी विधवा पुनर्विवाह के लिए कार्य किया। प्रो. कर्वे ने 1899 ई. में विधवा आश्रम की पूना में स्थापना की तथा स्वयं एक विधवा से विवाह किया था। |
| 5. स्त्री शिक्षा | भारतीय समाज में स्त्रियों की दयनीय स्थिति को देखते हुए सर्वप्रथम ईसाई मिशनरियों ने 1819 ई. में कलकत्ता में तरुण स्त्री सभा की स्थापना की। 1849 ई. में जे.डी. बेथुन (शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष) द्वारा कलकत्ता में बालिका विद्यालय की स्थापना की गई। स्त्री शिक्षा के लिए सर्वाधिक प्रयास ईश्वर चन्द्र विद्यासागर ने किए। उन्होंने बंगाल में लगभग 35 बालिका विद्यालय स्थापित किए। 1854 ई. में गठित शिक्षा आयोग चार्ल्स वुड डिस्पैच में भी स्त्री शिक्षा पर विशेष बल दिया गया। प्रो. डी. के. कर्वे ने स्त्री शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए 1916 ई. में पुणे में प्रथम भारतीय महिला विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। 1926 ई. में महिलाओं के उत्थान के लिए अखिल भारतीय महिला संघ की स्थापना हुई थी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में लड़कियों की शिक्षा पर विशेष नीति बनाई गई थी। |
| 6. बाल हत्या की प्रथा | यह प्रथा राजपूतों एवं बंगाल में अधिक प्रचलित थी। इनमें बालिका शिशुओं को निर्दयता से मार दिया जाता था। इसका कारण विदेशी आक्रमण तथा दहेज प्रथा की समस्या थी। 1795 ई. में बंगाल नियम और 1804 ई. में नियम 3 के अन्तर्गत इस कुप्रथा को रोकने के व्यापक प्रयास किए गए। |

## राष्ट्रीय संस्थाएं

- 1838 में कोलकाता में स्थापित लैण्ड होल्डर्स सोसाइटी भारत की प्रथम राजनीतिक संस्था थी। इसके संस्थापक द्वारिका नाथ टैगोर थे।
- 1843 में बंगाल ब्रिटिश एसोसिएशन की स्थापना हुई।
- 1851 को ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन की कलकत्ता में स्थापना हुई।
- 1876 में इंडियन एसोसिएशन की स्थापना कलकत्ता में सुरेन्द्रनाथ बनर्जी एवं आनन्द बोस ने की।
- 1866 में दादाभाई नौराजी ने लंदन में ईस्ट इंडिया एसोसिएशन की स्थापना की।
- 1884 में मद्रास में मद्रास महाजन सभा की स्थापना हुई।
- इण्डियन नेशनल कांग्रेस अथवा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना 28 दिसम्बर 1885 को बम्बई में गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज के भवन में एलन आक्टेवियन ह्यूम द्वारा की गई। इसके प्रथम अध्यक्ष व्योमेशचन्द्र बनर्जी थे।
- 1967 में महादेव गोविन्द रानाडे ने पूना सार्वजनिक सभा की स्थापना की।
- 1875 में शिशिर कुमार घोष ने इंडिया लीग की स्थापना की।
- 1885 में बम्बई में बम्बई प्रेसीडेंसी एसोसिएशन की स्थापना हुई।
- ह्यूम स्कॉटलैण्ड के निवासी थे। वे इण्डियन सिविल सर्वेन्ट थे।
- 1887 के बाद ब्रिटिश सरकार का रुख कांग्रेस के प्रति कठोर होता चला गया।

| कांग्रेस के सम्बंध में वक्तव्य | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | बिपिन चन्द्र पाल | : | कांग्रेस एक प्रकार की याचना करने वाली संस्था है। |
| 2. | तिलक | : | यदि वर्ष में एक बार मेढ़क की तरह टर्येंगे, तो कुछ नहीं मिलेगा। |
| 3. | पट्टाभि सीतारमैय्या | : | कांग्रेस की स्थापना सम्बंधी कारकों पर पर्दा पड़ा है। |
| 4. | लॉर्ड डफरिन | : | कांग्रेस संभ्रांत लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाला संगठन है। |
| 5. | वायसराय कर्जन | : | कांग्रेस लड़खड़ाकर गिर रही है, भारत में रहते हुए मेरी इच्छा है कि, मैं इसके शांतिपूर्ण अवसान में अपना सहयोग दे सकूँ। |
| 6. | लाला लाजपत राय | : | कांग्रेस लॉर्ड डफरिन के दिमाग की उपज है। कांग्रेस के सम्मेलन शिक्षित भारतीयों के वार्षिक राष्ट्रीय मेले हैं। |
| 7. | अश्वनी कुमार दत्त | : | कांग्रेस के सम्मेलन तीन दिनों का तमाशा हैं। |
| 8. | बंकिम चन्द्र चटर्जी | : | कांग्रेस के लोग पदों के भूखे हैं। |

**विशेष:** स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद महात्मा गांधी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (INC) संगठन को समाप्त करने का सुझाव दिया था।

| | |
|---|---|
| ❖ कांग्रेस के 26वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | विलियम वेडरबर्न |
| ❖ 1911 ई. में कांग्रेस का 27वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | कलकत्ता |
| ❖ कांग्रेस के 27वें अधिवेशन के अध्यक्ष कोन थे | बिशन नारायण धर |
| ❖ 1912 ई. में कांग्रेस का 28वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | बाकीपुर |
| ❖ कांग्रेस के 28वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | आर.एन. माधोलकर |
| ❖ 1913 ई. में कांग्रेस का 29वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | कराची |
| ❖ कांग्रेस के 29वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | नवाब सैयद मो. बहादुर |
| ❖ 1914 ई. में कांग्रेस का 30वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | मद्रास |
| ❖ कांग्रेस के 30वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | भूपेन्द्र नाथ बसु |
| ❖ 1915 ई. में कांग्रेस का 31वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | बंबई |
| ❖ कांग्रेस के 31वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | सत्येन्द्र प्रसन्न सिन्हा |
| ❖ 1916 ई. में कांग्रेस का 32वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | लखनऊ |
| ❖ कांग्रेस के 32वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | अम्बिका चरण मजुमदार |

| | |
|---|---|
| 1917 ई. में कांग्रेस का 33वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | कलकत्ता |
| कांग्रेस के 33वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | श्रीमती एनी बेसेंट |
| 1918 ई. में कांग्रेस का 34वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | दिल्ली |
| कांग्रेस के 34वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | मदन मोहन मालवीय |
| 1919 ई. में कांग्रेस का 35वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | अमृतसर |
| कांग्रेस के 35वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | पं. मोतीलाल नेहरू |
| 1920 ई. में कांग्रेस का 36वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | नागपुर |
| कांग्रेस के 36वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | सी. विजयाराघवाचारियर |
| 1921 ई. में कांग्रेस का 37वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | अहमदाबाद |
| कांग्रेस के 37वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | हाकिम अजमल खाँ |
| 1922 ई. में कांग्रेस का 38वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | गया |
| कांग्रेस के 38वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | देशबंधु चितरंजन दास |
| 1923 ई. में कांग्रेस का 39वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | काकीनाडा |
| कांग्रेस के 39वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | मौलाना मोहम्मद अली |
| 1924 ई. में कांग्रेस का 40वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | बेलगाँव |
| कांग्रेस के 40वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | महात्मा गाँधी |
| 1925 ई. में कांग्रेस का 41वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | कानपुर |
| कांग्रेस के 41वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | सरोजिनी नायडू |
| 1926 ई. में कांग्रेस का 42वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | गुवाहाटी |
| कांग्रेस के 42वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | एस. श्रीनिवास आयंगर |
| 1927 ई. में कांग्रेस का 43वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | मद्रास |
| कांग्रेस के 43वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | डॉ. एम.ए. अंसारी |
| 1928 ई. में कांग्रेस का 44वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | कलकत्ता |
| कांग्रेस के 44वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | पं. मोतीलाल नेहरू |

| | |
|---|---|
| 1929-30 ई. में कांग्रेस का 45वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | लाहौर |
| कांग्रेस के 45वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | पं. जवाहर लाल नेहरू |
| 1931 ई. में कांग्रेस का 46वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | कराची |
| कांग्रेस के 46वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | सरदार वल्लभभाई पटेल |
| 1933 ई. में कांग्रेस का 47वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | कलकत्ता |
| कांग्रेस के 47वें अधिवेशन की अध्यक्षता किसने की | श्रीमती नेल्लीसेन गुप्ता |
| 1934-35 ई. में कांग्रेस का 48वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | बंबई |
| कांग्रेस के 48वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | बाबू राजेन्द्र प्रसाद |
| 1936 ई. में कांग्रेस का 49वां अधिवेशन कहाँ पर हुआ | लखनऊ |
| कांग्रेस के 49वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | पं. जवाहर लाल नेहरू |
| 1937 ई. में कांग्रेस का 50वां अधिवेशन कहाँ पर हुआ | फैजपुर |
| कांग्रेस के 50वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | पं. जवाहर लाल नेहरू |
| 1938 ई. में कांग्रेस का 51वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | हरिपुरा |
| कांग्रेस के 51वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | सुभाष चन्द्र बोस |
| 1939 ई. में कांग्रेस का 52वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | त्रिपुरा |
| कांग्रेस के 52वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | सुभाष चन्द्र बोस |
| 1940 ई. में कांग्रेस का 53वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | रामगढ़ |
| कांग्रेस के 53वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | मौलाना अबुल कलाम आजाद |
| 1946 ई. में कांग्रेस का 54वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | मेरठ |
| कांग्रेस के 54वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | आचार्य जे.बी. कृपलानी |
| 1948 ई. में कांग्रेस का 55वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | जयपुर |
| कांग्रेस के 55वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे | बी. पट्टाभिसीतारमैया |
| 1950 ई. में कांग्रेस का 56वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ | नासिक |

## कांग्रेस की स्थापना से पूर्व राजनीतिक संस्थाए

| | संस्था | संस्थापक | स्थापना | मुख्यालय |
|---|---|---|---|---|
| 1. | लैंडहोल्डर्स सोसायटी (जमींदारी संघ) | द्वारिकानाथ टैगोर | 1838 | कलकत्ता |
| 2. | ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी | विलियम एडम्स | 1839 | कलकत्ता |
| 3. | बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी | जॉर्ज थॉमसन | 1843 | कलकत्ता |
| 4. | ब्रिटिश इंडियन एसोसिएशन (लैडहोल्डर्स सोसाइटी व बंगाल ब्रिटिश इंडिया सोसाइटी) | देवेन्द्रनाथ टैगोर | 1851 | कलकत्ता |
| 5. | बॉम्बे एसोसिएशन (वर्तमान नाम: बम्बई प्रेसीडेंसी एसोसिएशन) | दादाभाई नौरोजी | 1852 | बम्बई |
| 6. | मद्रास नेटिव एसोसिएशन | गजुलू नरसुचेट्टी | 1852 | मद्रास |
| 7. | ईस्ट इंडिया एसोसिएशन (लंदन इंडिया कमेटी व लंदन इंडिया सोसाइटी) | दादाभाई नौरोजी | 1866 | लंदन |
| 8. | पूना सार्वजनिक सभा | गणेश वासुदेव जोशी व एम.जी. रानाडे | 1870 | पूना |
| 9. | इंडिया सोसाइटी | आनंदमोहन बोस | 1872 | लंदन |
| 10. | इंडियन एसोसिएशन | आनंद मोहन बोस व सुरेंद्रनाथ बनर्जी | 1876 | कलकत्ता |
| 11. | नेटिव प्रेस एसोसिएशन | सुरेंद्रनाथ बनर्जी | 1877 | दिल्ली |
| 12. | मद्रास महाजन सभा | पी. आनंद चारलू व वीर राघवाचारी | 1884 | मद्रास |
| 13. | बॉम्बे प्रेसीडेंसी एसोसिएशन | बद्रुद्दीन तैय्यबजी व फिरोजशाह मेहता | 1885 | बम्बई |

## गरम दल और नरम दल

- 19वीं सदी के अंतिम वर्षों में राष्ट्रीय आंदोलन में नई प्रवृत्तियों एवं नए नेताओं का उदय हुआ। ये नेता तत्कालीन राष्ट्रीय नेताओं की अनुनय-विनय की नीति के विरोधी थे तथा ब्रिटिश सरकार के प्रबल पक्षधर थे। उनका मानना था कि सरकार से केवल अनुनय-विनय करके भारतीय अपने अधिकार प्राप्त नहीं कर सकते। उन्होंने जनता में संघर्ष एवं देशप्रेम की भावना जागृत की।
- वंदे मातरम् सम्पूर्ण देश में राष्ट्रगीत के रूप में लोकप्रिय हो गया। यह गीत बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय ने लिखा था। इसने मातृभूमि के प्रति जनता की भावना को व्यक्त किया।
- नए नेताओं में बाल गंगाधर तिलक, विपिन चंद्र पाल, लाला लाजपत राय और अरविंद घोष प्रमुख थे। ये सभी गरम दल के नेता के रूप में प्रसिद्ध हुए।
- कांग्रेस के सुरेंद्रनाथ बनर्जी, गोपाल कृष्ण गोखले, फिरोजशाह मेहता और अन्य पुराने नेता नरम दल के नेता कहलाए।
- ब्रिटिश सरकार के प्रति जैसे-जैसे जनता में रोष बढ़ता जा रहा था। वैसे-वैसे गरम दल के नेताओं का प्रभाव बढ़ता गया।

## विश्व की घटनाओं का प्रभाव

- 1896 ई. में इटली की इथियोपियाई जनता के हाथों हार (एक यूरोपीय देश की पराजय) से भारतीयों को प्रसन्नता हुई।
- इटली की पराजय के करीब दस साल बाद 1905 ई. के एक युद्ध में जापान ने रूस को पराजित किया। यह पहला मौका था जब एक एशियाई देश ने एक यूरोपीय देश को युद्ध में पराजित किया था।
- जापान की विजय का भारतीय राष्ट्रवादियों पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा और ब्रिटिश शासन के प्रति भारतीय जनता की घृणा बढ़ती गई।
- 1905 ई. में रूस में एक क्रांति हुई। उन दिनों रूस पर एक निरंकुश बादशाह का शासन था और जनता अधिकारों से वंचित थी।
- रूसी जनता शासक के विरुद्ध उठ खड़ी हुई। क्रांति को हालांकि कुचल दिया गया, परन्तु इसने विदेशी शासन में कष्ट झेल रही भारतीय जनता को प्रेरणा दी।
- आयरलैंड की जनता ब्रिटिश आधिपत्य से मुक्त होने के लिए संघर्ष कर रही थी।

## बंगाल का विभाजन

- राष्ट्रीय आंदोलन के लक्ष्यों और तरीकों को प्रभावित करने और राष्ट्रीय आन्दोलन की दिशा बदलने में बंगाल के विभाजन ने सबसे प्रभावकारी भूमिका निभाई। उस समय बंगाल भारत का सबसे बड़ा प्रांत था, जिसमें संपूर्ण बिहार और उड़ीसा (वर्तमान ओडिशा) के हिस्से शामिल थे। उस समय बंगाल की आबादी 7 करोड़ 80 लाख थी।

ब्रिटिश प्रशासन के अनुसार, इतने बड़े प्रांत के प्रशासन को संभालना कठिन है, इसलिए इसका विभाजन आवश्यक है।

- बंगाल में राष्ट्रीय आंदोलन बहुत मजबूत था। ब्रिटिश शासकों का मानना था कि प्रांत का विभाजन करके वे इस आंदोलन को कमजोर बनाने में सफल हो जाएंगे।
- अंग्रेजों का दूसरा उद्देश्य हिंदुओं और मुसलमानों में फूट पैदा करना था। वे कहने लगे कि, नए प्रांत में मुसलमानों का बहुमत होगा, इसलिए यह उनके हित में होगा।
- अंग्रेजों का विचार था कि, इस तरह से वे मुसलमानों को राष्ट्रीय
- आंदोलन से अलग करने में सफल होंगे।
- 20 जुलाई, 1905 को बंगाल विभाजन के निर्णय की घोषणा हुई जिसके परिणामस्वरूप 7 अगस्त, 1905 को कलकत्ता के टाउन हाल में स्वदेशी आन्दोलन आरम्भ हुआ। इसी बैठक में ऐतिहासिक बहिष्कार प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।
- 16 अक्टूबर 1905 में कर्जन की घोषणा के साथ ही बंगाल विभाजन प्रभावी हो गया। इसके विरोध में हुए आंदोलन को बंग-भंग विरोधी आंदोलन के नाम से जाना जाता है।
- विभाजन के अन्तर्गत बंगाल के पूर्वी हिस्सों को अलग करके असम के साथ मिला दिया गया। इस प्रकार पूर्वी बंगाल और असम, बंगाल का नया प्रांत बना।
- विभाजन के कारण सम्पूर्ण बंगाल में रोष की लहर दौड़ गई। विभिन्न शहरों में बड़ी सभाएँ और तीव्र प्रदर्शन हुए, विभाजन के विरुद्ध आंदोलन आरम्भ हुआ।
- गरम दल और नरम दल के नेताओं ने मिलकर इस आंदोलन का नेतृत्व किया। सुरेंद्रनाथ बनर्जी, विपिनचंद्र पाल और अब्दुल रसूल आदि नेताओं ने आन्दोलन का नेतृत्व संभाला।

विभाजन का दिन अर्थात् 16 अक्टूबर को सम्पूर्ण बंगाल में शोक-दिवस के रूप में मनाया गया। महाकवि रवींद्रनाथ टैगोर के सुझाव पर वह दिन जन एकता और मैत्री दिवस या राखी दिवस के रूप में मनाया गया। सम्पूर्ण बंगाल के लोगों ने एक-दूसरे को राखी बाँधी।

- बंगाल के विभाजन को समाप्त करने के लिए आरम्भ किए गए आंदोलन के दौरान संघर्ष के नए तरीके अपनाए गए। उन तरीकों में स्वदेशी और बहिष्कार प्रमुख थे। राष्ट्रीय आंदोलन के लक्ष्य भी पहले की अपेक्षा अधिक क्रांतिकारी हो गए।

## स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन

- स्वदेशी का अर्थ है, संघर्ष के दौरान देश में उत्पादित वस्तुओं का इस्तेमाल करना। स्वदेशी अपनाने से भारतीय उद्योगों को बढ़ावा मिलता तथा राष्ट्र मजबूत बनता। यह देशभक्ति बढ़ाने का एक प्रभावकारी तरीका था।
- इस आन्दोलन में स्वदेशी वस्तुओं को बढ़ावा देने के साथ-साथ विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने का नारा दिया गया।
- इस बात पर जोर दिया गया कि विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने से (अधिकांश विदेशी वस्तुएँ इंग्लैंड से आती थीं) इंग्लैंड के आर्थिक हितों को क्षति पहुँचेगी और तब ब्रिटिश सरकार को भारतीय माँगें स्वीकार करने के लिए मजबूर किया जा सकेगा।
- इसी आन्दोलन में महिलाओं ने सक्रिय रूप से भाग लेना प्रारम्भ किया। स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन केवल बंगाल तक सीमित न रहकर देश के अनेक भागों में फैल गया।
- ब्रिटिश कपड़ों, चीनी तथा अन्य वस्तुओं का बहिष्कार किया गया। लोग समूह बनाकर दुकानों पर जाते और दुकानदारों से विदेशी सामान न बेचने का अनुरोध करते। वे दुकानों के बाहर

खड़े रहकर ग्राहकों से विदेशी सामान न खरीदने का आग्रह करते।

- इस आंदोलन में स्कूलों और कॉलेजों के विद्यार्थियों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।
- उन्होंने केवल स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग करना आरंभ कर दिया और लोगों को प्रेरित किया कि वे विदेशी वस्तुओं का प्रयोग न करें। सरकार ने दमन के कई तरीके अपनाये। अनेक विद्यार्थियों को स्कूल-कॉलेजों से निकाल दिया गया। कई विद्यार्थियों को पीटा गया और जेल में डाल दिया गया।
- स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन केवल विदेशी सामान तक सीमित नहीं रहा बल्कि अब स्वदेशी का अर्थ उस सब से हो गया जो भारतीय है। तथा बहिष्कार का अर्थ उस सबसे हो गया जिसका सम्बंध ब्रिटिश शासन से है।

## कांग्रेस और स्वराज का लक्ष्य

- गरम दल और नरम दल सहित कांग्रेस के भीतर के सभी दल बंगाल विभाजन के विरुद्ध एकजुट हुए।
- वाराणसी में 1905 ई. में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन के अध्यक्ष गोपाल कृष्ण गोखले थे। इस अधिवेशन ने स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन को समर्थन दिया परन्तु नरम दल और गरम दल में मतभेद कायम रहे।
- नरम दल वालों का मत था कि बहिष्कार जैसे तरीकों का इस्तेमाल विशेष उद्देश्यों के लिए विशेष परिस्थिति में होना चाहिए। वे नहीं चाहते थे कि ब्रिटिश शासन के विरुद्ध इन तरीकों का प्रयोग सदैव किया जाए।
- गरम दल के नेताओं का विश्वास था कि, बहिष्कार को व्यापक बनाना आवश्यक है। उन्होंने सरकारी स्कूलों, कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों का बहिष्कार करने और देशभक्ति को उभारने के लिए स्वदेशी शिक्षा-संस्थाएँ शुरू करने पर जोर दिया।
- गरम दल के नेता ब्रिटिश शासन के विरुद्ध देशव्यापी आंदोलन प्रारंभ करना चाहते थे। जबकि नरमदल के नेता इसे बंगाल तक ही। सीमित रखना चाहते थे।
- कलकत्ता में 1906 ई. में आयोजित कांग्रेस के अधिवेशन के समय गरम दल और नरम दल के बीच मतभेद बढ़ते जा रहे थे।
- उस समय दादाभाई नौरोजी कलकत्ता अधिवेशन के अध्यक्ष थे।
- एक प्रस्ताव के जरिए कांग्रेस ने स्वदेशी और बहिष्कार को अपना समर्थन प्रदान किया। इस अधिवेशन की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि यह थी कि, स्वराज-प्राप्ति को कांग्रेस का लक्ष्य घोषित किया गया।
- स्वराज का अर्थ था, ब्रिटेन के अधीन कनाडा और ऑस्ट्रेलिया जैसे स्वशासित उपनिवेशों की तरह सरकार स्थापित करना। परन्तु गरम दल और नरम दल एक जुट नहीं रह सके। सूरत में 1907 ई. में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में दोनों दलों में संघर्ष हुआ।

## कांग्रेस का सूरत अधिवेशन ( 1907 ई. )

- यह अधिवेशन 26 दिसंबर, 1907 को ताप्ती नदी के किनारे सूरत में संपन्न हुआ। इस अधिवेशन में कांग्रेस स्पष्ट रूप से नरमपंथियों व गरमपंथियों में विभाजित हुई।
- विवाद का केन्द्र रासबिहारी घोष थे, जिन्हें इस अधिवेशन का अध्यक्ष चुना गया।
- उग्रवादी लाला लाजपत राय को कांग्रेस का अध्यक्ष बनाना चाहते थे, वहीं उदारवादी रासबिहारी घोष को अध्यक्ष बनाना चाहते थे। अंतत: रास बिहारी घोष अध्यक्ष बने।
- कांग्रेस में नरम दल का प्रमुख चुन लिए जाने के बावजूद गरम दल के विचार देशभर में फैलने लगे। गरम दल का अधिक दमन होने लगा। परिणामस्वरूप 1907 ई. में लाला लाजपत राय को गिरफ्तार करके वर्मा निर्वासित कर दिया गया।
- विपिनचंद्र पाल को छ: महीने के लिए जेल में बंद कर दिया गया। 1908 ई. में बाल गंगाधर तिलक को गिरफ्तार करके छ: साल के लिए बर्मा निर्वासित कर दिया गया।
- चिदंबरम पिल्लई पर अत्याचार किए गए और उन्हें जेल में डाल दिया गया।
- सरकारी दमन का जनता ने कड़ा मुकाबला किया। बाल गंगाधर तिलक को दण्ड देने पर बम्बई के मजदूरों ने हड़ताल की।

## मार्ले-मिंटो सुधार

- सरकार ने एक ओर दमन की नीति को तीव्र बनाया, तो दूसरी ओर नरम दल वालों को संतुष्ट करने की कोशिश की।

1909 ई. में इंडियन कौंसिल एक्ट की घोषणा की गई। इसे मार्ले-मिंटो सुधार के नाम से जाना जाता है। उस समय मार्ले भारत सचिव और मिंटो वायसराय थे।

- इस एक्ट के अनुसार, केंद्रीय और प्रांतीय विधान परिषदों (सभाओं) में सदस्यों की संख्या बढ़ा दी गई। परन्तु इन परिषदों में निर्वाचित सदस्यों की संख्या बहुत कम थी।
- ये निर्वाचित सदस्य जनता द्वारा नहीं बल्कि जमींदारों, व्यापारियों, विद्यालयों और स्थानीय संस्थाओं द्वारा चुने गए थे।
- अंग्रेजों ने इन सुधारों के अन्तर्गत सांप्रदायिक प्रतिनिधित्व की व्यवस्था प्रारंभ की। जिसका उद्देश्य हिंदुओं और मुसलमानों में मतभेद पैदा करना था।
- परिषदों में कुछ सीटें मुसलमान मतदाताओं द्वारा चुने जाने वाले मुस्लिम प्रतिनिधियों के लिए सुरक्षित रखी गई। राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर बनाने के लिए अंग्रेजों ने भारत में सांप्रदायिकता को बढ़ावा दिया।
- कांग्रेस ने 1909 ई. के अपने अधिवेशन में इन सुधारों का स्वागत किया, परन्तु धर्म पर आधारित पृथक प्रतिनिधित्व का विरोध किया। भारत सचिव ने कहा कि भारत में संसदीय सरकार की स्थापना करने की उनकी कोई इच्छा नहीं है।
- 1857 ई. के विद्रोह के बाद जो निरकुश सरकार स्थापित हुई थी. वह मार्ले-मिंटो सुधारों के बाद भी कायम रही।

सत्येंद्र नाथ सिन्हा गवर्नर जनरल की कार्यकारिणी परिषद् के पहले भारतीय सदस्य बने। सत्येंद्र नाथ सिन्हा को बिहार और उड़ीसा का गवर्नर बनाया गया। समूचे ब्रिटिश शासन के दौरान इतने ऊँचे पद पर पहुँचने वाले वे एकमात्र भारतीय थे।

## दिल्ली दरबार ( 1911 ई. )

- 1911 ई. में दिल्ली में दरबार का आयोजन हुआ। जिसमें ब्रिटेन के राजा जॉर्ज पंचम और उनकी रानी ने भाग लिया था। इस अवसर पर दो महत्वपूर्ण घोषणाएँ की गई। प्रथम घोषणा में

1905 ई. में किए गए बंगाल विभाजन को रद्द कर दिया गया। जबकि दूसरी घोषणा में ब्रिटिश भारत की राजधानी कलकत्ता से दिल्ली स्थानांतरित कर दी गई।

- दिल्ली 1 अप्रैल, 1912 ई. को भारत की राजधानी बनी।

## क्रांतिकारी राष्ट्रवादी

- देश के कुछ भागों में क्रांतिकारियों के कुछ ऐसे समूह थे, जो ब्रिटिश शासन को सशस्त्र क्रान्ति के जरिए खत्म करने में विश्वास रखते थे।
- क्रांतिकारियों ने अनेक गुप्त संगठन बनाये जिसमें ये अपने सदस्यों को गोला बारूद बनाने और हथियार चलाने का प्रशिक्षण देते थे। ये संगठन महाराष्ट्र और बंगाल में अधिक सक्रिय थे। जिनमें महाराष्ट्र में अभिनव भारत सोसायटी और बंगाल में अनुशीलन समिति प्रमुख थे।
- इनके सदस्यों ने ब्रिटिश अफसरों, पुलिस अफसरों, मजिस्ट्रेटों, मुखबिरों, गवर्नरों तथा वायसरायों के विरुद्ध हिंसात्मक कार्रवाइयाँ की।

## मुजफ्फरपुर बम कांड ( 1908 )

- डी.एच. किंग्सफोर्ड कलकत्ता का एक क्रूर मजिस्ट्रेट था। जिसने अनेक क्रान्तिकारियों को बहुत कठोर सजा दी थी। परिणामस्वरूप किंग्सफोर्ड को पदोन्नति देकर मुजफ्फरपुर सत्र न्यायाधीश के पद पर भेजा गया।
- युगान्तर समिति की एक गुप्त बैठक में किंग्सफोर्ड को मारने का निश्चय हुआ। इस कार्य हेतु खुदीराम बोस तथा प्रफुल्ल कुमार चाकी का चयन किया गया।
- 30 अप्रैल, 1908 को बोस एवं चाकी ने किंग्सफोर्ड की बी पर बम फेंका। इस बम विस्फोट काण्ड में किंग्सफोर्ड बच गया। किन्तु दुर्भाग्य से उस गाड़ी में राष्ट्रीय आन्दोलन से सहानुभूति रखने वाले मिस्टर कैनेडी की पत्नी एवं पुत्र मारे गये।

**भारतीय क्रांतिकारी संगठन**

| | संगठन | स्थापना | संस्थापक |
|---|---|---|---|
| 1. | मित्र मेला | 1903 ई. | विनायक दामोदर सावरकर, गणेश सावरकर |
| 2. | भारत माता सोसाइटी | 1904 ई. | अजीत सिंह व अम्बा प्रसाद |
| 3. | ढाका अनुशीलन समिति | 1904 ई. | पी. मित्रा व पुलिन दास |
| 4. | अभिनव भारत समाज | 1904 ई. | वी.डी. सावरकर |
| 5. | अनुशीलन समिति | 1907 ई. | वारीन्द्र कुमार घोष, जतीन्द्रनाथ बनर्जी, प्रबोध मित्र, पुलिन दास, सतीशचन्द्र बोस |
| 6. | युगांतर, अंजुमाने मोहिब्बाने वतन | 1907 ई. | वी. के. घोष, भूपेन्द्रनाथ दत्त, सरदार अजीत सिंह |
| 7. | हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन | 1924 ई. | शचीन्द्रनाथ सान्याल, रामप्रसाद विस्मिल, योगेश चंद चटनी |
| 8. | नौजवान सभा | 1926 ई. | भगत सिंह |
| 9. | हिंदुस्तान सोशियलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन | 1928 ई. | चंद्रशेखर आजाद |

- इस घटना से आहूत प्रफुल्ल (चाकी) ने आत्महत्या कर ली और खुदीराम बोस को गिरफ्तार कर 11 अगस्त, 1908 को फाँसी दे दी गई।
- खुदीराम बोस सबसे कम उम्र में शहीद होने वाले क्रांतिकारी थे।
- कलकत्ता के मणिकतुल्ला गार्डन हाउस पर अनके क्रांतिकारियों द्वारा बम बनाने और हथियार चलाने का अभ्यास करने के कारण पुलिस द्वारा छापेमारी की गई। अरविंद घोष और उनके भाई वरीत कुमार घोष सहित अनेक क्रांतिकारी पकड़े गए।
- परिणामस्वरूप कुछ क्रांतिकारियों को आजीवन कारावास की सजा दी गई। जबकि अरविंद घोष को रिहा कर दिया गया। जिसके पश्चात् उन्होंने सभी राजनीतिक गतिविधियाँ त्याग दीं और पांडिचेरी चले गए।
- उस समय पॉडिचेरी एक फ्रांसीसी उपनिवेश था। वहाँ अरविंद ने ऑरोविले आश्रम की स्थापना की।
- ढाका के मजिस्ट्रेट और नासिक एवं तिरुन्नवेली के कलेक्टरों की गोली मारकर हत्या कर दी गई।

## हार्डिंग बम कांड ( 1912 ई. )

- 1912 ई. में वायसराय हार्डिंग की हत्या का प्रयास हुआ। 23 दिसंबर, 1912 को कलकत्ता से दिल्ली में राजधानी स्थानांतरण का दिन निर्धारित किया गया था।
- इस अवसर पर वायसराय लॉर्ड हार्डिंग अपने परिवार और ब्रिटेन के शाही राजवंश के साथ दिल्ली में प्रवेश कर रहे थे, उसी समय उनके ऊपर बम फेंका गया, जिससे हार्डिंग घायल हो गए।
- लॉर्ड हार्डिंग पर बम रास बिहारी बोस ने फेंका था। इस सिलसिले में अमीर चन्द्र, अवध बिहारी लाल और भाई बालमुकुंद के ऊपर मुकदमा चलाया गया तथा तीनों को फाँसी दे दी गई।
- भारतीय क्रांतिकारियों ने लंदन, पेरिस, बर्लिन, उत्तरी अमेरिका तथा एशिया में अपने केंद्र स्थापित किए।
- भारत के बाहर काम करने वाले कुछ प्रमुख क्रांतिकारी मैडम भीकाजी कामा, एम. बरकतुल्ला, वी.वी.एस. अय्यर, लाला हरदयाल, रासबिहारी बोस, सोहन सिंह भाकना, विनायक दामोदर सावरकर, उबैदुल्ला सिंधी और मानवेंद्रनाथ राय थे।

**प्रमुख क्रांतिकारी घटनाएँ**

| | घटनाएँ | वर्ष | स्थल | क्रांतिकारी |
|---|---|---|---|---|
| 1. | एमहर्स्ट एवं कमिशनर रैण्ड हत्याकांड | 1897 ई. | पुणे | चापेकर बंधु |
| 2. | अलीपुर षड्यंत्र | 1908 ई. | मुजफ्फरपुर | खुदीराम बोस एवं प्रफुल्लचन्द चाकी |
| 3. | कर्नल वायली हत्याकांड | 1909 ई. | लंदन | मदनलाल धींगरा |
| 4. | जैक्सन हत्याकांड | 1909 ई. | नासिक | अनन्त कन्हेरे |
| 5. | दिल्ली बम कांड | 1912 ई. | दिल्ली | बसंत कुमार व रासबिहारी बोस |
| 6. | काकोरी ट्रेन डकैती कांड | 1925 ई. | काकोरी | रामप्रसाद बिस्मिल, बसंत कुमार |
| 7. | सांडर्स हत्याकांड | 1928 ई. | लाहौर | सरदार भगत सिंह |
| 8. | शस्त्रागार डकैती कांड | 1930 ई. | चटगाँव | सूर्यसेन |
| 9. | जनरल डायर हत्याकांड | 1940 ई. | लंदन | ऊधमसिंह |

| क्रांतिकारी आंदोलन से सम्बद्ध व्यक्ति | | |
|---|---|---|
| 1. | दामोदर चापेकर व बालकृष्ण चापेकर | ❖ लेफ्टिनेंट एमहर्स्ट और रैण्ड की पूना में हत्या (1897 ई.) |
| 2. | विनायक दामोदर सावरकर | ❖ अभिनव भारत की स्थापना (1904 ई.)<br>❖ महाराष्ट्र में मित्र मेला की स्थापना (1899 ई.) |
| 3. | पुलिन दास | ❖ ढाका की अनुशीलन समिति के संस्थापक (1902 ई. |
| 4. | श्याम जी कृष्णवर्मा व एम. एल. ढींगरा | ❖ लंदन में इंडियन होमरूल सोसाइटी (1905 ई.) की स्थापना। |
| 5. | प्रफुल्ल चन्द्र चाकी व खुदीराम बोस | ❖ मुजफ्फरपुर के न्यायाधीश किंग्सफोर्ड पर बम फेंका (1908 ई.), लेकिन वे बच गए। |
| 6. | मदन लाल धींगरा | ❖ लंदन में कर्जन वाइली की हत्या (1909 ई.। |
| 7. | रासबिहारी बोस व शचीन्द्र नाथ सांयाल | ❖ दिल्ली में प्रवेश करते समय लॉर्ड हार्डिंग पर बम (1912 ई.) फेंका। |
| 8. | लाला हरदयाल व सोहन सिंह भाकना | ❖ सैन फ्रांसिस्को (अमेरिका) में गदर पार्टी की स्थापना (1913 ई.)<br>❖ कामागाटामारू कांड (1914 ई.) |
| 9. | जतिन मुखर्जी | ❖ बालासोर (ओडिशा) के बुरीबालम नदी के किनारे स्थित फोर्ट विलियम के अधिग्रहण की योजना, लड़ाई के दौरान मृत्यु। |
| 10. | राम प्रसाद बिस्मिल | ❖ हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन की स्थापना (1925 ई.), काकोरी षड्यंत्र (1925 ई.) |
| 11. | सूर्यसेन | ❖ चटगाँव षड्यंत्र ( 1930 ई.) |
| 12. | चंद्रशेखर आजाद | ❖ हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (1928 ई.)<br>❖ इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क (चन्द्रशेखर पार्क) के समीप पुलिस के साथ संघर्ष में स्वयं को गोली मार ली। (1932 ई.) |
| 13. | भगत सिंह | ❖ सांडर्स की हत्या (1928 ई.)<br>❖ केंद्रीय विधानसभा में बम फेंका (1929 ई)<br>❖ पंजाब नौजवान भारत सभा (1929 ई.) |
| 14. | राजगुरू | ❖ सांडर्स की हत्या (1928 ई.) |
| 15. | बटुकेश्वर दत्त | ❖ केंद्रीय विधानसभा में बम फेंका (1929) |
| 16. | जतिन दास | ❖ जेल में 64वें दिन भूख हड़ताल से मृत्यु (1929 ई.) |
| 17. | ऊधम सिंह | ❖ लंदन में सर माइकल ओ डायर की हत्या। |

- उत्तरी अमेरीका के भारतीय क्रांतिकारियों ने विभिन्न भारतीय गुजराती, उर्दू, मराठी, हिन्दी आदि भाषाओं में गदर नामक अखबार निकाला तथा गदर पार्टी की स्थापना की।
- भारत में विद्रोह की तैयारी करने के लिए गदर पार्टी ने अपने सदस्य भेजे। अधिकांश सदस्यों को पकड़ लिया गया और कुछ को फाँसी दे दी गई।

**विदेशों में क्रांतिकारी संगठन**

| | संगठन | स्थापना | संस्थापक |
|---|---|---|---|
| 1. | इंडिया होमरूल सोसाइटी | 1905 ई. | श्यामजी कृष्ण वर्मा |
| 2. | इंडिया इंडिपेंडेंस लीग | 1907 ई. | तारकनाथ दास |
| 3. | गदर पार्टी | 1913 ई. | लाला हरदयाल, रामचंद्र बरकतुल्ला, सोहन सिंह भाकना |
| 4. | हिंद एसोसिएशन | 1913 ई. | सोहन सिंह भाकना |
| 5. | इंडियन इंडिपेंडेंस लीग | 1915 ई. | राजा महेन्द्र प्रताप |
| 6. | आजाद हिंद फौज | 1942 ई. | मोहन सिंह |
| 7. | इंडियन इंडिपेंडेंस लीग | 1942 ई. | रासबिहारी बोस |
| 8. | पेरिस इंडियन सोसाइटी | 1905 ई. | मैडम भीकाजी कामा |

## प्रथम विश्व युद्ध (1914-19 ई.)

- प्रथम विश्व युद्ध (1914) की विरोधी शक्तियाँ दो गुटों में विभाजित हुई-

| | |
|---|---|
| ❖ **प्रथम गुटः** जर्मनी, ऑस्ट्रिया, इटली और तुर्की ।<br>❖ **दूसरा गुटः** फ्रांस, रूस और इंग्लैंड। | |
| ❖ **प्रथम गुटः** ट्रिपल एलायंस (Triple Alliance)<br>❖ **दूसरा गुटः** ट्रिपल एन्टेन्टे (Triple Entente) | |

- यूरोप के साम्राज्यवादी देशों के दो विरोधी गुटों के मध्य शत्रुता के कारण 1914 ई. में एक युद्ध आरम्भ हुआ जो 1918 ई. तक चला। इसे प्रथम महायुद्ध कहा गया।
- प्रथम विश्व युद्ध के समय भारत के वायसराय लॉर्ड हार्डिंग (1910-1916 ई.) थे। युद्ध के दौरान बाल गंगाधर तिलक और महात्मा गांधी ने ब्रिटिश सरकार की सहायता के लिए धन व सेना की सहायता हेतु गाँव-गाँव का दौरा किया।
- युद्ध आरंभ होने के पश्चात् दिसंबर, 1914 ई. में कांग्रेस का अधिवेशन भूपेन्द्र नाथ बसु की अध्यक्षता में मद्रास में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में साम्राज्यवादियों के विजय की कामना की गई। कांग्रेस के मद्रास अधिवेशन में गवर्नर लॉर्ड पेंटलैंड (मद्रास) उपस्थित थे। कांग्रेस के इतिहास में यह प्रथम अवसर था, कोई गवर्नर अधिवेशन में उपस्थित हुआ था।
- श्रीमती एनी बेसेंट और बाल गंगाधर तिलक के नेतृत्व में होमरूल लीग की स्थापना हुई। 1893 ई. में एनी बेसेंट भारत आई और थियोसोफिकल सोसाइटी की नेता बनीं।
- 1914 ई. में बाल गंगाधर तिलक बर्मा के निर्वासित जीवन से छूटकर आए और कांग्रेस में शामिल हो गये थे।

## होमरूल लीग आंदोलन (1916 ई.)

- 16 अप्रैल, 1916 में तिलक ने बेलगांव में हुए प्रांतीय सम्मेलन में होमरूल लीग के गठन की घोषणा की, जिसके अध्यक्ष जोसेफ बैपटिस्टा थे। संभवतः वे महाराष्ट्र में अपना आधार बनाये रखना चहते थे।
- एनी बेसेंट के समर्थकों ने भी इस दिशा में कदम उठाया तथा उनकी अनुमति से पहले होमरूल ग्रुप की स्थापना कर ली। 1916 ई. में जमनादास द्वारकादास, शंकर लाल बैंकर तथा इन्दुलाल यागनिक ने बंबई से एक अखबार यंग इंडिया का प्रकाशन आरम्भ किया।
- 1915 ई. में लाला लाजपतराय ने अमेरिका में एक होमरूल लीग का गठन किया था।
- सितंबर, 1916 में एनी बेसेंट ने होमरूल लीग की स्थापना की तथा जार्ज अरुंडेल को संगठन का सचिव नियुक्त किया। तिलक तथा ऐनी बेसेंट ने किसी प्रकार व्यवधान से बचने के लिए अपने-अपने कार्यक्षेत्रों का निर्धारण कर लिया।
- 2 जनवरी, 1916 में लंदन में भारतीय होमरूल लीग की स्थापना की गई। इसके महासचिव डी. ग्राहमपोल थे।

- तिलक की लीग ने मराठी तथा अंग्रेजी भाषा में पर्चे निकालकर अपने विचार एवं प्रचार कार्य गति प्रदान की। बाद में इन पर्वो को गुजराती तथा कन्नड़ भाषा में भी प्रकाशित किया गया।

> तिलक ने कहा कि भारत उस बेटे की तरह है जो अब जवान हो चुका है। समय का तकाजा है कि बाप या पालक इस बेटे को उसका वाजिब हक दे दें। भारतीय जनता को अपना हक लेना ही होगा। इसका उन्हें पूरा अधिकार है।

- तिलक ने क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा तथा भाषाई राज्य की माँग को इस आन्दोलन में शामिल कर दिया। उन्होंने मराठी, तेलुगू, कन्नड़ तथा अन्य भाषाओं के आधार पर प्रांतों के गठन की माँग की। उनकी होमरूल लीग की माँग पूरी तरह धर्मनिपेक्षता पर आधारित थी।
- एनी बेसेन्ट अपने पत्र कॉमनवील और न्यू इण्डिया द्वारा तथा तिलक ने मराठा एवं कसेरी के माध्यम से लीग के कार्यक्रमों का प्रचार प्रसार किया।
- तिलक की लीग पर किये गए मुकदमें की पैरवी मुहम्मद अली जिन्ना के नेतृत्व में की गई। तिलक के साथ एन. सी. केलकर भी शामिल थे।
- होमरूल आंदोलन में शामिल होने वाले अन्य प्रमुख नेता चितरंजन दास और मोतीलाल नेहरू थे।
- एनी बेसेंट की लीग के साथ जॉर्ज अरुंडेल, सी.पी. रामास्वामी अय्यर, वी.पी. वाडिया, मोती लाल नेहरू, तेजबहादुर सप्रु, मदन मोहन मालवीय आदि थे। कालान्तर में पंडित जवाहर लाल नेहरू (इलाहाबाद) तथा वी. चक्रवर्ती एवं जे. बनर्जी (कलकत्ता) भी इसमें शामिल हो गए।
- एनी बेसेंट के अन्य समर्थकों में मद्रास से सत्यमूर्ति अलीकुज्जमा, लखनऊ से जमनादास द्वारकादास उमर शोभानी शंकर दयाल बैंकर तथा इन्दुलाल याज्ञनिक आदि प्रमुख थे।
- यूरोप के साम्राज्यवादी देशों के दो विरोधी गुटों के मध्य शत्रुता के कारण 1914 ई. में एक युद्ध आरम्भ हुआ जो 1918 ई. तक चला। इसे प्रथम महायुद्ध कहा गया।
- 1916 ई. में लखनऊ के कांग्रेस अधिवेशन में तिलक को कांग्रेस में अधिकारिक रूप से शामिल कर लिया गया। इस सम्मेलन की अध्यक्षता अंबिका चरण मजूमदार कर रहे थे।
- गोपाल कृष्ण गोखले के सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसाइटी के सदस्यों को होम रूल लीग का सदस्य बनने की अनुमति नहीं थी।
- मद्रास सरकार ने एनी बेसेंट जॉर्ज अरुंडेल तथा वी.पी. वाडिया को जून 1917 में गिरफ्तार कर लिया। इसके विरोध में सर एस. सुब्रमण्यम अय्यर ने नाइटहुड की सरकारी उपाधि को त्याग दिया।
- होमरूल लीग की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि उसने भावी गांधीवादी कार्यक्रमों की आधारशिला रखी तथा राष्ट्रीय आन्दोलन के लिये युवाओं को प्रेरित किया।
- होमरूल आन्दोलन के संदर्भ में एनी बेसेंट का कहना था कि, मैं प्रेरक का कार्य कर रही हूँ तथा सोये हुए देश को जगा रही हूँ।

## लखनऊ समझौता ( 1916 ई. )

- 1916 ई. में लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता अम्बिका चरण मजूमदार ने की। मदन मोहन मालवीय ने लखनऊ समझौते का विरोध किया था।
- 1916 ई. के लखनऊ समझौते पर कांग्रेस और मुस्लिम लीग, दोनों ने हस्ताक्षर किए। शीघ्र ही स्वराज प्राप्ति की माँग का समर्थन करने के लिए दोनों संगठन एकजुट हुए। इस समझौते में कांग्रेस ने विधान परिषदों में मुसलमानों के पृथक प्रतिनिधित्व को स्वीकार कर लिया।
- कांग्रेस के सूरत अधिवेशन के नौ साल बाद अब कांग्रेस के गरम दल और नरम दल पुनः एकजुट हुए।
- भारत सचिव एडविन मॉण्टेग्यू ने अगस्त, 1917 में यह घोषणा की कि, ब्रिटिश सरकार भारत में उत्तरदायी सरकार स्थापित करने के उद्देश्य से धीरे-धीरे स्वशासित संस्थाओं की स्थापना करना चाहती है।
- दिसंबर, 1917 में कलकत्ता में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। जिसकी अध्यक्षता एनी बेसेंट ने की थी।
- एनी बेसेंट कांग्रेस की अध्यक्ष बनने वाली पहली महिला थीं।
- इस अधिवेशन में 4,000 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जिसमें लगभग 400 महिलाएँ थीं।

## मॉन्टेग्यू घोषणा ( अगस्त 1917 )

- 8 जुलाई, 1918 में मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड रिपोर्ट प्रकाशित हुई। इस समय मॉन्टेग्यू भारत सचिव और चेम्सफोर्ड वायसराय था।
- कांग्रेस ने इसे असंतोषजनक एवं निराशापूर्ण माना। तिलक ने मॉन्टेग्यू घोषणा को सूर्य विहीन उषा काल की संज्ञा दी।
- नरमपंथी नेताओं ने सुरेन्द्रनाथ बनर्जी के नेतृत्व में 17 अगस्त, 1918 को एक सभा करके इस रिपोर्ट का स्वागत किया और कांग्रेस से अलग होकर राष्ट्रीय उदारवादी संघ (नेशनल लिबरल लोग) का गठन किया। जो बाद में अखिल भारतीय उदारवादी संघ (ऑल इंडिया लिबरल फेडरेशन) के रूप में प्रसिद्ध हुआ ।
- कांग्रेस के उदारवादियों ने मॉण्टेग्यू घोषणा को भारत का मैग्नाकार्टा कहा। इस प्रकार कांग्रेस का दूसरा विभाजन हो गया।
- इस रिपोर्ट में उन सुधारों की बात की गई थी, जिन्हें ब्रिटिश सरकार भारत में लागू करना चाहती थी।
- मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड रिपोर्ट के प्रकाशन के बाद एक और रिपोर्ट प्रकाशित हुई। यह युद्ध के दौरान भारतीयों की सरकार विरोधी गतिविधियों की जाँच करने के लिए स्थापित रॉलेट कमीशन की रिपोर्ट थी।
- रॉलेट कमीशन की रिपोर्ट में दमन के नए तरीके सुझाए गए। इस रिपोर्ट पर आधारित कानून ने देश की राजनीतिक स्थिति को पूरी तरह से बदल दिया।

## मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार ( 1919 ई. )

- इसे भारत शासन अधिनिमय के नाम से भी जाना जाता है। इसके अन्तर्गत प्रांतीय विधायी परिषदों का आकार बढ़ा दिया गया तथा यह निश्चित किया गया कि उनके अधिकांश सदस्य

चुनाव जीतकर आयेंगे। प्रांतों में पहली बार द्वैध शासन प्रणाली को प्रारम्भ किया गया जिसका जन्मदाता लियोनिश कटिंश था।

- 1919 ई. के अधिनियम की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता प्रान्तों में द्वैध शासन प्रणाली थी।
- इसके अन्तर्गत प्रांतीय विषयों को आरक्षित एवं हस्तांतरित दो भागों में विभाजित कर दिया गया। आरक्षित विषयों में अत्यंत महत्वपूर्ण विषय जैसे: वित्त, कानून व्यवस्था, अकाल आदि रखे गए।
- इस अधिनियम के द्वारा भारत में पहली बार लोक सेवा आयोग की स्थापना का प्रावधान रखा गया तथा भारतीय विधानमण्डल को बजट पास करने के सम्बंध में पहली बार सीमित अधिकार दिए गए।

| क्रान्तिकारी पत्रिका | |
|---|---|
| **समाचार पत्र/पुस्तकें** | **सम्पादक एवं प्रकाशक** |
| युगान्तर | वारीन्द घोष, भूपेन्द्र दत्त |
| संध्या | मुखदा चरण |
| वन्देमातरम् | अरविन्द घोष |
| जमींदार | सिराजुद्दीन |
| भारत माता | अजीत सिंह |
| वन्देमातरम् | मैडम कामा (लन्दन) |
| बन्दी जीवन | शचीन्द्र नाथ सान्याल |
| भवानी मंदिर | अरविन्द घोष |
| वर्तमान रणनीति | वारीन्द्र कुमार घोष |
| पथेर दावी | शरतचंद्र चट्टोपाध्याय |
| बम मैनुअल | पी.एन. वापट |
| काल | परांजपे |

| संस्था | संस्थापक | वर्ष |
|---|---|---|
| एशियाटिक सोसाइटी | विलियम जोन्स | 1784 |
| युवा बंगाल आन्दोलन | हेनरी विवियन डेरोजियो | 1826 |
| परमहंस मंडली | गोपाल हरिदेशमुख | 1840 |
| यूनाइटेड इंडियन कमेटी | व्योमेशचन्द्र बनर्जी | 1883 |
| इण्डियन सोशल कॉंफ्रेंस | महादेव गोविन्द रानाडे | 1887 |
| शारदा सदन | रमाबाई | 1889 |
| सर्वेन्ट् ऑफ इण्डिया सोसायटी | गोपाल कृष्ण गोखले | 1905 |
| मुस्लिम लीग | आगा खाँ एवं सलीम उल्ला | 1906 |
| अनुशीलन समिति | श्री वीरेन्द्र घोष, भूपेन्द्रदत्त | 1907 |
| सोशल सर्विस लीग | श्री नारायण मल्हार जोशी | 1911 |
| गदर पार्टी | लाला हरदयाल | 1913 |
| होमरूल लीग | तिलक एवं ऐनीबेसेन्ट | 1916 |
| वीमेन्स इण्डिया एसोसिएशन | सदाशिव अय्यर | 1927 |
| अहमदाबाद टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन | महात्मा गांधी | 1918 |
| अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन | एन.एम. जोशी | 1920 |
| अवध किसान सभा | बाबा रामचंद्र | 1920 |
| स्वराज्य पार्टी | मोतीलाल नेहरू, सी.आर. दास | 1923 |
| अखिल भारतीय साम्यवादी दल | सत्यभक्त | 1924 |
| आर.एस. एस. | के.वी. हेडगेवार | 1925 |
| हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन | शचीन्द्र सन्याल | 1924 |
| नौजवान सभा | भगत सिंह एवं यशपाल | 1926 |
| श्रमिक स्वराज पार्टी | काजी नजरूल इस्लाम | 1928 |
| हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन | भगत सिंह | 1928 |
| खुदाई खिदमतगार | खान अब्दुल गफ्फारखाँ | 1929 |
| कांग्रेस समाजवादी पार्टी | नरेन्द्र देव एवं जयप्रकाश नारायण | 1934 |
| प्रगतिशील लेखक संघ | मुंशी प्रेमचन्द्र | 1936 |
| स्वतंत्र श्रमिक पार्टी | बी.आर. अम्बेडकर | 1936 |
| अखिल भारतीय किसान सभा | एन.जी. रंगा व सहजानन्द | 1936 |
| फारवर्ड ब्लॉक | सुभाष चन्द्र बोस | 1939 |
| भारतीय बोल्शेविक पार्टी | एन.डी. राय | 1939 |
| रेडक्लिफ डेमोक्रेटिक दल | एम.एन. राय | 1940 |
| क्रांतिकारी समाजवादी दल | सौम्येन्द्र नाथ टैगोर | 1942 |
| आजाद हिन्द फौज | रास बिहारी बोस | 1942 |
| आजाद हिन्द सरकार | सुभाष चन्द्र बोस | 1943 |

## स्वतंत्रता आन्दोलन

| महत्वपूर्ण नारे (Slogan) | | |
|---|---|---|
| 1. | जय जवान जय किसान | लाल बहादुर शास्त्री |
| 2. | मारो फिरंगी को | मंगल पांडे |
| 3. | जय जगत | विनोबा भावे |
| 4. | कर मत दो | सरदार बल्लभभाई पटले |
| 5. | संपूर्ण क्रांति | जयप्रकाश नारायण |
| 6. | विजय विश्व तिरंगा प्यारा | श्यामलाल गुप्ता पार्षद |
| 7. | वंदे मातरम | बंकिमचंद्र चटर्जी |
| 8. | जय गण मन | रवींद्रनाथ टैगोर |
| 9. | सम्राज्यवाद का नाश हो | भगत सिंह |
| 10 | स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है | बाल गंगाधर तिलक |
| 11. | इंकलाब जिंदाबाद | भगत सिंह |
| 12. | दिल्ली चलो | सुभाषचंद्र बोस |
| 13. | करो या मरो | महात्मा गांधी |
| 14. | जय हिंद | सुभाषचंद्र बोस |
| 15. | पूर्ण स्वराज | जवाहरलाल नेहरू |
| 16. | हिंदी, हिंदू, हिंदुस्तान | भारतेंदू हरिशचंद्र |
| 17. | वेदों की ओर लौटो | दयानंद सरस्वती |
| 18. | आराम हराम है | जवाहरलाल नेहरू |
| 19. | हे राम | महात्मा गांधी |
| 20. | भारत छोड़ो | महात्मा गांधी |
| 21. | सरफरोशी की तम्मना अब हमारे दिल में है | रामप्रसाद बिस्मिल |
| 22. | सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा | इकबाल |
| 23. | तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा | सुभाषचंद्र बोस |
| 24. | साइमन कमीशन वापस जाओ | लाला लाजपत राय |
| 25. | हू लिव्स इफ इंडिया डाइज | जवाहरलाल नेहरू |

| सामान्य ज्ञान इतिहास | |
|---|---|
| **राष्ट्रीय आंदोलन की महत्वपूर्ण घटनाएं** | |
| 1904 | भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पारित |
| 1905 | बंगाल का विभाजन |

| | |
|---|---|
| 1906 | मुस्लिम लीग की स्थापना |
| 1907 | सूरत अधिवेशन, कांग्रेस में फूट |
| 1909 | मार्ले-मिंटो सुधार |
| 1911 | ब्रिटिश सम्राट का दिल्ली दरबार |
| 1916 | होमरूल लीग का निर्माण |
| 1916 | मुस्लिम लीग-कांग्रेस समझौता लखनऊ पैक्ट |
| 1917 | महात्मा गाँधी द्वारा चंपारण में आंदोलन |
| 1919 | रौलेट अधिनियम |
| 1919 | जलियाँवाला बाग हत्याकांड |
| 1919 | मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार |
| 1920 | खिलाफत आंदोलन |
| 1920 | असहयोग आंदोलन |
| 1922 | चौरी-चौरा कांड |
| 1927 | साइमन कमीशन की नियुक्ति |
| 1928 | साइमन कमीशन का भारत आगमन |
| 1929 | भगतसिंह द्वारा असेंबली में बम विस्फोट |
| 1929 | कांग्रेस द्वारा पूर्ण स्वतंत्रता की माँग |
| 1930 | सविनय अवज्ञा आंदोलन |
| 1930 | प्रथम गोलमेज सम्मेलन |
| 1931 | द्वितीय गोलमेज सम्मेलन |
| 1932 | तृतीय गोलमेज सम्मेलन |
| 1932 | सांप्रदायिक निर्वाचक प्रणाली की घोषणा |
| 1932 | पूना पैक्ट |
| 1942 | भारत छोड़ो आंदोलन |
| 1942 | क्रिप्स मिशन का आगमन |
| 1943 | आजाद हिन्द फौज की स्थापना |
| 1946 | कैबिनेट मिशन का आगमन |
| 1946 | भारतीय संविधान सभा का निर्वाचन |
| 1946 | अंतरिम सरकार की स्थापना |
| 1947 | भारत विभाजन माउंटबेटन योजना |
| 1947 | भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति |

## राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी : एक परिचय

- **नाम** : मोहनदास करमचन्द गाँधी
- **पिता** : करमचन्द गाँधी
- **माता** : पुतलीबाई
- **जन्म** : 2 अक्टूबर, 1869 ई.
- **मृत्यु** : 30 जनवरी, 1948 ई.
- **जन्म स्थान** : पोरबंदर (गुजरात) में
- **विवाह** : 1883 ई. में कस्तूरबा गाँधी से ।
- **पुत्र** : हरिलाल, मणिलाल, देवदास, रामदास
- **राजनीतिक गुरु** : गोपालकृष्ण गोखले
- **प्रमुख शिष्य** : इंग्लैण्ड में जन्मी **मीरा बेन** (महात्मा गाँधी द्वारा प्रदत्त नाम) का वास्तविक नाम **मैडलीन स्लेड** था।
- **कानून की पढ़ाई के लिए इंग्लैण्ड प्रस्थान** : 1888 ई. मुंबई से
- **कानून (बैरिस्टर) की डिग्री प्राप्त** : 1891 ई. में
- **अब्दुल्ला के मुकदमे के लिए दक्षिण अफ्रीका गये** : 1893 ई. में
- **दक्षिण अफ्रीका में नटाल कांग्रेस की स्थापना** : 1894 ई. में
- **दक्षिण अफ्रीका में जुलू व बोअर पदक** : 1899 ई. में
- **कैसर-ए हिंद की उपाधि** : 9 जनवरी, 1915 ई. में
- **कांग्रेस अधिवेशन में प्रथम बार शामिल** : 1901 ई. (कलकत्ता अधिवेशन)
- **डरबन (दक्षिण अफ्रीका) में फीनिक्स आश्रम की स्थापना** : 1904 ई. में
- **सत्याग्रह का प्रथम प्रयोग** : 1906 ई. दक्षिण अफ्रीका में
- **जेल में जीवन का प्रथम अनुभव** : 1908 ई. में
- **टॉलस्टाय फार्म की स्थापना** : 1910 ई. जोहान्सबर्ग, दक्षिण अफ्रीका
- **महात्मा गाँधी का भारत आगमन** : 9 जनवरी, 1915
- **साबरमती आश्रम की स्थापना** : 1915 ई.
- **कांग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता** : 1924 ई. (बेलगाँव, कर्नाटक)
- **महात्मा गाँधी की दक्षिण अफ्रीका में सक्रियता** : 21 वर्ष
- **आत्मकथा सत्य के साथ मेरे प्रयोग** : (1925 ई.)
- **सिद्धांत** : सत्य एवं अहिंसा
- **अखिल भारतीय खादी बोर्ड की स्थापना** : 1923 ई.
- **अखिल भारतीय चरखा संघ की स्थापना** : 23 सितंबर 1925
- **प्रमुख पुस्तकें** : सत्य के साथ मेरे प्रयोग (आत्मकथा), इंडिया ऑफ माई ड्रीम्स, अनासक्त योग, हिंद स्वराज (1909 ई.) गीता माता, सप्त महाव्रत, (गाँधी जी का वास्तविक दर्शन व पश्चिमी सभ्यता का विरोध), सुनो विद्यार्थियों
- **प्रमुख समाचार-पत्र** : द ग्रीन पैम्पलेट (14 अगस्त, 1896; राजकोट); इंडियन ओपिनियन (1903 दक्षिण अफ्रीका में) यंग इंडिया (1919): हरिजन (1932)।

## महात्मा गांधी की प्रमुख उपाधियाँ

| | उपाधि | सम्बोधनकर्ता / समय |
|---|---|---|
| 1. | कैसर-ए-हिन्द | प्रथम विश्व युद्ध के समय |
| 2. | भर्ती करने वाला सार्जेंट | प्रथम विश्व युद्ध के समय |
| 3. | भंगी शिरोमणि | दक्षिण अफ्रीका के प्रवास के दौरान |
| 4. | कुली बैरिस्टर | दक्षिण अफ्रीका के अंग्रेज मजिस्ट्रेट |
| 5. | कर्मवीर | दक्षिण अफ्रीका के सहयोगी |
| 6. | सेवाग्राम का संत | आश्रम के अतिथियों द्वारा |
| 8. | मलंग बाबा | कबायलियों द्वारा |
| 7. | आधुनिक युग के अज्ञात शत्रु | डॉ. राजेन्द्र प्रसाद |
| 9. | बापू | सी. एफ एंड्रूज व जवाहरलाल नेहरू |
| 10. | देशद्रोही फकीर | विंस्टन चर्चिल |
| 11. | भिखारियों का राजा | पं. मदन मोहन मालवीय |
| 12. | राष्ट्रपिता | सुभाष चन्द्र बोस |
| 13. | अर्द्धनग्न फकीर | विंस्टन चर्चिल |
| 14. | वन मैन बाउंड्री फोर्स | लॉर्ड माउंटबेटन द्वारा |
| 15. | महात्मा | रवीन्द्रनाथ टैगोर |

## गाँधी का उदय

- मोहनदास करमचंद गाँधी भारतीय जनता की आजादी के संघर्ष के इस नए दौर के महानतम् नेता थे।
- भारतीय राजनीति में उनका पदार्पण प्रथम विश्वयुद्ध के समय हुआ।
- आधुनिक भारत के इस महानतम् नेता ने भारतीय जनता की आजादी के संघर्ष का लगभग 30 वर्ष तक नेतृत्व किया।
- महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 में गुजरात के पोरबंदर में हुआ था।
- इंग्लैण्ड में अपना अध्ययन पूरा करने के पश्चात् वे एक वकील के रूप में दक्षिण अफ्रीका गए।

- दक्षिण अफ्रीका में रहते हुए उन्होंने वहाँ के भारतीयों पर होने वाले गोरे शासकों के अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष किया। गांधीजी 1915 ई. में भारत लौटे और दमन के विरुद्ध संघर्ष करने में जुट गए।
- उन्होंने अपने एक आरंभिक संघर्ष की शुरुआत चंपारण (बिहार) में की। जहाँ ये गरीब किसानों को निलहों (जमीदारों) के अत्याचारों से मुक्त कराने के लिए लड़े।

| महात्मा गाँधी के प्रमुख आश्रम | | | |
|---|---|---|---|
| 1. | फीनिक्स फार्म | डरबन (दक्षिण अफ्रीका) | 1904 ई. |
| 2. | टॉलस्टाय फार्म | जोहान्सबर्ग (दक्षिण अफ्रीका) | 1910 ई. |
| 3. | साबरमती आश्रम | साबरमती नदी (अहमदाबाद) | 1915 ई. |
| 4. | सत्याग्रह आश्रम | कोचरब (अहमदाबाद) | 1915 ई. |
| 5. | अनाशक्ति आश्रम | कौसानी (उत्तराखण्ड) | 1929 ई. |
| 6 | सेवाग्राम आश्रम | वर्धा (महाराष्ट्र) | 1936 ई. |

- बिहार के एक किसान नेता राजकुमार शुक्ल के आग्रह पर गाँधीजी चम्पारण पहुँचे। वहाँ के किसान अंग्रेजों द्वारा जबरन नील उत्पादन कराने हेतु शुरू किए गये तिनकठिया प्रथा (कुल कृषि भूमि के 3/20 भाग पर नील की खेती हेतु बाध्यता) से त्रस्त थे। वहाँ उन्हें चंपारण छोड़े जाने का आदेश दिया गया, परन्तु गांधीजी ने उसको नहीं माना।
- उन्होंने निलहों के अत्याचारों की जाँच के लिए और उनका अंत करने के लिए सरकार को विवश कर दिया।
- 1918 ई. में उन्होंने अहमदाबाद के कपड़ा मिल मजदूरों और गुजरात के खेड़ा के किसानों का नेतृत्व किया।
- अहमदाबाद के मिल मजदूर वेतन में वृद्धि की माँग कर रहे थे तथा खेड़ा के किसान फसल बर्बाद हो जाने के कारण, राजस्व वसूली रोक देने की माँग कर रहे थे।
- इन आन्दोलनों में कुशल नेतृत्व के पश्चात् गांधीजी भारतीय जनता के सर्वमान्य नेता हो गए।
- गाँधीजी ने जनता में निर्भयता की भावना पैदा की तथा जेल, लाठी और गोली सहित सभी प्रकार के दमन को सहने की इच्छा-शक्ति उनमें जाग्रत की।
- उनके नेतृत्व में लोगों ने कानूनों की खुलेआम अपहेलना की और कचहरियों एवं दफ्तरों का बहिष्कार किया।
- लोगों ने करों की अदायगी नहीं की. शांतिपूर्ण प्रदर्शन किए, कारोबार नष्ट कर दिया तथा विदेशी माल बेचने वाली दुकानों के सामने धरना दिया।
- गांधीजी द्वारा शुरू किए गए समाज सुधार के रचनात्मक कार्यों और अन्य रचनात्मक गतिविधियों ने राष्ट्रीय आंदोलन को जन-आंदोलन का स्वरूप प्रदान करने में योगदान दिया। उन्होंने अस्पृश्यता की अमानवीय प्रथा के विरुद्ध लड़ाई शुरू कर दी।
- उन दिनों लाखों निम्न जातीय भारतीय अपमान का निकृष्ट जीवन जी रहे थे क्योंकि उच्च जातियों के लोग उन्हें अछूत समझते थे। यह गाँधी जी का एक महान योगदान है कि उन्होंने इस बुराई को मिटाने के लिए संघर्ष किया। उनके लिए तथाकथित अछूत हरिजन थे।
- उनके आश्रमों में गांधी जी और उनके अनुयायी गन्दगी साफ करने जैसे अनके ऐसे काम करते थे, जिन्हें उच्च जाति के हिंदू अछूतों का काम समझते थे।

गांधीजी ने गाँवों के लोगों की हालत सुधारने के भी प्रयत्न किए। उनका मत था कि, जब तक गाँवों में रहने वाली लगभग 80 प्रतिशत जनता के जीवन स्तर में सुधार नही आएगा तब तक भारत प्रगति नहीं कर सकता।

- उन्होंने गाँवों में छोटे उद्योग स्थापित करने के प्रयास किए। तथा खादी का प्रचार किया ताकि वे आत्मनिर्भर एवं स्वायत्त इकाई बन सकें।
- प्रत्येक कांग्रेसी के लिए खादी पहनना अनिवार्य हो गया। चरखा ग्रामोद्योग के महत्व का प्रतीक बन गया जिसके पश्चात् चरखा कांग्रेस के झंडे का अंग बना।
- गांधी जी ने विश्वबंधुत्व का प्रचार किया। क्योंकि ये हिंदू-मुसलमान एकता के समर्थक थे।

## प्रथम विश्व युद्ध के बाद ब्रिटिश नीति

- भारतीय नेताओं का विश्वास था कि विश्वयुद्ध की समाप्ति पर भारत को स्वराज्य मिल जाएगा।
- मॉन्टेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधारों के अन्तर्गत 1919 ई. में भारत सरकार ने एक कानून बनाकर शासन पद्धति में कुछ परिवर्तन किए। इन परिवर्तनों के अनुसार, केंद्रीय विधान मंडल के दो सदन विधानपरिषद् और राज्यसभा बनाए गए।
- इन दोनों सदनों में निर्वाचित सदस्यों का बहुमत था। परन्तु इन दोनों केंद्रीय सदनों के अधिकारों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ।
- कार्यकारिणी परिषद् के सदस्य, जो मंत्रियों की तरह थे, विधान मंडल के प्रति उत्तरदायी नहीं थे। प्रांतीय विधान मंडलों का विस्तार किया गया जिसमें निर्वाचित
- सदस्यों का बहुमत था। प्रांतों में चलाई गई दोहरी सरकार की व्यवस्था के अन्तर्गत इन्हें व्यापक अधिकार दिए गए।
- शिक्षा और जनस्वास्थ्य जैसे कुछ विभाग ऐसे मंत्रियों को सौंपे गए, जो विधान परिषदों के प्रति उत्तरदायी थे।
- वित्त और पुलिस जैसे ज्यादा महत्व के विभाग गवर्नर के नियंत्रण में रहे। मंत्री तथा गवर्नर-जनरल प्रांत के किसी भी निर्णय को अस्वीकार कर सकते थे।
- सभी महत्वपूर्ण अधिकार गवर्नर-जनरल और उसकी कार्यकारिणी परिषद् के पास वे ब्रिटिश सरकार के प्रति उत्तरदायी थे, न कि भारतीय जनता के प्रति।
- विश्व युद्ध की समाप्ति अमब 4 बाद लोगों ने स्वराज प्राप्ति की जो उम्मीद की थी वह उपर्युक्त परिवर्तनों में निराशा में बदल गई। सम्पूर्ण देश में व्यापक असंतोष फैल गया जिसके दमन के लिए सरकार ने नए तरीके अपनाए ।

**महात्मा गाँधी: आंदोलन व सत्याग्रह**

- **चम्पारण सत्याग्रह:** यह 1917 ई. में प्रथम वास्तविक किसान सत्याग्रह था। 3/20 भाग पर अनिवार्य नील की खेती के विरुद्ध सत्याग्रह जिसे तिनकठिया पद्धति भी कहते हैं।
- **अहमदाबाद मजदूर आंदोलन, 1918:** महात्मा गाँधी द्वारा भारत में प्रथम भूख हड़ताल।

- **खेड़ा सत्याग्रह, 1918:** प्रथम पूर्ण किसान सत्याग्रह।
- **खिलाफत आंदोलन, 1919:** सर्वप्रथम असहयोग आंदोलन की अभिव्यक्ति।
- असहयोग आंदोलन, 1920 प्रथम जनआंदोलन की अभिव्यक्ति।
- **सविनय अवज्ञा आंदोलन (दांडी मार्च) 1930:** नमक सत्याग्रह।
- **व्यक्तिगत सत्याग्रह, 1940:** उपनाम: दिल्ली चलो आंदोलन।
- **भारत छोड़ो आंदोलन व अगस्त क्रांति, 1942:** नारा करो या मरो!

## रौलेट एक्ट (1919 ई.)

- भारत में क्रांतिकारियों के प्रभाव को समाप्त करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने 1917 ई. में सर सिडनी रौलेट की अध्यक्षता में एक समिति बनाई।
- रौलेट एक्ट सेडिशन कमेटी की सिफारिश पर आधारित था।
- इस समिति के गठन का उद्देश्य था कि भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन सम्बंधी षड्यंत्र किस स्तर तक फैले हुए हैं तथा इन पर प्रतिबन्ध लगाने के लिए किस प्रकार के कानून की आवश्यकता है।
- रौलेट एक्ट लागू करने का मुख्य कारण यह था कि, भारत रक्षा कानून की अवधि समाप्त होने वाली थी।
- समिति ने 1918 ई. में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। समिति द्वारा दिए गए सुझावों के आधार पर केंद्रीय विधानमंडल में फरवरी, 1919 में दो विधेयक लाए गए, जिनमें एक विधेयक को तो वापस ले लिया गया, परंतु दूसरे क्रांतिकारी एवं अराजकता अपराध अधिनियम (जिसे रौलेट एक्ट कहा जाता है) को 18 मार्च, 1919 को पारित कर दिया गया।
- इसकी अवधि तीन वर्ष रखी गई। इसे काला कानून भी जाना जाता है।

रौलेट एक्ट को बिना वकील, बिना अपील तथा बिना दलील का कानून भी कहा गया। इसे काला अधिनियम एवं आतंकवादी अपराध अधिनियम के नाम से भी जाना जाता था।

- मुहम्मद अली जिन्ना ने अपने इस्तीफे में कहा था– जो सरकार शांतिकाल में ऐसे कानून को स्वीकार करती है, वह अपने को एक सभ्य सरकार कहलाने का अधिकार खो बैठती है।
- इस कानून के द्वारा सरकार को किसी भी व्यक्ति को बिना मुकद्दमा चलाए जेल में डाल देने का अधिकार मिल गया।
- गांधीजी पहले ही सत्याग्रह सभा की स्थापना कर चुके थे। अब उन्होंने देशव्यापी विरोध करने को कहा।

सम्पूर्ण देश में 6 अप्रैल, 1919 का दिन राष्ट्रीय अपमान दिवस के रूप में मनाया गया।

- देशभर में प्रदर्शन और हड़तालें हुई। सारे देश में व्यापार की गति धीमी पड़ गई।
- भारत की जनता ने एकजुट होकर ऐसा व्यापक विरोध पहले कभी नहीं किया था।
- सरकार ने बर्बरतापूर्वक दमन शुरू किया। कई जगहों पर लाठी एवं गोली का सहारा लिया गया।

## जलियाँवाला बाग हत्याकांड

- 10 अप्रैल, 1919 को दो राष्ट्रवादी नेता डॉ. सत्यपाल और डा. सैफुद्दीन किचलू गिरफ्तार कर लिए गए। 13 अप्रैल 1919 में, इनकी गिरफ्तारी के विरोध में जलियाँवाला बाग में एक जनसभा एकत्र हुई। (जलियाँवाला बाग अमृतसर में स्थित छोटा सा पार्क मेंहै जो तीन ओर ऊँची दीवारों से घिरा है और केवल एक छोटी गली से पार्क में जाने का रास्ता है)

| स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख घटनाएँ |
|---|
| **1885 ई.:** भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना। |
| **1905 ई.:** बंगाल विभाजन के फलस्वरूप आरंभ हुए स्वदेशी आदोलन का भारत के विभिन्न क्षेत्रों में प्रसार। |
| **1906 ई.:** मुस्लिम लीग को स्थापना। |
| **1909 ई.:** इंडियन काउंसिल एक्ट। |
| **1912 ई.:** बंगाल विभाजन रद्द व राजधानी दिल्ली स्थानांतरित। |
| **1909 ई.:** गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट, जिसके फलस्वरुप प्रथम विधानमंडल निर्वाचित हुआ। |
| **1929 ई.:** भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा स्वराज (पूर्ण स्वतंत्रता) का आह्वान। |
| **1935 ई.:** गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट द्वारा विधानमंडल को शक्तियों में विस्तार और निर्वाचन क्षेत्रों में वृद्धि। |
| **1940 ई.:** मुस्लिम लीग द्वारा पाकिस्तान के निर्माण का आह्वान। |
| **1942 ई.:** भारतीय स्वतंत्रता के लिए समझौते की शर्तों को तय |
| **1946 ई.:** करने में कैबिनेट मिशन असफल। |
| **1947 ई.:** स्वतंत्रता प्राप्ति व भारत का विभाजन, पाकिस्तान की स्वतंत्रता। |

- यह सभा शांतिपूर्ण ढंग से आयोजित की गई थी जिसमें अत्यधिक संख्या में वृद्धों, स्त्रियों और बच्चों ने भी भाग लिया था। अचानक ब्रिटिश अधिकारी जनरल डायर ने पार्क में एकत्रित हुए निहत्थे लोगों पर गोली चलाने का आदेश दे दिया। सरकारी रिपोर्ट के अनुसार, इसमें मरने वाले लोगों की संख्या मात्र 379 बताई गई है।
- दीनबंधु एफ. एण्ड्रज ने इस हत्याकाण्ड को जानबूझकर की गई हत्या कहा। डायर ने शान के साथ कहा था कि, लोगों को सबक सिखाने के लिए यह कार्यवाही की गयी थी। उसे इस घृणित कार्य का कोई पश्चाताप नहीं था। वह इंग्लैंड चला गया। जहाँ कुछ अंग्रेजों ने उसका सम्मान करने के लिए पैसे एकत्र किए।
- एक ब्रिटिश अखबार ने इसे आधुनिक इतिहास का एक नृशंस हत्याकांड कहा। हंटर कमीशन की रिपोर्ट को गाँधी जी ने पन्ने दर पन्ने निर्लज्ज सरकारी लीपा पोती की संज्ञा दी।

कांग्रेस ने जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड को जांच हेतु मदन मोहन मालवीय की अध्यक्षता में एक समिति गठित की। समिति के अन्य सदस्यों में मोती लाल नेहरु, महात्मा गाँधी, सी. आर. दास, वदरुद्दीन तैय्यबजी और एम. आर. जयकर आदि शामिल थे।

- लगभग 21 साल बाद, 13 मार्च, 1940 को उधम सिंह ने गोली मारकर माइकल ओ डायर की हत्या कर दी। जलियाँवाला बाग हत्याकांड के समय माइकल ओ डायर पंजाब का लेफ्टिनेंट गवर्नर था।
- जलियाँवाला बाग हत्याकांड से भारतीय जनता का रोष बढ़ गया। जिसमें सरकार के दमन में भी वृद्धि हुई। परिणामस्वरूप लोगों को सड़कों पर उतरने के लिए मजबूर किया गया, अखबार बंद कर दिए गए तथा उनके संपादकों को जेल में डाल दिया गया या निर्वासित कर दिया।

- दमन का ऐसा भयंकर दौर चला जैसा 1857 ई. के विद्रोह को कुचल देने के पश्चात् चलाया गया था।
- जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के विरोधस्वरूप रवीन्द्रनाथ टैगोर ने ब्रिटिश सरकार द्वारा दी गई नाइटहुड की उपाधि वापस कर दी।
- अगस्त, 1919 में अमृतसर में कांग्रेस का अधिवेशन सम्पन्न हुआ। जिसकी अध्यक्षता मोती लाल नेहरू ने की थी। इस अधिवेशन में किसानों ने बड़ी संख्या में भाग लिया था।

जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड के समय पंजाब में चमन दीप के नेतृत्व में एक डंडा फौज अस्तिव में आयी जो लाठियों और चिडियामार बंदूकों से लैस होकर सड़कों पर गश्त लगाते और पोस्टर चिपकाते थे।

## खिलाफत आंदोलन

- तुर्की के सुल्तान को खलीफा (मुस्लिमों का सर्वोच्च धार्मिक नेता) का पदा प्राप्त था। ब्रिटेन द्वारा खलीफा के प्रति किए जा रहे अन्याय के विरोध में भारत में खिलाफ आन्दोलन का प्रारम्भ हुआ।
- 1919 ई. में मुहम्मद अली तथा शौकत अली (जो अली बंधुओं के नाम से प्रसिद्ध थे), ने अबुल कलाम के नेतृत्व में खिलाफत आंदोलन चलाया। इस आंदोलन को चलाने के लिए एक खिलाफत कमेटी गठित की गई जिसमे गाँधीजी भी शामिल थे।
- सितम्बर, 1919 में अखिल भारतीय खिलाफत कमेटी का गठन किया गया। 17 अक्टूबर, 1919 को अखिल भारतीय स्तर पर खिलाफत दिवस मनाया गया।
- 24 नवम्बर, 1919 को दिल्ली में हुई खिलाफत कमेटी के सम्मेलन की अध्यक्षता महात्मा गांधी ने की। इस आंदोलन का विरोध सी.आर. दास ने किया। उनका विरोध विधानपरिषदों के बहिष्कार को लेकर था।
- अबुल कलाम आजाद ने अपनी पत्रिका अल हिलाल के माध्यम से इस आंदोलन का प्रचार किया। 1924 ई. में जब तुर्की में मुस्तफा कमाल पाशा के नेतृत्व में नई सरकार का गठन हुआ तो उसने खलीफा के पद को समाप्त कर दिया। इस प्रकार खिलाफत आंदोलन का मूल कारण ही समाप्त हो जाने के कारण यह आंदोलन भी समाप्त हो गया।

## असहयोग आन्दोलन

- 1920 ई. में कांग्रेस ने कलकत्ता के अपने विशिष्ट अधिवेशन में तथा नागपुर में 1920 ई. के अंत में आयोजित अपने वार्षिक अधिवेशन में गांधीजी के नेतृत्व में सरकार के विरुद्ध संघर्ष की एक नई योजना स्वीकार की।
- नागपुर अधिवेशन में लगभग 15,000 प्रतिनिधि शामिल हुए। इस अधिवेशन में कांग्रेस के संविधान में संशोधन किया गया। जनता द्वारा सभी न्यायोचित और शांतिमय साधनों से भारतीय स्वराज प्राप्त करना कांग्रेस के संविधान का उद्देश्य बन गया।
- इन साधनों द्वारा किए जाने वाले संघर्ष को असहयोग आंदोलन का नाम दिया गया।

लाला लाजपत राय को अध्यक्षता में हुए कलकत्ता अधिवेशन में महात्मा गांधी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन का प्रस्ताव पारित हुआ।

- इस आन्दोलन के दौरान विद्यार्थियों द्वारा शिक्षण संस्थाओं का बहिष्कार किया गया।
- 17 नवम्बर, 1921 को प्रिंस ऑफ वेल्स के भारत आगमन पर सम्पूर्ण भारत में सार्वजनिक हड़ताल का आयोजन किया गया। इस आंदोलन का लक्ष्य था- पंजाब और तुर्की के साथ हो रहे अन्याय को खत्म करना और स्वराज प्राप्त करना। इसका प्रारम्भ ब्रिटिश सरकार द्वारा दी गई सर जैसी पदवियों को त्यागने के साथ हुआ।
- गांधीजी ने 1920 ई. में अपनी कैसर-ए-हिंद की उपाधि लौटा दी। जिसके पश्चात् विधान परिषदों का बहिष्कार प्रारम्भ हुआ। जब परिषदों के लिए चुनाव हुए तो अधिकांश लोगों ने वोट डालने से मना कर दिया। विद्यार्थियों और अध्यापकों ने स्कूल-कॉलेज छोड़ दिए।
- राष्ट्रवादियों ने दिल्ली में जामिया मिलिया और वाराणसी में काशी विद्यापीठ जैसी नई शिक्षण संस्थाएँ स्थापित कीं। लोगों ने अपनी सरकारी नौकरियाँ छोड़ दीं। वकीलों ने अदालतों का बहिष्कार किया। सारे देश में सार्वजनिक हड़तालें हुई।
- 1921 ई. का वर्ष समाप्त होने के पहले ही 30,000 लोग जेलों में बंद कर दिए गए। केरल के कुछ भागों में भी विद्रोह भड़क उठा। अधिकांश विद्रोही मोपला किसान थे। इसलिए इसे मोपला विद्रोह कहा गया।
- विद्रोह को वर्बरतापूर्वक कुचल दिया गया। 2000 से अधिक मोपला किसान मारे गए और करीब 45000 किसानों को बंदी बनाया गया।
- 1921 ई. में अहमदाबाद में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। जिसके अध्यक्ष हकीम अजमल खाँ थे। अधिवेशन ने आंदोलन को जारी रखने का निर्णय लिया और तब असहयोग आंदोलन का अंतिम दौर आरंभ हुआ।

## चौरी-चौरा कांड

- गाँधी जी द्वारा वायसराय को दी गई चेतावनी की समय सीमा पूरी होने से पहले ही उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले में स्थित चौरी-चौरा नामक स्थान पर 5 फरवरी, 1922 को एक हिंसक घटना घटित हुई।
- चौरी-चौरा कांड के नाम से चर्चित इस घटना के पश्चात् भीड़ ने विरोध स्वरूप पुलिस के 22 सिपाहियों को थाने के अंदर जिंदा जला दिया।
- चौरी-चौरा घटना से गांधी जी इतने आहत हुए कि उन्होंने शीघ्र आंदोलन को समाप्त करने का निर्णय लिया।

- महात्मा गाँधी ने 12 फरवरी, 1922 को बारदोली में कांग्रेस कार्य समिति की एक बैठक बुलाई, जिसमें चौरी-चौरा कांड के कारण सामूहिक सत्याग्रह व असहयोग आंदोलन स्थगित करने का प्रस्ताव पारित कराया। प्रस्ताव में रचनात्मक कार्यक्रमों पर बल दिया गया जिसमें कांग्रेस के लिए 1 करोड़ सदस्य भर्ती कराना. चरखे का प्रचार, राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना, मादक द्रव्य निषेध तथा पंचायतें संगठित करना सम्मिलित आदि थे।
- महात्मा गांधी को 10 मार्च, 1922 को गिरफ्तार कर 18 मार्च, 1922 को अहमदाबाद में सेशन जज ब्रूमफील्ड की अदालत में मुकदमा चलाया गया और 6 वर्ष कैद की सजा सुनाई गई। परन्तु 15 फरवरी, 1924 को बीमारी के कारण महात्मा गांधी के 6 वर्ष पूरे होने के पहले हर रिहा कर दिया गया।

## मुस्लिम लीग की स्थापना

- 03 अक्टूबर, 1906 को आगा खाँ के नेतृत्व में मुसलमानों का एक शिष्ट मण्डल वायसराय लार्ड मिंटो से शिमला में मिला था।
- 30 दिसंबर, 1906 को जब ढाका में मुहम्मडन एजुकेशनल कॉन्फ्रेंस की बैठक हो रही थी तभी उस अधिवेशन को ढाका के नवाब सलीमुल्लाह की अध्यक्षता में अखिल भारतीय मुस्लिम लीग (The All India Muslim League) के रूप में परिवर्तित कर दिया गया। इस सभा में नवाब सलीमुल्ला, मोहिसिन-उल-मुल्क, आगा खाँ तथा नवाब बाकर- उल मुल्क उपस्थित थे।
- सभा की अध्यक्षता बाकर-उल-मुल्क द्वारा की गई। 1908 ई. में आगा खाँ को मुस्लिम लीग का स्थायी अध्यक्ष बनाया गया। इसी वर्ष अलीगढ़ अधिवेशन में 40 सदस्यीय एक केन्द्रीय समिति की स्थापना की गई एवं उसकी प्रांतीय शाखाएँ भी स्थापित की गई।

| अखिल भारतीय मुस्लिम लीग अधिवेशन | | |
|---|---|---|
| **अधिवेशन** | **वर्ष** | **स्थान** |
| प्रथम अधिवेशन | 1906 ई. | ढाका |
| द्वितीय अधिवेशन | 1907 ई. | करांची |
| तृतीय अधिवेशन | 1908 ई. | अमृतसर |

- मुस्लिम लीग के अमृतसर अधिवेशन (1908 ई.) में मुस्लिमों के लिए एक पृथक निर्वाचन मंडल की माँग की गई, जिसे 1909 ई. में मॉर्ले-मिण्टो सुधारों द्वारा स्वीकृति प्रदान की गयी।

> 1909 ई. के सुधार बिल में पृथक निर्वाचन को स्वीकार कर लिया गया। यहाँ द्विराष्ट्र सिद्धांत (Two Nation Theory) का बीज बो दिया गया।

- 1912-13 ई. में मुस्लिम लीग की राजनीति में एक नई बात देखी गई। इस लीग में यंग पार्टी के कुछ सदस्य यथा मुहम्मद अली, शौकत अली, हकीम अजमल खाँ और मौलाना अबुल कलाम आजाद का उदय हुआ।
- इन्होंने मुस्लिम लीग की नीतियों को कांग्रेस की नीतियों के निकट ला दिया। इन्हीं के प्रभाव में वर्ष 1913 के लखनऊ अधिवेशन में लोग ने स्वराज के लक्ष्य को अपना लिया। अब लखनऊ पैक्ट की भूमिका तैयार हो गई।
- 1916 ई. में बाल गंगाधर तिलक के प्रभाव से लखनऊ में उदारवादी और उग्रवादी कांग्रेस एवं मुस्लिम लीग की संयुक्त बैठक हुई। लखनऊ अधिवेशन की अध्यक्षता अम्बिका चरण मजूमदार ने की। इस अधिवेशन में कांग्रेस ने पृथक निर्वाचन के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया जो कांग्रेस की एक भूल सिद्ध हुई।

## स्वराज पार्टी

- असहयोग आंदोलन के समय कांग्रेस द्वारा विधानपरिषदों के बहिष्कार का निर्णय लिया गया था। परन्तु इस विषय में कांग्रेस में दो मत थे।
- चितरंजन दास तथा मोती लाल नेहरू के नेतृत्व में एक वर्ग का मत था कि, कांग्रेस को चुनावों में भाग लेना चाहिए।
- वल्लभभाई पटेल, डॉ. अन्सारी और राजेंद्र प्रसाद के नेतृत्व वाला वर्ग इस प्रस्ताव का विरोधी था। ये लोग चाहते थे कि, कांग्रेस चुनावों में भाग न लेकर रचनात्मक कार्यों में लगी रहे।
- 26 दिसम्बर 1922 ई. में कांग्रेस का अधिवेशन गया में सम्पन्न हुआ। जिसके अध्यक्ष चितरंजन दास थे। इस अधिवेशन ने परिषदों में न जाने के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।
- इस प्रस्ताव के समर्थकों ने 1923 ई. में अबुल कलाम आजाद की अध्यक्षता में दिल्ली में आयोजित विशेष अधिवेशन में कांग्रेस ने स्वराजियों को चुनाव लड़ने की अनुमति दे दी।
- स्वराजियों ने केंद्रीय और प्रांतीय परिषदों में 101 सीटों में से 42 सीटों पर विजय प्राप्त की।
- ब्रिटिश शासकों द्वारा प्रस्तुत उनकी नीतियों और प्रस्तावों के लिए परिषदों की सहमति प्राप्त करना लगभग असंभव बना दिया।
- सरकार ने 1928 ई. में विधानपरिषद् में एक ऐसा विधेयक प्रस्तुत किया, जिसके अन्तर्गत वह भारत की आजादी के संघर्ष को समर्थन देने वाले किसी भी गैर-भारतीय को देश से निकाल सकती थी। परन्तु यह विधेयक पारित नहीं हुआ। सरकार ने पुनः इस विधेयक को (पब्लिक सेफ्टी बिल) पेश करने का प्रयास किया तो विधान परिषद् के अध्यक्ष विठ्ठलभाई पटेल ने इस विधेयक को पेश करने की अनुमति नहीं दी।
- परिषदों में होने वाली चर्चा में भारतीय सदस्य अक्सर सरकार को पछाड़ देते थे और उसकी निंदा करते थे।
- फरवरी, 1924 में गाँधीजी जेल से रिहा हुए और रचनात्मक कार्यक्रम को बढ़ावा दिया। जिसे कांग्रेस के दोनों गुटों ने स्वीकार किया था।
- रचनात्मक कार्यक्रम के सबसे प्रमुख घटक थे- खादी का प्रचार, हिंदू-मुस्लिम एकता करना। को मजबूत बनाना और अस्पृश्यता को दूर
- किसी भी कांग्रेस कमेटी के सदस्य के लिए यह अनिवार्य हो गया। कि वह हाथों से काते और बुने गए खादी का प्रयोग करे तथा प्रतिमाह 2,000 गज सूत काते ।
- गाँधीजी ने अखिल भारतीय खादी संगठन की स्थापना की तथा देश भर में खादी भंडार खोले गए।
- गाँधीजी खादी को गरीबों की दरिद्रता से मुक्ति देने वाला और देश के आर्थिक उत्थान का साधन मानते थे।
- इसने आजादी के संघर्ष के संदेश को देश के प्रत्येक हिस्से में विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में पहुँचाने में योगदान दिया।
- चरखा आजादी के आंदोलन का प्रतीक बन गया।

## किसानों और मजदूरों का आंदोलन

- आजादी के प्रथम वास्तविक जन-आंदोलन (असहयोग आंदोलन) में किसानों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।
- देश के विभिन्न भागों में किसान सभाएँ हुई और उन्होंने जमींदारों तथा ब्रिटिश अधिकारियों के दमन के विरुद्ध लड़ाईयाँ लड़ीं।

> किसानों को संगठित करने वाले कुछ नेता - बाबा रामचंद्र, विजय सिंह पथिक, सहजानंद सरस्वती और एन. जी. रंगा थे।

- अल्लुरी सीतारामराजू ने आंध्र के किसानों तथा आदिवासियों के विद्रोह का नेतृत्व किया।

- किसान आंदोलन के दो पक्ष थे तथा दोनों का आजादी के राष्ट्रीय संघर्ष से सम्बंध था। एक पक्ष था किसानों का आजादी के संघर्ष में शामिल होना। जबकि दूसरा पक्ष किसानों की शिकायतों से संबंधित था। जैसे जमींदारों, सरकार तथा महाजनों द्वारा किसानों का शोषण।

## बारदोली सत्याग्रह ( 1928 ई. )

- गुजरात में स्थित बारदोली के किसानों ने सरकार द्वारा बढ़ाये गये 30% कर के विरोध में बल्लभभाई पटेल के नेतृत्व में सत्याग्रह किया।
- बाद में बारदोली सत्याग्रह की सफलता के बाद 30% लगान बढ़ोत्तरी को गलत बताते हुए इसे घटाकर 6.03% कर दिया।
- सरदार पटेल के नेतृत्व में बारदोली सत्याग्रह के सफल होने के बाद बारदोली की महिलाओं ने बल्लभ भाई पटेल को सरदार की उपाधि प्रदान की।
- औद्योगिक मजदूर भारतीय समाज में एक नए वर्ग के रूप में उभरे थे। 1918 ई. में स्थापित मद्रास लेबर यूनियन आरंभिक दौर का एक प्रमुख मजदूर संगठन था।
- बी.पी. वाडिया और चिरू वी. कल्याणसुंदरम् चक्करई चेट्टियार इसके प्रमुख नेता थे।
- भारत में ट्रेड यूनियन (Trade Union) आंदोलन के अग्रणी नेता नारायण मल्हार जोशी थे। जिन्होंने मजदूरों के पहले अखिल भारतीय ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- इस संगठन की स्थापना बम्बई में 1920 ई. में हुई थी। इसके प्रथम अधिवेशन के अध्यक्ष लाला लाजपत राय थे। चितरंजन दास, जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचंद्र बोस जैसे दिग्गज नेता ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस के अध्यक्ष बने।
- भारत के समाजवादी आंदोलन के नेताओं ने मजदूरों और किसानों को संगठित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- 11 अप्रैल, 1936 को प्रथम अखिल भारतीय किसानसभा का गठन लखनऊ में हुआ जिसके अध्यक्ष स्वामी सहजानंद सरस्वती को तथा महासचिव एन. जी. रंगा को बनाया गया।

## समाजवादी विचारों का प्रसार

- समाजवादी विचारों एवं उन पर आधारित आंदोलनों का लक्ष्य पूँजीवादी व्यवस्था द्वारा निर्मित असमानताओं को समाप्त करना था।
- समाजवादी आंदोलन अपने दृष्टिकोण में अंतर्राष्ट्रीयतावादी थे। अर्थात् वे सभी देशों के आम लोगों और मजदूरों को भाई-भाई मानते थे तथा एक देश द्वारा दूसरे पर शासन करने के विरोधी थे।
- उन्होंने दुनिया के सभी भागों में सामाजिक व आर्थिक समानता स्थापित करने में प्रयत्नशील आंदोलनों और साम्राज्यवादी शासन से मुक्ति पाने के लिए किए जा रहे संघर्षो को समर्थन दिया।
- रूसी क्रांति ने रूस के सम्राट (जार) के निरंकुश शासन को खत्म करके सोवियत संघ में समाजवाद के निर्माण का कार्य शुरू कर दिया था।
- रूसी क्रांति ने घोषणा की कि प्रत्येक देश को अपना लक्ष्य निर्धारित करने का अधिकार है। रूसी क्रांति ने आजादी के लिए संघर्ष कर रहे सभी लोगों को अपना समर्थन दिया।
- भारत के बाहर रह रहे क्रांतिकारी मानवेंद्रनाथ राय ने कई देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों द्वारा स्थापित कम्युनिस्ट इंटरनेशल में कई वर्षो तक सक्रिय रूप से भाग लिया।
- समाजवादी विचारों और रूसी क्रांति से प्रभावित होकर भारत में समाजवादी विचारों का प्रचार करने के उद्देश्य से कई समाजवादी तथा कम्युनिस्ट संगठनों की स्थापना हुई।
- इन संगठनों के अधिकांश नेताओं ने असहयोग आंदोलन में भाग लिया। था। इन समूहों के कुछ नेता थे श्रीपाद अमृत डांगे, एम. सिंगारवेल, शौकत उस्मानी और मुजफ्फर अहमद।
- इनमें से कुछ समूह एक-दूसरे के नजदीक आए और उन्होंने 1925 ई. में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की। मजदूरों और किसानों को संगठित करने में कम्युनिस्टों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- समाजवारी विचारों और रूसी क्रांति का देश के युवाओं तथा राष्ट्रीय आंदोलन के युवा नेताओं पर गहरा प्रभाव पड़ा। भारत में समाजवादी विचारों को लोकप्रिय बनाने वाले राष्ट्रीय आंदोलन के सबसे प्रमुख नेता जवाहरलाल नेहरू थे।
- जवाहरलाल नेहरू के प्रभाव में 1934 ई. में कांग्रेस समाजवादी पार्टी की स्थापना हुई। जिसने कांग्रेस के साथ जुड़कर काम किया। इसने किसानों एवं मजदूरों को संगठित करने में तथा आजादी के संघर्ष के समाजिक व आर्थिक उद्देश्यों से सम्बंधित कांग्रेस की नीतियों को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

## क्रांतिकारी आंदोलन

- असहयोग आंदोलन को वापस लेने से जो निराशा फैली थी उससे 1920 के दशक में क्रांतिकारी गतिविधियाँ पुनः आरम्भ हुई।
- शचीन्द्र नाथ सान्याल, योगेश चटर्जी, रामप्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र लाहिड़ी, चन्द्रशेखर आजाद आदि ने मिलकर सन् 1924 में कानपुर में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन नामक एक संगठन स्थापित किया, जिसका मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश शासन को खत्म करने के लिए सशस्त्र विद्रोह का नेतृत्व करना था।

## काकोरी कांड ( 9 अगस्त, 1925 ई. )

- एच.आर.ए. द्वारा 9 अगस्त, 1925 को उत्तर रेलवे के लखनऊ-सहारनपुर संभाग के काकोरी नामक स्थान पर 8 डाउन ट्रेन पर डकैती डालकर सरकारी खजाने को लूट लिया गया। यह घटना काकोरी काण्ड के नाम से प्रसिद्ध हुई।
- इस सम्बंध में 29 क्रान्तिकारियों को गिरफ्तार कर उन पर काकोरी षड्यंत्र कांड के तहत मुकदमा चलाया गया। 17 लोगों को लम्बी सजाएँ, 4 को आजीवन कारावास तथा 4 क्रांतिकारियों- राम प्रसाद बिस्मिल, रोशनलाल, अशफाक उल्ला खाँ तथा राजेन्द्र लाहिड़ी को क्रमशः गोरखपुर, इलाहाबाद, फैजाबाद व गोण्डा में फाँसी दे दी गई।

## हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (H.S.R.A)

- काकोरी काण्ड के पश्चात् हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (H.R.A.) का अस्तित्व समाप्त हो गया, अत: इस संगठन को पुन: संगठित करने के लिए चन्द्रशेखर आजाद के नेतृत्व में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के प्रतिनिधियों ने दिल्ली के फिरोज कोटला मैदान में बैठक की।
- बैठक में हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन (एच.आर.ए.) का नाम बदलकर हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिक एसोसिएशन (एच. एस. आर.ए.) कर दिया गया।
- इस संगठन का उद्देश्य, भारत में एक समाजवादी गणतंत्रात्मक राज्य की स्थापना करना था।
- इस संगठन के सक्रिय सदस्यों में भगवती चरण बोहरा, विजय कुमार सिन्हा, शिव वर्मा, भगत सिंह, जयदेव कपूर एवं सुखदेव आदि प्रमुख थे।

## साण्डर्स की हत्या ( 17 दिसम्बर, 1928 )

- हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन का उद्देश्य, लाहौर के पुलिस अधीक्षक स्कॉट की हत्या करना था। जेम्स ए स्कॉट ने 30 अक्टूबर, 1928 को लाहौर में साइमन कमीशन विरोधी अभियान के दौरान लाला लाजपत राय पर लाठी चार्ज करवाकर उन्हें गंभीर रूप से घायल कर दिया था। 17 दिसम्बर, 1928 में लाहौर रेलवे स्टेशन पर भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद और राजगुरु ने स्कॉट के भ्रम में सहायक पुलिस अक्षीक्षक साण्डर्स की हत्या कर दी।

## सेण्ट्रल लेजिस्लेटिव असेम्बली बमकांड

- सबसे नाटकीय घटना 8 अप्रैल, 1929 में केन्द्रीय विधान सभा में घटित हुई। जब सभा में सार्वजनिक सुरक्षा विधेयक (Public Safety Bill) तथा व्यापार विवाद विधेयक (Trade Disputes Bill) पर बहस चल रही थी। तब भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने केंद्रीय विधान सभा में दो बम और कुछ पर्चे फेंके, पर्चे में लिखा हुआ था बहरों को सुनाने के लिए बमों की आवश्यकता है।
- भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने भागने की कोशिश नहीं की। वे वहीं पर खड़े रहे और इन्कलाब जिंदाबाद के नारा लगाते रहे। जेल में अपने साथ बुरा बर्ताव किए जाने के विरोध में उन्होंने भूख-हड़ताल शुरू की। भूख-हड़ताल के 64वें दिन एक क्रांतिकारी जतिन दास की मृत्यु हो गई।
- मुकदमे के दौरान क्रांतिकारियों ने बड़े साहस का परिचय दिया और वे आख्यान पुरुष बन गए।

## लाहौर षड्यंत्र मुकदमा ( 1929 ई. )

- भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त की गिरफ्तारी के कारण अनेक एच. एस.आर.ए. क्रांतिकारी गिरफ्तार किए गए और उन पर लाहौर षड्यंत्र कांड में संयुक्त रूप से मुकदमा चलाया गया।

> लाहौर षड्यंत्र कांड में अधिकांश क्रांतिकारियों को दोषी पाया गया। और उनमें से तीन क्रान्तिकारियों भगतसिंह, सुखदेव राजगुरु को 23 मार्च, 1931 ई. को फाँसी दे दी गई।

- फाँसी के समाचार से भारतीय जनता को बड़ा आघात लगा। सम्पूर्ण देश में हड़ताल हुई। जल निकाले गए और शोक सभाएँ हुई।
- चंद्रशेखर आजाद पुन: भाग निकलने में सफल हुए, किन्तु बाद में इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में पुलिस के साथ हुई एक मुठभेड़ में उन्होंने अपने आपको गोली मार ली।

## चटगाँव आर्मरी रेड

- बंगाल के नए क्रांतिकारी संगठनों में सूर्यसेन द्वारा स्थापित इंडियन रिपब्लिकन एसोसिएशन (I.R.A.) का विशिष्ट स्थान था। सूर्यसेन ने असहयोग आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया था। आगे चलकर वह एक राष्ट्रीय स्कूल के शिक्षक बन गए और इसलिए वह सामान्यत: मास्टर दा के नाम से प्रसिद्ध हुए।
- पूर्वी बंगाल के चटगाँव नामक बन्दरगाह पर सूर्यसेन के नेतृत्व में वहाँ के युवक और युवतियों ने विद्रोह किया। सूर्यसेन ने इंडियन रिपब्लिकन एसोसिएशन (I.R.A.) की ओर से एक घोषणा पत्र जारी किया। जिसमें चटगाँव, मेमन सिंह, वारीसाल के शस्त्रागारों पर एक ही समय में हमला करने की योजना थी।
- इन क्रांतिकारियों ने पुलिस शस्त्रागार, सहायक टुकड़ी पर अधिकार करने, टेलीफोन एक्सचेंज और तारघरों को नष्ट करने के लिए चार जत्थे भेजे थे। 65 युवक और युवतियों ने ब्रिटेन की भारतीय सेना की वर्दी पहनकर पुलिस शस्त्रागार पर 18 अप्रैल, 1930 को हमला किया।
- पंजाब में हरिकिशन ने पंजाब के गवर्नर की हत्या की कोशिश की। वंदेमातरम् और इंकलाब जिन्दाबाद के नारों के बीच तिरंगा फहराया गया और कार्यवाहक क्रांतिकारी सरकार के गठन की घोषणा की, जिसके राष्ट्रपति सूर्यसेन थे। यह घटना चटगाँव आर्मरी रेड के नाम से जानी जाती है।
- दिसंबर 1930 ई. में तीन जवानों विनय बोस, बादल गुप्ता और दिनेश गुप्ता ने कलकत्ता की राइटर्स बिल्डिंग में प्रवेश करके कारागार महानिरीक्षक की हत्या कर दी।
- आर्मरी रेड मुकदमें के फलस्वरूप कई क्रान्तिकारियों को अंडमान में आजीवन कारावास की सजा दी गई।

> इंडियन रिपब्लिकन आर्मी की गतिविधियों में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने वाली दो तरुण लड़कियाँ प्रीतिलता वाडेदार और कल्पना दत्त थीं। अंग्रेजों के हाथ न पड़े इसलिए प्रीतिलता ने जहर खा लिया एवं कल्पना दत्त को आजीवन कारावास की सजा दी गई।

- 1920 के दशक के आरंभ में क्रांतिकारी गतिविधियाँ पुन: शुरू हुई, जो अगले कुछ वर्षों तक देश के विभिन्न भागों में जारी रहीं। इस बीच क्रांतिकारी यह अनुभव करने लगे कि हिंसात्मक घटनाओं से कोई दीर्घकालीन लाभ नहीं होगा। समय के साथ अधिकांश क्रांतिकारी समाजवादी विचारधारा की ओर आकर्षित हुए।
- भगत सिंह और उनके मित्रों ने देश में समाजवादी क्रांति लाने के लिए किसानों और मजदूरों को संगठित करने पर जोर दिया।
- राष्ट्रीय आंदोलन के अधिकांश नेता क्रांतिकारियों के तरीकों के विरोधी थे तथा अधिकांश लोगों ने संघर्ष का अहिंसात्मक तरीका अपनाया।
- जब जन संघर्ष शिथिल पड़ गया था, तब क्रांतिकरियों की गतिविधियों ने देश में लड़ाकू वातावरण पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

## नये नेताओं का उदय

- बीसवीं सदी के तीसरे दशक में युवा नेताओं के एक नए समूह का उदय हुआ, जिसने राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण की भूमिका अदा की। इन तरुण नेताओं ने जनता को संगठित करने पर जोर दिया। उन्होंने राष्ट्रीय आंदोलन के उद्देश्यों को स्पष्ट करने में योगदान दिया।
- नये नेताओं ने इस बात पर बल दिया कि सर्वोच्च सत्ता जनता में निहित है और राष्ट्रीय आंदोलन को आम जनता की आकांक्षाओं के साथ जोड़ने पर ही यह सफल हो सकता है।
- उन्होंने जोर देकर कहा कि भारत की दरिद्रता और पिछड़ेपन को दूर करने के लिए आजादी प्राप्त करना आवश्यक है।
- उनके अनुसार राष्ट्रीय आंदोलन का उद्देश्य भारतीय समाज की पुनर्संरचना करना, दरिद्रता व पिछड़ेपन को समाप्त करना एवं समानता तथा न्याय पर आधारित समाज की स्थापना करना था। इन नये नेताओं ने देश के जवानों को अधिक प्रभावित किया।
- राष्ट्रीय आंदोलन के तरुण नेताओं पर समाजवादी विचारों तथा रूसी क्रांति का गहरा प्रभाव था।
- सोवियत संघ की साम्राज्यवाद-विरोधी विदेश नीति ने और रूसी क्रांति के बाद सोवियत संघ के एशियाई भागों की प्रगति ने उन्हें अधिक प्रभावित किया था।
- नई पीढ़ी के नेताओं में सबसे प्रमुख जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचंद्र बोस थे। जवाहरलाल नेहरू, मोती लाल नेहरू के बेटे थे। मोलीलाल नेहरू कांग्रेस के एक प्रमुख नेता थे।

## जवाहरलाल नेहरू

- जवाहरलाल नेहरू का जन्म 1889 ई. में हुआ था और उन्होंने इंग्लैण्ड में शिक्षा प्राप्त की थी।
- भारत लौटने पर वे गाँधीजी के सम्पर्क में आए। जवाहरलाल नेहरू गाँधी जी से प्रभावित होकर आजादी के संघर्ष में शामिल हो गए। उनकी दृष्टि में जनता की स्थिति में सुधार के लिए संघर्ष आवश्यक था।
- वे पहले ऐसे राष्ट्रीय नेता थे, जिन्होंने भारतीय राजाओं द्वारा शासित राज्यों की जनता के कष्टों को महसूस किया।
- जवाहरलाल नेहरू ने राजाओं द्वारा शासित राज्यों में आरम्भ हुए जनता के संघर्ष को आजादी के राष्ट्रीय आंदोलन का अंग बनाने में मदद की।
- गाँधीजी के पश्चात् जवाहरलाल नेहरू भारतीय जनता की आजादी के संघर्ष के सबसे बड़े नेता बन गए।

## सुभाषचंद्र बोस

- सुभाषचंद्र बोस का जन्म कटक (ओडिशा) में 1897 ई. में हुआ था। उनके पिता वकील थे और उन्हें राय बहादुर की पदवी दी गई थी, जो उन्होंने बाद में लौटा दी थी। सुभाषचन्द्र बोस इंडियन सिविल सर्विस की तैयारी करने के लिए इंग्लैंड गए।

1920 ई. में सुभाष चन्द्र बोस इंडियन सिविल सर्विस में चुने गए। उन्होंने सफल विद्यार्थियों में चौथा स्थान प्राप्त किया था।

- जलियांवाला बाग हत्याकांड (1919) का सुभाष चन्द्र बोस को गहरा आघात पहुँचा था। अप्रैल, 1921 ई. में वे भारत लौट आए और राष्ट्रीय आंदोलन में कूद पड़े।
- उन्होंने असहयोग आंदोलन (सन् 1920-22 ) में भाग लिया और इस दौरान वे चितरंजन दास के सम्पर्क में आए।
- वे राष्ट्रीय आंदोलन के एक बहुत बड़े नेता थे जो नेताजी के नाम से लोकप्रिय हुए। 1924 ई. में उन पर क्रांतिकारियों की मदद करने का आरोप लगाया गया और तीन साल जेल में रखा गया।
- जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचंद्र बोस राष्ट्रीय आंदोलन की एक नई विचारधारा के नेता थे। वे ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष को अधिक तीव्र बनाना चाहते थे।
- वे कांग्रेस के स्वराज के उद्देश्य से संतुष्ट नहीं थे। स्वराज का अर्थ साम्राज्य के अंतर्गत स्वशासन प्राप्त करना था।
- अतः यह पूर्ण आजादी नहीं थी. उन्होंने जोर देकर कहा कि राष्ट्रीय आंदोलन का उद्देश्य पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करना होना चाहिए और आम जनता के सक्रिय सहयोग से ही इस लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

## साइमन कमीशन (Simon Commission)

- ब्रिटिश सरकार ने 1919 ई. के इंडिया एक्ट के कामकाज की जाँच करने के लिए एक कमीशन (आयोग) की नियुक्ति की। उस कमीशन के अध्यक्ष सर जॉन साइमन थे, इसलिए वह साइमन कमीशन (Simon Commission) के नाम से जाना जाता है। कमीशन के सभी सदस्य अंग्रेज थे, उनमें एक भी भारतीय को शामिल नहीं किया गया था कमीशन की नियुक्ति से सारे देश में विरोध की लहर दौड़ गई।
- 1927 ई. में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन मद्रास में हुआ था। इस अधिवेशन में कांग्रेस ने कमीशन का बहिष्कार करने का निर्णय लिया। मुस्लिम लीग ने भी कमीशन का बहिष्कार करने का फैसला किया।

इस कमीशन में कोई भारतीय सदस्य नहीं था इसी कारण इस कमीशन को व्हाइट कमीशन कहा गया।

- कमीशन 3 फरवरी, 1928 को भारत पहुँचा। उस दिन देश के लगभग सभी भागों में हड़ताल हुई। उसी दिन दोपहर को कमीशन के बहिष्कार की घोषणा करने के लिए सारे देश में सभाएँ आयोजित की गयीं।
- कमीशन जिस स्थान पर भी गया, वहाँ उसके विरुद्ध तीव्र प्रदर्शन हुए और हड़ताल भी हुई। लखनऊ में, अन्य प्रदर्शनकारियों के साथ, जवाहरलाल नेहरू और गोविंद बल्लभ पंत को भी पुलिस की बर्बरता झेलनी पड़ी।
- डा. एम. ए. अंसारी की अध्यक्षता में मद्रास में आयोजित कांग्रेस के अधिवेशन में एक प्रस्ताव पास करके घोषणा की गई थी कि, भारतीय जनता का लक्ष्य पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करना है।
- यह प्रस्ताव जवाहरलाल नेहरू ने पेश किया था और एस. सत्यमूर्ति ने इसका अनुमोदन किया था।
- पूर्ण स्वराज की माँग को तेज करने के लिए इंडियन इंडिपेंडेंस लीग नामक एक संगठन की स्थापना (1942) की गई थी।

- जवाहरलाल नेहरू, सुभाषचन्द्र बोस, आयंगर, सत्यमूर्ति और शरतचंद बोस जैसे कई नेता इस लीग का नेतृत्व कर रहे थे।
- दिसंबर, 1928 में मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में कांग्रेस का अधिवेशन कलकत्ता में सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन में कई नेताओं ने पूर्ण स्वाधीनता की माँग करने के लिए कांग्रेस पर जोर डाला।

## पूर्ण स्वाधीनता की मांग

- दिसंबर, 1929 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन लाहौर में सम्पन्न हुआ जिसके अध्यक्ष जवाहरलाल नेहरू बने।
- गांधीजी द्वारा 31 दिसंबर, 1929 को एक प्रस्ताव पेश किया गया, जिसमें घोषणा की गई कि कांग्रेस के संविधान को धारा-1 में स्वराज शब्द का अर्थ होगा- पूर्ण स्वाधीनता

कांग्रेस ने 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया।

- 26 जनवरी, 1930 का दिन सम्पूर्ण देश में स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया गया जिसे भारतीय जनता के इतिहास में एक महत्वपूर्ण दिन माना जाता है।
- 26 जनवरी के विशिष्ट महत्व के कारण ही इसे संविधान लागू करने के दिन के रूप में चुना गया और यह प्रति वर्ष गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता है।

## सविनय अवज्ञा आंदोलन

- 1930 ई. में स्वाधीनता दिवस मनाने के बाद गाँधीजी के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930) आरम्भ हुआ। यह आंदोलन गाँधीजी की प्रसिद्ध दांडी यात्रा से आरम्भ हुआ।
- 12 मार्च, 1930 को गाँधीजी ने अहमदाबाद के अपने साबरमती आश्रम से 78 सदस्यों के साथ दांडी की ओर पैदल यात्रा शुरू की।
- दांडी, अहमदाबाद से करीब 385 किमी. दूर भारत के पश्चिमी समुद्र तट पर स्थित है।
- गाँधीजी और उनके साथी 6 अप्रैल, 1930 को दांडी पहुँचे। समुद्र के पानी के वाष्पीकरण के बाद बने नमक को उठाकर गाँधीजी ने नमक कानून को तोड़ा।
- नमक के उत्पादन पर सरकार का एकाधिकार था, इसलिए किसी के लिए भी नमक बनाना गैर-कानूनी था।
- नमक कानून को तोड़ने के बाद सम्पूर्ण देश में सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू हुआ।

तमिलनाडु में चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने दांडी यात्रा की तरह त्रिचनापल्ली से वेदराण्यम् तक की यात्रा की।

- धरासना (गुजरात) में सरोजिनी नायडू (जो एक प्रसिद्ध कवयित्री और कांग्रेस को प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष थी) ने नमक के सरकारी भंडार ग्रहों तक अहिंसात्मक सत्याग्रहियों की यात्रा का नेतृत्व किया था।
- देश भर में प्रदर्शन हुए, हड़तालें हुई, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार हुआ और बाद में लोगों ने कर देने से मना कर दिया।
- सभी प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार किया गया और कांग्रेस पर प्रतिबंध लगाया गया।
- आंदोलन शुरू होने के एक वर्ष के भीतर करीब 90,000 लोगों को जेल में बंद कर दिया गया।
- पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत में इस आंदोलन का नेतृत्व खान अब्दुल गफ्फार खाँ ने किया। वे सीमांत गाँधी के नाम से प्रसिद्ध हुए।
- साइमन कमीशन द्वारा सुझाए गए सुधारों पर विचार करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने नवंबर, 1930 में लंदन में पहला गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया।
- कांग्रेस ने उस सम्मेलन का बहिष्कार किया. परन्तु भारतीय राजाओं, मुस्लिम लीग, हिंदू महासभा और कुछ अन्य संगठनों के प्रतिनिधि उसमें शामिल हुए।
- वायसराय इरविन ने 1931 ई. में द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में शामिल होने के लिए कांग्रेस को सहमत करने का प्रयास किया।
- गाँधीजी और इरविन के मध्य एक समझौता हुआ, जिसके अन्तर्गत सरकार ने उन सभी राजनीतिक कैदियों को रिहा करना स्वीकार कर लिया जिनके खिलाफ हिंसा के आरोप नहीं थे।
- कांग्रेस ने भी सविनय अवज्ञा आंदोलन वापस लेना स्वीकार कर लिया।
- बल्लभभाई पटेल को अध्यक्षता में मार्च, 1931 में कराची में आयोजित कांग्रेस के अधिवेशन में समझौते को मान लेने और द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में शामिल होने का निर्णय लिया गया।
- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन के लिए गाँधीजी को कांग्रेस का प्रतिनिधि चुना गया। यह सम्मेलन 7 सितंबर, 1931 से 1 दिसम्बर, 1931 तक चला।
- कांग्रेस के कराची अधिवेशन (1931 ई.) में मौलिक अधिकारों और आर्थिक नीति के बारे में एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकार किया गया।
- प्रस्ताव में उन मौलिक अधिकारों की बात कही गई थी जिन्हें. जाति तथा धर्म के भेदभाव के बिना जनता को प्रदान करने का वादा किया गया था।
- प्रस्ताव में कुछ उद्योगों के राष्ट्रीयकरण, भारतीय उद्योगों के विकास और मजदूरों एवं किसानों के लिए कल्याणकारी योजनाओं को स्वीकार किया गया था।
- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने वाले कांग्रेस के एकमात्र प्रतिनिधि गाँधीजी थे। गाँधीजी के अतिरिक्त अन्य भारतीयों ने भी सम्मेलन में भाग लिया। उनमें भारतीय राजा, हिंदू, मुस्लिम एवं सिक्ख संप्रदायों के नेता शामिल थे।
- द्वितीय गोलमेज सम्मेलन असफल रहा। गाँधीजी के भारत लौटने के पश्चात् 28 दिसम्बर, 1931 को सविनय अवज्ञा आंदोलन पुनः आरम्भ कर दिया गया। जिसके कारण गाँधीजी और दूसरे नेता गिरफ्तार हुए। लगभग एक साल में 120,000 लोगों को जेल में बंद कर दिया गया। आंदोलन को मई, 1934 में वापस ले लिया गया।

## देशी रियासतों के विरुद्ध आंदोलन

- भारत में अंग्रेजों द्वारा शासित प्रदेशों (ब्रिटिश भारत) के अतिरिक्त भारतीय नवाबों राजाओं द्वारा शासित रियासतें भी थीं।

- ये रियासतें पूर्णत: स्वतंत्र नहीं थीं। अंग्रेजों ने अपने शासन को मजबूत करने के लिए इन रियासतों को बनाए रखा था।
- इन रियासतों की संख्या करीब 562 थी और इनमें भारत की करीब 20% आबादी बसी हुई थी।
- इनमें जम्मू व कश्मीर, मैसूर और हैदराबाद जैसे कुछ राज्य तत्कालीन यूरोप के कुछ राज्यों से भी बड़े थे।
- अधिकांश रियासतों में जनता की दशा शेष देश की जनता की दशा से निम्नतर थी।
- अधिकतर राजा अपनी रियासतों को अपनी निजी सम्पत्ति समझते थे। ये राजा विलासिता का जीवन व्यतीत कर रहे थे।
- शिक्षा के प्रसार, गरीबी दूर करने और जनता का जीवन स्तर सुधारने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया था।
- अनेक रियासतों में अभी भी कई अमानवीय प्रथाएँ जारी थीं. जैसे- बेगारी की प्रथा, यानी बिना मजदूरी दिए लोगों से काम करवाना। ब्रिटिश भारत में राष्ट्रीय आंदोलन का उदय हुआ तो रियासतों के लोगों में जागरूकता आने लगी। वे जनतांत्रिक अधिकारों और जनतांत्रिक सरकार की माँग करने लगे।
- लोगों के अधिकारों की लड़ाई लड़ने के लिए इन राज्यों में प्रजा मंडल जैसे संगठन स्थापित किए गये। आरंभिक संगठन प्रजावर्मा आदि के नेतृत्व में राजस्थान की रियासतों में स्थापित हुए।
- रियासतों की जनता के ये सभी संगठन ऑल इंडिया स्टेट्स पीपुल्स कॉफ्रेंस में एकीकृत हुए। बलवंत राय मेहता जिन्होंने भावनगर (गुजरात) में प्रजा मंडल की स्थापना की थी. इस नए संगठन के सचिव बने।
- इस संगठन ने माँग की कि भारतीय रियासतों को भारतीय राष्ट्र का अंग माना जाना चाहिए। बीसवीं सदी के चौथे दशक में भारतीय रियासतों की जनता का आंदोलन अत्यधिक शक्तिशाली बना।
- इस आन्दोलन के कुछ प्रमुख नेता थे राजस्थान में जयनारायण व्यास तथा जमनालाल बजाज, ओडिशा में सारंगधर दास, त्रावणकोर में एन्नी मस्करेने तथा पद्यमधान पिल्लई, जम्मू-कश्मीर में शेख मुहम्मद अब्दुल्ला तथा हैदराबाद में स्वामी रामानंद तीर्थ।
- राजा-महाराजाओं ने सविनय अवज्ञा आंदोलन को कुचलने में भी अंग्रेजों की मदद की। ब्रिटिश सरकार ने आजादी के आंदोलन को कमजोर करने के लिए भारतीय रियासतों का इस्तेमाल किया।
- जब देश आजादी प्राप्त करने की स्थिति में पहुँचा तो कई राजा-महाराजाओं ने दावा किया कि उनकी रियासतें स्वतंत्र हैं, उन्हें स्वतंत्र रहने का अधिकार है।
- कांग्रेस ने कई वर्षों तक रियासतों के मामलों में हस्तक्षेप न करने की नीति अपनाई।
- सुभाषचंद्र बोस की अध्यक्षता में 1938 ई. में आयोजित कांग्रेस के अधिवेशन में घोषणा की गई कि पूर्ण स्वराज का लक्ष्य रियासतों सहित सम्पूर्ण देश के लिए है।

जवाहरलाल नेहरू को, जो कई वर्षों से रियासतों की जनता के संघर्ष को सहयोग दे रहे थे. 1939 ई. में ऑल इंडिया स्टेटस पीपुल्स कांफ्रेंस का अध्यक्ष चुना गया।

- ब्रिटिश सरकार ने अपना शासन कायम रखने के लिए और राष्ट्रीय आंदोलन को कमजोर करने के लिए भारतीय जनता में फूट डालने को प्रयास किए। उनकी एक चाल सांप्रदायिकता को प्रोत्साहन देना भी था।
- सांप्रदायिकता से ही प्रेरित होकर मुस्लिम लीग (1906 ई.) तथा हिंदू महासभा (1915 ई.) की स्थापना हुई थी। सांप्रदायिकता का जहर 1920 ई. के बाद तेजी से फैलने लगा। हिंदुओं और मुसलमानों में धर्म-परिवर्तन के आंदोलन शुरू हुए। इन्होंने विभिन्न जातियों में अक्सर तनाव पैदा किया।
- 1920 के दशक में धर्म के नाम पर दंगे हुए और अनेक बेकसूर लोग। मारे गए। 1924 ई. में गाँधीजी ने 21 दिन का अनशन करके शांति स्थापित करने का प्रयास किया।

1931 ई. में कानपुर में सांप्रदायिक दंगे हुए। राष्ट्रीय आंदोलन के एक प्रमुख नेता गणेश शंकर विद्यार्थी शांति स्थापित करने के लिए दंगाग्रस्त क्षेत्रों में गए। परन्तु उन दंगों के दौरान हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए वे शहीद हो गए।

- 1916 ई. से कुछ वर्ष तक मुस्लिम लीग और कांग्रेस ने मिलकर काम किया था। मुस्लिम लीग ने अपने अधिवेशन उसी स्थान और उसी समय करने शुरू किए, जहाँ कांग्रेस के अधिवेशन होते थे।
- 1924 ई. में यह प्रथा बंद हो गई। उसी समय हिंदू महासभा भी सक्रिय हो गई। सिक्खों के बीच में सांप्रदायिक नेता सांप्रदायिक माँगें करने लगे। मुसलमानों के लिए सांप्रदायिक निर्वाचन की जो प्रथा पहले आरम्भ की गई थी उसे 1932 ई. में सिक्खों पर भी लागू कर दिया गया।
- जिस दौर में आजादी के संघर्ष में भाग लेने के लिए हजारों लोग जेल में पहुँच गए थे, उस समय सांप्रदायिक संगठन अलग रहे। कभी-कभी उन्होंने ब्रिटिश सरकार के साथ सहयोग किया।
- साइमन कमीशन के विरुद्ध आंदोलन के समय सांप्रदायिक दलों के कुछ नेताओं ने साइमन कमीशन का स्वागत किया।
- राष्ट्रीय आंदोलन ने सभी भारतीयों की समानता के आधार पर भारतीय समाज के पुनर्निर्माण पर जोर दिया, परन्तु सांप्रदायिक दल सामाजिक सुधारों के विरुद्ध थे। उनके मतानुसार सभी भारतीयों के हित समान नहीं थे।
- मुहम्मद अली जिन्ना, जो बीसवीं सदी के आरंभिक वर्षों में एक राष्ट्रवादी नेता थे, बाद में मुस्लिम लीग के सबसे प्रमुख नेता बन गये। ज्यादातर मुसलमानों ने पृथक राज्य की माँग का विरोध किया।
- आजादी के संघर्ष में दूसरे समुदायों के लोगों की तरह मुसलमानों ने भी भाग लिया था और ब्रिटिश सरकार के दमन को उन्होंने भी झेला था।

अशफाक उल्ला खाँ पहले मुस्लिम नेता थे, जिन्हें स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान फांसी दी गई थी।

- कांग्रेस मुस्लिमों की अत्यधिक संख्या थी। किसानों और मजदूरों के संगठनों ने समान सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक लक्ष्यों के लिए सभी समुदायों के लोगों को एकजुट किया था।
- राष्ट्रीय आंदोलन में अनेक महान नेता मुस्लिम थे। मुसलमानों के अधिकांश धार्मिक नेता मुस्लिम लीग और पृथक राज्य की

माँग के विरोधी थे। उन्होंने पहचाना कि मुसलमानों का भविष्य अन्य भारतीयों के साथ जुड़ा हुआ है तथा तात्कालिक समस्या विदेशी शासन को समाप्त करना है।

मुसलमानों, हिंदुओं, सिक्खों, ईसाईयों और दूसरे धर्मों के लोगों के सामने एक समान समस्याएँ थीं- गरीबी, पिछड़ेपन और असमानता की समस्याएँ।

- 1930 के दशक के अंत तक मुस्लिम लीग और हिंदुओं के सांप्रदायिक संगठनों का कोई खास प्रभाव नहीं था।

## दलित वर्गों के आंदोलन

- सुधार आंदोलनों का एक प्रमुख उद्देश्य हिंदुओं के मध्य तथाकथित निम्न जातियों का उद्धार करना था। इन आंदोलनों ने तथाकथित निम्न जातियों के उत्पीड़न के प्रति लोगों को जागरूक करने में और विशेषकर अस्पृश्यता की शर्मनाक प्रथा के खिलाफ एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।
- अछूत जातियों के लोगों के मंदिर प्रवेश के लिए महाराष्ट्र, केरल और तमिलनाडु में कई अभियान आयोजित किए गए।
- पेरियार के नाम से लोकप्रिय ई. वी. रामास्वामी नायकर ने आत्म-सम्मान आंदोलन (सेल्फ रेस्पेक्ट मूवमेंट) शुरू किया।
- दलित वर्गों के आंदोलन के प्रमुख नेता डा. भीमराव अंबेडकर थे। दलित वर्गों के उद्धार और उत्थान के लिए उन्होंने कई ग्रंथ लिखे, पत्र-पत्रिकाएँ निकाली तथा संस्थाएँ स्थापित कीं। उन्होंने गोलमेज सम्मेलनों में भाग लिया और दलित वर्गों के हितों की माँगें उठाई।
- गाँधीजी ने अस्पृश्यता की कुप्रथा को समाप्त करने के काम को बड़ा महत्व दिया था। उन्होंने अस्पृश्यता विरोधी कई संगठन स्थापित किए थे।

अस्पृश्यों को उन्होंने हरिजन नाम दिया था और इसी नाम की एक पत्रिका निकाली थी। 1932 ई. में ब्रिटिश सरकार ने तथाकथित अस्पृश्यों के लिए पृथक निर्वाचन की घोषणा कर दी।

- राष्ट्रीय नेताओं ने सरकार की इस नई घोषणा का विरोध किया। गाँधीजी उस समय जेल में थे। उन्होंने जेल में इस निर्णय के विरुद्ध अनशन आरंभ कर दिया।

गाँधी जी ने कहा मैं चाहता हूँ कि अस्पृश्यता का जड़मूल से उच्छेदन हो। इसी के लिए मेरा जीवन समर्पित है और इसके लिए जीवन त्यागने में मुझे प्रसन्नता होगी।

- अंततः एक समझौता हुआ, जिसके अन्तर्गत पृथक निर्वाचन के निर्णय को वापस ले लिया गया। उसी के साथ यह तय हुआ कि तथाकथित अस्पृश्य जातियों के लोगों के लिए पर्याप्त प्रतिनिधित्व की व्यवस्था की जाएगी।
- राष्ट्रीय आंदोलन और दलित वर्गों का संगठन भारतीय समाज के दलित समुदायों के उद्धार के लिए कार्य करते रहे।

## भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और विश्व

- राष्ट्रीय आंदोलन ने बाहर की दुनिया की घटनाओं और विचारों से प्रेरणा ग्रहण की थी। दूसरे कई देशों के लोगों ने भारत की आजादी के लिए सहयोग दिया तथा दूसरे देशों में भारतीयों ने स्थानीय लोगों की मदद से संगठन स्थापित किए।
- दादा भाई नौरोजी ने भारतीय माँगों हेतु प्रबुद्ध अंग्रेजों का समर्थन जुटाने के लिए 19वीं सदी के अंतिम दौर में इंग्लैंड में एक संगठन स्थापित किया था। बाद में ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका और अन्य देशों में इंडिया लीग की स्थापना हुई।
- ब्रिटेन की इंडिया लीग के साथ अनेक मजदूर, समाजवादी नेता और विचारक संबंधित रहे।

भारत की आजादी के लिए ब्रिटिश जनता का सहयोग प्राप्त करने में वी. के. कृष्ण मेनन ने प्रमुख भूमिका निभाई।

- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की एक प्रमुख विशेषता यह थी कि, इसने किसी भी अन्य देश या ब्रिटेन की जनता के विरुद्ध घृणा पैदा नहीं की। इसका महान श्रेय गांधीजी को जाता है, जिन्होंने प्रेम व विश्वबंधुत्व का प्रचार किया और घृणा पर आधारित कार्यों की निंदा की।
- भारतीय जनता ने अपने संघर्ष को अन्य लोगों द्वारा स्वाधीनता, जनतंत्र और सामाजिक समानता के लिए किए जा रहे संघर्ष का एक भाग समझा।

भारतीय जनता में अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण विकसित करने में जवाहरलाल नेहरू ने प्रमुख भूमिका निभाई।

- उन्होंने भारतीय जनता को विश्व में हो रहे विकास से अवगत कराया तथा आजादी और जनतंत्र के लिए लड़ रही दूसरे देशों की जनता के साथ सम्बंध स्थापित किए।
- उन्होंने कहा था कि आजादी अविभाज्य है अर्थात, किसी भी देश की आजादी तब तक सुरक्षित नहीं रह सकती, जब तक प्रत्येक राष्ट्र आजाद न हो। उसी प्रकार, जनतंत्र खुशहाली तथा शांति अविभाज्य हैं।
- राष्ट्रीय आंदोलन ने दूसरे लोगों के संघर्ष के साथ संबंध जोड़े तथा 1927 ई. में उत्पीडित समुदायों के लिए कांग्रेस ने ब्रसेल्स में एक बैठक आयोजित की जिसमें जवाहर लाल नेहरू ने भाग लिया।
- लीग अगेंस्ट इंपीरियलिज्म (साम्राज्यवाद विरोधी संघ) नामक एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना हुई। जिसने साम्राज्यवाद को सर्वत्र समाप्त करने के लिए प्रयास किए गये।
- अनेक विश्वविख्यात हस्तियाँ और कई देशों की आजादी के आंदोलनों के नेता लीग से जुड़ गए थे। इनमें अल्बर्ट आइंस्टाइन तथा ज्यूलियोक्यूरी जैसे वैज्ञानिक और मैक्सिम गोर्की जैसे साहित्यकार भी जुड़े थे। कांग्रेस भी इस लीग से जुड़ गई थी।
- जापान अब एक साम्राज्यवादी शक्ति बन गया था। उसने 1931 ई. में चीन पर आक्रमण किया। भारतीय राष्ट्रवादियों ने जापान के विरुद्ध चीनी जनता का समर्थन किया। उन्होंने जापानी वस्तुओं का बहिष्कार करने को कहा।
- इस आक्रमण के पश्चात् भारतीय चिकित्सकों का एक दल चीन गया और उसने वहाँ की जनता के कष्ट निवारण के लिए काम किया।

इसी समय एक ऐसे हिंसात्मक आंदोलन का उदय हुआ जो खुले तौर पर जनतंत्र तथा मानव समानता का विरोधी और युद्ध का पोषक था। इसे फासिस्ट आंदोलन कहते हैं।

- इटली और जर्मनी में फासिस्ट सरकारें बनीं। इन सरकारों ने अपनी ही जनता के विरुद्ध आतंकवादी कार्रवाईयों को और जनता के मूलभूत अधिकार तक छीन लिए।
- हिटलर जर्मनी में सत्तारूढ़ हुआ था। उसने यहूदियों का सम्पूर्ण विनाश आरम्भ कर दिया।
- अन्य देशों के विरुद्ध युद्ध की योजना बनाने में जापान भी इटली और जर्मनी के साथ मिल गया।
- स्पेन के फासिस्टों ने वहाँ की जनतांत्रिक सरकार के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। इटली और जर्मनी ने स्पेन के फासिस्टों को सक्रि इससे सारी दुनिया की जनता में रोष फैल गया।
- भारत के राष्ट्रवादी नेता अन्य देशों की आजादी और शांति के लिए फासिस के खतरे को समझते थे।
- उन्होंने फासिज्म के विरुद्ध लड़ रही स्पेनवासी जनता का समर्थन किया। भारत सहित कई देशों के लोग स्पेनवासियों के साथ मिलकर उनकी आजादी के लिए लड़ने हेतु स्पेन गये।
- जवाहरलाल नेहरू तथा वी. के. कृष्ण मेनन भी स्पेन गए और उन्होंने वहाँ की जनता को भारतीय जनता के सहयोग का आश्वासन दिया।
- इटली ने अबीसीनिया (इथियोपिया) पर आक्रमण किया। पश्चिमी देशों के साथ आपसी सहमति करके हिटलर ने चेकोस्लोवाकिया पर कब्जा कर लिया।
- जवाहरलाल नेहरू और राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं ने पश्चिमी देशों के तानाशाहों की तुष्टीकरण की नीति की निंदा की। इटली के तानाशाह मुसोलिनी ने नेहरू से मिलने की इच्छा व्यक्त की, तो नेहरू ने उससे मिलने से इन्कार कर दिया।

वैश्विक स्तर पर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में सहयोग पाने के लिए लाला हरदयाल ने वर्ष 1913 में गदर पार्टी की स्थापना की थी।

- भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के नेताओं ने फिलिस्तीन की जनता की आजादी के संघर्ष को समर्थन दिया।

## 1935 ई. का कानून और राष्ट्रीय आंदोलन

- कांग्रेस ने केवल द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया। कांग्रेस ने घोषणा की थी कि देश की सरकार का संविधान किस तरह का हो इसका निर्णय केवल भारत की जनता ही कर सकती है।
- सरकार ने कांग्रेस की माँग की उपेक्षा की और अगस्त 1935 ई. में गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट के अनुसार, भारत एक संघ राज्य बनेगा, यदि 50 प्रतिशत रियासतें इसमें शामिल हो जाये।
- एक्ट ने भारत को स्वतंत्र उपनिवेश के स्वरूप की सरकार देने का उल्लेख नहीं किया। 1935 ई. का कानून तत्कालीन स्थिति से बेहतर था। उसने प्रांतीय स्वायत्तता की व्यवस्था लागू की।
- प्रांतीय सरकारों के मंत्री विधानसभा के प्रति उत्तरदायी हो गए।। विधानसभा के अधिकारों को भी बढ़ा दिया गया परन्तु, सीमित था। मताधिकार
- गवर्नर-जनरल और गवर्नरों की नियुक्ति का अधिकार ब्रिटिश सरकार के हाथों में रहा।
- जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में लखनऊ में 1936 ई. में आयोजित कांग्रेस के अधिवेशन में 1935 ई. के एक्ट को अस्वीकार कर दिया गया। अधिवेशन में संविधान सभा गठित करने की माँग की गई तथा 1937 ई. में होने वाले प्रांतीय चुनावों में भाग लेने का निर्णय लिया गया।
- अधिवेशन में निर्णय लिया कि वह एक्ट को वापस लेने की माँग करेगी। चुनावों में कांग्रेस की भारी विजय हुई। पाँचों प्रांतों में उसे पूर्ण बहुमत मिला तीन अन्य प्रांतों में वह सबसे बड़ी पार्टी के रूप कवज 7 सामने आई।
- मुस्लिम लीग ने, जो अपने को सभी मुसलमानों का प्रतिनिधि संगठन मानती थी, उसके लिए सुरक्षित स्थानों में से एक चौथाई से भी कम स्थान प्राप्त किए।
- पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत में, जहाँ खान अब्दुल गफ्फार खाँ के नेतृत्व में राष्ट्रीय आंदोलन अत्यन्त शक्तिशाली हो गया था, वहाँ मुस्लिम लीग ने एक भी स्थान प्राप्त नहीं किया।
- हिंदू सांप्रदायिक दलों की समाप्ति हो गयी। कांग्रेस ने 11 प्रांतों में से सात प्रांतों में कांग्रेसी मंत्रिमंडल बनाए। उसने दो अन्य प्रांतों में अन्य दलों की सहायता से सरकार बनाई।
- केवल दो प्रातों में ही गैर-कांग्रेसी मंत्रिमंडल बना। कांग्रेसी मंत्रिमंडलों ने कुछ अच्छे कार्य भी किए।
- कांग्रेसी मंत्रिमंडलों ने शिक्षा का प्रसार किया और किसानों की हालत में सुधार किया। उन्होंने राजनीतिक बंदियों को रिहा कर दिया। समाचारपत्रों पर से प्रतिबंध हटा दिया।
- इन मंत्रिमंडलों ने भारतीय रियासतों की जनता को भी प्रभावित किया। राजाओं नवाबों के निरंकुश शासन में कष्ट भोग रही जनता ने देखा कि भारत के कई प्रांतों की सरकार जनता के प्रतिनिधियों द्वारा चलाई जा रही है।
- जवाहरलाल नेहरू और सुभाषचंद्र बोस जैसे कई नेता कांग्रेस के औपनिवेशिक शासन के अन्तर्गत मंत्रिमंडल बनाने के विरोधी थे। देश में किसानों और मजदूरों के संगठनों का प्रभाव बढ़ गया था।
- आचार्य नरेंद्र देव एवं जयप्रकाश नारायण जैसे नेताओं के मार्गदर्शन में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का प्रभाव भी बढ़ गया था।

**क्रान्तिकारी समाजवादी (R.S.P.)**

**संस्थापक:** योगेश चन्द्र चटजी

**स्थापना:** 19 मार्च, 1940 ई. (बंगाल में)

**उद्देश्य:** अंग्रेजों को शक्ति द्वारा भारत से बाहर निकाल कर देश में **समाजवाद** की स्थापना करना। इस पार्टी ने त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशन में सुभाष चन्द्र बोस का समर्थन तथा भारत छोड़ो आन्दोलन का स्वागत किया था।

- इस समय तक कम्युनिस्ट पार्टी काफी मजबूत हो गई थी। इस प्रकार उन लोगों का प्रभाव बढ़ गया था जो ब्रिटिश सरकार के साथ समझौता करने के पक्ष में नहीं थे। वे पूर्ण स्वाधीनता के पक्ष में थे और इसके लिए आंदोलन करना चाहते थे।
- सुभाषचंद्र बोस 1938 ई. में कांग्रेस अध्यक्ष पद के लिए एक नरमवादी नेता पट्टाभि सीता रमैय्या के विरुद्ध पुनः चुनाव लड़े और विजयी हुए। परन्तु उन्होंने जल्दी ही कांग्रेस के अध्यक्ष पद से त्यागपत्र दे दिया और बाद में फॉरवर्ड ब्लॉक (1939) की स्थापना की।

**फारवर्ड ब्लाक**

**संस्थापक:** सुभाष चन्द्र बोस

**स्थापना:** 3 मई, 1939 मूकर, उन्नाव में उद्देश्य सभी साम्राज्यवाद विरोधी शक्तियों को संगठित करना और अनिवार्य संघर्ष की पूर्ति हेतु तत्पर रहना।

**अन्य सदस्य:** देवव्रत विश्वास (महासचिव) विश्वम्भर दयाल त्रिपाठी (राष्ट्रीय महामंत्री) तथा स्वामी सहजानन्द।

## भारत छोड़ो आंदोलन ( 1942 ई. )

- अप्रैल, 1942 में क्रिप्स मिशन के लौटने के कुछ समय के पश्चात् आजादी के लिए भारतीय जनता का तीसरा महान संघर्ष शुरू हुआ। इस संघर्ष को भारत छोड़ो आंदोलन के नाम से जाना जाता है।
- वर्धा अमब 7 8 अगस्त, 1942 को आयोजित अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ने एक प्रस्ताव पास किया। प्रस्ताव में घोषणा की गई कि, भारत में ब्रिटिश शासन को जल्दी से समाप्त करना अति आवश्यक हो गया है।
- प्रस्ताव में यह भी कहा गया कि, स्वतंत्र हो जाने पर भारत अपने संपूर्ण साधनों सहित उन देशों के साथ विश्वयुद्ध में शामिल हो जाएगा जो फासिज्म देशों के साथ संघर्ष कर रहे हैं। प्रस्ताव ने देश की आजादी के लिए सबसे व्यापक स्तर पर अहिंसात्मक जन-आंदोलन आरम्भ करने की स्वीकृति दे दी।
- 7 अगस्त, 1942 को बम्बई के ऐतिहासिक ग्वालिया टैंक मैदान में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की वार्षिक बैठक हुई जिसकी अध्यक्षता मौलाना अबुल कलाम आजाद ने की थी।
- 14 जुलाई, 1942 को वर्धा में कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक हुई जिसमें महात्मा गांधी के संघर्ष के निर्णय की पुष्टि कर दी गई।
- कांग्रेस कार्य समिति की वर्षा बैठक में एक प्रस्ताव पारित किया गया, जिसे सामान्यतया भारत छोड़ो प्रस्ताव कहा जाता है।
- भारत छोड़ो प्रस्ताव को अगस्त प्रस्ताव भी कहा जाता है।

आन्दोलन की सार्वजनिक घोषणा से पूर्व 1 अगस्त, 1942 को इलाहाबाद में तिलक दिवस मनाया गया।

- 9 अगस्त, 1942 की सुबह कांग्रेस के अधिकांश नेता ऑपरेशन जीरो ऑवर के अन्तर्गत गिरफ्तार कर लिए गए और उन्हें देश के विभिन्न जेलों में बंद कर दिया गया। साथ ही, कांग्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया गया। देश भर में हड़तालें तथा प्रदर्शन हुए। परिणामास्वरूप सरकार द्वारा उनका दमन किया गया तथा उनकी गिरफ्तारियाँ की गयी।
- महात्मा गांधी एवं सरोजनी नायडू को गिरफ्तार करके आगा खाँ पैलेस में बन्द कर दिया गया।
- आंदोलन के प्रति सरकार की दमनात्मक नीति के विरुद्ध गांधी जी ने आगा खाँ पैलेस में 10 फरवरी, 1943 को 21 दिन के उपवास की घोषणा कर दी।

भारत छोड़ो प्रस्ताव के पास हो जाने पर गांधी जी ने अपने भाषण में कहा मैं आपको एक संक्षिप्त मंत्र देता हूँ. इसे आप हृदय में बिठा लीजिए और अपनी प्रत्येक साँस के साथ इसे व्यक्त होने दीजिए। मंत्र है- करो या मरो (Do or Die) इस प्रयास से हम या तो आजाद होंगे या मर मिटेंगे।

- भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान करो या मरो और भारत छोड़ो का शंखनाद सभी जगह सुनाई पड़ने लगा। जनता भी हिंसा पर उतर आयी। लोगों ने सरकारी सम्पत्ति पर हमले किए, रेल पटरियों को तोड़ा और डाक-तार व्यवस्था में व्यवधान पैदा कर दिया।
- अनेक स्थानों पर पुलिस के साथ मुठभेड़ हुई। आंदोलन के बारे में समाचारों के प्रकाशन पर सरकार ने प्रतिबंध लगा दिया। अनेक अखबारों ने अपना प्रकाशन बंद कर दिया, क्योंकि उन्हें प्रतिबंध स्वीकार नहीं थे।
- 1942 ई. के अंत तक करीब 60,000 लोग जेल में बंद हो गए और सैकड़ों की मृत्यु हो गई। मरने वालों में अनेक बच्चे और वृद्ध महिलाएँ भी थीं।
- जिस समय गांधी जी रिहा हुए, उससे पूर्व उनकी पत्नी कस्तूरबा और निजी सचिव महादेव देसाई की मृत्यु हो चुकी थी।
- प्रदर्शन में भाग लेने पर तामलुक (बंगाल) में 73 साल की मातंगिनी हजारा को गोहपुर (असम) में 13 साल की कनकलता बरूआ को, पटना (बिहार) में सात तरूण विद्यार्थियों को और अन्य सैकड़ों को गोली मारकर मौत के घाट उतार दिया गया।
- देश के कुछ भाग जैसे उत्तर प्रदेश में बलिया, बंगाल में तामलुक महाराष्ट्र में सतारा, कर्नाटक में धारवाड़ और उड़ीसा (ओडिशा) में बालासोर तथा तलचर-ब्रिटिश शासन से मुक्त कर लिए गए तथा वहाँ की जनता ने अपनी सरकारें स्थापित कीं।
- भारत छोड़ो आंदोलन के समय देश के अनेक क्षेत्रों में ब्रिटिश शासन समाप्त हो गया और समानान्तर सरकारें स्थापित हो गई।
- बलिया में गाँधीवादी चित्तूपांडे के नेतृत्व में पहली समानांतर सरकार स्थापित हुई।
- बंगाल के मिदनापुर जिले के तामलुक नामक स्थान पर जातीय सरकार 1944 ई. तक चली. वहीं महाराष्ट्र के सतारा में 1945 ई. तक समानांतर सरकार चली।
- पूरे विश्वयुद्ध के दौरान जयप्रकाश नारायण, अरूणा आसफ अली, एम. एन. जोशी, राममनोहर लोहिया आदि अनेक नेताओं द्वारा आयोजित क्रांतिकारी गतिविधियाँ जारी रहीं।
- भारत छोड़ो आन्दोलन अपने पूर्ववर्ती आंदोलनों जैसे- असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन आदि की तुलना में स्वत:स्फूर्त अधिक था।
- जिस तरह सन् 1857 का महाविप्लव अंग्रेजी शासन के विरूद्ध सिपाहियों का विद्रोह था उसी प्रकार वर्ष 1942 का आंदोलन मूलत: युवा वर्ग, मजदूरों और विद्यार्थियों का विद्रोह था।

## आजाद हिंद फौज

- आजाद हिंद फौज का विचार सबसे पहले मोहन सिंह के मन में आया । वे ब्रिटिश भारतीय सेना के अधिकारी थे।
- जब ब्रिटिश सेना पीछे हट रही थी तब मोहन सिंह ने जापानियों का साथ दिया। सिंगापुर पर जापान की विजय के पश्चात् मोहन सिंह के प्रभाव क्षेत्र के अंतर्गत 45 हजार लोग आजाद हिंद फौज में शामिल होने के इच्छुक थे।

- 1 सितंबर, 1942 को मोहन सिंह के अधीन आजाद हिंद फौज के प्रथम डिवीजन का गठन 16.300 सैनिकों को लेकर किया गया। जापानी तब तक भारत पर हमला करने के बारे में सोचने लगे थे और उन्हें भारतीयों का सैनिक रूप से संगठित होना लाभप्रद लग रहा था।
- लेकिन दिसंबर, 1942 तक आते-आते आजाद हिंद फौज की भूमिका के बारे में जापानी तथा भारतीय अधिकारियों के मध्य गहरे मतभेद उत्पन्न हो गए। वास्तव में जापानी चाहते थे कि भारतीय फौज 2,000 सैनिकों की हो जबकि मोहन सिंह उसे 2 लाख तक ले जाना चाहते थे। अतत: मोहन सिंह तथा निरंजन सिंह गिल को गिरफ्तार कर लिया गया।
- आजाद हिंद फौज के गठन में एक जापानी सैन्य अधिकारी मेजर फूजीवारा का महत्वपूर्ण योगदान था। उन्होंने ही मोहन सिंह को इसके लिए तैयार किया कि वह भारत की स्वतंत्रता के लिए जापान के साथ मिलकर काम करें।
- मार्च, 1942 में टोक्यों में भारतीयों की एक कान्फ्रेंस बुलाई गई जिसमें इंडियन लीग की स्थापना की गई। इसके बाद बैंकाक में जून, 1942 में एक बैठक हुई, जिसमें रास बिहारी बोस को लीग का अध्यक्ष चुना गया।
- ये 1915 ई. से ही जापान में निर्वासित जीवन जी रहे थे। यहीं पर आजाद हिंद फौज के गठन का निर्णय लिया गया।
- आजाद हिन्द फौज का द्वितीय चरण तब प्रारंभ हुआ, जब सुभाष चन्द्र बोस सिंगापुर लाए गए। सुभाष चन्द्र बोस ने वर्ष 1941 में बर्लिन में इण्डियन लीजन की स्थापना की।

**अस्थायी सरकार**

- **राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री सेना अध्यक्ष :** सुभाष चंद्र बोस
- **वित्त विभाग :** एस.सी. चटर्जी
- **प्रचार विभाग :** एस. ए. अय्यर
- **महिला संगठन कार्यभार :** लक्ष्मी स्वामीनाथन (विवाह उपरांत लक्ष्मी सहगल)
- **मुख्यालय :** रंगून
- **मान्यता प्रदान करने वाले देश :** जर्मनी, जापान तथा उनके समर्थक देशों ने मान्यता प्रदान की।

- 1943 ई. में आजाद हिन्द फौज का नेतृत्व सुभाष चन्द्र बोस को सौंपा गया। 21 अक्टूबर, 1943 को सुभाष चन्द्र बोस ने सिंगापुर में स्वतंत्र भारत की अस्थायी सरकार का गठन किया, जिसका मुख्यालय रंगून था।
- सुभाष चंद्र बोस ने रंगून एवं सिंगापुर में आई.एन.ए. के मुख्यालय स्थापित किए। आजाद हिंद फौज द्वारा कुछ ही महीनों में तीन लड़ाकू ब्रिगेड खड़ी कर ली गई, जिनके नाम गांधी, आजाद तथा नेहरू पर रखे गए। शीघ्र ही अन्य ब्रिगेड स्थापित किये गए जिनके नाम सुभाष ब्रिगेड तथा रानी झांसी ब्रिगेड रखा गया। इनमें रानी झांसी ब्रिगेड महिलाओं के लिए स्थापित की गयी। नेता जी की संपूर्ण फौज में उनके अतिरिक्त शाहनवाज खान, गुरुबख्श सिंह ढिल्लो एवं प्रेम कुमार सहगल आदि महत्वपूर्ण कमांडर थे।

6 जुलाई, 1944 को आजाद हिन्द फौज के रेडियो के एक प्रसारण में महात्मा गांधी को संबोधित करते हुए सुभाष ने कहा- भारत की स्वतंत्रता के लिए अंतिम युद्ध प्रारम्भ हो चुका है। राष्ट्रपिता भारतीय स्वतंत्रता के इस पवित्र युद्ध में हमें आपका आशीर्वाद चाहिए।

- मार्च-जून, 1944 के बीच आजाद हिंद फौज भारतीय भूमि पर सक्रिय रही।
- शाहनवाज खान ने जापान के साथ इण्डो-वर्मा क्षेत्र को घेरा और इम्फाल का अभियान चलाया। 18 अगस्त, 1945 को फारमोसा द्वीप (ताइपे) के पास हुई हवाई दुर्घटना में सुभाष चन्द्र बोस की मृत्यु हो गयी

## लाल किले का मुकदमा (नवम्बर, 1945)

- पहला मुकदमा नवंबर, 1945 में आजाद हिन्द के सैनिकों पर चलाया गया। नवंबर, 1945 के मुकदमें में शाहनवाज खान, गुरुबख्श सिंह 'ढिल्लो' तथा प्रेम कुमार सहगल को एक साथ मुकदमे चलाने के लिए लाल किले में बनी अदालत में खड़ा किया गया।
- जब लाल किले में ऐतिहासिक मुकदमा शुरू हुआ तो भूलाभाई देसाई बचाव पक्ष की अगुवाई कर रहे थे। तेज बहादूर सप्रू, कैलाश नाथा काटजू तथा आसफ अली उनके सहायकों में थे। कार्यवाही के पहले दिन जवाहर लाल नेहरू भी 25 साल पश्चात् वकीलों की पोशाक पहनकर अदालत में उपस्थित थे।
- इस आंदोलन को यूनियनवादी, अकाली दल, जस्टिस पार्टी, हिंदू महासभा, सिख लीग तथा अहरार पार्टी का भी समर्थन प्राप्त था।
- अंतत: सरकार को इस दबाव के आगे झुकना पड़ा तथा अपनी नीति को संशोधित करते हुए घोषणा करनी पड़ी कि आजाद हिंद फौज के केवल उन्हीं सदस्यों पर मुकदमा चलाया जायेगा, जिनके विरुद्ध हत्या एवं बर्बरता का अभियोग है।
- इसके तुरंत बाद जनवरी, 1946 में कैदियों के प्रथम समूह के विरुद्ध दिया गया फैसला वापस ले लिया गया। फरवरी, 1946 में आजाद हिंद फौज के राशिद अली को सात साल की कैद की सजा के विरुद्ध कलकत्ता में मुस्लिम लीग से संबद्ध छात्रों ने 1 फरवरी, 1946 को हड़ताल का आह्वान किया।

आजाद हिंद फौज ने जयहिंद और दिल्ली चलो का नारा दिया। सुभाष चंद्र बोस का सबसे प्रसिद्ध नारा था तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हे आजादी दूंगा।

## युद्ध के बाद राष्ट्रीयता की लहर

- द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के साथ विश्व इतिहास में एक नए युग का आरम्भ हुआ। दुनिया का राजनीतिक नक्शा बदल गया था।
- सभी साम्राज्यवादी देशों की अंतर्राष्ट्रीय स्थिति कमजोर हो गई। समूचे एशिया और अफ्रीका में स्वाधीनता के लिए जनता की एक व्यापक लहर उठी।
- ब्रिटिश शासन को खत्म करने के लिए प्रदर्शनों और हड़तालों का सिलसिला जारी रहा। जनता आजादी की अंतिम लड़ाई में कूद पड़ी। नौसेना में भी असंतोष फैला हुआ था।
- फरवरी, 1946 में रॉयल इंडियन नेवी के नाविकों ने उनके स्थानों पर विद्रोह किया। नाविकों तथा उनके समर्थकों और ब्रिटिश फौज तथा पुलिस के बीच जो संघर्ष हुए जिसमें लगभग 300 लोगों की मृत्यु हुई।

## स्वतंत्र भारत का उदय

- 19 फरवरी, 1946 को भारत-सचिव पैथिक लॉरेंस ने घोषणा की कि, सरकार शीघ्र ही भारतीय नेताओं के सहयोग से भारत में स्वराज स्थापित करना चाहती है।
- ब्रिटिश मंत्रिमंडल के कुछ सदस्यों का एक दल, जिसे कैबिनेट मिशन के नाम से जाना जाता है, सत्ता के हस्तांतरण के बारे में भारतीय नेताओं से बातचीत करने के लिए भारत आया। उसने अंतरिम सरकार बनाने और संविधान सभा बुलाने का प्रस्ताव रखा।
- प्रस्ताव में कहा गया कि संविधान सभा में प्रांतीय विधान सभाओं द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि और भारतीय रियासतों के शासकों द्वारा मनोनीत व्यक्ति होंगे। जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में एक अंतरिम सरकार बनी।
- संविधान सभा ने दिसम्बर, 1946 में अपना काम शुरू कर दिया, परन्तु मुस्लिम लीग और राजाओं ने उसमें भाग लेने से इन्कार कर दिया।
- मुस्लिम लीग ने पृथक पाकिस्तान की माँग पर जोर दिया।
- 1946 ई. में बंगाल, बिहार, बम्बई तथा अन्य स्थानों पर दंगे हुए। जिनमें हजारों हिंदुओं तथा मुसलमानों की जानें गई।

लॉर्ड माउंटबेटन ने जो मार्च 1947 में नया वायसराय बनकर भारत आया था. भारत को दो स्वतंत्र राष्ट्रों हिंदुस्तान और पाकिस्तान में बाँटने की योजना प्रस्तुत की। इसे माउण्टवेटेन योजना कहते हैं। विभाजन की घोषणा के बाद और भी दंगे हुए, विशेषकर पंजाब में कुछ ही महीनों में करीब 5,00,000 हिंदू और मुसलमान मारे गए। लाखों लोग बेघर हो गए।

- सांप्रदायिक दलों द्वारा फैलाई गई घृणा के परिणाम समाने आए। ब्रिटिश शासकों ने इन सांप्रदायिक दलों को प्रोत्साहन दिया था। दंगों के दौरान मानवता को भुला दिया गया और अत्यंत शर्मनाक तथा नृशंस घटनाएं घटित हुई।
- इसको शांत कराने के लिए गांधी जी ने अथक प्रयास किए थे। शांति स्थापित करने के लिए उन्होंने दंगाग्रस्त क्षेत्रों का दौरा किया। कांग्रेस शुरू से ही एकीकृत स्वतंत्र भारत के लिए प्रयास करती आ रही थी, परन्तु अंत में उसने भारत के विभाजन को मान लिया।
- कांग्रेस ने दो राष्ट्रों के सिद्धांत को अस्वीकार कर दिया था, परन्तु महसूस किया कि आजादी प्राप्त करने और बिगड़ती स्थिति को रोकने के लिए विभाजन को स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं है।
- 14 अगस्त, 1947 को पाकिस्तान एक पृथक राष्ट्र बना।
- भारतीय जनता ने लगभग एक सदी के संघर्ष के बाद विदेशी शासन का समूल नष्ट कर दिया, हालांकि यह भयंकर दु:खद घटनाओं के बीच हुआ।

जवाहरलाल नेहरू स्वतंत्र भारत के पहले प्रधानमंत्री बने। आधी रात को जब 15 अगस्त का दिन शुरू होने के साथ ही जवाहरलाल नेहरू के शब्दों में भारत में जीवन और स्वतंत्रता का उदय हुआ।

- संविधान सभा स्वतंत्र भारत की संसद के रूप में भी काम करने लगी। 14 अगस्त, 1947 को नेहरू ने संविधान सभा में भाषण देते हुए भारतीय जनता के भावी कार्यों और कर्त्तव्यों के बारे में बताया।

**अंतरिम सरकार का मंत्रिमंडल**

| | सदस्य | विभाग |
|---|---|---|
| 1. | जवाहरलाल नेहरू | कार्यकारी परिषद् के उपाध्यक्ष, विदेश मामले एवं राष्ट्रमंडल से सम्बंधित मामले |
| 2. | सरदार बल्लभ भाई पटेल | गृह सूचना एवं प्रसारण विभाग तथा रियासत सम्बंधी मामले |
| 3. | बलदेव सिंह | रक्षा विभाग |
| 4. | जॉन मथाई | उद्योग एवं आपूर्ति विभाग |
| 5. | चक्रवर्ती राजगोपालाचारी | शिक्षा विभाग |
| 6. | सी. एच. भाभा | कार्य, खान तथा बंदरगाह |
| 7. | डॉ. राजेन्द्र प्रसाद | खाद्य एवं कृषि विभाग |
| 8. | आसफ अली | रेल विभाग |
| 9. | जगजीवन राम | श्रम विभाग |
| 10. | लियाकत अली खाँ | वित्त विभाग |

- ये कार्य थे- गरीबी, अज्ञानता, रोग और अवसर की असमानता को दूर करना। उन्होंने भारत, भारत की जनता और उससे भी बढ़कर मानवता की सेवा करने का व्रत लेने को कहा।
- उन्होंने स्वतंत्र भारत के लिए एक ऐसा भव्य प्रासाद बनाने को कहा जहाँ भारत के सभी बच्चे रह सकें। 15 अगस्त की सुबह लाल किले पर स्वतंत्र भारत का झंडा फहराया गया। भारत के लोग स्वयं अपने भाग्य के निर्माता बन गए। नए भारत के निर्माण का कार्य आरम्भ हो गया।

## भारत एक स्वतंत्र राष्ट्र

- स्वतंत्र भारत को जिस मार्ग पर आगे बढ़ना था, वह आजादी के संघर्ष के दौरान ही निश्चित हुआ था। आजादी की लड़ाई भारतीय जनता को प्रभुसत्ता संपन्न बनाने के उद्देश्य से लड़ी गई थी।
- यह लड़ाई एक ऐसा जनतंत्र स्थापित करने के लिए थी, जिसमें सारी सत्ता समूची जनता के हाथों में थी, न कि किसी एक या दूसरे समूह के हाथों में।
- भारत में विभिन्न धर्मों को मानने वाले, विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले और विभिन्न रीति-रिवाजों का अनुसरण करने वाले लोग थे। यद्यपि देश में विभेद पैदा करने वाले सांप्रदायिक दलों जैसे तत्व मौजूद थे, परन्तु आजादी के आंदोलन को किसी एक या दूसरे समुदाय का आंदोलन बनाने में उन्हें सफलता नहीं मिली। इस प्रकार, राष्ट्रीय आंदोलन एक धर्मनिरपेक्ष आंदोलन था।
- प्रत्येक नागरिक को अपने धर्म का पालन करने का अधिकार दिया गया। किसी भी धर्म को कोई विशेष स्थान नहीं दिया गया।
- धर्म-निरपेक्षता, प्रत्येक जनतांत्रिक आंदोलन का अभिन्न अंग होती है। जनतंत्र में सब नागरिक बराबर होते हैं, अर्थात् सबके समान अधिकार होते हैं।
- राष्ट्रीय आंदोलन ने एक न्यायोचित समाज की स्थापना के लिए भारतीय समाज के पुनर्निर्माण का लक्ष्य अपने सामने रखा था। यह लक्ष्य समाजवादी विचारों के प्रसार के साथ अधिक स्पष्ट हो गया था।
- इस लक्ष्य की प्राप्ति हेतु स्वतंत्र भारत को समाज में व्याप्त असमानताओं को दूर करने के लिए तेजी से आर्थिक विकास

करने के लिए और आर्थिक शक्ति के सकेंद्रण को रोकने के लिए कड़ा संघर्ष करना था।

- राष्ट्रीय आंदोलन ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के विषय में एक नीति बनाई थी। यह सभी लोगों की समानता के सिद्धान्त पर आधारित थी। इसका अर्थ यह था कि स्वतंत्र भारत उन सभी लोगों को सहयोग देगा, जो राष्ट्रीय स्वाधीनता के लिए लड़ रहे हैं।
- राष्ट्रीय आंदोलन का दृढ़ विश्वास था कि स्वतंत्रता अविभाज्य है और जब तक प्रत्येक एक देश स्वतंत्र नहीं होता तब तक किसी भी देश की स्वतंत्रता सुरक्षित नहीं है।
- भारत ने शांति की नीति पर जोर दिया क्योंकि शांति से रहने पर ही पुनर्निर्माण का कार्य पूरा हो सकता है और विश्वबंधुत्व की भावना का विकास किया जा सकता है।
- शांति की नीति इस विश्वास पर भी आधारित थी कि विश्व के सभी आम लोगों के हितों में कोई विरोध नहीं है। इस तरह, आजादी और शांति स्वतंत्र भारत की विदेश नीति का आधार बन गई।
- इन सिद्धान्तों से प्रेरित होकर भारत की जनता ने 1947 ई. में एक स्वतंत्र राष्ट्र की जीवन यात्रा आरंभ की।

## स्वतंत्र भारत की तात्कालिक चुनौतियाँ

- स्वतंत्र भारत के सामने कई तात्कालिक चुनौतियाँ थी। जिसमें से पहली चुनौती देश में राजनीतिक एकता स्थापित करना था। जब ब्रिटिश शासन का समाप्त होना निश्चित हो गया, तो राजा-महाराजाओं ने अपने दमन में वृद्धि कर दी। जम्मू-कश्मीर, हैदराबाद, त्रावणकोर तथा राजस्थान की कुछ रियासतों में यह दमन अधिक बर्बर था।
- कुछ राजाओं ने स्वतंत्र शासक बनने की योजना बनाई थी। राष्ट्रीय आंदोलन ने राज्यों की जनता की मदद से उनकी योजना को विफल कर दिया। राज्यों का विभाग सरदार बल्लभभाई पटेल के जिम्मे था। उनके प्रयास से भारत के स्वतंत्र होने से पहले ही सभी राज्यों को भारत में मिला लिया गया था।
- केवल तीन ही राज्य 15 अगस्त, 1947 तक भारत में नहीं मिले थे। वे तीन राज्य थे जम्मू और कश्मीर, हैदराबाद तथा जूनागढ़।
- स्वतंत्रता के तत्काल बाद कश्मीर पर पाकिस्तान ने हमला कर दिया। परन्तु जम्मू-कश्मीर की जनता अपने को भारत का अंग समझती थी। उसने पाकिस्तानी हमलावरों का डटकर मुकाबला किया।
- पाकिस्तानी हमलावरों को मार भगाने के लिए भारतीय सेना वहाँ भेजी गई। जूनागढ़ का नवाब पाकिस्तान भाग गया। फरवरी, 1948 में जूनागढ़ की जनता ने भारत में मिल जाने के पक्ष में मत दिया।
- हैदराबाद के निजाम ने मान लिया कि जनता के प्रतिनिधियों द्वारा बनाई गई एक सरकार भारत में मिल जाने के बारे में फैसला करेगी। मगर उसने इस दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठाए। इसके विपरीत, उसने हथियारबंद धर्मांधों को जनता पर जुल्म करने के लिए उकसाया। सितबर, 1948 में भारतीय सैनिक सिकंदराबाद में घुसे और निजाम ने आत्मसमर्पण कर दिया। बाद में यह राज्य भारत में मिल गया।
- फ्रांसीसी शासन के अंतर्गत पांडिचेरी, कराईकल, यनम, माहे तथा चंद्रनगर और पुर्तगाली शासन के अंतर्गत गोवा, दमन दीव तथा दादरा-नगर हवेली में भी आजादी के आंदोलन का और शेष भारत के साथ मिल जाने का लम्बा इतिहास है।
- परन्तु इन क्षेत्रों में विदेशी शासन का अंत भारत के स्वतंत्र होने के कई वर्ष बाद हुआ। फ्रांस के भारतीय उपनिवेशों में आजादी के लिए संघर्ष काफी पहले आरम्भ हो गया था, परन्तु द्वितीय विश्वयुद्ध के पश्चात् यह ज्यादा तीव्र हो गया।
- 1948 ई. में माहे में विद्रोह हुआ और प्रशासन ने समर्पण कर दिया। 1949 ई. में चन्द्रनगर भारत में मिल गया। 1954 ई. में फ्रांस द्वारा शासित क्षेत्रों की जनता ने भारी बहुमत से भारत में मिलने का फैसला किया। तब भारत और फ्रांस के बीच एक समझौता हुआ, जिसके अंतर्गत सभी फ्रांस-शासित क्षेत्र भारत में मिल गए।
- पुर्तगाली उपनिवेशों में भी सशस्त्र संघर्ष काफी पहले आरम्भ हो गया था जो अठारहवीं, उन्नीसवीं और बीसवीं सदी तक जारी रहा।
- गोवा में राष्ट्रीय आंदोलन के पिता त्रिस्ताओं ब्रेगेंजा कुन्हा थे। उन्होंने 1928 ई. में कांग्रेस कमेटी की स्थापना की थी। गोवा के अनेक स्वाधीनता सेनानियों को यातनाएँ दी गई तथा जेलों में डाल दिया गया। उनमें से कुछ को अनेक वर्षों तक पुर्तगाल की जेलों में रखा गया। तथा कुछ को अनेक को मृत्युदंड दिया गया।
- 1954 ई. में स्वाधीनता सेनानियों ने दादरा और नगर हवेली को पुर्तगाली शासन से मुक्त करा लिया।
- भारत सरकार लंबे समय तक पुर्तगाल की सरकार को समझाती रही कि वह अपने उपनिवेश छोड़ दे।
- उस समय पुर्तगाल, यूरोप का एक सबसे पिछड़ा हुआ देश था और उस पर एक तानाशाह का शासन था। इसके बावजूद इसका अनेक पाश्चात्य देश समर्थन कर रहे थे। अमेरिका भी पुर्तगाल के इस दावे का समर्थन करता रहा कि गोवा पुर्तगाल का एक प्रांत है।
- 1955 ई. में एक सत्याग्रह आंदोलन आरम्भ हुआ। निहत्थे सत्याग्रहियों ने गोवा में प्रवेश किया। पुर्तगाली सैनिकों ने उन पर गोलियाँ चलाई और उनमें से अनेक लोगों को मार दिया।
- पुर्तगाल के शासन को उखाड़ फेंकने के लिए गोवा के कुछ लोगों ने सशस्त्र दल बनाए। अंत में दिसंबर, 1961 में भारतीय सेना गोवा में पहुँची और पुर्तगालियों ने समर्पण कर दिया। गोवा भारत का अंग बन गया। उसके साथ ही सम्पूर्ण भारत स्वतंत्र हो गया।
- कुछ साल बाद पुर्तगाल की जनता ने अपने देश को उस तानाशाही को खत्म कर दिया जिसने उनका कई दशकों तक दमन किया था।
- गाँधी जी ने आजादी की लड़ाई में भारतीय जनता का अनेक वर्षों तक नेतृत्व किया। इन्हीं के नेतृत्व में भारत ने आजादी की लड़ाई लड़ी और अंत में आजादी प्राप्त की। इसीलिए उन्हें राष्ट्रपिता माना जाता है।

- जिन कार्यों के लिए उन्होंने अपना जीवन अर्पित किया था उनमें से एक प्रमुख कार्य था हिंदू-मुस्लिम एकता का कार्य।
- जब कलकत्ता में सांप्रदायिक दंगे भड़के तो उन्होंने दंगाग्रस्त क्षेत्रों का दौरा किया तथा शांति एवं सांप्रदायिक मैत्री स्थापित करने के लिए प्रेम तथा बंधुत्व का उपदेश दिया।
- जिस दिन भारत स्वतंत्र हुआ उस दिन गांधीजी कलकत्ता के दंगा प्रभावित क्षेत्र में थे। हिंदुओं तथा मुसलमानों की हत्याओं से और देश के विभाजन से उन्हें अत्यंत दु:ख हुआ था। कुछ लोग प्रेम और बंधुभाव के उनके संदेश को पसंद नहीं करते थे। दूसरे समुदायों के प्रति उनके मस्तिष्क में घृणा थी।
- 30 जनवरी 1948 में गांधीजी की एक धर्मांध हिंदू नाथू राम गोडसे ने गोली मारकर उनको हत्या कर दी।
- भारतीय जनता विगत वर्ष में हुई सांप्रदायिक हत्याओं तथा विनाश के आघात से जैसे-तैसे अपने को संभालने का प्रयास कर रही थी, पुन: गहन शोक में डूब गई।
- जवाहर लाल नेहरू ने कहा कि हमारे जीवन से प्रकाश गायब हो गया है।
- गाँधीजी कलह से भरे विश्व में प्रेरणा के स्रोत और प्रकाश के स्तंभ थे। वे सम्पूर्ण विश्व में महात्मा के नाम से जाने जाते थे। उन्होंने प्रत्येक व्यक्ति के आँसू पोंछने और प्रत्येक जगह से दु:ख दूर करने के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया था। उनके सपने को पूरा करना हम सबका कर्त्तव्य है।
- स्वतंत्र भारत के सामने एक प्रमुख तात्कालिक समस्या थी, विस्थापितों को फिर से बसाना जो विभाजन के कारण पाकिस्तान में चले गये थे।
- इन शरणार्थियों को सहायता तथा रोजगार देने और बसाने की समस्या उत्पन्न हुई। इन्होंने अनेक कठिनाईयों का सामना साहस के साथ किया और स्थिर होकर नई जिंदगी आरम्भ कर दी।
- देश के विभाजन ने कई आर्थिक समस्याएँ पैदा की। कई उद्योगों के लिए कच्चे माल का अभाव हो गया।
- जूट तथा सूती कपड़े के अधिकांश कारखाने भारत में रह गए, परन्तु जूट तथा कपास का उत्पादन करने वाले अधिकांश क्षेत्र पाकिस्तान के पूर्वी हिस्से (अब बाँग्लादेश) में चले गए। परिणामस्वरूप, जूट और सूती कपड़े के कई कारखाने बंद हो गए। गेहूं और चावल पैदा करने वाला विशाल क्षेत्र पाकिस्तान में चला गया था। इसलिए कुछ दिनों तक भारत में अन्न का अभाव भी रहा।
- द्वितीय विश्वयुद्ध और विभाजन के कारण देश की परिवहन व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो गई थी।
- इसी बीच स्वतंत्र भारत के लिए संविधान बनाने का कार्य भी चल रहा था। संविधान सभा ने अपना कार्य 26 नवम्बर, 1949 को पूरा किया।

26 जनवरी, 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ और इसी के साथ भारत एक गणतंत्र (Republic) राष्ट्र बन गया। इससे पूर्व 1929 ई. प्रतिवर्ष 26 जनवरी को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जा रहा था।

## पंचशील समझौता ( 1954 ई. )

- 29 अप्रैल, 1954 को भारत ने चीन के साथ पंचशील समझौते पर हस्ताक्षर किए। यह एक न्यायपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का आधार बन गया।

| पंचशील समझौते के उदेश्य | |
|---|---|
| 1. | एक दूसरे की क्षेत्रीय अखण्डता और संप्रभुता का सम्मान, |
| 2. | एक दूसरे के भू-भाग पर आक्रमण नहीं करना। |
| 3. | एक दूसरे के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करना। |
| 4. | समानता के स्तर को स्वीकार करते हुए पारस्परिक लाभ के लिए प्रयास करना। |
| 5. | शांति पूर्ण सह अस्तित्व। |

## गुटनिरपेक्ष आन्दोलन ( 1961 ई. )

- गुटनिरपेक्ष आन्दोलन में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका रही।
- 1955 ई. के बाइंग सम्मेलन के पश्चात् गुटनिरपेक्ष शब्द सामने आया। वैसे गुटनिरपेक्ष शब्द की व्युत्पति के संदर्भ में मतभेद है। एक दृष्टि के अनुसार वी.पी. मेनन ने वर्ष 1953-54 में इस शब्द का प्रयोग किया था जबकि दूसरे मत के अनुसार, कांग्रेस के वर्ष 1938 के हरिपुरा अधिवेशन में गुटनिरपेक्षता की बात उठाई गयी थी।
- इसके पश्चात् एशिया तथा अफ्रीका के नवोदित राष्ट्रों ने दोनों ध्रुवों के साथ संयुक्त हुए बिना अपने स्वतंत्र राष्ट्रीय विकास के लिए 1961 ई. में बेलग्रेड में एक सम्मेलन का आयोजन किया। इसी के साथ गुटनिरपेक्ष आन्दोलन का आरम्भ हुआ। मार्शल टीटो (यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति) ने इस सम्मेलन की अध्यक्षता की थी।

| स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित आंदोलन एवं वर्ष | | |
|---|---|---|
| 1. | भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना | 1885 ई. |
| 2. | बंग-भंग आंदोलन(स्वदेशी आंदोलन) | 1905 ई. |
| 3. | मुस्लिम लीग की स्थापना | 1906 ई. |
| 4. | कांग्रेस का बंटवारा | 1907 ई. |
| 5. | होमरूल आंदोलन | 1916 ई. |
| 6. | लखनऊ पैक्ट | दिसंबर 1916 ई. |
| 7. | मांटेग्यू घोषणा | 20 अगस्त 1917 ई. |
| 8. | रौलेट एक्ट | 19 मार्च 1919 ई. |
| 9. | जालियांवाला बाग हत्याकांड | 13 अप्रैल 1919 ई. |
| 10. | खिलाफत आंदोलन | 1919 ई. |
| 11. | हंटर कमिटी की रिपोर्ट प्रकाशित | 18 मई 1920 ई. |
| 12. | कांग्रेस का नागपुर अधिवेशन | दिसंबर 1920 ई. |
| 13. | असहयोग आंदोलन की शुरुआत | 1 अगस्त 1920 ई. |
| 14. | चौरी-चौरा कांड | 5 फरवरी 1922 ई. |
| 15. | स्वराज्य पार्टी की स्थापना | 1 जनवरी 1923 ई. |
| 16. | हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन | अक्टूबर 1924 ई. |
| 17. | साइमन कमीशन की नियुक्ति | 8 नवंबर 1927 ई. |
| 18. | साइमन कमीशन का भारत आगमन | 3 फरवरी 1928 ई. |
| 19. | नेहरू रिपोर्ट | अगस्त 1928 ई. |
| 20. | बारदौली सत्याग्रह | अक्टूबर 1928 ई. |

| | | |
|---|---|---|
| 21. | लाहौर षडयंत्र केस | 8 अप्रैल 1929 ई. |
| 22. | कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन | दिसंबर 1929 ई. |
| 23. | स्वाधीनता दिवस की घोषणा | 2 जनवरी 1930 ई. |
| 24. | नमक सत्याग्रह | 12 मार्च 1930 ई. से 5 अप्रैल 1930 ई. तक |
| 25. | सविनय अवज्ञा आंदोलन | 6 अप्रैल 1930 ई. |
| 26. | प्रथम गोलमेज आंदोलन | 12 नवंबर 1930 ई. |
| 27. | गांधी-इरविन समझौता | 8 मार्च 1931 ई. |
| 28. | द्वितीय गोलमेज सम्मेलन | 7 सितंबर 1931 ई. |
| 29. | कम्युनल अवार्ड (साम्प्रदायिक पंचाट) | 16 अगस्त 1932 ई. |
| 30. | पूना पैक्ट | सितंबर 1932 ई. |
| 31. | तृतीय गोलमेज सम्मेलन | 17 नवंबर 1932 ई. |
| 32. | कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी का गठन | मई 1934 ई. |
| 33. | फॉरवर्ड ब्लाक का गठन | 1 मई 1939 ई. |
| 34. | मुक्ति दिवस | 22 दिसंबर 1939 ई. |
| 35. | पाकिस्तान की मांग | 24 मार्च 1940 ई. |
| 36. | अगस्त प्रस्ताव | 8 अगस्त 1940 ई. |
| 37. | क्रिप्स मिशन का प्रस्ताव | मार्च 1942 ई. |
| 38. | भारत छोड़ो प्रस्ताव | 8 अगस्त 1942 ई. |
| 39. | शिमला सम्मेलन | 25 जून 1945 ई. |
| 40. | नौसेना का विद्रोह | 19 फरवरी 1946 ई. |
| 41. | प्रधानमंत्री एटली की घोषणा | 15 मार्च 1946 ई. |
| 42. | कैबिनेट मिशन का आगमन | 24 मार्च 1946 ई. |
| 43. | प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस | 16 अगस्त 1946 ई. |
| 44. | अंतरिम सरकार की स्थापना | 2 सितंबर 1946 ई. |
| 45. | माउंटबेटन योजना | 3 जून 1947 ई. |

| क्रांतिकारियों पर मुकदमे | | |
|---|---|---|
| नासिक षड्यंत्र | 1909-10 | विनायक सावरकर को निर्वासन, अन्य 26 को कारावास। |
| अलीपुर या मानिकतल्ला षड्यंत्र | 1908 | अरविंद घोष सहित कई व्यक्तियों पर चलाया गया। |
| हावड़ा षड्यंत्र | 1910 | जतीन मुखर्जी मुख्य अभियुक्त थे। |
| ढाका षड्यंत्र | 1910 | पुलिनदास को 7 वर्ष की सजा। |
| दिल्ली षड्यंत्र | 1912 | मास्टर अमीन चन्द्र, अवध बिहारी एवं बाल मुकुन्द को फांसी। |
| बनारस षड्यंत्र | 1915-16 | सचिन्द्र नाथ सान्याल को आजीवन कालापानी। |
| काकोरी षड्यंत्र | 1925 | राम प्रसाद बिस्मिल |

| भारत का पहला मंत्रिमण्डल | |
|---|---|
| पं. जवाहर लाल नेहरू | प्रधानमंत्री, विदेश, कॉमनवेल्थ संबंध |
| वल्लभ भाई पटेल | गृह, सूचना एवं प्रसारण और राज्य |
| अबुल कलाम आजाद | शिक्षा |
| आर.के. शनमुख चेट्टी | वित्त |
| जगजीवनराम | श्रम |
| जॉन मथाई | रेलवे |
| सरदार बलदेव सिंह | रक्षा |
| डॉ. बी.आर. अम्बेडकर | विधि |
| श्यामा प्रसाद मुखर्जी | उद्योग एवं आपूर्ति |
| राजकुमारी अमृत कौर | स्वास्थ्य |

## ब्रिटिश काल में भारत में गठित समितियाँ एवं आयोग

| आयोग/समितियां | अध्यक्ष | स्थापना वर्ष | वायसराय | उद्देश्य |
|---|---|---|---|---|
| इनाम आयोग | इनाम | 1852 | लॉर्ड डलहौजी | भू-स्वामियों के उपाधियों की जांच करने के लिए। |
| हरशेल समिति | हरशेल | 1893 | लॉर्ड लैंसडाउन | टकसाल संबंधी सुझाव देने के लिए। |
| फ्रेजर आयोग | फ्रेजर | 1902 | लॉर्ड कर्जन | पुलिस प्रशासन कार्य पद्धति की जांच करने के लिए। |
| शाही आयोग | लॉर्ड ली | 1923 | लॉर्ड रीडिंग | नागरिक सेवा से संबंधित। |
| बटलर समिति | हारकोर्ट बटलर | 1927 | लॉर्ड इरविन | ब्रिटिश परमसत्ता और देसी राज्यों के बीच अच्छे संबंध स्थापित करने के उद्देश्य से। |
| ह्विटेल आयोग | जे.एच. ह्विटले | 1929 | लॉर्ड इरविन | श्रमिकों की स्थिति का अध्ययन कर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के उद्देश्य से। |
| लिण्ड्से आयोग | ए.डी. लिण्डसे | 1929 | लॉर्ड इरविन | मिशनरी शिक्षा के विकास के लिए। |
| सप्रू समिति | तेजबहादुर सप्रू | 1934 | लार्ड वेलिंगटन | संयुक्त राज्य में बेरोजगारी के कारणों के अध्ययन के लिए। |
| सैण्डहर्स्ट समिति | एण्ड्यू स्कीन | 1925 | लॉर्ड रीडिंग | भारतीय सेना का भारतीयकरण करने संबंधी सुझाव के लिए। |
| वुडहेड आयोग | सर जॉन वुडहेड | 1943-44 | लॉर्ड बेवेल | बंगाल दुर्भिक्ष के कारणों की जांच करने के लिए। |

## भारत के महत्वपूर्ण गवर्नर-जनरल एवं वायसराय तथा उनसे संबंधित महत्वपूर्ण घटनाएँ

| गवर्नर-जनरल एवं वायसराय | शासनकाल के दौरान की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ |
|---|---|
| वारेन हेस्टिंग्स (1773-1785) | ❖ रेगुलेटिंग एक्ट-1773<br>❖ पिट्स इंडिया एक्ट-1784<br>❖ वर्ष 1774 का रोहिला युद्ध<br>❖ वर्ष 1775-82 तक प्रथम मराठा युद्ध और वर्ष 1782 में सालबाई की संधि<br>❖ वर्ष 1780-84 में दूसरा मैसूर युद्ध |
| लॉर्ड कार्नवालिस (1786-1793) | ❖ तीसरा मैसूर युद्ध (1790-92) और श्रीरंगपट्टम की संधि (1792)<br>❖ कॉर्नवॉलिस कोड (1793)<br>❖ बंगाल का स्थायी बंदोबस्त, 1793 |
| लॉर्ड वेलेजली (1798-1805) | ❖ सहायक संधि प्रणाली का परिचय (1798)<br>❖ चौथा मैसूर युद्ध (1799)<br>❖ दूसरा मराठा युद्ध (1803-05) |

| | |
|---|---|
| लॉर्ड मिंटो-I (1807-1813) | ❖ रणजीत सिंह के साथ अमृतसर की संधि (1809) |
| लॉर्ड हेस्टिंग्स (1813-1823) | ❖ एंग्लो-नेपाल युद्ध (1814-16) और सुगौली की संधि, 1816<br>❖ तीसरा मराठा युद्ध (1817-19) और मराठा परिसंघ का विघटन<br>❖ रैय्यतवाड़ी प्रणाली की स्थापना (1820) |
| लॉर्ड एमहर्स्ट (1823-1828) | ❖ पहला बर्मा युद्ध (1824-1826) |
| लॉर्ड विलियम बेंटिक (1828-1835) | ❖ सती प्रथा का उन्मूलन (1829)<br>❖ 1833 का चार्टर एक्ट |
| लॉर्ड ऑकलैंड (1836-1842) | ❖ पहला अफगान युद्ध (1838-42) |
| लॉर्ड हार्डिंग-I (1844-1848) | ❖ पहला आंग्ल-सिख युद्ध (1845-46) और लाहौर की संधि (1846)<br>❖ कन्या भ्रूण हत्या का उन्मूलन जैसे सामाजिक सुधार |
| लॉर्ड डलहौजी (1848-1856) | ❖ दूसरा आंग्ल-सिख युद्ध (1848-49)<br>❖ निचले बर्मा का अधिग्रहण (1852)<br>❖ व्यपगत के सिद्धांत (Doctrine of Lapse) का परिचय<br>❖ वुड डिस्पैच (1854)<br>❖ वर्ष 1853 में बॉम्बे और ठाणे को जोड़ने वाली पहली रेलवे लाइन बिछाई गई<br>❖ लोक निर्माण विभाग (PWD) की स्थापना |
| लॉर्ड कैनिंग (1856-1862) | ❖ वर्ष 1857 का विद्रोह<br>❖ वर्ष 1857 में कलकत्ता, मद्रास और बॉम्बे में तीन विश्वविद्यालयों की स्थापना<br>❖ ईस्ट इंडिया कंपनी का उन्मूलन और भारत सरकार अधिनियम, 1858 (Government of India Act] 1858) द्वारा ब्रिटिश क्राउन का प्रत्यक्ष नियंत्रण<br>❖ 1861 का भारतीय परिषद अधिनियम |
| लॉर्ड जॉन लॉरेंस (1864-1869) | ❖ भूटान युद्ध (1865)<br>❖ कलकत्ता, बॉम्बे और मद्रास में उच्च न्यायालयों की स्थापना (1865) |
| लॉर्ड लिटन (1876-1880) | ❖ वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट (1878)<br>❖ शस्त्र अधिनियम (1878)<br>❖ दूसरा अफगान युद्ध (1878-80)<br>❖ क्वीन विक्टोरिया ने 'कैसर-ए-हिंद' या भारत की साम्राज्ञी की उपाधि धारण की |
| लॉर्ड रिपन (1880-1884) | ❖ वर्नाक्युलर प्रेस एक्ट का निरसन (1882)<br>❖ पहला कारखाना अधिनियम (1881)<br>❖ स्थानीय स्वशासन पर सरकार का संकल्प (1882)<br>❖ इलबर्ट बिल विवाद (1883-84)<br>❖ शिक्षा पर हंटर आयोग (1882) |
| लॉर्ड डफरिन (1884-1888) | ❖ तीसरा बर्मा युद्ध (1885-86)<br>❖ भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस की स्थापना (1885) |
| लॉर्ड लैंसडाउन (1888-1894) | ❖ कारखाना अधिनियम (1891)<br>❖ भारतीय परिषद अधिनियम (1892)<br>❖ डूरंड आयोग की स्थापना (1893) |
| लॉर्ड कर्जन (1899-1905) | ❖ पुलिस आयोग की नियुक्ति (1902)<br>❖ विश्वविद्यालय आयोग की नियुक्ति (1902)<br>❖ भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम (1904)<br>❖ बंगाल का विभाजन (1905) |
| लॉर्ड मिंटो II (1905-1910) | ❖ स्वदेशी आंदोलन (1905-1911)<br>❖ सूरत अधिवेशन में कॉन्ग्रेस का विभाजन (1907)<br>❖ मुस्लिम लीग की स्थापना (1906)<br>❖ मॉर्ले-मिंटो सुधार (1909) |
| लॉर्ड हार्डिंग II (1910-1916) | ❖ बंगाल विभाजन रद्द करना (1911)<br>❖ कलकत्ता से दिल्ली राजधानी स्थानांतरण (1911)<br>❖ हिंदू महासभा की स्थापना (1915) |
| लॉर्ड चेम्सफोर्ड (1916-1921) | ❖ लखनऊ संधि (1916)<br>❖ चंपारण सत्याग्रह (1917)<br>❖ मॉन्टेग्यू की अगस्त घोषणा (1917)<br>❖ भारत सरकार अधिनियम (1919) |
| रौलट एक्ट (1919) | ❖ जलियाँवाला बाग हत्याकांड (1919)<br>❖ असहयोग और खिलाफत आंदोलन की शुरुआत |
| लॉर्ड रीडिंग (1921-1926) | ❖ चौरी-चौरा की घटना (1922)<br>❖ असहयोग आंदोलन को वापस लेना (1922)<br>❖ स्वराज पार्टी की स्थापना (1922)<br>❖ काकोरी ट्रेन डकैती (1925) |
| लॉर्ड इरविन (1926-1931) | ❖ साइमन कमीशन का भारत आगमन (1927)<br>❖ हरकोर्ट बटलर भारतीय राज्य आयोग (1927)<br>❖ नेहरू रिपोर्ट (1928)<br>❖ दीपावली घोषणा (1929)<br>❖ कॉन्ग्रेस का लाहौर अधिवेशन (पूर्ण स्वराज संकल्प) 1929<br>❖ दांडी मार्च और सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930)<br>❖ पहला गोलमेज सम्मेलन (1930)<br>❖ गांधी-इरविन पैक्ट (1931) |
| लॉर्ड विलिंगडन (1931-1936) | ❖ सांप्रदायिक अधिनिर्णय (1932)<br>❖ दूसरा और तीसरा गोलमेज सम्मेलन (1932)<br>❖ पूना पैक्ट (1932)<br>❖ भारत सरकार अधिनियम-1935 |
| लॉर्ड लिनलिथगो (1936-1944) | ❖ द्वितीय विश्व युद्ध (1939) के शुरू होने के बाद कॉन्ग्रेस के मंत्रियों का इस्तीफा<br>❖ त्रिपुरी संकट और फॉरवर्ड ब्लॉक का गठन (1939)<br>❖ मुस्लिम लीग का लाहौर संकल्प (मुसलमानों के लिये एक अलग राज्य की मांग) 1940<br>❖ अगस्त प्रस्ताव (1940)<br>❖ भारतीय राष्ट्रीय सेना का गठन (1941)<br>❖ क्रिप्स मिशन (1942)<br>❖ भारत छोड़ो आंदोलन (1942) |
| लॉर्ड वैवेल (1944-1947) | ❖ सी. राजगोपालाचारी का सीआर फॉर्मूला (1944)<br>❖ वैवेल योजना और शिमला सम्मेलन (1942)<br>❖ कैबिनेट मिशन (1946)<br>❖ प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस (1946)<br>❖ क्लीमेंट एटली द्वारा भारत में ब्रिटिश शासन की समाप्ति की घोषणा (1947) |

| | |
|---|---|
| लॉर्ड माउंटबेटन (1947-1948) | ❖ जून थर्ड प्लान (1947)<br>❖ रेडक्लिफ आयोग (1947)<br>❖ भारत को स्वतंत्रता (15 अगस्त 1947) |

| | |
|---|---|
| चक्रवर्ती राजगोपालाचारी (1948-1950) | ❖ भारत के अंतिम गवर्नर-जनरल और प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल थे<br>❖ वर्ष 1950 में स्थायी रूप से यह पद (गवर्नर-जनरल) समाप्त कर दिया गया |

## आधुनिक भारत के कुछ प्रसिद्ध व्यक्तियों के उपनाम

| नाम | उपनाम | नाम | उपनाम |
|---|---|---|---|
| महादेव गोविन्द रानाडे | महाराष्ट्र के सुकरात | नेपोलियन बोनापार्ट | मैन ऑफ डेस्टनी, लिटिल कार्पोरल |
| नवगोपाल मित्र | नेशनल मित्र | शेख अब्दुल्ला | शेरे कश्मीर |
| सी.एफ. एण्ड्रूज | दीनबंधु | हो.ची. मिन्ह | अंकल हो |
| लालबहादुर शास्त्री | मैन ऑफ पीस | एडोल्फ हिटलर | फ्यूहरर |
| मोहनदास करमचंद गांधी | महात्मा गांधी, राष्ट्रपिता, बापू | विलियम शैक्सपियर | वार्ड ऑफ एवन |
| मुहम्मद अली जिन्ना | कायदे आजम | कालिदास | भारत का शैक्सपियर |
| वल्लभ भाई पटेल | सरदार, लौह पुरुष | मर्टिन लूथर किंग | ब्लैक गाँधी |
| गोपाल हरि देशमुख | लोकहितवादी | ज्यौफ्री चॉसर | फादर ऑफ इंग्लिश पोइट्री |
| रामास्वामी नायकर | पेरियार | जॉन ऑफ आर्क | मेड ऑफ ऑलिएंस |
| मूलशंकर | स्वामी दयानंद | रविशंकर महाराज | गुजरात के जनक |
| गंगाधर भट्टाचार्य | रामकृष्ण परमहंस | शेख मुजीबुर्रहमान | बंगबंधु |
| नरेन्द्र दत्त | स्वामी विवेकानन्द | कर्पूरी ठाकुर | जननायक |
| रविन्द्रनाथ टैगोर | गुरुदेव | अनुग्रह नारायण सिंह | बिहार विभूति |
| सरोजिनी नायडू | भारत कोकिला (नाइटिंगल ऑफ इंडिया) | यतीन्द्र मोहन सेनगुप्त | देशप्रिय |
| मैथिलीशरण गुप्त | राष्ट्रकवि | काजी नजरूल हसन | विद्रोही कवि |
| चितरंजन दास | देशबंधु | डॉ. राजेन्द्र प्रसाद | देशरत्न, अजातशत्रु |
| लाला लाजपतराय | पंजाब केसरी,लाला जी | जैनुल आबदीन | कश्मीर का अकबर |
| जवाहरलाल नेहरू | चाचा | माता वसंत | रानी वेसेंट |
| सुभाषचंद्र बोस | नेताजी | अमीर खुसरो | तोता-ए-हिन्द |
| अब्दुल गफ्फार खाँ | सीमांत गांधी | रवीन्द्र नाथ ठाकुर | विश्वकवि, कविगुरु |
| बाल गंगाधर तिलक | लोकमान्य | जगजीवन राम | बाबू जी |
| जयप्रकाश नारायण | लोकनायक | समुद्रगुप्त | भारत का नेपोलियन |
| धनपत राय | प्रेमचन्द | चाणक्य | भारत का मैकियावेली |
| नौरंग राय | स्वामी सहजानन्द | चन्द्रशेखर | युवा तुर्क |
| दादाभाई नौरोजी | ग्रैंड ओल्ड मैन | चौधरी देवीलाल | ताऊ |
| मदन मोहन मालवीय | महामना | लता मंगेशकर | स्वर कोकिल |
| राजगोपालाचारी | राजाजी | मदर टेरेसा | निर्मल हृदय |
| भगत सिंह | शहीदे आजम | पी.टी. उषा | उड़न परी |
| मेहता, तैलंग, तैयबजी | बंबई की त्रिमूर्ति | कपिल देव | हरियाणा हरिकेन |
| सत्यमूर्ति | दक्षिण का अग्निबम | सुनील गावस्कर | लिटिल मास्टर |
| टी. प्रकाशम् | आंध्र केसरी | ध्यानचंद | हॉकी के जादूगर |
| धूंधू पंत | नाना साहब | सचिन तेन्दुलकर | मास्टर ब्लास्टर |
| कर्जन | ब्रिटिश साम्राज्य का औरंगजेब | ग्लेडस्टोन | ग्रैण्ड मैन ऑफ ब्रिटेन |
| सुरेन्द्रनाथ बनर्जी | भारतीय ग्लैडस्टन | आशुतोष मुखर्जी | बंगाल केसरी |
| लॉर्ड लिटन | ओवन मेरैडिथ | डॉ. श्रीकृष्ण सिंह | बिहार केसरी |
| अरविंद घोष | महर्षि | मेडेन क्वीन | महारानी एलिजाबेथ द्वितीय |

# काँग्रेस का अधिवेशन : कब और कहाँ

| अधिवेशन | वर्ष | स्थान | अध्यक्ष | विशेष |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 1885 | बंबई | व्योमेशचन्द्र बनर्जी | 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया |
| 2 | 1886 | कलकत्ता | दादाभाई नौरोजी | प्रथम पारसी अध्यक्ष |
| 3 | 1887 | मद्रास | बदरूद्दीन तैय्यबजी | प्रथम मुस्लिम अध्यक्ष |
| 4 | 1888 | इलाहाबाद | जार्ज यूल | प्रथम अंग्रेज अध्यक्ष |
| 10 | 1894 | मद्रास | अल्फ्रेड वेब | कांग्रेस संविधान का निर्माण |
| 11 | 1895 | पूना | सुरेन्द्रनाथ बनर्जी | दुबारा संविधान पर विचार |
| 12 | 1896 | कलकत्ता | रहीमतुल्ला सयानी | पहली बार वंदे मातरम गाया गया |
| 21 | 1905 | बनारस | गोपालकृष्ण गोखले | स्वदेशी एवं बहिष्कार आंदोलन का समर्थन |
| 22 | 1906 | कलकत्ता | दादाभाई नौरोजी | पहली बार 'स्वराज' शब्द का प्रयोग |
| 23 | 1907 | सूरत | डॉ. रास बिहारी घोष | कांग्रेस का प्रथम विभाजन |
| 26 | 1910 | इलाहाबाद | विलियम वेडरबर्न | पहली बार जनगणमन गाया गया। |
| 31 | 1915 | बंबई | सर सत्येन्द्र प्रसन्न सिन्हा | लॉर्ड वेलिंगटन ने भाग लिया |
| 32 | 1916 | लखनऊ | अंबिकाचरण मजूमदार | मुस्लिम लीग से समझौता |
| 33 | 1917 | कलकत्ता | श्रीमती एनी बेसेंट | प्रथम महिला अध्यक्ष |
| विशेष | 1918 | बंबई | हसन इमाम | कांग्रेस का दूसरा विभाजन |
| 36 | 1920 | नागपुर | सी. वि. राघवाचारियर | कांग्रेस संविधान में परिवर्तन |
| विशेष | 1920 | कलकत्ता | लालालाजपत राय | असहयोग आंदोलन प्रस्ताव |
| 39 | 1923 | काकीनाडा | मौलाना मोहम्मद अली | अखिल भारतीय खादी बोर्ड |
| विशेष | 1923 | दिल्ली | अबुल कलाम आजाद | सबसे युवा अध्यक्ष |
| 40 | 1924 | बेलगाँव | महात्मा गाँधी | |
| 41 | 1925 | कानपुर | श्रीमती सरोजनी नायडू | प्रथम भारतीय महिला अध्यक्ष |
| 42 | 1926 | गुवाहाटी | एस. श्रीनिवास आयगार | सदस्यों हेतु खादी वस्त्र पहनना अनिवार्य |
| 43 | 1927 | मद्रास | डॉ. एम.ए. अंसारी | पूर्ण स्वाधीनता की मांग |
| 45 | 1929 | लाहौर | पं. जवाहरलाल नेहरू | पूर्ण स्वराज्य की मांग |
| 46 | 1931 | करॉंची | स. वल्लभ भाई पटेल | मौलिक अधिकार की मांग |
| 50 | 1936 | लखनऊ | पं. जवाहरलाल नेहरू | कांग्रेस पार्लियामेंटरी बोर्ड की स्थापना |
| 51 | 1937 | फैजपुर | पं. जवाहरलाल नेहरू | गांव में आयोजित प्रथम अधि. |
| 53 | 1939 | त्रिपुरी | सुभाष चंद्र बोस | चुनाव द्वारा |
| 54 | 1940 | रामगढ़ | अबुल कलाम आजाद | व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रस्ताव |
| 55 | 1946 | मेरठ | आचार्य जे.बी. कृपलानी | आजादी के समय अध्यक्ष |
| **नोट:**- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद 1947 ई. में दिल्ली में हुए विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष थे। | | | | |

## भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख नारे

| नारा | व्यक्ति | नारा | व्यक्ति |
|---|---|---|---|
| इन्कलाब जिन्दाबाद | भगत सिंह | दिल्ली चलो | सुभाष चन्द्र बोस |
| मारो फिरंगी को | मंगल पांडे | कर मत दो | सरदार बल्लभ भाई पटेल |
| विजयी विश्व तिरंगा प्यारा | श्याम लाल गुप्ता पार्षद | वन्दे मातरम् | बंकिमचन्द्र चटर्जी |
| जन-गण मन अधिनायक जय हे | रवीन्द्रनाथ ठाकुर | स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है | बाल गंगाधर तिलक |
| सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा | इकबाल | तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा | सुभाषचन्द्र बोस |
| साइमन कमीशन वापस जाओ | लाला लाजपत राय | हू लिव्स इंफ इंडिया डाइज | जवाहर लाल नेहरू |
| पूर्ण स्वराज्य, आराम हराम है | जवाहर लाल नेहरू | भारत छोड़ो, हे राम, करो या मरो | महात्मा गाँधी |
| सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है | राम प्रसाद विस्मिल | जय जवान, जय किसान | लाल बहादुर शास्त्री (1965 में पाकिस्तान युद्ध के समय) |
| जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान | अटल बिहारी वाजपेयी | | |

| राष्ट्रीय आंदोलन की महत्वपूर्ण घटनाएं | |
|---|---|
| 1904 | भारतीय विश्वविद्यालय अधिनियम पारित |
| 1905 | बंगाल का विभाजन |
| 1906 | मुस्लिम लीग की स्थापना |
| 1907 | सूरत अधिवेशन, कांग्रेस में फूट |
| 1909 | मार्ले-मिंटो सुधार |
| 1911 | ब्रिटिश सम्राट का दिल्ली दरबार |
| 1916 | होमरूल लीग का निर्माण |
| 1916 | मुस्लिम लीग-कांग्रेस समझौता (लखनऊ पैक्ट) |
| 1917 | महात्मा गाँधी द्वारा चंपारण में आंदोलन |
| 1919 | रौलेट अधिनियम |
| 1919 | जलियाँवाला बाग हत्याकांड |
| 1919 | मांटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार |
| 1920 | खिलाफत आंदोलन |
| 1920 | असहयोग आंदोलन |
| 1922 | चौरी-चौरा कांड |
| 1927 | साइमन कमीशन की नियुक्ति |
| 1928 | साइमन कमीशन का भारत आगमन |
| 1929 | भगतसिंह द्वारा केन्द्रीय असेंबली में बम विस्फोट |
| 1929 | कांग्रेस द्वारा पूर्ण स्वतंत्रता की माँग |
| 1930 | सविनय अवज्ञा आंदोलन |
| 1930 | प्रथम गोलमेज सम्मेलन |
| 1931 | द्वितीय गोलमेज सम्मेलन |
| 1932 | तृतीय गोलमेज सम्मेलन |
| 1932 | सांप्रदायिक निर्वाचक प्रणाली की घोषणा |
| 1932 | पूना पैक्ट |
| 1942 | भारत छोड़ो आंदोलन |
| 1942 | क्रिप्स मिशन का आगमन |
| 1943 | आजाद हिन्द फौज की स्थापना |
| 1946 | कैबिनेट मिशन का आगमन |
| 1946 | भारतीय संविधान सभा का निर्वाचन |
| 1946 | अंतरिम सरकार की स्थापना |
| 1947 | भारत के विभाजन की माउंटबेटन योजना |
| 1947 | भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति |

| कुछ महान कार्यों से सम्बंधित व्यक्ति | | |
|---|---|---|
| 1 | आर्य समाज | स्वामी दयानंद सरस्वती |
| 2 | प्रार्थना समाज | आत्माराम पांडुरंग |
| 3 | दीन-ए-इलाही, मनसबदारी प्रथा | अकबर |
| 4 | भक्ति आंदोलन | रामानुज |
| 5 | सिख धर्म | गुरु नानक |
| 6 | बौद्ध धर्म | गौतमबुद्ध |
| 7 | जैन धर्म | महावीर स्वामी |
| 8 | इस्लाम धर्म की स्थापना, हिजरी सम्वत | हजरत मोहम्मद साहब |
| 9 | पारसी धर्म के प्रवर्तक | जर्थुष्ट |
| 10 | शक् सम्वत | कनिष्क |
| 11 | मौर्य वंश का संस्थापक | चन्द्रगुप्त मौर्य |
| 12 | न्याय दर्शन | महर्षि गौतम |
| 13 | वैशेषिक दर्शन | महर्षि कणाद |
| 14 | सांख्य दर्शन | महर्षि कपिल |
| 15 | योग दर्शन | महर्षि पतंजली |
| 16 | मीमांसा दर्शन | महर्षि जैमिनी |
| 17 | रामकृष्ण मिशन | स्वामी विवेकानंद |
| 18 | गुप्त वंश का संस्थापक | श्रीगुप्त |
| 19 | खालसा पन्थ | गुरु गोविन्द सिंह |
| 20 | मुगल साम्राज्य की स्थापना | बाबर |
| 21 | विजयनगर साम्राज्य की स्थापना | हरिहर व बुक्का |
| 22 | दिल्ली सल्तनत की स्थापना | कुतुबुद्दीन ऐबक |
| 23 | सतीप्रथा का अंत | लॉर्ड विलियम बेंटिक |
| 24 | आंदोलन: असहयोग,सविनय अवज्ञा, खेडा, चम्पारन, नमक, भारत छोडो | महात्मा गाँधी |
| 25 | हरिजन संघ की स्थापना | महात्मा गाँधी |
| 26 | आजाद हिंद फौज की स्थापना | रास बिहारी बोस |
| 27 | भूदान आंदोलन | आचार्य विनोबा भावे |
| 28 | रेड क्रॉस | हेनरी ड्यूनेंट |
| 29 | स्वराज पार्टी की स्थापना | पंडित मोतीलाल नेहरु |
| 30 | गदर पार्टी की स्थापना | लाला हरदयाल |
| 31 | 'वंदे मातरम' के रचियता | बंकिमचन्द्र चटर्जी |
| 32 | स्वर्ण मंदिर का निर्माण | गुरु अर्जुन देव |
| 33 | बारदोली आंदोलन | वल्लभभाई पटेल |
| 34 | पाकिस्तान की स्थापना | मो. अली जिन्ना |
| 35 | इंडियन एसोशिएशन की स्थापना | सुरेन्द नाथ बनर्जी |
| 36 | ओरुविले आश्रम की स्थापना | अरविन्द घोष |
| 37 | रुसी क्रांति के जनक | लेनिन |
| 38 | जामा मस्जिद का निर्माण | शाहजहाँ |
| 39 | विश्व भारती की स्थापना | रवीन्द्रनाथ टैगोर |
| 40 | दास प्रथा का उन्मूलन | अब्राहम लिंकन |
| 41 | चिपको आंदोलन | सुंदर लाल बहुगुणा |
| 42 | बैकों का राष्ट्रीयकरण | इंदिरा गाँधी |
| 43 | ऑल इण्डिया वीमेन्स कांफ्रेंस की स्थापना | श्रीमती कमला देवी |
| 44 | भारत की कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना | एम.एन. राय |
| 45 | नेशनल कांफ्रेंस की स्थापना | शेख अब्दुल्ला |
| 46 | संस्कृत व्याकरण के जनक | पाणिनी |
| 47 | सिख राज्य की स्थापना | महाराजा रणजीत सिंह |
| 48 | भारत की खोज | वास्कोडिगामा |

| इतिहास की प्रमुख घटनाएँ एवं उसके घटित वर्ष | |
|---|---|
| भारत में आर्यों का आगमन | 1500 ई.पू. |
| महावीर का जन्म | 540 ई.पू. |
| महावीर का निर्वाण | 468 ई.पू. |
| गौतम बुद्ध का जन्म | 563 ई.पू. |
| गौतम बुद्ध का महापरिनिर्वाण | 483 ई.पू. |
| सिकंदर का भारत पर आक्रमण | 326-325 ई.पू. |
| अशोक द्वारा कलिंग पर विजय | 261 ई.पू. |
| विक्रम संवत् का आरम्भ | 57 ई.पू. |
| शक् संवत् का आरम्भ | 78 ई.पू. |

| | |
|---|---|
| हिजरी संवत् का आरम्भ | 622 ई. |
| फाह्यान की भारत यात्रा | 405-11 ई. |
| हर्षवर्धन का शासन | 606-647 ई. |
| हेनसांग की भारत यात्रा | 630 ई. |
| सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण | 1025 ई. |
| तराईन का प्रथम युद्ध | 1191 ई. |
| तराईन का द्वितीय युद्ध | 1192 ई. |
| गुलाम वंश की स्थापना | 1206 ई. |
| वास्कोडिगामा का भारत आगमन | 1498 ई. |
| पानीपत का प्रथम युद्ध | 1526 ई. |
| पानीपत का द्वितीय युद्ध | 1556 ई. |
| पानीपत का तृतीय युद्ध | 1761 ई. |
| अकबर का राज्यारोहण | 1556 ई. |
| हल्दी घाटी का युद्ध | 1576 ई. |
| दीन-ए-इलाही धर्म की स्थापना | 1582 ई. |
| प्लासी का युद्ध | 1757 ई. |
| बक्सर का युद्ध | 1764 ई. |
| बंगाल में स्थायी बंदोबस्त | 1793 ई. |
| बंगाल में प्रथम विभाजन | 1905 ई. |
| मुस्लिम लीग की स्थापना | 1906 ई. |
| मार्ले मिन्टो सुधार | 1909 ई. |
| प्रथम विश्वयुद्ध | 1914-18 ई. |
| द्वितीय विश्वयुद्ध | 1939-45 ई. |
| असहयोग आंदोलन | 1920-22 ई. |
| साइमन कमीशन का आगमन | 1928 ई. |
| दांडी मार्च नमक सत्याग्रह | 1930 ई. |
| गाँधी इरविन समझौता | 1931 ई. |
| कैबिनेट मिशन का आगमन | 1946 ई. |
| महात्मा गांधी की हत्या | 1948 ई. |
| चीन का भारत पर आक्रमण | 1962 ई. |
| भारत पाक युद्ध | 1965 ई. |
| ताशकंद- समझौता | 1966 ई. |
| तालिकोटा का युद्ध | 1565 ई. |
| प्रथम आंग्ल-मैसूर युद्ध | 1767- 69 ई. |
| द्वितीय आंग्ल-मैसूर युद्ध | 1780- 84 ई. |
| तृतीय आंग्ल-मैसूर युद्ध | 1790- 92 ई. |
| चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध | 1799 ई. |
| कारगिल युद्ध | 1999 ई. |
| प्रथम गोलमेज सम्मेलन | 1930 ई. |
| द्वितीय गोलमेज सम्मेलन | 1931 ई. |
| तृतीय गोलमेज सम्मेलन | 1932 ई. |
| क्रिप्स मिशन का आगमन | 1942 ई. |
| चीनी क्रांति | 1911 ई. |
| फ्रांसीसी क्रांति | 1789 ई. |
| रुसी क्रांति | 1917 ई. |

## महत्वपूर्ण युद्ध

**हाईडेस्पीज का युद्ध (Battle of the Hydaspes)**
समय : 326 ई.पू.
किसके बीच - सिकंदर और पंजाब के राजा पोरस के बीच हुआ, जिसमे सिकंदर की विजय हुई।

**कलिंग की लड़ाई (Kalinga War)**
समय : 261 ई.पू.
किसके बीच - सम्राट अशोक ने कलिंग पर आक्रमण किया। युद्ध के रक्तपात को देखकर उसने युद्ध न करने की कसम खाई।

**सिंध की लड़ाई**
समय : 712 ई.
किसके बीच - मोहम्मद कासिम ने अरबों की सत्ता स्थापित की।

**तराईन का प्रथम युद्ध (Battles of Tarain)**
समय : 1191 ई.
किसके बीच - मोहम्मद गौरी और पृथ्वी राज चौहान के बीच हुआ, जिसमे चौहान की विजय हुई।

**तराईन का द्वितीय युद्ध (2nd Battles of Tarain)**
समय : 1192 ई.
किसके बीच - मोहम्मद गौरी और पृथ्वी राज चौहान के बीच हुआ, जिसमे मोहम्मद गौरी की विजय हुई।

**चंदावर का युद्ध (Battle of Chandawar)**
समय : 1194 ई.
किसके बीच - इसमें मुहम्मद गौरी ने कन्नौज के राजा जयचंद को हराया।

**पानीपत का प्रथम युद्ध (First Battle of Panipat)**
समय : 1526 ई.
किसके बीच - मुगल शासक बाबर और इब्राहीम लोदी के बीच।

**खानवा का युद्ध (Battle of Khanwa)**
समय : 1527 ई.
किसके बीच - बाबर ने राणा सांगा को पराजित किया।

**घाघरा का युद्ध (Battle of Ghagra)**
समय : 1529 ई.
किसके बीच - बाबर ने महमूद लोदी के नेतृत्व में अफगानों को हराया।

**चौसा का युद्ध (Battle of Chausa)**
समय : 1539 ई.
किसके बीच - शेरशाह सूरी ने हुमायूँ को हराया

**कन्नौज/बिलग्राम का युद्ध (Battle of Kanauj or Billgram)**
समय : 1540 ई.
किसके बीच - एक बार फिर से शेरशाह सूरी ने हुमायूँ को हराया व भारत छोड़ने पर मजबूर किया।

**पानीपत का द्वितीय युद्ध (Second Battle of Panipat)**
समय : 1556 ई.
किसके बीच - अकबर और हेमू के बीच।

**तालीकोटा का युद्ध (Battle of Tallikota)**
समय : 1565 ई.
किसके बीच - इस युद्ध से विजयनगर साम्राज्य का अंत हो गया।

**हल्दीघाटी का युद्ध (Battle of Haldighati)**
समय : 1576 ई.
किसके बीच - अकबर और राणा प्रताप के बीच, इसमें राणा प्रताप की हार हुई।

**प्लासी का युद्ध (Battle of Plassey)**
समय : 1757 ई.
किसके बीच - अंग्रेजो और सिराजुद्दौला के बीच, जिसमे अंग्रेजो की विजय हुई और भारत में अंग्रेजी शासन की नीव पड़ी।

**वांडीवाश का युद्ध (Battle of Wandiwash)**
समय : 1760 ई.
किसके बीच - अंग्रेजो और फ्रांसीसियो के बीच, जिसमे फ्रांसीसियो की हार हुई।

**पानीपत का तृतीय युद्ध (Third Battle of Panipat)**
समय : 1761 ई.
किसके बीच - अहमदशाह अब्दाली और मराठो के बीच, जिसमे फ्रांसीसियों की हार हुई।

**बक्सर का युद्ध (Battle of Buxar)**
समय : 1764 ई.
किसके बीच - अंग्रेजो और शुजाउद्दौला, मीर कासिम एवं शाह आलम द्वितीय की संयुक्त सेना के बीच, जिसमे अंग्रेजो की विजय हुई।

**प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध**
समय : 1767-69 ई.
समाप्त - मद्रास की संधि
किसके बीच - हैदर अली और अंग्रेजो के बीच, जिसमे अंग्रेजो की हार हुई।

**द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध**
समय : 1780-84 ई.
समाप्त - मंगलौर की संधि
किसके बीच - हैदर अली और अंग्रेजो के बीच, जो अनिर्णित छूटा।

**तृतीय आंग्ल मैसूर युद्ध**
समय : 1790-92 ई.
समाप्त - श्रीरंगपट्टनम की संधि
किसके बीच - टीपू सुल्तान और अंग्रेजो के बीच लड़ाई संधि के द्वारा समाप्त हुई।

**चतुर्थ आंग्ल मैसूर युद्ध**
समय : 1797-99 ई.
किसके बीच - टीपू सुल्तान और अंग्रेजो के बीच, टीपू की हार हुई और मैसूर शक्ति का पतन हुआ।

**चिलियान वाला युद्ध**
समय : 1849 ई.
किसके बीच - ईस्ट इंडिया कंपनी और सिखों के बीच हुआ था जिसमे सिखों की हार हुई।

**भारत चीन सीमा युद्ध**
समय : 1962 ई.
किसके बीच - चीनी सेना द्वारा भारत के सीमा क्षेत्रो पर आक्रमण। कुछ दिन तक युद्ध होने के बाद एकपक्षीय युद्ध विराम की घोषणा। भारत को अपनी सीमा के कुछ हिस्सों को छोड़ना पड़ा।

**भारत पाक युद्ध (Indo-Pakistani War)**
समय : 1965 ई.
किसके बीच - भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध जिसमे पाकिस्तान की हार हुई। भारत पाकिस्तान के बीच शिमला समझौता हुआ।

**भारत पाक युद्ध (Indo-Pakistani War)**
समय : 1971 ई.
किसके बीच - भारत और पाकिस्तान के बीच युद्ध जिसमे पाकिस्तान की हार हुई। फलस्वरूप बांग्लादेश एक स्वतन्त्र देश बना।

**कारगिल युद्ध (Kargil War)**
समय : 1999 ई.
किसके बीच - जम्मू एवं कश्मीर के द्रास और कारगिल क्षेत्रो में पाकिस्तानी घुसपैठियों के बीच।

## महत्वपूर्ण प्रश्न एवं उत्तर

- एओ. ह्यूम ने 1884 ई. में किस संगठन की स्थापना की - ***इंडियन नेशनल यूनियन***
- बाद में इंडियन नेशनल यूनियन को क्या नाम दिया गया - ***भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस***
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कब हुई थी - ***28 दिसंबर, 1885***
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस शब्द किसने दिया - ***दादाभाई नौरोजी***
- 1885 ई. में कांग्रेस का प्रथम सम्मेलन कहाँ सम्पन्न हुआ - ***गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज, बंबई***
- कांग्रेस के प्रथम सम्मेलन की अध्यक्षता किसने की थी - ***व्योमेश चन्द्र बनर्जी***
- कांग्रेस के प्रथम सम्मेलन में कितने सदस्यों ने भाग लिया - ***72***
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का दूसरा अधिवेशन कलकता में कब हुआ - ***1886 ई.***
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का दूसरा अधिवेशन की अध्यक्षता किसने की थी - ***दादाभाई नौरोजी***
- कांग्रेस के दूसरे अधिवेशन में कितने सदस्यों ने भाग लिया - ***436***
- 1887 ई. में कांग्रेस का तीसरा अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***मद्रास***
- कांग्रेस के तीसरे अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***बदरुद्दीन तैयबजी***
- 1888 ई. में कांग्रेस का चौथा अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***इलाहाबाद***
- कांग्रेस के चौथे अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***जार्ज यूले***
- 1889 ई. में कांग्रेस का पांचवां अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***बंबई***
- कांग्रेस के पांचवें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***सर विलियम वेडरबर्न***
- 1890 ई. में कांग्रेस का छठा अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***कलकत्ता***
- कांग्रेस के छठे अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***सर फिरोजशाह मेहता***
- 1891 ई. में कांग्रेस का सातवाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***नागपुर***
- कांग्रेस के सातवें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***पी. आनन्द चार्लू***
- 1892 ई. में कांग्रेस का आठवाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***इलाहाबाद***
- कांग्रेस के आठवें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***व्योमेश चन्द्र बनर्जी***
- 1893 ई. में कांग्रेस का नौवाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***लाहौर***
- कांग्रेस के नौवें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***दादाभाई नौरोजी***
- 1894 ई. में कांग्रेस का 10वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***मद्रास***
- कांग्रेस के 10वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***अलफ्रेड वेब***
- 1895 ई. में कांग्रेस का ग्यारहवाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***पूना***
- कांग्रेस के 11वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***सुरेन्द्रनाथ बनर्जी***
- 1896 में कांग्रेस का 12वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***कलकत्ता***
- कांग्रेस के 12वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***रहीमतुल्ला सयानी***
- 1897 ई. में कांग्रेस का 13वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***अमरावती***
- कांग्रेस के 13वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***सी. शंकरन नायर***
- 1898 ई. में कांग्रेस का 14वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***मद्रास***
- कांग्रेस के 14वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***आनंद मोहन बोस***
- 1899 ई. में कांग्रेस का 15वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***लखनऊ***
- कांग्रेस के 15वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***रमेश चन्द्र दत्त***
- 1900 ई. में कांग्रेस का 16वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***लाहौर***
- कांग्रेस के 16वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***एन.वी. चन्द्रावरकर***
- 1901 ई. में कांग्रेस का 17वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***कलकत्ता***
- कांग्रेस के 17वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***बिनशा इदुलजी वाचा***
- 1902 ई. में कांग्रेस का 18वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***अहमदाबाद***
- कांग्रेस के 18वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***सुरेन्द्रनाथ बनर्जी***
- 1903 ई. में कांग्रेस का 19वा अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***मद्रास***
- कांग्रेस के 19वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***लालमोहन घोष***
- 1904 ई. में कांग्रेस का 20वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***बंबई***
- कांग्रेस के 20वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***सर हेनरी काटन***
- 1905 ई. में कांग्रेस का 21वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***बनारस***
- कांग्रेस के 21वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***गोपाल कृष्ण गोखले***
- 1906 ई. में कांग्रेस का 22वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***कलकत्ता***
- कांग्रेस के 22वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***दादाभाई नौरोजी***
- 1907 ई. में कांग्रेस का 23वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***सूरत***
- कांग्रेस के 23वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***डॉ. रासबिहारी घोष***
- 1908 ई. में कांग्रेस का 24वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ - ***मद्रास***
- कांग्रेस के 24वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे - ***डॉ. रासबिहारी घोष***

- 1909 ई. में कांग्रेस का 25वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ – ***लाहौर***
- कांग्रेस के 25वें अधिवेशन के अध्यक्ष कौन थे – ***मदनमोहन मालवीय***
- 1910 ई. में कांग्रेस का 26वाँ अधिवेशन कहाँ पर हुआ – ***इलाहाबाद***

## महत्वपूर्ण प्रश्न एवं उत्तर

- भारत में खोजा गया सबसे पहला पुराना शहर कौन-सा था? – ***हड़प्पा***
- 'स्वराज मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है' किसने कहा था? – ***बाल गंगाधर तिलक***
- उत्तरी भारत की प्रथम मुस्लिम महिला शासक/दिल्ली पर राज करने वाली प्रथम महिला शासक कौन थी? – ***रजिया सुल्तान***
- सिंधु सभ्यता का पत्तननगर (बंदरगाह) कौन-सा था? – ***लोथल***
- भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के संस्थापक कौन थे? – ***ए.ओ. ह्यूम***
- महात्मा बुद्ध द्वारा दिए गए प्रथम उपदेश को कहा जाता है? – ***धर्मचक्रप्रवर्तन***
- किस वेद की रचना गद्य एवं पद्य दोनों में की गई है? – ***यजुर्वेद***
- भारत में पहला समाचारपत्र किसने शुरू किया था? – ***सैयद अहमद खाँ***
- किसके शासनकाल में बौद्ध धर्म दो भागों-हीनयान तथा महायान में बँट गया? – ***कनिष्क***
- लोदी वंश का अंतिम शासक कौन था? – ***इब्राहिम लोदी***
- प्रथम जैन संगीति कहाँ आयोजित की गई थी? – ***पाटलिपुत्र***
- दिल्ली के किस सुल्तान को इतिहासकारों ने 'विरोधों का मिश्रण' बताया है? – ***मुहम्मद-बिन-तुगलक***
- ऋग्वैदिक समाज की सबसे छोटी इकाई क्या थी? – ***कुल या परिवार***
- किस शासक के पास एक शक्तिशाली नौसेना थी? – ***चोल***
- 'संकीर्तन प्रथा' के जन्मदाता कौन थे? – ***चैतन्य***
- किस मुगल शासक को 'आलमगीर' कहा जाता था? – ***औरंगजेब***
- 'शहीदे आजम' उपाधि से किसे सम्मानित किया गया? – ***भगत सिंह***
- साइमन कमीशन के विरुद्ध प्रदर्शन के दौरान किए गए लाठीचार्ज में किस राजनेता की मृत्यु हो गई? – ***लाला लाजपतराय***
- वहाबी आन्दोलन के प्रवर्तक कौन थे? – ***सैयद अहमद***
- किस स्थान पर बुद्ध ने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया था? – ***कुशीनारा/कुशीनगर में***
- काँग्रेस के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता किसने की? – ***व्योमेशचन्द्र बनर्जी***
- भगवान नटराज का प्रसिद्ध मन्दिर जिसमें भरतनाट्यम शिल्प कला है कहाँ स्थित है? – ***चिदंबरम***
- महात्मा बुद्ध ने उपदेश देने हेतु किस भाषा का प्रयोग किया? – ***पालि***
- कुतुबमीनार के कार्य को किस शासक ने पूरा किया था? – ***इल्तुतमिश***
- 'लीलावती' पुस्तक किससे सम्बन्धित है? – ***गणित से***
- पहाड़ी काटकर एलोरा के विश्वविख्यात कैलाशनाथ मन्दिर का निर्माण किसने कराया था? – ***राष्ट्रकूट ने***
- चीनी यात्री ह्वेनसांग किसके शासनकाल में भारत आया था? – ***हर्षवर्द्धन***
- बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (B.H.U.) के संस्थापक कौन थे? – ***मदन मोहन मालवीय***
- स्वतन्त्र भारत के प्रथम गवर्नर जनरल कौन थे? – ***लॉर्ड माउन्टबेटन***
- किस मुस्लिम शासक के सिक्कों पर देवी लक्ष्मी की आकृति बनी है? – ***मुहम्मद गौरी***
- कालाशोक की राजधानी कहां थी? – ***पाटलिपुत्र***
- गायत्री मन्त्र की रचना किसने की थी? – ***विश्वामित्र***
- लंदन में 'इण्डिया हाऊस' की स्थापना किसने की? – ***श्यामजी कृष्ण वर्मा***
- किस गुप्तकालीन शासक को 'कविराज' कहा गया? – ***समुद्रगुप्त***
- अकबर इतिहासकारों में किसने अकबर को इस्लाम का शत्रु कहा? – ***बदायूँनी***
- भक्ति को दार्शनिक आधार प्रदान करने वाले प्रथम आचार्य कौन थे? – ***शंकराचार्य***
- किस नगर को 'शिराज-ए-हिन्द' कहा जाता था? – ***जौनपुर***
- चालुक्य वंश का सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक कौन-सा था? – ***पुलकेशिन II***
- मुहम्मद गौरी ने 1192 ई. में हुए तराईन के द्वितीय युद्ध में किस शासक को पराजित किया? – ***पृथ्वीराज चौहान***
- भारतीयों के महान् रेशम मार्ग (Silk route) किसने आरम्भ कराया? – ***कनिष्क***
- 'गुलरुखी' के नाम से कौन जाना जाता था? – ***सिकन्दर लोदी***
- वह कौन-सा युद्ध था जिसने भारत में ब्रिटिश प्रभुत्व का प्रारम्भ किया? – ***प्लासी का युद्ध***
- शिवाजी ने अपने राज्य की आय का मुख्य साधन किसे बनाया? – ***चौथ***
- जैन धर्म के 24 वें तीर्थंकर कौन थे? – ***महावीर***
- 'सत्यमेव जयते' उक्ति कहाँ से ली गई है? – ***मुण्डकोपनिषद्***
- बक्सर के युद्ध (1764) के समय दिल्ली का शासक कौन था? – ***शाह आलम II***
- भारत में सर्वप्रथम स्वर्ण मुद्राएँ किसने चलाई? – ***इण्डो-बैक्ट्रियन***
- अशोक के 'धम्म' की परिभाषा कहाँ से ली गई है? – ***राहुलोवांदसुत्त***
- जहाँगीर के दरबार में पक्षियों का सबसे बड़ा चित्रकार कौन था? – ***मंसूर***

# IAS / PCS में सफलता की परंपरा जारी... संस्थान के कुछ सफल छात्र

1st Rank IAS 2010
Shah Faesal

Armstrong Pame
IAS 2010

1st Rank BPSC 60-62
Shushant Singh Chanchal

1st Rank (46वीं)
Amritendu Sekhar

1st Rank (48वीं)
Prashant Singh

2nd Rank (53वीं)
Rajnish Kumar

5th Rank (56 वीं)
Rakesh Singh

Premsukh Delu

Simrat Kaur

Upender vir Singh

Chanchal

Dhawal Jaishwal

Pramod

Vivek Gupta

Azhar Jamal

Amastrang Pame

Anant Lal Gyani

Jaiprakash

Arvind Singhvi

Nirlipt Rai

Mithlesh Mishra

Nitina Nagauri

Jafar Mallik

Rajesh Kumar

Aashish Anan

## अन्य बहुत से सफल छात्र...